न० नोसोव

स्कूली लड़के

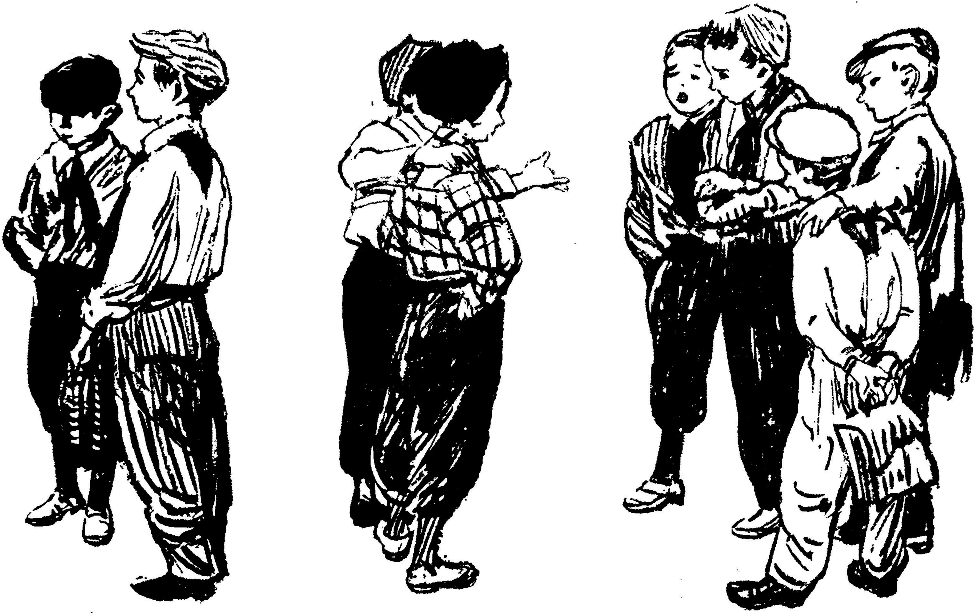


किशोर साहित्य पुस्तकमाला



न० नोसोव

स्कूली लड़के



प्रगति प्रकाशन

मास्को

अनुवादक : जवाहर चौधरी
चित्रकार : व० न० गोर्याएव
डिज़ायनर : इ० इ० फ़ोमिना

Н. Носов
ВИТЯ МАЛЕЕВ В ШКОЛЕ И ДОМА
На языке хинди



पहला अध्याय

समय का चुटकियों में बीत जाना कितना कष्टदायक है! गर्मियों की छुट्टियों ने झलक भर दिखाई और इससे पहले कि मैं अपना होश संभालूं, स्कूल फिर खुल गया। लेकिन जब तक छुट्टियां रहीं, खूब मौज रही। मैं इधर से उधर दौड़ लगाता और फुटबाल खेलता फिरा और कभी भी अपने पाठ अथवा पुस्तकों के बारे में नहीं सोचा। मैंने कितनी ही साहसिक कहानियां पढ़ डालीं, किन्तु स्कूल की पुस्तकों की तरफ़ देखा भी नहीं। क्या मजाल कि मैंने रूसी भाषा के व्याकरण को छूआ या हिसाब की किसी पुस्तक को हाथ भी लगाया हो। फिर भी मुझे अपनी रूसी की कोई चिन्ता नहीं है। मुझे उसमें हमेशा अच्छे नम्बर मिले हैं। किन्तु गणित की कुछ बात ही दूसरी है। मुझे गणित कभी पसन्द नहीं आया, और इसमें मैं इतना कमज़ोर था कि ओल्गा निकोलायेव्ना मुझे छुट्टियों के लिए बहुत से सवाल देते देते रह गईं—छुट्टियों में करने के लिए सवाल! परन्तु उन्होंने मुझ पर दया की और मुझे चौथी कक्षा में चढ़ जाने दिया। जी हाँ, चौथी—आप जानते हैं वह कक्षा अथवा श्रेणी, जिसमें आप अपने स्कूल के चौथे वर्ष में उस समय पहुंचते हैं, जब आप मेरी तरह ११ वर्ष के होने जा रहे हों।

उन्होंने कहा था, "मैं तुम्हारी गर्मी की छुट्टियां खराब करना नहीं चाहती। इस बार तुम्हें पास कर देती हूँ, लेकिन तुम्हें वचन देना होगा कि छुट्टियों में तुम गणित पर परिश्रम करोगे।"

निःसन्देह मैंने वचन दिया था। किन्तु स्कूल बन्द होने के साथ मैं गणित-वणित सब कुछ भूल गया। स्कूल दुबारा खुलने की बात सिर पर न होती, तो बहुत संभव है मुझे इसकी याद भी कभी नहीं आती। मुझे अपने पर लज्जा आने लगी कि मैं अपने वचन का पालन नहीं कर सका, किन्तु 'अब पछताये क्या होता है जब चिड़ियां चुग गईं खेत'!

और इस तरह गर्मियों की छुट्टियां बीत गईं। पहली सितम्बर की सुहावनी सुबह मैं अपेक्षाकृत जल्दी उठ बैठा, अपनी पुस्तकें बस्ते में रखीं और स्कूल चल दिया। जैसा कि पुस्तकों में लोग लिखते हैं, इस सुबह के पवन में पुलक का अनुभव हो रहा था। जल्दी-जल्दी स्कूल की ओर

जाते हुए छोटे ग्रौर बड़े लड़के-लड़कियों से सड़कें भरी हुई थीं। कुछ ग्रकेले थे, कुछ जोड़ों में ग्रौर कुछ झुंडों में। कुछ मेरी धीमी चाल से चल रहे थे, तो कुछ ऐसे भागे जा रहे थे, जैसे कहीं ग्राग लग गई हो। छोटे बच्चे ग्रपनी कक्षाग्रों को सजाने के लिए फूल ले जा रहे थे। लड़कियां, ठीक लड़कियों के स्वभाव के ग्रनुकूल, खिलखिल करती हुई जा रही थीं। किन्तु कुछ लड़के भी खिलखिलाते ग्रौर ठहाका मारते चल रहे थे। हरेक उत्तेजित दीख पड़ता था। मैं भी उत्तेजित था। मैं ग्रपने पायनियर जत्थे ग्रौर ग्रपने सहपाठियों तथा पायनियर-नेता, जिसने हमारे साथ पिछले वर्ष भी कार्य किया था, वोलोद्या को देखने के लिए उत्सुक था। मैं ग्रपने को एक ऐसा यात्री ग्रनुभव कर रहा था जो ग्रपनी लम्बी, बहुत लम्बी समुद्र-यात्रा के बाद ग्रपने घर, मित्रों के बीच वापस लौट रहा हो।

इतने पर भी मैं पूर्णतः प्रसन्न नहीं था, क्योंकि मुझे ज्ञात था कि दूसरे साथियों के साथ फ़ेद्या रिब्किन वहां नहीं होगा। फ़ेद्या मेरा सब से ग्रच्छा दोस्त था। हम कक्षा में दो सीटों वाली डेस्क पर एक साथ बैठते थे। ग्रौर ग्रब वह ग्रपने माता-पिता के साथ किसी दूसरे नगर चला गया था, न जाने ग्रब कभी उससे मेरी भेंट भी होगी या नहीं। मेरे दुखी होने का दूसरा कारण यह था कि ग्रोल्गा निकोलायेव्ना ने मुझ से गणित के बारे में पूछा, तो क्या उत्तर दूंगा! गणित जाये भाड़ में! स्कूल जाने के विचार से मैं बहुत गद्गद था, क्योंकि कुछ भी हो, मुझे स्कूल का बन्द होना बहुत ग्रखरा था ग्रौर ग्रब सब कुछ चौपट हो गया था।

सूर्य उतना ही चमकदार था, जितना गर्मियों में होता है, किन्तु शीतल बयार शाखाग्रों से पीले पत्तों को नोच कर हवा में घुमा-घुमा कर धरती पर पटक रही थी। पटरियों पर बयार उनका पीछा कर रही थी ग्रौर वे भी तेज़ी के साथ कहीं जाने की जल्दी में दिखायी पड़ रहे थे।

दूर से ही मुझे स्कूल के द्वार पर एक बड़ा लाल पोस्टर दिखाई पड़ा। इसके चारों ग्रोर फूल सजाये हुए थे ग्रौर इस पर बड़े सफ़ेद ग्रक्षरों में लिखा था "स्वागतम!"

पिछली बार स्कूल खुलने पर भी इसी प्रकार का ग्रंकन किया गया था ग्रौर इसके पहले भी ऐसा ही किया गया था। इसे देख कर मुझे स्कूल में ग्रपने पहले दिन की याद हो ग्रायी। उस समय मैं बच्चा ही था। मैंने ग्रपने उस पहले वर्ष के बारे में सोचा, जब हम सबकी इच्छा रहती थी कि हम जल्दी से जल्दी बड़े हो जायें ग्रौर पायनियर बनें। मुझे पायनियरों का ग्रपना वह सम्मेलन याद हो ग्राया, जिसमें हमने दृढ़ प्रतिज्ञा ली थी, ग्रौर हमारी बड़ी पायनियर नेत्री ग्रास्या गेग्रोरगियेव्ना ने हमें लाल टाइयां प्रदान की थीं तथा हम सच्चे ग्रौर ईमानदार किशोर पायनियर बन गये थे।

जब मुझे यह सब याद ग्राया, तो मेरे भीतर गर्मी ग्रौर एक ऐसी गुदगुदी का ग्रनुभव होने लगा, जैसा कि ग्राप किसी ग्राश्चर्यपूर्ण घटना घट जाने पर ग्रनुभव करते हैं। मेरे पांव ग्राप ही ग्राप तेज़ी के साथ उठने लगे। बस यह समझिये कि मैं भागने पर नियंत्रण किये हुए था — ऐसा कभी नहीं होगा कि मैं पहली जमात के बच्चों की तरह भागने लगूं। मैं चौथी श्रेणी का विद्यार्थी ठहरा!

खेल का मैदान खचाखच भरा था। प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थी अपने ही आप एक-एक समूह में खड़े थे। मैंने अपनी कक्षा शीघ्र ही ढूंढ़ ली। जब लड़कों ने मुझे देखा तो बड़े उत्साह से चिल्लाते हुए मुझसे मिलने के लिए दौड़े, और मेरी पीठ पर ज़ोरों के कई धौल जमा दिये। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि वे मुझसे मिलकर इतने प्रसन्न होंगे।

"फ़ेद्या रिब्किन कहां है?" ग्रीशा वसील्येव ने पूछा।

"ठीक तो है, अपना फ़ेद्या कहां है?" लड़के चिल्लाये। "तुम दोनों तो हमेशा साथ-साथ रहते थे, उसे कहां छोड़ दिया?"

"फ़ेद्या चला गया," मैंने उत्तर दिया। "वह अब स्कूल नहीं आयेगा।"

"क्यों?"

"वह अपने माता-पिता के साथ दूसरे शहर चला गया है।"

"आखिर क्यों?"

"बस चला गया, और क्यों?"

"तुम उड़ा रहे हो!" आलिक सोरोकिन ने कहा।

"बिलकुल नहीं।"

तमाम लड़कों ने मेरी ओर देखा और खिसिया कर दांत निकाल दिये। वे समझते थे कि मैं उनको उल्लू बना रहा हूं।

"वान्या पख़ोमोव भी यहां नहीं है," लेन्या अस्ताफ़्येव ने कहा।

"सेर्योझा बुकातिन भी नहीं है!" लड़के चिल्लाये।

"शायद वे लोग भी बाहर चले गये हैं और हमें इस बारे में कुछ भी मालूम नहीं," तोल्या द्योजकिन ने कहा।

तभी फाटक खुला और जो प्रकट हुआ वह कोई दूसरा नहीं, बल्कि वान्या पख़ोमोव ही था।

"हुर्रा!" हम चीखे और वान्या से मिलने के लिए उस पर टूट पड़े।

"अरे भई, मुझे जाने दो!" वह चिल्लाया और निकल भागने की कोशिश करने लगा। "क्या तुम लोगों ने इससे पहले कभी कोई इन्सान नहीं देखा है?"

किन्तु हम सब उसकी पीठ पर धौल जमाने की फ़िक्र में थे। मैं भी उसकी पीठ पर धौल जमाना चाहता था, लेकिन मैंने इसके बजाय, ग़लती से उसके सिर पर रसीद कर दिया। वान्या नाराज़ हो गया।

"लड़ना चाहते हो, है न?" वह चिल्लाया और अपनी पूरी शक्ति से निकल जाने के लिए संघर्ष करने लगा। लेकिन हमने उसे नहीं छोड़ा। मैं नहीं जानता स्थिति कौन सी करवट लेती, यदि इसी क्षण सेर्योझा बुकातिन न आया होता। जिस क्षण हमने उसे देखा, हमने वान्या को छोड़ दिया और उस पर टूट पड़े।

"अब ठीक है, हम सभी मौजूद हैं," जेन्या कोमारोव बोला।

"फ़ैद्या रिब्किन को छोड़ कर," ईगोर ग्राचोव ने कहा।

"वह चला ही गया है तो हम उसे कैसे गिन सकते हैं?"

"लेकिन शायद यह सही नहीं है। हम ओल्गा निकोलायेव्ना से पूछेंगे।"

"यह सच है, तुम लोग इस पर विश्वास करो या न करो; मुझे इसकी कोई परवाह नहीं," मैंने कहा।

इसके बाद हम एक दूसरे की ओर दृष्टि डालने लगे और आपस में बताने लगे कि हमने गर्मियों की छुट्टियां किस प्रकार बितायीं। कुछ पायनियर शिविरों में चले गये थे और दूसरे अपने माता-पिता के साथ देहात चले गये थे। हम सभी लम्बे हो गये थे और काफ़ी सांवले पड़ गये थे। लेकिन ग्लेब स्कमेइकिन जैसा सांवला कोई और नहीं हुआ था। वह तो ऐसा मालूम होता था जैसे उसे अलाव की आंच पर भूना गया हो। दूसरों की अपेक्षा उसकी भवें बहुत ही अजीब और सफ़ेद-सी दिखाई पड़ रही थीं।

"तुम्हारा रंग इतना गेहुआं कैसे पड़ गया?" तोल्या द्योजकिन ने उससे पूछा। "मालूम होता है गर्मियों भर शिविर में ही रहे हो?"

"नहीं। शिविर में तो मैं केवल कुछ ही सप्ताह रहा, लेकिन बाद में क्रीमिया चला गया था।"

"क्रीमिया?"

"हां, पिताजी के कारख़ाने ने उन्हें वहां अवकाश-गृह में भेजा था, और वह मुझे और माताजी को भी अपने साथ लेते गये।"

"तो तुम क्रीमिया हो आये?"

"हां!"

"और तुमने समुद्र देखा है?"

"अरे हां! समुद्र और सब कुछ।"

लड़के ग्लेब के चारों ओर जमा हो गये और उसको ऐसे घूरने लगे जैसे वह कोई महत्वपूर्ण वस्तु हो।

"अच्छा तो हमें समुद्र के बारे में बताओ," सेर्योझा बुकातिन ने कहा।

"यह... यह बहुत ही बड़ा है," ग्लेब ने प्रारम्भ किया। "इतना बड़ा कि अगर तुम इसके एक तट पर खड़े हो जाओ, तो तुम्हें दूसरा तट नज़र नहीं आयेगा। इसके एक ओर तो तट है और दूसरी ओर कुछ नहीं, केवल जल ही जल। तुम विश्वास नहीं करोगे कि संसार में इतना जल है। और वहां सूरज में इतनी गर्मी होती है कि इसने मेरी खाल ही उधेड़ डाली।"

"क्या गप्प मारी है!"

"सच मानो! पहले तो मैं ख़ुद कुछ डर सा गया था, लेकिन ऐसा हुआ कि मेरी चमड़ी के नीचे दूसरी खाल निकली। और अब मैं अपनी दूसरी खाल के चोले में चल फिर रहा हूँ।"

"अपनी बेहूदा खाल की बात छोड़ो, हमें समुद्र के बारे में बताओ!"

"अभी एक मिनट में... समुद्र...ओह, बस विशाल-विस्तृत! और उसमें अनन्त, अथाह जल ही जल है! जल का एक पूरा समुद्र!"

मैं नहीं जानता कि ग्लेब स्कमेइकिन समुद्र के विषय में हमें और क्या-क्या बताता, लेकिन उसी समय वोलोद्या आ गया। उसके आने पर जो शोर-गुल हुआ, उसे आप सुनते! हमने उसे चारों ओर से घेर लिया और सबने एक साथ बात करनी शुरू कर दी। हम जानना चाहते थे कि वह इस वर्ष भी हमारा पायनियर-नेता बना रहेगा अथवा हमें किसी और को लेना पड़ेगा।

"अब, जैसा कि तुम भली भाँति जानते हो, मैं तुम्हें किसी और के हवाले नहीं करूंगा। पिछले साल की तरह हम सब एक साथ मिल-जुल कर काम करेंगे। तुम लोग मुझसे ऊब न गये हो और कोई परिवर्तन न चाहते हो, तो?" वोलोद्या ने हंसते हुए कहा।

"तुमसे और ऊबना? हम तुमसे कभी नहीं ऊबेंगे। हमें तुम्हारे साथ रहने से हमेशा बहुत आनन्द मिलता है।"

वोलोद्या ने हमें बताया कि उसने और उसके मित्रों ने रबड़ की नौका में नदी की यात्रा की थी। इसके बाद वह हमसे पुनः मिलने के लिए कह कर अपने सहपाठियों में जा मिला। वह भी हमारी ही तरह अपने मित्रों से बातचीत करना चाहता था।

हमें उसे जाते देख कर दुख हुआ, लेकिन तभी ओल्गा निकोलायेव्ना आ गईं। हम सब उन्हें देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए।

"नमस्कार, ओल्गा निकोलायेव्ना!" हम सब एक साथ बोल उठे।

"नमस्कार, बच्चो," उन्होंने मुस्कान सहित उत्तर दिया। "अच्छा, क्या तुमने गर्मियाँ अच्छी तरह बितायीं?"

"बहुत मज़े से, ओल्गा निकोलायेव्ना।"

"खूब विश्राम किया?"

"जी हां!"

"क्या तुम लोग विश्राम से ऊब गये हो?"

"हां, ओल्गा निकोलायेव्ना! हम पढ़ना चाहते हैं!"

"यह खुशी की बात है!"

"मैं विश्राम करते-करते बिलकुल थक गया हूं। मुझे एक दिन और विश्राम करना पड़े, तो मुझे बिलकुल ठंडा हुआ ही समझो," आलिक सोरोकिन ने कहा।

"अच्छा, आलिक, मैं देख रही हूं अभी भी तुम वैसे ही हंसी के पिटारे बने हुए हो।"

"मैं बिल्कुल वही हूं, बस ज़रा लम्बा हो गया हूं, ओल्गा निकोलायेव्ना।"

"मेरे ख्याल में तो काफ़ी लम्बे हो गये हो!" हंसते हुए ओल्गा निकोलायेव्ना ने कहा।

"लेकिन कोई ख़ास चुस्त नहीं," यूरा कसात्किन ने बीच में टोका।

हम सब की हंसी गूंज उठी।

"ओलगा निकोलायेव्ना, फ़ेद्या रिब्किन अब स्कूल नहीं आयेगा," दीमा बाबुश्किन ने कहा।

"हां, मैं जानती हूं। वह अपने माता-पिता के साथ मास्को चला गया है।"

"ओलगा निकोलायेव्ना, ग्लेब स्कमेइकिन क्रीमिया गया था और उसने समुद्र देखा है।"

"बहुत ख़ूब! जब हम निबन्ध लिखेंगे, तो ग्लेब समुद्र के बारे में लिख सकता है।"

"ओलगा निकोलायेव्ना, उसकी तमाम चमड़ी उधड़ गयी थी।"

"किसकी चमड़ी?"

"ग्लेब की।"

"ओह! अच्छा, इसके बारे में तमाम बातचीत हम बाद में करेंगे। अब पंक्तिबद्ध होकर कक्षा में चलने के लिए तैयार हो जाओ।"

हम पंक्ति में खड़े हो गये और ऐसा ही दूसरी कक्षाओं ने किया। डायरेक्टर ईगोर अलेक्सान्द्रोविच बाहर आये और हमारे पुनः स्कूल आने के उपलक्ष में हमारा स्वागत किया और हमारे अध्ययन के लिए अपनी शुभकामना प्रकट की। इसके पश्चात अध्यापक कक्षानुसार छात्रों को अपनी कक्षाओं में ले गये। सर्वप्रथम सबसे छोटे, उसके बाद क्रमशः दूसरी और तीसरी। तत्पश्चात हमारी बारी आयी और बाद में बड़ी कक्षाओं की बारी आई।

ओलगा निकोलायेव्ना हमें अपनी कक्षा में ले गईं। हमने वही डेस्कें लेने का निर्णय किया, जिन पर हम पहले बैठते थे। मैं अकेला रह गया, क्योंकि मेरे डेस्क का कोई दूसरा साझीदार नहीं था। पहले तो हमें अपना कमरा पिछले वर्ष की अपेक्षा छोटा लगा, किन्तु ओल्गा निकोलायेव्ना ने समझाया कि वह इसलिये छोटा नज़र आ रहा था कि हम बड़े हो गये हैं।

वह ठीक थीं। मैं दोपहर की छुट्टी में विशेष रूप से तीसरी कक्षा के कमरों में से एक में गया और उसे ठीक अपने कमरे के ही आकार का पाया।

ओल्गा निकोलायेव्ना ने हमें बताया कि अब हम चौथी कक्षा में आ गये हैं, इसलिये हमें पहले की अपेक्षा अधिक परिश्रम करना पड़ेगा, क्योंकि हमारे पास कितने ही नये विषय आ गये थे। रूसी, गणित और दूसरे विषय, जो गत वर्ष हमारे पास थे, उनके अतिरिक्त अब भूगोल, इतिहास और प्रकृति-ज्ञान और होंगे। इसके मायने हैं कि हमें अपना काम प्रारम्भ से ही परिश्रमपूर्वक करना पड़ेगा ताकि पीछे न रह जायें। हमने नया कार्यक्रम लिख लिया, और ओल्गा निकोलायेव्ना ने हमें अपना मानीटर और उप-मानीटर चुनने का आदेश दिया।

"ग्लेब स्कमेइकिन, मानीटर! ग्लेब स्कमेइकिन!" लड़के चिल्लाये।

"ख़ामोश, लड़को! तुम्हें इतना शोर नहीं मचाना चाहिये। तुम्हें चुनाव का तरीका नहीं मालूम? जो कोई बोलना चाहे, अपना हाथ उठाये।"

इसके बाद हमने बाक़ायदा अपने चुनाव किये। ग्लेब स्कमेइकिन को मानीटर चुना गया और शूरा मालिकोव को उप-मानीटर।

दूसरे घंटे में ओल्गा निकोलायेव्ना ने कहा कि हम अपनी पिछली पढ़ाई को दोहराने से प्रारम्भ करें, ताकि वह देख सकें कि हम छुट्टियों में कितना भूले हैं। उन्होंने उसी समय से जांच-

पड़ताल प्रारम्भ कर दी, और उससे पता चला कि मैं पहाड़े भी भूल गया हूं यद्यपि पूरे नहीं, — केवल अन्त के याद नहीं रहे थे। मुझे अच्छी तरह याद था कि सात सत्ते उनचास होते हैं, लेकिन इसके बाद मेरी सिट्टी गुम हो गयी।

"अच्छा, मलेयेव!" (यह मेरा नाम है), "तो पूरी गर्मियों में तुमने अपनी पुस्तकों को हाथ तक नहीं लगाया!" ओल्गा निकोलायेव्ना ने कहा।

ओल्गा निकोलायेव्ना जब नाराज़ होती हैं, तो मुझे मेरे दूसरे नाम से पुकारती हैं। वैसे वह मुझे वीत्या कहती हैं।

मैंने यह देखा है कि कुछ कारणों से साल के प्रारम्भ में पढ़ाई करना अपेक्षाकृत अधिक कठिन है। पाठ घिसटते चलते हैं, जैसे कोई उन्हें जान-बूझ कर खींच रहा हो। यदि मैं तमाम स्कूलों का मुख्य अधिकारी होता, तो एकदम ही पढ़ाई शुरू नहीं होने देता। मैं छात्रों को खेलने के बजाय धीरे-धीरे पढ़ाई की ओर मन लगाने के अभ्यास का अवसर देता। उदाहरण के लिए, पहले सप्ताह में एक पाठ रोज़ काफ़ी होता, दूसरे में दो, तीसरे में तीन तथा इसी प्रकार आगे। ऐसा भी हो सकता था कि आपको प्रथम सप्ताह केवल सरल पाठ ही दिये जाते, जैसे व्यायाम-कसरत, दूसरे सप्ताह में गायन को सम्मिलित किया जा सकता था और तीसरे में रूसी को, तथा यह क्रम इसी प्रकार चलता जबतक कि गणित की बारी न आती। मैं किसी को यह जताना नहीं चाहता कि मैं सुस्त हूं, और यह कि मैं आम तौर पर स्कूल जाना पसन्द नहीं करता, क्योंकि यह सच नहीं है। मुझे स्कूल बहुत पसन्द है, किन्तु तमाम गर्मियाँ खेलते रहने और अपनी मनमानी करने के बाद अचानक पाठों में जुत कर गाड़ी खींचना सचमुच कठिन है।

तीसरा घंटा भूगोल का था। मैं हमेशा से यही सोचता था कि भूगोल गणित की तरह ही बहुत कठिन विषय है। किन्तु यह बहुत ही सरल सिद्ध हुआ। भूगोल भूमि सम्बन्धी विज्ञान है; इससे आपको पहाड़ों और नदियों, समुद्रों तथा महासागरों का पूरा परिचय मिलता है। ओल्गा निकोलायेव्ना ने बताया कि पृथ्वी गेंद की तरह गोल है। मैंने यह पहले भी सुना था, लेकिन इसे गप्प समझता था। मेरा हमेशा से यही ख़्याल था कि पृथ्वी केक की तरह चपटी है। किन्तु अब मालूम हुआ कि मैं ग़लत था। विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि पृथ्वी एक अत्यन्त विशाल गेंद है और लोग इसके सभी ओर रहते हैं। यह इसलिए कि पृथ्वी प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है, इन्सानों और जानवरों को तथा अपने ऊपर की तमाम वस्तुओं को; और यही कारण है कि जो लोग इसके निचले भाग में रहते हैं, वे गिर नहीं पड़ते। यहां यह बात और भी है कि जो लोग निचले भाग में रहते हैं वे सिर के बल चलते हैं। बस इतना है कि उन्हें यह नहीं मालूम होता कि वे सिर के बल चल रहे हैं। वे समझते हैं कि वे पांवों के बल चल रहे हैं। यदि वे झुक कर अपने पांवों के नीचे देखते हैं, तो उन्हें वह ज़मीन दिखाई देती है जिस पर वे खड़े हैं; और जब ऊपर देखते हैं तो आकाश दिखाई देता है। इसीलिए वे समझते हैं कि वे अपने पांवों के बल चल रहे हैं।

हमने भूगोल के घण्टे में काफ़ी ग्रानन्द लिया। दूसरे घण्टे में एक मज़ेदार घटना घटी। घंटी बज चुकी थी ग्रौर ग्रोल्गा निकोलायेव्ना कमरे में ग्रा चुकी थीं, कि ग्रचानक दरवाज़ा खुला ग्रौर एक लड़का ग्रन्दर दाख़िल हुग्रा। वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ की स्थिति में कुछ क्षण दरवाज़े पर खड़ा रहा, फिर उसने ग्रोल्गा निकोलायेव्ना की ग्रोर गर्दन झुकाते हुए कहा :

"नमस्कार!"

"नमस्ते," ग्रोल्गा निकोलायेव्ना ने उत्तर दिया। "तुम क्या चाहते हो?"

"जी, कुछ नहीं।"

"जब तुम्हें कुछ नहीं चाहिये, तो ग्रन्दर क्यों ग्राये?"

"मैं पढ़ने ग्राया हूं। यह चौथी ही है न?"

"हां।"

"मेरा भी यही ख़्याल था।"

"मालूम होता है तुम नये लड़के हो?"

"जी हां।"

ग्रोल्गा निकोलायेव्ना ने ग्रपना रजिस्टर खोल कर देखा।

"तुम्हारा नाम शिशकिन है?"

"जी हां। कोस्त्या शिशकिन।"

"तुम इतनी देर से क्यों ग्राये, कोस्त्या शिशकिन? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि स्कूल सुबह से शुरू होता है?"

"जी, ग्राया तो मैं सुबह ही था। बस, पहले घंटे में ही उपस्थित नहीं हो सका।"

"पहला घंटा? लेकिन ग्रब तो चौथा घंटा चल रहा है। पिछले घंटों में तुम कहां रहे?"

"पांचवीं कक्षा में!"

"वहां पांचवीं कक्षा में तुम क्या कर रहे थे?"

"जी, बात यह है कि जब मैं स्कूल ग्राया, तो घंटी सुनायी दी ग्रौर जल्दी जल्दी कक्षा में घुसते हुए लड़कों की भीड़ नज़र ग्राई, ग्रौर मैं उनके साथ हो लिया। यह कक्षा पांचवीं निकली। घंटा समाप्त होने पर उन्होंने मुझ से पूछा कि क्या मैं नया लड़का हूँ ग्रौर मैंने हामी भर दी। उन्होंने मुझ से ग्रौर कुछ नहीं पूछा, ग्रौर इसीलिए मुझे काफ़ी देर तक यह नहीं मालूम हुग्रा कि मैं ग़लत कक्षा में घुस ग्राया हूं।"

"ग्रच्छा बैठ जाग्रो। कोशिश करना कि भविष्य में किसी ग़लत कक्षा में न घुस पड़ो," ग्रोल्गा निकोलायेव्ना बोलीं।

शिशकिन मेरे डेस्क पर ग्राकर मेरे बराबर बैठ गया, क्योंकि मेरे बराबर वाली सीट खाली थी। तमाम घण्टे लड़के उसकी तरफ़ देखते ग्रौर मुंह बिचकाते रहे। किन्तु उसने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने ऐसा दिखाया, जैसे कोई बात ही नहीं हुई हो। उसका चेहरा बड़ा

अजीब था। उसका निचला होठ आगे निकला हुआ था और उसकी नाक हवा में ऊपर उठी हुई, जिस से उसकी मुद्रा तिरस्कारपूर्ण और उपेक्षा भरी दिखाई देती थी।

जब घण्टा समाप्त हुआ, तो लड़कों ने उसे घेर लिया।

"तुम पांचवीं कक्षा में कैसे घुस पड़े थे? क्या अध्यापिका ने हाज़िरी लेते समय नाम नहीं पुकारा था?" स्लावा वेदेरनिकोव ने उससे पूछा।

"शायद उन्होंने पहले घण्टे में ऐसा किया हो, लेकिन तुम्हें मालूम ही है कि मैं दूसरे घण्टे से पहले वहां मौजूद ही नहीं था।"

"लेकिन यह कैसे हो सकता है कि उन्होंने दूसरे घण्टे में तुम्हारी तरफ़ ध्यान ही न दिया हो?"

"क्योंकि पहले घण्टे में दूसरी अध्यापिका थीं," शिशकिन ने उत्तर दिया। "पांचवीं, चौथी की तरह नहीं है। उसमें हर घण्टे में दूसरा अध्यापक होता है, और जब तक अध्यापक तमाम लड़कों को जान न लें, इस तरह की गड़बड़ी हो सकती है।"

"इस तरह की गड़बड़ी किसी और के साथ तो कभी नहीं हुई," ग्लेब स्कमेइकिन ने कहा। "प्रत्येक छात्र से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी कक्षा को जाने।"

"और वह नया लड़का हो, तो?" शिशकिन ने कहा।

"नये लड़के को देर से नहीं आना चाहिए। तुम्हारे मुंह में ज़बान भी है या नहीं? तुमने पूछा क्यों नहीं?"

"इसके लिए समय ही नहीं था। मैंने लड़कों को कक्षा की ओर भागते देखा और मैं भी उनके पीछे हो लिया।"

"इस तरह तो तुम दसवीं में भी घुस सकते थे!"

शिशकिन झुंझलाया। "मैं इतना मूर्ख नहीं हूं," उसने कहा। "दसवीं के तमाम विद्यार्थी मुझसे कहीं अधिक बड़े हैं।"

मैंने अपनी पुस्तकें संभालीं और बाहर निकल आया। बाहर बरामदे में ओल्गा निकोलायेव्ना से भेंट हो गई।

"क्यों, वीत्या, तुम्हारा इरादा इस वर्ष भी परिश्रम से काम करने का है या नहीं?" उन्होंने मुझसे पूछा। "तुम्हें वास्तव में परिश्रम की आवश्यकता है। तुम्हें गणित पर विशेष रूप से ध्यान देना पड़ेगा। पिछले वर्ष भी तुम इसमें सबसे ज़्यादा कमज़ोर थे। तुम्हें अपने पर शर्म आनी चाहिए कि तुम्हें पहाड़े तक याद नहीं। दूसरी जमात के छोटे-छोटे बच्चों तक को रटे हुए हैं।"

"मैं केवल अन्त के कुछ भूल गया हूं।"

"तुम्हें पहाड़े शुरू से आख़िर तक ख़ूब अच्छी तरह याद होने चाहिये, नहीं तो तुम चौथी में बिलकुल नहीं चल सकोगे। अब ख़्याल रखना कि तुम्हें ये कल तक भली प्रकार याद हो जाने चाहिये।"



दूसरा अध्याय

तमाम लड़कियां अपने आपको चतुर समझती हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि उन्हें अपने बारे में ऐसा भ्रम क्यों है। मेरी छोटी बहन लीका को ही लीजिये। केवल इसलिए कि वह तीसरी में पढ़ती है, अब वह मेरी आज्ञा मानने की आवश्यकता नहीं समझती। कोई यह समझेगा कि मैं उसका बड़ा भाई हूं ही नहीं और मुझे उस पर कोई अधिकार नहीं। मैंने उससे कितनी ही बार कहा है कि स्कूल से घर आते ही अपनी पुस्तकों को लेकर न बैठ जाया कर। यह तेरे लिए अच्छा नहीं है। हर आदमी यह जानता है कि तमाम दिन स्कूल में पढ़ते-पढ़ते दिमाग़ थक जाता है, इसलिए घर के लिए दिया गया काम करने से पहले घण्टे-दो-घण्टे अपने दिमाग़ को आराम देना चाहिये। लेकिन लीका से बात करना दीवार से बात करने के बराबर है।

उस दिन जब मैं घर लौटा, तो वह मेज़ पर अपनी स्कूल की पुस्तकें फैलाये काम पर जुटी हुई थी।

"ऐ लड़की! इधर देखो!" मैंने कहा। "तुम्हें मालूम भी है तुम क्या कर रही हो? तुम्हें इतना तक पता नहीं कि स्कूल से लौटने के बाद दिमाग़ को आराम दिया जाना चाहिये?"

"हां-हां!" वह बोली। "मैं यह सब जानती हूं। लेकिन मजबूरी है, वीत्या। मैं चाहती हूं कि अपना स्कूल का काम ख़त्म कर लूं, ताकि इससे निपट कर अपभी मर्ज़ी से जो चाहूं, कर सकूं।"

"तू बेवकूफ़ है," मैं कहता रहा। "क्या हम बारबार उन्हीं बातों को दोहराये जायेंगे? जैसा बड़े कहते हैं, तू वैसा क्यों नहीं करती? अच्छी बात है, तेरा दिमाग़ ठस हो जाये, तो फिर मुझे दोषी मत ठहराना।"

"लेकिन, वीत्या, तुम इतनी सी बात क्यों नहीं समझते कि जब तक स्कूल का काम ख़त्म न कर लूं, मुझे चैन नहीं मिल सकता?"

"'नहीं सकता' जैसी कोई चीज़ दुनिया में नहीं है," मैंने उसे बताया। "पहले तुम्हें आराम करना चाहिए और उसके बाद अपनी पढ़ाई।"

"नहीं, मैं स्कूल का काम पहले और उसके बाद आराम करना चाहूँगी। फिर घर के लिए दिया गया काम आसान भी तो होता है। तुम्हारे काम की तरह नहीं।"

"नहीं, मैं दावे के साथ यह कह सकता हूं कि ऐसा नहीं है," मैंने कहा। "ज़रा ठहर जा; जब चौथी में पहुंचेगी, तो पता चलेगा कि यह कितना कठिन है।"

"तुम्हें घर के लिए आज क्या काम मिला है?"

"जा, यह तेरी समझ से बाहर की चीज़ है," मैंने उत्तर दिया।

मैं उसे साफ़-साफ़ यह नहीं बता सकता था कि मुझे पहाड़े जैसा दूसरी जमात का सबक याद करना है। भला कहीं बता सकता था?

मैंने निश्चय कर लिया था कि पूरी मेहनत के साथ काम प्रारम्भ करके अपनी पढ़ाई का सिलसिला शुरू से ही भली प्रकार चलाऊं, और मैं फ़ौरन ही पहाड़े ले कर बैठ गया। बेशक, जब तक लीका वहां रही, मैं उन्हें ऊंचे स्वर में दोहराने का साहस नहीं कर सका, लेकिन वह शीघ्र ही अपना काम समाप्त करके अपने दोस्तों के साथ खेलने बाहर भाग गई। जैसे ही वह बाहर गई, मैंने पहाड़ों को ज़ोर-ज़ोर से रटना शुरू कर दिया और अन्त में उन्हें इतनी अच्छी तरह घोट लिया कि यदि आप रात में कभी भी मुझे जगाकर पूछते कि सात सत्ते अथवा आठ गुणा नौ कितने होते हैं, तो मैं आपको सही उत्तर देता।

अगले ही दिन ओल्गा निकोलायेव्ना ने मुझे कक्षा में पुकारा और पहाड़े सुनाने के लिए कहा।

"देखो, तुम यदि प्रयत्न करो, तो तुम कितनी अच्छी तरह याद कर सकते हो!" उन्होंने कहा। "मैं जानती हूं, अगर तुम इस्तेमाल कर सको, तो दिमाग़ तुम्हारा अच्छा है।"

स्थिति संभली रहती यदि ओल्गा निकोलायेव्ना पहाड़ों तक ही सीमित रहतीं। लेकिन वह आगे बढ़ीं और उन्होंने मुझ से ब्लेकबोर्ड पर एक सवाल हल करने के लिए कहा। और इसी ने सब गुड़ गोबर कर दिया।

मैं ब्लेकबोर्ड के पास पहुंचा और ओल्गा निकोलायेव्ना ने मकान बनाने वाले कुछ बढ़इयों के सम्बन्ध में एक सवाल लिखवाया। मैंने पूरा सवाल लिख लिया और सोचने लगा कि इसे कैसे हल किया जाये। लेकिन साफ़ बात यह है कि मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। यह एक कठिन सवाल था और मैं जानता था कि किसी भी हालत में यह मुझ से हल होने वाला नहीं है। मैंने ओल्गा निकोलायेव्ना को यह दिखाने के लिए कि मैं परिश्रमपूर्वक सोच रहा हूं, अपने माथे में बल डाल लिये, और बीच में पागल की तरह सहायता के लिए दूसरे लड़कों की तरफ़ इशारे करने लगा। लेकिन ब्लेकबोर्ड पर खड़े किसी लड़के को चुपके से बता सकना आसान नहीं है, इसलिए सब चुप बैठे रहे।

"अच्छा, तो तुम इस सवाल को किस तरह हल करोगे?" ओल्गा निकोलायेव्ना ने पूछा। "सब से पहले तुम क्या करोगे?"

मैंने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं, आधा लड़कों की तरफ़ मुड़ा और जैसा कि मैं अधिक से अधिक कर सकता था, मैंने आंख मिचकाई। उन्होंने देख लिया कि मेरी हालत बुरी है तो उन्होंने हल फुसफुसाना शुरू कर दिया।

"ख़ामोश रहो, लड़को! उसे बताने की कोशिश मत करो। यदि उसे ग्रावश्यकता पड़ी, तो मैं स्वयं उसकी सहायता करूंगी," ग्रोल्गा निकोलायेव्ना ने कहा।

उन्होंने मुझे सवाल समझाया ग्रौर बताया कि इसके पहले भाग को किस प्रकार करना है। मैंने यह सब सही सही लिख लिया, यद्यपि मेरी समझ में कुछ नहीं ग्राया।

"बिलकुल ठीक," ग्रोल्गा निकोलायेव्ना बोलीं। "ग्रब हमें ग्रागे क्या करना है?"

मैंने सोचने का बहाना किया ग्रौर लड़कों को सख़्ती के साथ घूरा। उन्होंने फिर फ़ुसफ़ुसाना शुरू कर दिया।

"ख़ामोश! मैं तुम्हारी हर बात सुन रही हूं। तुम बेकार ही टांग ग्रड़ा रहे हो," ग्रोल्गा निकोलायेव्ना ने कहा ग्रौर फिर समझाने लगीं।

ग्रोल्गा निकोलायेव्ना की सहायता तथा कुछ कुछ लड़कों के संकेत से, मैंने सवाल निकाल ही लिया।

"क्या तुम ग्रब विश्वास के साथ कह सकते हो कि इस प्रकार के सवाल निकालने का तरीका तुम्हारी समझ में ग्रा गया है?" ग्रोल्गा निकोलायेव्ना ने मुझ से पूछा।

मैंने हां कर दी, यद्यपि मेरी समझ में कुछ भी नहीं ग्राया था। किन्तु यह कहते हुए मुझे शर्म ग्रा रही थी। दूसरे, मुझे डर था, यदि मैंने कहा कि मेरी समझ में नहीं ग्राया, तो कहीं ग्रोल्गा निकोलायेव्ना मुझे ख़राब नम्बर न दे दें। मैं ग्रपने स्थान पर लौट ग्राया, सवाल ग्रपनी कापी में उतारा ग्रौर घर जा कर इस पर मेहनत करने का निश्चय किया।

घण्टा समाप्त होने पर मैंने लड़कों से पूछा:

"इस तरह बताने की क्या तुक है कि ग्रोल्गा निकोलायेव्ना सुन लें? तुम्हें यह भी नहीं मालूम कि बताया किस तरह जाता है? तुम लोग इतने ज़ोर से चिल्लाते थे कि ग्राश्चर्य है कि दूसरे कमरे वालों ने नहीं सुना।"

"तुम हमसे ऐसी हालत में कुछ बता सकने की ग्राशा किस प्रकार कर सकते हो, जब कि तुम ब्लेकबोर्ड के सामने खड़े हो!" वास्या येरोखिन ने कहा। "यह तुम्हारे ग्रपने डेस्क पर खड़े होने की तरह नहीं है..."

"यह कोरा बहाना है। तुम्हें धीरे से बताना चाहिये था, ताकि कोई दूसरा न सुन पाता।"

"मैंने ऐसा ही किया था, लेकिन तुम सुन ही न पाये कि मैंने क्या कहा।"

"तब तुम ग्रपनी नाक में ही गुनगुनाये होगे," मैंने कहा।

"ग्रब तुम्हें कैसे ख़ुश किया जाये, है कोई तरीका? तुम्हें ख़ुद नहीं मालूम कि चाहते क्या हो!"

"यह बताने-बताने का सिलसिला ही ग़लत है," वान्या पख़ोमोव बोल उठा। "तुम्हें ख़ुद सीखना चाहिये कि सवाल किस तरह निकाले जाते हैं। यह नहीं कि उत्तर के लिए तुम दूसरों का मुंह देखो।"

"जब मैं इस तरह के बेहूदा सवालों को कर ही नहीं सकता, तो मैं बेकार की माथापच्ची क्यों करूं?" मैं बोला।

"यह इसलिए कि तुम अपना दिमाग़ इस्तेमाल ही नहीं करना चाहते," ग्लेब स्कमेइकिन ने कहा। "तुम ख़ुद करने की जगह इस बात में विश्वास रखते हो कि दूसरे तुम्हारे लिए सोचें। आगे से मैं किसी को भी नहीं बताऊंगा। लेकिन मैं कह देता हूं, आइन्दा क्लास में कोई हंगामा न हो।"

"तुम नहीं बताओगे तो क्या, दूसरे तो बतायेंगे," मैं बोला।

"अच्छी बात है! मैं यह इशारे से बताने का सिलसिला बिलकुल ही ख़त्म करा दूंगा।"

"अच्छा जी! इतना दम है तुम्हारे में—क्यों?"

"दम-वम का इससे कोई वास्ता नहीं। मैं मानीटर हूं, और मैं इस तरह चुपके-चुपके बताने का सिलसिला नहीं चलने दूंगा।"

"तुम मानीटर हो, तो तुम्हें ऐसी अकड़ दिखाने की ज़रूरत नहीं। तुम हमेशा मानीटर नहीं रहोगे। तुम अच्छी तरह जानते हो कि अगली बार लड़के मुझे भी चुन सकते हैं।"

"हो सकता है चुन लें, लेकिन अभी तक नहीं चुना है। इसलिए अभी से बड़बड़ क्यों करते हो?"

दूसरे लड़के भी आ पहुंचे और कक्षा में संकेत देने के सम्बन्ध में वाद-विवाद प्रारम्भ हो गया। वाद-विवाद किसी निर्णय पर नहीं पहुंच सका, क्योंकि दीमा बलाकिरेव दौड़ता हुआ आया। उसने बताया कि ऊंची कक्षाओं के विद्यार्थियों ने स्कूल के पीछे वाले मैदान में, जो सभी का है, फ़ुटबाल का मैदान बना लिया है। हमने निर्णय किया कि छुट्टी होने पर हम सब खेलने के लिए वहां एकत्रित होंगे।

सायंकालीन भोजन के पश्चात हम मैदान में एकत्रित हुए और दो पालियां बना लीं। आरम्भ में तो हमारी टीम में कुछ गड़बड़ हुई, क्योंकि कोई भी गोलची नहीं बनना चाहता था। हर कोई पूरे मैदान में दौड़ कर गोल करने का अवसर प्राप्त करना चाहता था। उन्होंने मुझे गोलची बनाना चाहा। किन्तु मैं सेंटर फ़ारवर्ड बनना चाहता था, यह नहीं तो कम-से-कम हाफ़बैक तो ज़रूर रहना चाहता था। सौभाग्यवश मेरे स्थान पर शिशकिन, नये लड़के, ने गोलची बनना स्वीकार कर लिया। उसने अपनी वास्कट उतार दी और अपनी जगह संभाल ली। खेल आरम्भ हो गया।

प्रारम्भ में दूसरे पक्ष ने लाभ उठाया। वे हमारे गोल पर हमला करते रहे। हमारे पक्ष में बड़ी दौड़-धूप थी, लेकिन बात वहीं-की-वहीं बनी रही। सौभाग्यवश हमारे लिए शिशकिन बहुत ही बढ़िया गोल-रक्षक सिद्ध हुआ। वह बिल्ली अथवा चीते की तरह लपकता और कोई भी गेंद गोल में न घुसने देता। अन्त में हम धीरे-धीरे गेंद को दूसरे सिरे पर ले गये। तत्पश्चात एक मुठभेड़ के बाद, हमारे किसी साथी ने हमारी ओर से एक गोल मार दिया! इससे हमारी हिम्मत बढ़ी और हम उन्हें चारों ओर से घेर कर दबाते रहे। थोड़ी ही देर बाद हमने दूसरा गोल मार दिया और हमारे दो गोल हो गये। परन्तु इसके बाद तमाम खेल हमारी ओर ही होता रहा और हमारी हालत बहुत ही खराब

होती जा रही थी। हमारी जानों पर आ बनी थी। इसलिए शिशकिन ने गेंद उठा ली और सीधा दौड़ कर पूरी शक्ति के साथ दूसरे गोल पर ले गया। वह गेंद पर कस कर ठोकर मारने ही वाला था कि ईगोर ग्राचोव ने उससे छीन ली और स्लावा वेदेरनिकोव की ओर बढ़ा दी। स्लावा वेदेरनिकोव ने वान्या पख़ोमोव के पास और इससे पहले कि हमें मालूम हो कि क्या हुआ, वह फिर लौट कर हमारी ओर आ गई; फिर किसी ने उसे हमारे खुले गोल में धकेल दिया। अब हमारे दो गोल और उनका एक। दूसरे पक्ष ने जब बराबरी का गोल किया तो शिशकिन फिर अपनी जगह से दूर था। हमने उसे अपनी जगह छोड़ने के लिए बुरा-भला कहा, और उसने वायदा किया कि बाक़ी खेल में वह अपने स्थान पर डटा रहेगा। लेकिन वह बाज़ नहीं आया। उसने मैदान में इधर से उधर तक अपनी दौड़ जारी रखी, और खाली गोल रहने के कारण विरोधी पक्ष को बहुत से अवसर मिल गये। खेल काफ़ी देर तक चलता रहा। हमने १६ गोल बनाये और विरोधी पक्ष ने २१! हम तो खेलते ही रहना चाहते थे, किन्तु अंधेरा इतना हो गया था कि गेंद ही मुश्किल से दिखाई पड़ती थी और हमें घर भी पहुंचना था। घर लौटते हुए रास्ते भर हम शिशकिन को कोसते रहे कि उसने गोल सूना छोड़ कर हरवा दिया।



"तुम अच्छे गोलची हो सकते हो, शिशकिन," यूरा कसात्किन बोला, "अगर तुम गोल पर जमे रहो। अगर तुमने ऐसा किया, तो हमारी टीम अजेय होगी।"

"मैं चुपचाप खड़ा नहीं रह सकता," शिशकिन ने उत्तर दिया। "इसीलिए मुझे बास्केट-बाल पसन्द है। इसके लिए किसी गोलची की ज़रूरत नहीं। सभी लोग दौड़ कर गेंद से खेल सकते हैं। हमें एक बास्केट-बाल की टीम बनानी चाहिये।"



शिशकिन ने हमें बताना शुरू किया कि बास्कट-बाल किस प्रकार खेली जाती है। हमें वह फुटबाल की तरह ही लगी।

"इस बारे में हमें अपने खेल-कूद के अध्यापक से बात करनी होगी। शायद वह बास्केट-बाल का मैदान दिलाने में हमारी मदद कर सकें," यूरा बोला।

जब हम अपनी गली के नुक्कड़ पर पहुंचे, तो अचानक शिशकिन चिल्ला पड़ा, "अरे, मैं अपनी वास्कट खेल के मैदान में ही भूल आया!" और वह वापस दौड़ पड़ा।

अजीब लड़का है! वह हमेशा इसी प्रकार की हरकतें करता रहता है।

जब मैं घर पहुंचा, तो आठ से अधिक बज चुके थे। इतनी देर बाहर रहने के कारण माताजी ने मुझे डांटा, किन्तु मैंने उन्हें समझाया कि वास्तव में देर नहीं हुई थी, बल्कि बात इतनी भर थी कि गर्मियों की अपेक्षा अंधेरा अब ज़रा जल्दी होना शुरू हो गया था। मैंने उन्हें बताया कि यदि गर्मियां होतीं, तो इसे कोई भी देर नहीं समझता, क्योंकि गर्मियों में दिन अब की अपेक्षा काफ़ी लम्बे होते हैं और इस समय तक काफ़ी उजाला रहता है और हर कोई यही समझता कि जल्दी ही है।



माताजी बोलीं कि मैं हमेशा कोई न कोई बहाना बना देता हूं, और उन्होंने मुझे तुरन्त ही अपनी पुस्तकें लेकर बैठ जाने का आदेश दिया। वैसे मैं भी यही करने जा रहा था। यद्यपि फ़ौरन ही नहीं, क्योंकि खेल के बाद मैं बहुत थक गया था और कुछ देर आराम की आवश्यकता का अनुभव करता था।

"तुम अपनी पढ़ाई क्यों नहीं कर रहे?" लीका ने मुझसे कहा। "अब तक तो तुम्हारा दिमाग़ काफ़ी आराम कर चुका होगा।"

"मुझे तुम्हारे यह बताने की ज़रूरत नहीं कि मेरे दिमाग़ को कितने आराम की ज़रूरत है," मैंने उत्तर दिया।

इसके बाद मैं तुरन्त ही अपनी पढ़ाई आरम्भ नहीं कर सका, क्योंकि लीका यह समझती कि मैं उसके कहने से ऐसा कर रहा हूं। अतः मैंने थोड़ी देर और विश्राम करने का निश्चय किया, और मैं उन्हें शिशकिन के विषय में बतलाता रहा कि कैसा विलक्षण लड़का है और कैसे वह अपनी वास्कट फ़ुटबाल के मैदान में भूल आया। उसी समय पिताजी काम से वापस लौटे। उन्होंने हमें बताया कि उनके कारख़ाने को कूइबिशेव जल-विद्युत केन्द्र के लिए मशीनें बनाने का आदेश प्राप्त हुआ है। इस प्रकार मैं फिर अपनी पढ़ाई नहीं कर पाया, क्योंकि मैं पिताजी की तमाम बातें सुनने के लिए उत्सुक था।



पिताजी फ़ौलाद के कारख़ाने में कार्य करते हैं। वह नमूने बनाते हैं। शायद ग्राप यह न जानते हों कि यह क्या बला है, इसलिए उचित होगा कि ग्रापको समझा दूं। मशीन के किसी भाग को ढालने से पहले ग्रापको वह भाग लकड़ी का बनाना होता है। इस लकड़ी के भाग को नमूना कहते हैं। ग्रापको नमूने की ग्रावश्यकता क्यों है, यह मैं ग्रापको बताता हूं। नमूने को सांचे में जमाया जाता है, जो लोहे के एक ऐसे सन्दूक की तरह होता है, जिसमें पेंदा न हो। इसके बाद सांचे में रेत भरते हैं ग्रौर जब नमूने को सांचे से निकालते हैं, तो रेत पर उसकी ग्राकृति बनी होती है। इसके बाद इस में पिघली हुई धातु भरते हैं। जब धातु ठंडी हो जाती है, तो ग्राप बिलकुल नमूने के ग्रनुसार मशीन का भाग तैयार पाते हैं। जब कारख़ानों में नये भाग बनाने की मांगें ग्राती हैं, तो इंजीनियर उनके नक्शे तैयार करते हैं ग्रौर नमूने बनाने वाले नक्शों के ग्रनुसार इनके नमूने तैयार करते हैं। नक्शों के ग्रनुसार सही नमूने बना सकने के लिए निःसन्देह नमूने बनानेवाले को बहुत ही होशियार होने की ग्रावश्यकता है। क्योंकि यदि वह सही नमूना तैयार नहीं करता, तो उससे वह भाग विशेष भी नहीं बनाया जा सकेगा। मेरे पिताजी बहुत ग्रच्छे नमूने बनानेवाले हैं। उन्होंने लकड़ी से छोटे-छोटे भागों को बारीकी से तराशने के लिए, बिजली से चलनेवाली एक ग्रारी-मशीन का ग्राविष्कार किया है। ग्रब वह लकड़ी के नमूनों पर पालिश करने के लिए एक पालिश-मशीन की रूपरेखा तैयार करने में लगे हुए हैं। ग्रब तक इन नमूनों पर हाथ से ही पालिश की जाती है। किन्तु जब पिताजी यह मशीन तैयार कर लेंगे, तो सभी नमूने बनानेवाले मशीन से ही पालिश किया करेंगे। काम से लौटने के बाद, हर शाम पिताजी थोड़ा विश्राम करते हैं ग्रौर उसके बाद ग्रपने मशीन-सम्बन्धी काम को ले कर बैठ जाते हैं या इस सम्बन्ध में जानकारी बढ़ाने के लिए पुस्तकें पढ़ते हैं; क्योंकि पालिश-मशीन की रूपरेखा तैयार करना उतना ग्रासान नहीं है, जितना ग्राप समझते होंगे।

पिताजी ने खाना खाया ग्रौर ग्रपने नक्शे बनाने बैठ गये। मैं ग्रपनी पढ़ाई में लग गया। सबसे पहले मैंने भूगोल किया, क्योंकि यह सब से सरल है। इसके बाद रूसी की। मुझे पाठों के ग्रभ्यास लिखने थे ग्रौर उनकी धातुग्रों, उपसर्गों ग्रौर प्रत्ययों के नीचे लाइनें लगानी थीं। धातु के नीचे एक ; उपसर्ग के नीचे दो ग्रौर प्रत्यय के नीचे तीन। इसके बाद ग्रंग्रेज़ी की बारी ग्राई ग्रौर तत्पश्चात मैंने गणित संभाला। ग्रोल्गा निकोलायेव्ना ने उन कठिन सवालों में से एक करने के लिए दिया था, ग्रौर मुझे इसे निकालने का तरीका बिलकुल ही मालूम नहीं था। मैं पूरे एक घण्टे तक ग्रपनी पुस्तक पर दृष्टि गड़ाये माथापच्ची करता रहा, किन्तु बेकार। इसके ग्रतिरिक्त मुझे बहुत ज़ोर से नींद लग रही थी। मेरी ग्रांखें मिचमिचा रही थीं, जैसे किसी ने मेरी ग्रांखों में रेत भर दिया हो।

"बस इतना काफ़ी है," माताजी बोलीं। "सोने का वक्त हो गया। तुम शायद ही ग्रपनी ग्रांखें खुली रख सको।"

"किन्तु मैंने ग्रभी तक ग्रपना सवाल नहीं किया है!"

"यह तुम्हें पहले करना चाहिये था," माताजी बोलीं। "इस तरह देर तक बैठा रहना अच्छी बात नहीं है। इस तरह तुम कभी कुछ न सीख सकोगे। जब तुम थके हुए हो, तो तुम्हारा दिमाग़ ठीक तरह से काम नहीं कर पाता।"



"जब तक यह पूरा न कर ले, इसे बैठना चाहिए," पिताजी बोल उठे। "अगली बार यह स्वयं समझ जायेगा कि स्कूल का काम इतनी देर तक बिना किये नहीं रहना चाहिए।"

और इस प्रकार मैं बैठा सवाल को तब तक बार-बार पढ़ता रहा, जब तक कि अंक तैरते हुए, धुंधले तथा आगे-पीछे और एक दूसरे के पीछे छिपे हुए से न दीख पड़ने लगे, जैसे वे आंख-मिचौनी खेल रहे हों। मैंने अपनी आंखें मलीं और सवाल को पुनः पढ़ने की चेष्टा भी की, लेकिन अक्षरों की उछल-कूद जारी रही।

"बात क्या है?" माताजी ने पूछा।

"एक सवाल है," मैंने कहा। "इतनी लम्बी-चौड़ी चीज़, आसानी से हल थोड़े ही होगी!"

"यह सवाल का दोष नहीं, करनेवाले का है।"

माताजी ने सवाल पढ़ा और उसके निकालने का तरीका मुझे बताना शुरू किया, किन्तु किसी कारणवश मेरी समझ में नहीं आया।

"क्या तुम्हें स्कूल में ये सवाल नहीं समझाये जाते?" पिताजी ने पूछा।

"नहीं," मैंने कहा, "जी, वे नहीं सिखाते।"

"अजीब बात है! जब मैं स्कूल में पढ़ता था, तो अध्यापक हमेशा पहले सवाल समझाते थे और फिर वैसे ही सवाल घर पर करने के लिए दिया करते थे।"

"हो सकता है आपके ज़माने में स्कूल में ऐसा होता हो, लेकिन हमें ओल्गा निकोलायेव्ना कुछ भी नहीं समझातीं। वह तो हमें ख़ुद ही सब कुछ करने के लिए छोड़ देती हैं।"

"अच्छा! बात अजीब सी लगती है।"

"हां, हैरानी की बात तो है ही," मैंने कहा।

"गणित के घण्टे में तुमने क्या काम किया था?"

"हमने ब्लेकबोर्ड पर एक सवाल निकाला था।"

"ज़रा वह सवाल दिखाना, तो।"

मैंने उन्हें वह सवाल दिखा दिया, जिसे मैंने ब्लेकबोर्ड से अपनी कापी में उतारा था।

"लेकिन यह तो बिलकुल वैसा ही सवाल है, जैसा उन्होंने तुम्हें घर पर करने के लिए दिया है," पिताजी ने चिल्ला कर कहा। "और तुम अध्यापिका की शिकायत करते चले जा रहे हो। इससे साफ़ है कि उसने तुम्हें यह सवाल करने का तरीक़ा समझाया था।"

"यह वही नहीं है," मैंने कहा। "वह मकान बनानेवाले बढ़इयों के विषय में था और यह बाल्टियां बनानेवाले के बारे में है।"

"तुम हो गोबर गणेश," पिताजी बोले। "पहले सवाल में तुम्हें यह मालूम करना था कि २४ बढ़इयों को ८ मकान बनाने में कितना समय लगा, और इसमें तुम्हें यह मालूम करना है कि ६ लोहार ३६ बाल्टियां कितने समय में बनायेंगे। दोनों सवालों को निकालने का तरीका बिलकुल वही है।"

पिताजी ने सवाल निकालने का ढंग समझाना शुरू किया, लेकिन मैं इतना कूढ़मग़ज़ था कि मेरी समझ में कुछ नहीं आया।

पिताजी आपे से बाहर हो गये। "तू बिलकुल बुद्धू है! आख़िर तू इतना बेवकूफ़ क्यों है!"

सवाल समझाने के मामले में मेरे पिताजी कुछ विशेष अच्छे नहीं हैं। माता जी के कथनानुसार उनमें अध्यापन-सम्बन्धी कोई योग्यता नहीं है, अर्थात् वह स्कूल के अध्यापक के रूप में कुछ अच्छे सिद्ध नहीं हो सकते। वह साधारणतः काफ़ी शान्तिपूर्वक आरम्भ करते हैं, किन्तु कुछ ही देर बाद वे गर्म हो उठते हैं और मुझ पर चिल्लाना शुरू कर देते हैं। इसी से तब मेरा दिमाग़ काम करना बिलकुल ही बन्द कर देता है। मैं एक बुत की तरह गुमसुम बैठा रहता हूं।

"मेरी समझ में नहीं आता कि इसमें समझने को रखा क्या है," वह बोले। "इस में हर बात आइने की तरह साफ़ है।"

अब भी पिताजी देखते हैं कि समझाने का कोई लाभ नहीं, तो वह काग़ज़ का एक टुकड़ा खींच कर स्वयं ही सवाल करना आरम्भ कर देते हैं।

"इधर देख," उन्होंने कहा। "ध्यान से देख, यह कितना सरल है। अब हमें पहले क्या मालूम करना है?"

उन्हें काग़ज़ के टुकड़े पर सवाल का पहला अंश लिखते हुए मैंने देखा।

"अब समझ में आ रहा है?"

सच तो यह है कि समझ में बिलकुल भी नहीं आया था, परन्तु मुझे इतनी नींद आ रही थी कि मैंने समझ में आ जाने का बहाना बना दिया।

"लो, यह लो!" पिताजी बहुत प्रसन्न मुद्रा में बोले। "तुम्हें थोड़ा सा अपना दिमाग़ लगाने की ज़रूरत है कि हर चीज़ चुटकुले की तरह सरल दिखाई देने लगेगी।"

इसके बाद उन्होंने सवाल का दूसरा अंश भी हल कर दिया।

"अब आया कुछ समझ में?"

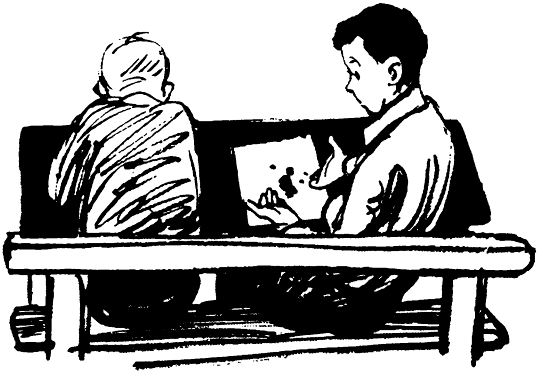
"हां," मैंने झूठमूठ कह दिया।

"तुम्हें विश्वास है कि समझ गये? यदि नहीं, तो फिर से समझाने की कोशिश करूं।"

"जी नहीं, अब बिलकुल साफ़ है।"

मैंने सोचा था कि वे इस मनहूस सवाल को कभी भी समाप्त न कर पायेंगे। किन्तु अंत में उन्होंने कर ही लिया और मैंने जल्दी जल्दी पूरे सवाल को अपनी कापी में उतारा तथा कापी को बस्ते के हवाले कर सोने चल दिया।

तीसरा अध्याय



जब हम लोग छुट्टियों पर थे, तब हमारे स्कूल की मरम्मत की गयी थी। कक्षा के कमरे की दीवारों पर पुताई की गई थी और उन पर कहीं कोई धब्बा नहीं रह गया था। प्रत्येक वस्तु बिलकुल नई लगती थी। ऐसे साफ़-सुथरे कमरे में पढ़ना वास्तव में प्रसन्नता का विषय है! दरअसल ऐसा कमरा अपेक्षाकृत अधिक उजला और बड़ा दिखाई पड़ता है और वह आपके अन्तर में सुन्दर भावना भर देता है।

जब मैं अगले दिन स्कूल आया तो क्या देखता हूं कि ब्लेकबोर्ड से अगली दीवार पर कोयले से एक मल्लाह लड़के की आकृति बनी हुई है। उसने धारीदार जर्सी पहन रखी थी, नीचे से घंटी की आकृति वाली पतलून हवा में फड़फड़ा रही थी। मल्लाहों वाली टोपी उसके सिर पर विराजमान थी और उसने अपने मुंह में पाइप दबा रखा था तथा पाइप का धूआं स्टीमर की चिमनी से निकलते हुए धूएं के समान गोल-गोल छल्लों की शक्ल में ऊपर की ओर लहराता हुआ उड़ रहा था। उसके चारों ओर एक ऐसी साहसिक अकड़ व्याप्त थी कि आप उसे देख कर हंसे बिना नहीं रह सकते थे।

"ईगोर ग्राचोव ने बनाई है," वास्या येरोख़िन ने मुझे सूचना दी। "लेकिन ख़बरदार, किसी से कहना नहीं!"

"नहीं कहूंगा," मैंने उसे आश्वासन दिया।

लड़के अपने अपने डेस्कों पर बैठे मल्लाह लड़के की तारीफ़ कर रहे थे, हंस रहे थे और हर प्रकार के अजीब अजीब मज़ाक कर रहे थे।

"क्या समझते हो! अब हमारी कक्षा में एक मल्लाह भी है!"

घंटी बजने से तनिक पहले शिशकिन तेज़ी से कमरे में घुसा।

"मल्लाह को देखा?" मैंने दीवार की ओर इशारा करते हुए उससे पूछा।

उसने बनी आकृति की ओर देखा।

"ईगोर ग्राचोव ने बनाई है," मैंने कहा। "लेकिन ख़बरदार, भेद मत खोल देना।"

"अच्छा, अपना भेद बताओ! क्या तुमने रूसी का पाठ-अभ्यास किया है?"

"क्यों नहीं," मैंने उत्तर दिया। "तुम समझते हो कि मैं घर का काम किये बिना ही स्कूल आता हूं?"

"अच्छा, मैंने नहीं किया है। यों ही ज़रा देख नहीं पाया। मुझे अपनी कापी से उतार लेने दो।"

"अब तो कोई वक्त ही नहीं रहा। एक मिनट में ही पढ़ाई शुरू होने वाली है।"

"परवाह मत करो। मैं पढ़ाई के बीच में ही कर लूंगा।"

मैंने उसे रूसी की कापी दे दी और उसने अभ्यास नक़ल करना शुरू कर दिया।

"देखो," वह बोला, "तुमने 'दौड़ता' में उपसर्ग के नीचे दो लाइनों की जगह केवल एक ही लाइन लगाई है। तुम्हें मूल-धातु के नीचे ही एक लाइन लगानी थी।"

"तुम्हारी समझ के भी क्या कहने हैं!" मैंने कहा। "वह मूल-धातु है।"

"चलाओ मत! 'दौड़' कैसे मूल-धातु हो सकती है? तुमने शब्द से पहले मूल-धातु का प्रयोग कभी देखा है? ऐसी स्थिति में उपसर्ग कहां जायेगा?"

"इस शब्द में कोई उपसर्ग है ही नहीं।"

"क्या बिना उपसर्ग के भी शब्द होते हैं?"

"बेशक होते हैं।"

"तो यह बात है! मुझे तो पूरी ज़िन्दगी में इस बात का पता नहीं चला। मैंने सोचा था कि इस शब्द में उपसर्ग और मूल-धातु है, लेकिन प्रत्यय नहीं।"

"अरे तुम भी बस यों ही हो," मैंने कहा। "यह सब तो हम तीसरे दर्जे में कर चुके हैं।"

"मुझे इतनी पुरानी बात याद नहीं रह सकती। क्या तुम विश्वासपूर्वक कह सकते हो कि तुमने जो कुछ लिखा है, सही है? क्योंकि मैं इसे अपनी कापी में उतार रहा हूं!"

मैं उसे धातु-रूप, उपसर्ग और प्रत्ययों के बारे में समझाने वाला ही था कि इतने में घण्टी बज गई और ओल्गा निकोलायेव्ना कमरे में दाख़िल हुईं। घुसते ही उनकी दृष्टि मल्लाह लड़के पर पड़ी और उनका चेहरा बहुत सख़्त दिखाई दिया।

"इसके क्या मायने हैं?" उन्होंने कहा। "यह दीवार पर किसने बनाया है?"

किसी ने कुछ भी नहीं कहा।

"जिस लड़के ने दीवार गन्दी की है, वह ऊपर खड़ा हो जाये और स्वीकार करे," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं।

हम सब चुपचाप बैठे थे। कोई खड़ा नहीं हुआ। ओल्गा निकोलायेव्ना को ताव आ गया।

"देखो लड़को, क्या तुम यह नहीं जानते कि तुम्हें अपना कमरा साफ़-सुथरा रखना चाहिये? यदि दीवारों पर हरेक इस तरह तसवीरें बनाने लगे, तो स्कूल की क्या दशा होगी? मुझे विश्वास है कि तुम लोग अपना कमरा गन्दा और भद्दा नहीं देखना चाहते, क्या चाहते हो?"

"नहीं, नहीं!" कुछ अनिश्चित आवाज़ें आईं।

"तब यह किसने किया है?"

ख़ामोशी।

"ग्लेब स्कमेइकिन, तुम मानीटर हो। तुम्हें तो मालूम ही होगा कि यह किसने किया है।"

"मुझे पता नहीं, ओल्गा निकोलायेव्ना। जब मैं आया, तो यह बना हुआ था।"

"आश्चर्य है!" ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं। "किसी न किसी ने तो बनाया ही होगा। कल दीवारें बिलकुल साफ़ थीं। कल मैं सबसे अन्त में गई हूं। आज सुबह सबसे पहले कौन स्कूल आया था?"

किसी भी लड़के ने हामी नहीं भरी। हरेक ने यही कहा कि जब वह आया, तो कक्षा भरी हुई थी।

इस बीच शिशकिन अपनी कापी में अभ्यास की नक़ल करने में लगा हुआ था। जब उसने मेरी कापी वापस लौटाई, तो उस पर एक बड़ा धब्बा पड़ा हुआ था।

"यह क्या है?" मैंने पूछा। "जब मैंने कापी तुम्हें दी, तो इस पर कोई धब्बा नहीं था।"

"ठीक है, पर मैंने जान-बूझ कर तो लगाया नहीं, या लगाया है?"

"मुझे नहीं मालूम तुमने जान-बूझ कर लगाया या नहीं। लेकिन तुम्हारी यह कौनसी शराफ़त है कि मेरी कापी पर धब्बा लगा कर वापस करो?"

"जब उस पर धब्बा पड़ ही गया, तो फिर मैं तुम्हारी कापी बिना धब्बे के कैसे वापस कर सकता हूं? मैं वचन देता हूं भविष्य में सावधानी बरतूंगा।"

"भविष्य का क्या मतलब?" मैंने पूछा।

"जब कभी तुम्हारे अभ्यासों की नक़ल करूंगा।"

"क्या तुम्हारे कहने का यह अर्थ है कि तुम हमेशा ही नक़ल करते रहोगे?"

"हमेशा ही किसने कहा है? बस, कभी-कभी।"

बहस यहीं समाप्त हो गई, क्योंकि ओल्गा निकोलायेव्ना ने शिशकिन को ब्लेकबोर्ड पर बुला लिया और उसे मकान पर रंगरोग़न करने वालों, जिन्होंने स्कूल की दीवारों पर भी रंग किया था, के सम्बन्ध में एक सवाल करने के लिए दिया। उसे यह मालूम करना था कि तमाम कक्षाओं के कमरों और बरामदों पर रंगाई करने के लिए स्कूल को कितना धन देना पड़ेगा।

"बेचारा गरीब, शिशकिन," मैंने सोचा, "आ गई मौत बेचारे की! ब्लेकबोर्ड पर सवाल निकालना, दूसरों की कापियों से अभ्यासों को टीपने की अपेक्षा ज़रा कसाले का काम है।"

लेकिन मैं चकित रह गया। शिशकिन ने बड़ी अच्छी तरह सवाल निकाल लिया। यह सही है कि उसने इसे निकालने में काफ़ी अधिक समय लगाया, क्योंकि यह एक लम्बा और बहुत कठिन सवाल था। लेकिन कक्षा में किसी ने भी उसे बताने के लिए कोई भी इशारा नहीं किया, क्योंकि हरेक देख रहा था कि वह इस सवाल को निकालना जानता है।

हम यह भली भांति जानते थे कि ओल्गा निकोलायेव्ना ने यह सवाल किसी विशेष अभिप्रय से करने के लिए दिया है, और यह स्पष्ट था कि हम अभी मल्लाह लड़के की कहानी के अन्त तक नहीं पहुंचे हैं। दूसरे घण्टे में स्कूल के डायरेक्टर, ईगोर अलेक्सान्द्रोविच कमरे में आये। ईगोर अलेक्सान्द्रोविच देखने में बिलकुल भी भीषण आकृति के व्यक्ति नहीं हैं। वे सदैव प्रसन्न दीखते हैं और उनकी आवाज़ बहुत ही मधुर और उदारतापूर्ण है, किन्तु मैं उनसे सदा केवल एक बात से ही थोड़ा डरता रहा हूं कि वह बहुत बड़े हैं। वह उतने ही बड़े हैं जितने पिताजी, बल्कि लम्बाई में कुछ ऊंचे ही होंगे, और वह तीन बटनों वाली लम्बी वास्कट पहनते हैं और आंखों पर चश्मा चढ़ाये रहते हैं।

मैंने सोचा कि वह हम पर बरस पड़ेंगे, किन्तु वह बहुत शान्त स्वर में बोले। उन्होंने हमें बताया कि सरकार प्रत्येक छात्र की पढ़ाई के लिए कितना व्यय कर रही है और हमारे लिए स्कूल में अच्छी तरह पढ़ना तथा स्कूल की सम्पत्ति के विषय में सावधानी बरतना कितना महत्वपूर्ण है। जो भी सम्पत्ति को, जिसमें दीवारें भी शामिल हैं, हानि पहुंचाता है, वह जनता को हानि पहुंचाता है, क्योंकि स्कूल के लिए सब धन जनता से आता है। इसके बाद उन्होंने कहा:

"मुझे विश्वास है कि जिस लड़के ने दीवार पर तस्वीर बनाई है, वह स्कूल को हानि नहीं पहुंचाना चाहता। यदि वह स्वीकार कर लेता है, तो वह अपनी ईमानदारी सिद्ध करेगा और यह भी कि उसे केवल मालूम नहीं था कि वह कर क्या रहा है।"

यदि मैंने ऐसा किया होता, तो मुझे विश्वास है कि ईगोर अलेक्सान्द्रोविच के इस भाषण के बाद मैं अपना अपराध स्वीकार कर लेता। मुझे यह भी विश्वास था कि ईगोर ग्राचोव भी ऐसा ही करेगा। लेकिन क्योंकि वह अपने डेस्क पर बैठा रहा और कुछ नहीं बोला, इससे स्पष्ट था कि वह अपने को ईमानदार सिद्ध नहीं करना चाहता। इसके बाद ईगोर अलेक्सान्द्रोविच बोले कि इसमें संदेह नहीं कि जिस लड़के ने तस्वीर बनाई है, वह इसी समय अपनी भूल स्वीकार करने में शर्माता है, किन्तु संभव है कि वह इस पर विचार करेगा और इतना साहस जुटा सकेगा कि उनके दफ़्तर में जाये और अपनी भूल स्वीकार कर ले।

छुट्टी होने पर, तोल्या द्योजकिन, जो हमारी पायनियर कौंसिल का अध्यक्ष है, ईगोर के पास गया और कहा:

"तुम्हारा भी जवाब नहीं है। तुमसे किसने कहा था कि साफ़-सुथरी दीवार को भांड डालो? अब ज़रा देखा, तुमने क्या कर डाला है!"

"मेरी मन्शा कुछ ग़लत काम करने की तो थी नहीं।"

"तब तुमने यह हरकत क्यों की?"

"भाई, ईमान से मुझे ऐसा पता नहीं था। मैंने बिना सोचे-समझे बस यों ही खींच दी थी।"

"बिना सोचे-समझे! और अब तुम्हारे कारण पूरी कक्षा अपमानित हो रही है।"

"पूरी कक्षा क्यों?"

"क्योंकि हममें से किसी पर भी यह अपराध लागू हो सकता है।"

"यह भी तो हो सकता है कि किसी दूसरी कक्षा से कोई आकर खींच गया हो, उन्हें क्या पता हो सकता है?"

"अच्छा, पर आगे से ऐसी हरकत मत करना, समझे?" तोल्या ने कहा।

"अच्छी बात है। मैं ऐसी हरकत नहीं करूंगा, मैं तो बस यह देखना चाहता था कि यह लगता कैसा है," ईगोर ने कहा।

उसने एक मैला कपड़ा उठाया और उससे मल्लाह लड़के की तस्वीर को मिटाने का प्रयत्न किया, किन्तु इससे मामला और अधिक बिगड़ गया। मल्लाह लड़का अभी तक वहां का वहीं मौजूद था, लेकिन अब उसके चारों ओर एक बड़ा धब्बा बन गया था। लड़कों ने ईगोर से कपड़ा छीन लिया कि कहीं वह दीवार को और अधिक गन्दा न कर दे।

स्कूल से निपट कर हम फिर फ़ुटबाल खेलने चल दिये और काफ़ी अंधेरा होने तक खेलते रहे। घर लौटते हुए रास्ते में मुझे शिशकिन ने अपने घर चलने के लिए कहा। मालूम हुआ कि वह हमारी ही गली में लकड़ी के एक छोटे से दुमंज़िले मकान में रहता है, जो हमारे घर के समीप ही था। हमारे मकान की तरह, हमारी गली के सभी मकान बड़े, चार-पांच मंज़िलों वाले हैं, और मैं प्रायः आश्चर्य किया करता था कि इस छोटे से लकड़ी के मकान में कौन रहता है। अब पता चला कि उसमें शिशकिन रहता है। मैं उसके घर नहीं जाना चाहता था क्योंकि देर हो चुकी थी, लेकिन वह कहने लगा:

"चले भी चलो, तुम मेरे साथ रहोगे, तो हमारे घरवाले मुझे इतनी देर से लौटने के कारण भला-बुरा नहीं कहेंगे।"

"लेकिन जब मैं घर जाऊंगा, तो मुझ पर गालियां पड़ेंगी," मैंने कहा।

"कोई बात नहीं! तुम चाहो, तो इसके बाद मैं तुम्हारे घर चला चलूंगा। इस तरह हम दोनों ही गालियों से बच जायेंगे।"

"तब ठीक है।"

हम चरमराते हुए ज़ीने पर चढ़े, जिसके रेलिंग के डंडों का रंग-रोग़न उखड़ चुका था। शिशकिन ने दरवाज़ा खटखटाया, जिस पर फटा हुआ काला मोमजामा पड़ा हुआ था और मोमजामे के अन्दर भरी सामग्री धब्बों के रूप में बाहर झांक रही थी।

"कोस्त्या, अरे शैतान! तू इतनी देर तक कहां था?" उसकी माताजी दरवाज़ा खोलते हुए चिल्लायीं।

"मां, यह मलेयेव है, मेरा क्लास का दोस्त। हम दोनों एक ही डेस्क पर बैठते हैं।"

"आओ, आओ। अन्दर आओ!" उसकी माताजी ने कहा। उनकी आवाज़ में काफ़ी नर्मी आ गई थी।

हम अन्दर चले गये।

"हे भगवान! तुम अब तक क्या कर रहे थे? ज़रा अपनी हालत तो देखो!"

मैंने शिशकिन की ओर देखा। उसका चेहरा लाल सुर्ख़ था और उसके गालों तथा माथे पर गन्दे दाग़ पड़े हुए थे। उसकी नाक की नोक बिलकुल काली थी। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि मेरा चेहरा भी उससे कम बदतर नहीं रहा होगा, क्योंकि गेंद मेरे मुंह पर आ कर लगी थी। शिशकिन ने मुझे कोहनी मारी और कहा:

"चलो, मुंह-हाथ धो लें। घर जाओगे, तो तुम भी इसी तरह फंसोगे।"

हम कमरे के अन्दर गये और शिशकिन ने मुझे अपनी चाची से मिलवाया।

"ज़ीना चाची, यह है मलेयेव, मेरा क्लास का दोस्त।"

ज़ीना चाची काफ़ी जवान थीं। पहले-पहल तो मैंने उन्हें शिशकिन की बड़ी बहन समझा। उन्होंने मेरी ओर चिढ़ाने वाली मुस्कान से देखा। मैं अपने गन्दे चेहरे में काफ़ी अजीब लग रहा हूंगा। शिशकिन ने मुझे फिर कोहनी मारी और हम गुसलख़ाने में घुस गये।

"तुम्हें जानवर पसन्द हैं?" जब मैं अपने मुंह पर साबुन लगा रहा था, तो शिशकिन ने पूछा।

"जानवर जानवर पर बात है," मैंने कहा। "अगर तुम्हारा मतलब चीते या मगरमच्छ से है, तो मेरा जवाब न होगा, क्योंकि वे काटते हैं।"

"तुम तो गधे हो, मेरा मतलब वैसे जानवरों से नहीं है। तुम्हें चूहे पसन्द हैं?"

"नहीं, चूहों में भी मुझे कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं। वे हर चीज़ को कुतर-कुतर कर ख़राब कर देते हैं।"

"वे ऐसी कोई बात नहीं करते। तुम भी क्या अनाड़ीपन की बात करते हो!"

"क्या चूहे कुतरते नहीं हैं? क्यों, उन्होंने एक बार मेरी ही एक किताब कुतर डाली थी!"

"अच्छा, तुमने शायद उन्हें खाने को कुछ नहीं दिया होगा।"

"हां, दिया तो नहीं था। लेकिन मैं उन्हें बेकार में क्यों खिलाता?"

"मैं अपने चूहों को हर रोज़ खिलाता हूं। मैंने उनके लिए एक घर भी बना दिया है।"

"तुम भी सनकी हो!" मैंने कहा। "भला किसी ने चूहों के लिए घर बनाते भी सुना है!"

"भई, उन्हें भी तो रहने के लिए कोई जगह चाहिये या नहीं? चलो, मैं तुम्हें दिखा दूं।"

हम मुंह-हाथ धो चुके और रसोईघर में आये। वहां एक कुर्सी के नीचे गत्ते के डिब्बों का एक छोटा सा घर बना हुआ था, जिसमें बहुत से दरवाज़े और खिड़कियां थीं। यह घर बहुत से छोटे-छोटे सफ़ेद रंग के अजीब जीवों से भरा हुआ था, जो निरंतर दरवाज़ों और खिड़कियों से बाहर निकल रहे थे, दीवारों की ओर से घर में घुस रहे थे। ऊपर एक चिमनी भी बनाई हुई थी, और छोटे-छोटे सफ़ेद जन्तुओं में से एक जीव उसके बाहर झांक रहा था।

[illegible] को कोई चीज़ पहले नहीं देखी थी।

"ये क्या है?" मैंने पूछा।

"चूहे है, और क्या होता!"

"हट, चूहे तो भूरे होते हैं। ये हैं सफ़ेद!"

"क्या तुमने सफ़ेद चूहों के बारे में कभी नहीं सुना?"

शिशकिन ने उनमें से एक चूहा पकड़ा और मेरे हाथ में दे दिया। यह बर्फ़ की तरह सफ़ेद था, केवल दुम को छोड़ कर, जो लम्बी और गुलाबी रंग की थी और इस पर बाल नज़र नहीं आते थे। वह अपनी छोटी गुलाबी नाक को इधर उधर घुमाता हुआ चुपचाप मेरी हथेली पर बैठ गया, जैसे वह कुछ सूंघ रहा हो। उसकी आंखें मूंगे के दानों की तरह लाल थीं।

"हमारे यहां सफ़ेद चूहे नहीं हैं, बस भूरे ही हैं," मैंने कहा।

"अरे बेवकूफ़, ये उस तरह के चूहे नहीं हैं!" शिशकिन हंसा। "ये तुम्हें जानवर बेचने वाली दूकान से ख़रीदने होते हैं। मैंने चार ख़रीदे थे, अब देखो, ये कितने गुना बढ़ गये हैं! तुम चाहो, तो मैं एक जोड़ा तुम्हें दे सकता हूं।"

"तुम इन्हें खिलाते क्या हो?"

"ये हर चीज़ खाते हैं – रोटी, दूध, अनाज।"

"अच्छी बात है," मैंने स्वीकृति दी।

शिशकिन ने गत्ते का एक डिब्बा खोज निकाला, उसमें दो चूहे रखे और उसे अपनी जेब में खोंस लिया।

"अच्छा रहेगा कि मैं ही इन्हें ले चलूं। कहीं तुम इन्हें भींच-भांच न डालो," वह बोला।

हमने अपनी अपनी वास्कटें पहन लीं।

"फिर बाहर चल दिया?" कोस्त्या की माताजी ने पूछा।

"मैं अभी आया, मां! मैं एक मिनट के लिए ज़रा वीत्या के यहां जा रहा हूं। मैंने इससे वायदा कर लिया था।"

हम बाहर आये और कुछ ही मिनटों में मैं उसके साथ अपने घर पहुंच गया। जब माताजी ने देखा कि मैं अकेला नहीं हूं, तो देर से घर पहुंचने के लिए उन्होंने मुझे डांट-फटकार नहीं बताई।

"यह मेरे स्कूल का दोस्त है, कोस्त्या," मैंने माताजी को बताया।

"तुम नये लड़के हो?" माताजी ने पूछा।

"हां, मैं इसी साल आया हूं।"

"इससे पहले तुम कौन से स्कूल में जाते थे?"

"मैं नालचिक के एक स्कूल में पढ़ता था। ज़ीना चाची की स्कूल की पढ़ाई ख़त्म होने तक हम वहीं रहे। वह नाट्य-स्कूल में भर्ती होना चाहती थीं, लेकिन नालचिक में ऐसा कोई स्कूल नहीं था, और इसीलिए हम यहां आ गये।"

"तुम्हें यहां अच्छा लगता है या नालचिक ज़्यादा पसन्द था?"

"नालचिक अच्छा था। लेकिन मुझे यह भी पसन्द है। हम क्रास्नोज़ावोद्स्क में भी रहे हैं। वह भी अच्छी जगह थी।"

"इससे ज़ाहिर होता है, तुम कितने समझदार लड़के हो।"

"जी नहीं, माताजी का कहना है कि मैं ज़रा भी समझदार नहीं हूं। वह यह भी कहती हैं कि मेरा अपना कोई चरित्र नहीं है और मैं ज़िंदगी में कहीं भी टिक नहीं सकूंगा।"

"वह ऐसा क्यों कहती हैं?"

"क्योंकि मैं अपनी पढ़ाई कभी भी समय पर नहीं कर सकता।"

"तब तो तुम भी हमारे वीत्या की तरह हो! वह भी अपनी पढ़ाई समय पर करने का क़ायल नहीं है। तुम ोनों को एक साथ मिलकर अपने चरित्रों को बदलना चाहिये।"

तभी लीका अन्दर आई।

"यह है मेरी छोटी बहन, लीका," मैंने शिशकिन से कहा।

"नमस्कार!" शिशकिन ने कहा।

"नमस्कार!" लीका ने उत्तर दिया और उसकी ओर ऐसे घूरा, जैसे वह कोई साधारण लड़का न होकर तस्वीर या कुछ और हो।

"मेरे कोई बहन नहीं है," शिशकिन बोला, "और न ही कोई भाई। मेरे कोई नहीं है।"

"क्या तुम चाहोगे कि तुम्हारे एक बहन या भाई हो?" लीका ने पूछा।

"खूब चाहूंगा। मैं उनके लिए अजीब अजीब खिलौने बनाया करूंगा, उन्हें खेलने के लिए जानवर दूंगा और मैं उनकी देखभाल करूंगा। माताजी का कहना है कि मैं किसी भी चीज़ या आदमी की परवाह नहीं करता। लेकिन यह सब इसी लिए है कि मेरा ऐसा कोई नहीं, जिसकी मैं देखभाल कर सकूं।"

"तुम अपनी माताजी की सेवा कर सकते हो।"

"यह कैसे कर सकता हूं? मेरी उनसे भेंट ही नहीं हो पाती। वह सुबह ही काम पर चली जाती हैं और काफ़ी शाम हो जाने से पहले वापस नहीं लौटतीं। और कभी-कभी तो उन्हें शाम को दुबारा भी जाना पड़ जाता है।"

"वह क्या करती हैं?"

"वह कार चलाती हैं।"

"तब तो तुम्हें ख़ुद अपनी देखभाल करनी चाहिए, ताकि तुम्हारी माताजी को तुम्हारी चिन्ता से छुटकारा मिल सके।"

"मैं जानता हूं, करनी चाहिये," शिशकिन बोला।

"क्या तुम्हें तुम्हारी वास्कट मिल गई थी?" लीका ने पूछा।

"मेरी वास्कट? ओह, अच्छा! उस दिन?.. हां, मिल गई थी। वह फ़ुटबाल के मैदान में वैसी ही पड़ी थी, जैसी मैं छोड़ आया था।"



"इस तरह तो तुम इन दिनों कभी भी जुकाम के शिकार हो जाओगे," लीका ने कहा।

"अरे नहीं, ऐसी कोई बात नहीं होगी।"

"नहीं क्यों, तुम सर्दी के मौसम में इसी तरह अपना कोट या टोपी भूलते रहे, तो अपने-आप ही शिकार होगे।"

"अरे नहीं! मैं अपना कोट नहीं भूलूंगा... तुम्हें चूहे पसन्द हैं?"

"चूहे?" लीका ऐसे सकते में आई कि उसे कुछ कहने तक की सुध नहीं रही।

"क्या तुम जोड़ा लेना चाहोगी?"

"नहीं, नहीं, धन्यवाद!"

"वे बहुत ही सुन्दर हैं," शिशकिन ने कहा और उसने अपनी जेब में से सफ़ेद चूहों का डिब्बा निकाल लिया।

"अरे, ये कितने खूबसूरत हैं!" लीका चिल्लाई।

"तुम इसे मेरे चूहे क्यों दे रहे हो?" मैंने ग्रापत्ति की। "पहले तुमने मुझे दे दिया ग्रौर फिर बाद में इसे!"

"मैं तो इसे केवल दिखा रहा हूं। मैं इसको दूसरे लाकर दे दूंगा। मेरे पास बहुत हैं," शिशकिन ने कहा। "ग्रगर तुम चाहो, तो ये उसको दे दूं ग्रौर तुम्हारे लिए दूसरे ला दूं।"

"नहीं, नहीं," लीका बोली, "इन्हें वीत्या को ही ले लेने दो।"

"ग्रच्छी बात है, तुम्हारे लिए मैं कल थोड़े से लेता ग्राऊंगा। लेकिन तुम देख ग्रभी भी सकती हो।"

लीका ने ग्रपना हाथ चूहों से ग्रलग रखा। "क्या ये काटते हैं?"

"ग्ररे नहीं! ये तो बिलकुल पालतू हैं।"

जब शिशकिन चला गया, तो लीका ग्रौर मैंने बिस्कुटों वाला गत्ते का डिब्बा निकाला, उसमें काट कर खिड़कियां ग्रौर दरवाज़े बनाये ग्रौर चूहों को उसके ग्रन्दर रख दिया। उनको खिड़कियों में से झांकता देख कर बड़ा मज़ा ग्रा रहा था।

मेरे पढ़ाई पर बैठते बैठते ग्राज फिर काफ़ी देर हो गई थी। सदा की तरह, मैंने सबसे ग्रासान से ग्रारम्भ किया ग्रौर गणित ग्रन्त में करने के लिए रख छोड़ा। ग्रौर फिर वही कठिन सवाल करने को ग्रा गये! बस, मैंने गणित की पुस्तक बन्द की, तमाम पुस्तकें ग्रपने बस्ते में रखीं ग्रौर फैसला किया कि सवाल ग्रगले दिन किसी की कापी में से नक़ल कर लूंगा। यदि मैं सवाल निकालने की कोशिश करने लगता, तो माताजी समझ लेतीं कि मैं फिर ग्रपनी पढ़ाई इतनी देर रात तक कर रहा हूं ग्रौर मुझे फटकारतीं, ग्रौर पिताजी ग्रपना काम एक तरफ़ रख कर मुझे सवाल समझाना शुरू कर देते। भला मेरा गणित करने में वह क्यों ग्रपना समय बर्बाद करें? उनके लिए यह कहीं ग्रधिक महत्वपूर्ण है कि वह ग्रपनी पालिश करने की मशीन के नमूने बनायें ग्रथवा सांचे के लिए कुछ नये प्रकारों का ग्राविष्कार करें।

जिस समय मैं पढ़ाई कर रहा था, उसी बीच लीका ने चूहों के घर में गद्दी की तह बिछा दी, ताकि चूहे ग्रपने ग्राप ग्राराम कर सकें। फिर उसने घर में कुछ ग्रनाज ग्रौर रोटी के टुकड़े ग्रौर एक तश्तरी में दूध रख दिया। यदि ग्राप खिड़की से भीतर झांकते, तो ग्राप उन्हें ग्रपने नन्हे से घर के भीतर बैठे हुए ग्रौर दाने चबाते हुए देख सकते थे। कभी कभी उनमें से कोई ग्रपनी पिछली टांगों पर बैठ जाता ग्रौर ग्रपने ग्रगले पंजों से ग्रपना शरीर साफ़ करता ग्रथवा ग्रपना नन्हा सा चेहरा जल्दी जल्दी तेज़ी के साथ रगड़ता। यह सब इतना मसखरी भरा था कि हंसते-हंसते हमारे पेट में बल पड़ गये। लीका खिड़कियों में झांकती ग्रौर खिलखिलाती हुई काफ़ी देर तक घर के पास बैठी रही।

"तुम्हें कितना ग्रच्छा दोस्त मिला है, वीत्या!" जब मैं देखने ग्राया तो लीका ने कहा।

"तुम्हारा मतलब कोस्त्या से है?"

"हां।"

"ऐसी कौन सी ग्रच्छी बात है उसमें?"

"वह बहुत अच्छा है। अच्छे ढंग से बातचीत करता है। उसने मुझसे भी बात की।"

"उसे तुमसे बात क्यों नहीं करनी चाहिये थी?"

"अरे, आख़िरकार मैं लड़की ठहरी!"

"तो इससे क्या होता है?"

"हां, दूसरे लड़के जो मुझसे बात नहीं करते। मेरे ख़याल से वे कुछ घमंडी हैं। मुझे ख़ुशी है कि तुम उसके दोस्त हो।"

मैं उसे बताना चाहता था कि शिशकिन इतना अच्छा नहीं है, जितना वह समझती है, यह भी कि उसने घर के लिए दिये गये स्कूल के काम की नक़ल की थी और मेरी कापी पर धब्बा भी गिरा दिया था, किन्तु किसी कारणवश मैंने कहा:

"अच्छा तो है ही। अगर वह अच्छा न होता, तो मेरी उसकी दोस्ती कैसे होती। हमारी कक्षा के तमाम लड़के अच्छे हैं।"



चौथा अध्याय

कुछ समय बीत गया—तीन, चार या पांच दिन? मुझे अच्छी तरह याद नहीं। एक दिन हमारे दीवारी अखबार का सम्पादक सेर्योझा बुकातिन कहने लगा: "ओल्गा निकोलायेव्ना, हमारे सम्पादक मंडल में कोई भी ऐसा नहीं जो चित्र बना सके। पिछले साल चित्र-सम्बन्धी सभी काम फ़ेद्या रिब्किन किया करता था। लेकिन अब हमारे पास कोई भी यह काम संभालनेवाला नहीं है और हमारा अख़बार बिना चित्रों के दिलचस्प नहीं हो पा रहा है। हमें किसी ऐसे लड़के को चुनना चाहिये, जो कलाकार हो।"

"ठीक है, लेकिन वह ऐसा होना चाहिये, जो अच्छे चित्र बना सके," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं। "मेरा एक सुझाव है कि कल हरेक लड़का अपने-अपने बने हुए चित्र यहां लेकर आये। तब हम देख सकेंगे कि सबसे अच्छा कौन है।"

"लेकिन मान लीजिये कि हमारे पास लाने के लिए कोई न हो, तो?"

"तुम किसी चीज़ का आज बना सकते हो। लेकिन वह बनाने में बहुत कठिन न हो।"

"जी हां, बहुत कठिन नहीं होना चाहिये," हम सबने सहमति प्रकट की।

अगले दिन हम सब अपने-अपने चित्र लाये। हममें से कुछ पुराने लाये और कुछ अपने नये बनाये हुए। कुछ लड़के अपनी पूरी चित्रों भरी कापियां उठा लाये और ईगोर ग्राचोव तो एक पूरा अलबम ही ले लाया। मैं भी कुछेक लाया था। हमने उन्हें खोल कर अपने-अपने डेस्कों पर रख लिया, और ओल्गा निकोलायेव्ना चारों ओर घूम-घूम कर उनका निरीक्षण करने लगीं। अन्त में वह ईगोर ग्राचोव के डेस्क पर पहुंचीं और पलट पलट कर उसका अलबम देखने लगीं। इसमें समुद्र, जहाज़ों, नौकाओं तथा मस्तूलों वाले जल-पोतों की आकृतियों की भरमार थी।

"ईगोर ग्राचोव, तुम सब लोगों से अच्छे चित्र बनाते हो," उन्होंने कहा। "वह हमारा कलाकार हो सकता है।"

उसने अपनी [illegible] खोल दी। ओल्गा निकोलायेव्ना उसकी अलबम के पन्ने पलटती रहीं [illegible] मल्लाह की तस्वीर तक आ पहुंचीं, जिसने धारीदार जर्सी पहन रखी थी और मुंह [illegible] हुआ था। यह उस मल्लाह लड़के की हूबहू नक़ल थी, जो दीवार पर बनाया गया [illegible] निकोलायेव्ना का चेहरा काला पड़ गया और उन्होंने कठोर दृष्टि से ईगोर की ओर [illegible] उसका चेहरा लाल हो गया और वह अधीर हो उठा, तथा बिना सोचे-समझे बोल उठा :

"दीवार पर मल्लाह की तस्वीर मैंने बनाई थी।"

"तुमने बनाई थी? फिर तुमने उसी समय स्वीकार क्यों नहीं कर लिया? ईगोर, यह तुम्हारी ईमानदारी का तक़ाज़ा नहीं था। मुझे बताओ तो सही, तुमने इस किस्म की हरकत क्यों की?"

"मुझे नहीं मालूम, ओल्गा निकोलायेव्ना। असल में यह अचानक ही हो गया। यह सब करते हुए मुझे इस बात का पता भी नहीं चला कि मैं क्या कर रहा हूं।"

"अच्छा, मुझे खुशी है कि अन्त में तुमने अपनी भूल स्वीकार कर ही ली। क्लास समाप्त होने पर तुम्हें डायरेक्टर के पास जाकर क्षमा मांगनी चाहिये।"

छुट्टी होने पर ईगोर डायरेक्टर के पास गया और उसने क्षमा मांगी। "सरकार स्कूल की मरम्मत पर पहले ही काफ़ी रक़म ख़र्च कर चुकी है," ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने उसे बताया। "अब हम और अधिक व्यय करने में असमर्थ हैं। अब घर जाओ। खाना खा चुकने पर लौट कर वापस आओ।"

खाने के बाद ईगोर स्कूल वापस गया। उसे एक बाल्टी में सफ़ेद रोग़न और बुरुश थमा दिया गया और उसने दीवार के उस हिस्से पर रोग़न कर दिया, जिस पर मल्लाह लड़का बना हुआ था।

हमें यकीन था कि ओल्गा निकोलायेव्ना इस घटना के बाद उसे अख़बार का चित्रकार नहीं बनने देंगी। किन्तु उन्होंने कहा :

"अच्छा है कि उसे अख़बार में चित्र बनाने के लिए खपाया जाए, बजाय इसके कि वह अपनी कला का अभ्यास दीवारों पर करे।"

इस प्रकार हमने उसे चुन लिया और हरेक इस बात से खुश था। मैं भी प्रसन्न था, यद्यपि सच्ची बात यह है कि मेरे प्रसन्न होने का कोई कारण नहीं था। मैं आपको बताऊंगा कि क्यों।

शिशकिन का अनुकरण करते हुए मैंने घर पर गणित का काम करना बिलकुल बन्द कर दिया था और तमाम सवाल दूसरे लड़कों की कापियों से टीप लिया करता था। जैसी कि कहावत है, बुरी मिसालें आकर्षक होती हैं।

"इन सवालों के पीछे मैं बेकार का सिरदर्द क्यों मोल लूं?" मैंने अपने मन में कहा। "ये किसी भी तरह मेरी समझ में नहीं आते। अच्छा यही है कि कहीं से नक़ल कर ली जाय और क़िस्सा ख़त्म। इस तरह मामला जल्दी भी निबट जाता है और पिताजी तथा माताजी भी मेरे गणित न कर सकने के बारे में चीं चपड़ करना बन्द कर देंगे।"

तोल्या द्योजकिन को छोड़कर, जो पायनियर कौंसिल का अध्यक्ष है, कोई भी लड़का मुझे अपनी कापी से नक़ल करवाने में आपत्ति नहीं करता था।

"तुम इसी तरह दूसरों की कापियों से नक़ल करते रहे, तो तुम्हें कभी गणित नहीं आ सकता!" उसने मुझे चेतावनी दी।

"मुझे गणित की ज़रूरत ही किस लिए है?" मैंने उत्तर दिया। "मैं बिना इसके भी भली तरह चल सकता हूं। इसके अलावा मुझ में इसके लिए बुद्धि भी नहीं है।"

इसमें संदेह नहीं कि सवालों को टीप लेना काफ़ी आसान है, लेकिन जब आपको कक्षा में उत्तर देने के लिए कहा जाता है, तो आपकी एकमात्र आशा यही रह जाती है कि दूसरे लड़के संकेत देकर आपको बतायेंगे। मेरा सौभाग्य है कि लड़कों ने मुझे नीचा नहीं देखने दिया। यह सिलसिला ठीकठाक चलता रहता—यदि ग्लेब स्कमेइकिन बीच में अपनी टांग न अड़ाता। जिस दिन से उसने यह घोषणा की है कि वह गुप्त रूप से संकेत द्वारा सवालों के हल फ़ुसफ़ुसाने का सिलसिला बन्द कराके ही दम लेगा, तब से वह इसे किसी न किसी तरह सक्रिय रूप देने को सोचता रहा था, और आप विश्वास नहीं करेंगे, उसके दिमाग़ में यह गन्दा विचार आया कि दीवारी अख़बार निकालने वाले लड़के मेरा एक बेहूदा व्यंग-चित्र बनायें। और एक दिन सुबह जब मैं स्कूल आया, तो अपना व्यंग-चित्र बना पाया जिसमें मैं खड़ा हुआ ब्लेकबोर्ड पर सवाल निकालने की कोशिश कर रहा हूं, मेरे कान गधे के कानों जैसे लम्बे बनाये गये थे, और गुपचुप ढंग से फ़ुसफ़ुसा कर मुझे इशारा देने वाले लड़कों की ओर लगे हुए दिखाये गये थे। इसके नीचे चार लाइनें, इतनी बेहूदा तुकबन्दी आपने शायद ही कभी सुनी हों, लिखी थीं:

गधा नहीं है; यह लड़का है, वीत्या जिसका नाम है,
संकेतों से प्रश्न निकाले, कक्षा में बदनाम है।
घुसर-पुसर कितनी ही धीमी, सुनता, लम्बे कान हैं,
फिर भी उत्तर ग़लत निकाले, ऐसे यह श्रीमान हैं!

अथवा इसी प्रकार का कुछ था, पूरी तरह मुझे याद नहीं। इस में कोई शक नहीं था, बिलकुल बकवास! जैसा कि स्वाभाविक है, मैं गुस्से से लाल हो उठा। मैंने फ़ौरन ही भांप लिया कि ईगोर ग्राचोव ने ही यह व्यंग-चित्र बनाया है, क्योंकि जब तक वह देख न लेता, अख़बार में कोई व्यंग-चित्र नहीं जाता था।

बस मैं उसके पास गया और बोला: "इस चित्र को तुम वहां से उतार लो, वरना तुम्हें पछताना पड़ेगा!"

"मैं यह नहीं कर सकता। मुझे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है। मैं केवल कलाकार हूं। मुझे यह बनाने के लिए कहा गया और मैंने बना दिया। लेकिन यह मेरा काम नहीं है कि उसे वहां लगाऊं या वहां से उतारूं।"

"यह किसका काम है?"

"सम्पादक का। वह सर्वेसर्वा है।"

मैं सेर्योझा बुकातिन के पास गया।

"तो यह तुम्हारा काम है, है न?" मैंने उससे कहा। "मैं देखता हूं कि तुम ख़ुद अपने व्यंग-चित्र तो बना कर अख़बार में नहीं टांकते। फिर मेरा क्यों टांकते हो?"

"तुम हो गधे, तुम समझते हो कि मैं ख़ुद ही जो कुछ चाहता हूं, करता हूं। तो फिर हमारा यह सम्पादक-मंडल किस लिए है? जो कुछ भी होता है, हम सब मिल कर फ़ैसला करते हैं। ग्लेब स्कमेइकिन ने पंक्तियां लिखीं और व्यंग-चित्र बनाने की मांग की, क्योंकि हमें कक्षा में यह संकेतों द्वारा बताने का सिलसिला बंद करना है। हमने पायनियर कौंसिल में इस सम्बन्ध में फ़ैसला भी लिया है।"

मैं स्कमेइकिन के पास दौड़ा।

"इस चित्र को फ़ौरन ही वहां से उतारो," मैंने कहा। "वरना मैं तुम्हारा कीमा बना दूंगा।"

"तुम क्या करोगे?"

"अगर तुम्हें कीमा पसन्द नहीं, तो मैं तुम्हें पीस कर तुम्हारा आटा बना दूंगा!"

"ऊंह!" ग्लेब ने कहा, "काफ़ी जानदार हो, है न?"

"अच्छी बात है, मैं खुद ही उसे अख़बार से काट डालूं, तो?"

"ऐसी हिम्मत मत कर बैठना," तोल्या द्योजकिन ने कहा, "क्योंकि यह सच्चाई है। और अगर यह सच्चाई न भी होती, तब भी तुम्हें इसे अख़बार से फाड़ फेंकने का अधिकार नहीं होता। तुम केवल इतना कर सकते हो कि इसका उत्तर लिख भेजो।"

"उत्तर, हूंह? अच्छी बात है, मैं तुम्हें उत्तर लिखूंगा!"

अब तक तमाम क्लास अख़बार के आस-पास इकट्ठी हो गई थी और व्यंग-चित्र की ओर इशारे कर कर के सभी बुरी तरह से हंस रहे थे।

मैं इस मसले को यहीं छोड़ने वाला नहीं था, मैं इसका उत्तर लिखने बैठ गया। लेकिन कोई बात नहीं बनी, क्योंकि मुझे इसका बिलकुल भी ज्ञान नहीं था कि किस प्रकार लिखा जाना चाहिए। इसलिए मैं अपने पायनियर लीडर वोलोद्या के पास गया, उसको तमाम कहानी सुनाई और उससे उत्तर लिख देने के लिए कहा।

"मैं बताता हूं कि तुम्हें क्या करना चाहिए," वोलोद्या ने समझाया। "तुम लिख कर वायदा करो कि भविष्य में ऐसा नहीं करोगे, और अच्छे नम्बर हासिल करने के लिए कोशिश करो, ताकि तुम्हें फिर संकेतों की ज़रूरत न पड़े। तुम्हारा पत्र दीवारी अख़बार में लगा दिया जायेगा और मैं उनसे कह दूंगा कि व्यंग-चित्र उतार लें।"

मैंने वही किया जैसा वोलोद्या ने बताया था। मैंने अख़बार को एक पत्र लिखा, जिसमें मैंने वायदा किया कि मैं और परिश्रम से काम करूंगा और भविष्य में संकेतों पर निर्भर नहीं रहूंगा।

अगले दिन वह व्यंग-चित्र उतार लिया गया था और अख़बार के सबसे महत्वपूर्ण स्थान पर मेरा पत्र चिपका हुआ था। मैं बहुत प्रसन्न था, और, जैसी कि हक़ीक़त भी है, मैं वास्तव में अपनी पढ़ाई पर और ज़्यादा मेहनत करने की सोच रहा था, लेकिन किसी भी कारण कहिये, मैं इसे आगे पर टालता रहा, और कुछ दिन बाद जब हमारी गणित की परीक्षा हुई, तो मुझे ५ में से २ नम्बर मिले। हालांकि २ नम्बर लेनेवाला मैं अकेला ही नहीं था। साशा मेद्वेदकिन को भी २ ही मिले थे, इसलिए मैं और वह दोनों एक ही नाव के सवार थे। ओल्गा निकोलायेव्ना ने ये २ नम्बर ही हमारे रिपोर्ट-कार्डों पर दर्ज कर दिये और हमसे कहा कि इन कार्डों पर अपने माता-पिता के हस्ताक्षर करवा कर लायें।

उस दिन स्कूल से घर लौटते समय मैं काफ़ी चिन्तित था। इस भयंकर २ के अंक से छुटकारा पाने के लिए किसी रास्ते की तलाश में अपने दिमाग़ को दौड़ा रहा था और परेशान था कि माताजी को किस प्रकार नम्रतापूर्वक बताऊं कि उनका रुख़ मेरे प्रति अधिक सख़्ती का न हो।

"तुम्हें वही करना चाहिये, जो मित्या क्रुग्लोव ने किया था," शिशकिन बोला।

"यह मित्या क्रुग्लोव क्या बला है?"

"नालचिक के स्कूल में मेरी क्लास का एक लड़का था।"

"अच्छा, वह क्या करता था?"

"जब भी उसे २ नम्बर मिलते, वह घर जाकर मुंह लटका कर बैठ जाता और किसी से कुछ भी न बोलता। वह इस तरह पूरे घण्टे, दो घण्टे और घंटों तक भी बैठा रहता और वह खेलने या किसी और वास्ते घर से बाहर न निकलता। अन्त में उसकी मां उसके लिए परेशान होने लगती।

"'तुम्हें क्या हुआ है?' वह पूछती।

"'कुछ नहीं।'

"'फिर तुम इतने परेशान क्यों दिखाई दे रहे हो?'

"'मुझे नहीं मालूम।'

"'स्कूल में किसी शरारत करने के सिलसिले में तुम बेंच पर खड़े रहे होगे?'

"'नहीं,' वह कहता।

"'किसी से लड़े थे?'

"'नहीं।'

"'कोई खिड़की तोड़ दी है?'

"'नहीं।'

"'अच्छा, आज तो बड़ा अजीब नाटक कर रहे हो,' उसकी मां कहती।

"रात के भोजन के समय वह कुछ नहीं खाता।

"'तुम कुछ खा क्यों नहीं रहे हो?'

"'मुझे कुछ इच्छा नहीं हो रही।'

"'बात क्या है, भूख नहीं है?'

"'हूं।'

"'अच्छा तो तुम बाहर जाकर ताज़ा हवा खा आओ।'

"'मैं बाहर नहीं जाना चाहता।'

"'तब तुम चाहते क्या हो?'

"'कुछ नहीं।'

"'मेरे ख़याल में तुम्हारी तबीयत कुछ ख़राब है?'

"'नहीं, मैं ठीक हूं।'

"उसकी मां उसके माथे पर हाथ रख कर देखती और उसकी बग़ल में थर्मामीटर खोंस देती।

"'नहीं, तुम्हारा टेम्परेचर तो बिलकुल ठीक है। अब भगवान के वास्ते मुझे बताओ तुम्हें क्या परेशानी है? तुम मुझे पागल बनाते जा रहे हो!'

"'मुझे हिसाब में ५ में से २ अंक मिले हैं।'

"'हे भगवान!' उसकी मां कहती और इत्मीनान की सांस लेती। 'तो यह बात है, जिसके लिए यह सब स्वांग रचा जा रहा है, ऐं!'

"'हूं।'

"'अगर तुम मूर्खों की तरह यह नाटक रचने के बजाय बैठ कर पढ़ाई करो, तो तुम्हें बुरे नम्बर नहीं मिलेंगे।'

"और इसका अन्त इस प्रकार होता," शिशकिन ने समाप्त करते हुए कहा।

"बस, बहुत अच्छा रहा!" मैंने कहा। "इस तरीके से वह पहली बार भले ही निकल जाये, लेकिन दूसरी बार उसकी मां फ़ौरन ही यह भांप लेती होंगी कि उसे २ नम्बर मिले हैं।"

"अरे, दूसरी बार वह कुछ और सोच लेता होगा।"

"क्रुग्लोव काफ़ी समझदार लड़का रहा होगा," मैंने कहा।

"हां, वह बहुत ही समझदार लड़का था। उसे हमेशा २ नम्बर ही मिलते थे, और वह हमेशा इस परिस्थिति से छुटकारा पाने के लिए कोई न कोई नया तरीका ईजाद कर लेता था।"

मैंने मित्या क्रुग्लोव का तरीका अमल में लाने का फ़ैसला किया। जब मैं घर पहुंचा तो मुंह लटका कर बैठ गया और जितना संभव हो सकता था, उतना चिन्तित बनने का प्रयत्न किया। माताजी फ़ौरन ही ताड़ गईं।

"क्या बात है?" उन्होंने मुझसे पूछा। "मेरे ख़याल से तुम्हें २ नम्बर मिले होंगे?" मुझे तुरन्त ही स्वीकार करना पड़ गया, और इस पर क्या कलह हुई है कि बस! परन्तु मैं इसके विस्तार में नहीं जाऊंगा, क्योंकि यह यक़ीनी तौर पर दिलचस्प नहीं है।

दूसरे दिन शिशकिन को भी रूसी में २ नम्बर मिले और उसे भी घर पर गर्मागर्मी का सामना करना पड़ा। अगले दिन दीवारी अख़बार पर हम दोनों को लेकर एक व्यंग-चित्र बना

हुग्रा था : मैं श्रौर शिशकिन सड़क पर श्रागे-श्रागे चल रहे हैं श्रौर हमारे पीछे दो टांगों वाला २ का श्रंक दौड़ रहा है।

मैं गुस्से से श्रागबबूला हो उठा।

"देखो, मैं यह सब काफ़ी बर्दाश्त कर चुका हूं!" मैंने सेर्योझा बुकातिन से कहा।

"तुम इतने लाल पीले क्यों हो रहे हो?" सेर्योझा बोला, "क्या तुम दोनों को २-२ नम्बर नहीं मिले हैं?"

"लेकिन हम दोनों ही तो श्रकेले नहीं हैं! साशा मेद्वेदकिन का क्या हुग्रा? उस पर व्यंग-चित्र क्यों नहीं बनाया गया?"

"मुझे नहीं मालूम। हमने तो ईगोर से तुम तीनों का व्यंग-चित्र बनाने के लिए कहा था, लेकिन किसी वजह से उसने सिर्फ़ दो ही को बनाया।"

"मैं तो तीनों के बना रहा था," ईगोर बोला, "लेकिन उसमें काफ़ी जगह नहीं थी, इसलिए दो का ही बना दिया। श्रगली बार मैं साशा का भी बना दूंगा।"

"मुझे इसकी कोई परवाह नहीं," मैंने कहा। "मैं यह सब सहन करनेवाला नहीं हूं। मैं इसका उत्तर लिख रहा हूं।"



"श्राश्रो शिशकिन, इसका उत्तर लिखें," मैंने शिशकिन को सम्बोधित करते हुए कहा।

"कैसा उत्तर?"

"श्ररे, यह बहुत ही श्रासान बात है। तुम बस इतना भर लिख दो कि तुम वायदा करते हो कि श्रब से तुम श्रधिक परिश्रम करोगे श्रौर श्रच्छे नम्बर प्राप्त करोगे। पिछली बार वोलोद्या ने मुझे यही करने के लिए कहा था।"

"ठीक है। तुम लिखो श्रौर मैं तुम्हारे की नक़ल कर लूंगा।"

मैंने बैठ कर लिखा, जिसमें वायदा किया कि भविष्य में श्रपनी पढ़ाई श्रौर श्रधिक परिश्रम-पूर्वक करूंगा श्रौर श्रच्छे नम्बर हासिल करूंगा। जो कुछ मैंने लिखा था, शिशकिन ने उसकी नक़ल कर ली श्रौर उसमें एक वायदा श्रौर जोड़ दिया कि वह ४ से कम नम्बर कभी नहीं हासिल करेगा।

"इससे यह श्रौर श्रधिक श्रच्छा लगेगा," उसने समझाते हुए कहा।

हमने दोनों उत्तर सेर्योझा बुकातिन के हवाले कर दिये।

"अब तुम हमारा व्यंग-चित्र उतार ही सकते हो," मैंने कहा। "और देखो, हमारे पत्र सबसे ख़ास जगह पर लगाये जाने चाहिये।"

"अच्छी बात है," उसने उत्तर दिया।

परन्तु जब हम अगले दिन स्कूल पहुंचे, तो व्यंग-चित्र अभी तक ज्यों का त्यों मौजूद था और हमारे उत्तरों का कहीं पता तक नहीं था। मैं सीधा सेर्योझा के पास गया और उससे जवाब तलब किया।

"हमने सम्पादक-मंडल की बैठक में तुम्हारे मसले पर ग़ौर किया है," वह बोला, "और फ़ैसला किया है कि व्यंग-चित्र न उतारा जाये, क्योंकि ऐसा ही एक वायदा तुमने पहले भी दिया था, लेकिन कुछ बेहतर होने के बजाय तुमने और भी कम नम्बर पाये हैं।"

"कोई बात नहीं," मैं बोला। "अगर तुम नहीं चाहते, तो मेरा उत्तर वहां मत लगाओ, लेकिन व्यंग-चित्र तुम्हें वहां से हटाना पड़ेगा।"

"हमें इस तरह की कोई बात नहीं करनी पड़ेगी," उसने कहा। "अगर तुम समझते हो कि हर बार अपने वायदे पूरा करने की कोशिश किये बिना तोड़ते रहोगे, तो तुम ग़लती पर हो।"

इस बात पर शिशकिन चहक उठा।

"लेकिन इससे पहले मैंने तो कोई वायदा नहीं किया, या किया है कोई? तुमने मेरा उत्तर वहां क्यों नहीं लगाया?"

"तुम्हारा उत्तर अगले अंक में लगा दिया जायेगा।"

"तब तक मैं वहीं लटका रहूंगा?"

"बिलकुल।"

"मेरी बला परवाह करती है!" शिशकिन बोला।

किन्तु मैं इसे इतनी आसानी से छोड़नेवाला नहीं था। अगला घंटा समाप्त होने पर मैं वोलोद्या के पास गया और उसे सारी कहानी कह सुनाई।

"मैं लड़कों से बातचीत करूंगा और उनसे कहूंगा कि जल्दी से जल्दी दूसरा अंक निकालें, जिसमें तुम्हारे उत्तर भी हों," वह बोला। "हम नम्बरों के बारे में जल्दी ही एक मीटिंग करने वाले हैं, इसलिए तुम्हारे ख़त बहुत ही समयोचित होंगे।"

"लेकिन हम अभी व्यंग-चित्र उतार कर उसकी जगह अपने ख़त नहीं लगा सकते?" मैंने उससे पूछा।

"नहीं, इस तरह से यह काम नहीं किया जाता है," वोलोद्या ने कहा।

"लेकिन पिछली बार उन्होंने ऐसा क्यों कर दिया था?"

"पिछली बार उन्होंने समझा था कि जब तुम कह रहे हो कि आगे से अधिक मेहनत से काम करोगे, तो तुम्हारी सचमुच यही इच्छा होगी, और इसलिए उन्होंने तुम्हारे लिए एक अपवाद करना भी स्वीकार कर लिया। लेकिन हम हर बार तो दीवारी अख़बार के साथ इस

तरह की उखाड़-पछाड़ नहीं कर सकते। और जैसा कि तुम जानते हो, हमें इन अख़बारों की फाइल भी तो रखनी होती है। ये अख़बार ही तो एक प्रमाण हैं कि कक्षा किस तरह काम कर रही है और विद्यार्थियों ने कितनी प्रगति की है। जैसा कि तुम अच्छी तरह जानते हो, कुछ लड़के आगे चलकर प्रसिद्ध आविष्कर्त्ता या बढ़िया काम करनेवाले मज़दूर या उड़ाके या वैज्ञानिक बनेंगे, तब कक्षा के अख़बारों का पुराना संग्रह यह बतायेगा कि वे अपने स्कूल में किस तरह पढ़ते थे।"

मुझे यह बात बिलकुल अच्छी नहीं लगी। बात यह है कि मेरी बहुत दिनों से अभिलाषा है कि मैं बड़ा होकर प्रसिद्ध उड़ाका या खोजी बनूं, और अब मैं अपने स्कूल के एक ऐसे लड़के की कल्पना कर रहा था, जो हमारी क्लास के अख़बारों का संग्रह उलट पलट कर देख कर कह रहा हो:

"अरे लड़को, ज़रा देखना, जब यह स्कूल में पढ़ता था तो इसे २ नम्बर मिला करते थे!"

मैंने वोलोद्या से और अधिक बहस नहीं की, लेकिन उसने जो कुछ कहा था उससे मुझ में उदासीनता पैदा हो गई थी। जितना ही मैं इसके बारे में सोचता, उतना ही यह मुझे अप्रिय लगता। किन्तु कुछ देर बाद मुझे ऐसा लगा कि जब तक मैं बड़ा हूंगा, तब तक संभव है, यह अख़बार ही कहीं खो जायेगा और मेरा यह अपमान कभी भी प्रकट न होगा! इसके बाद मैं कुछ अच्छा अनुभव करने लगा।

पाँचवाँ अध्याय



वह व्यंग-चित्र पूरे सप्ताह दीवार पर टंगा रहा। इसे मीटिंग से एक दिन पहले तक नहीं उतारा गया, जब कि नया अंक लगा दिया गया था। उसमें कोई व्यंग-चित्र नहीं था और उसमें मेरे और शिशकिन के उत्तर भी मौजूद थे। इसमें और भी कुछ चीज़ें थीं, लेकिन मुझे अब याद नहीं रहा कि किस सम्बन्ध में थीं।

वोलोद्या ने हमें उस मीटिंग के लिए तैयारी के बारे में सब कुछ समझा दिया था, जिसमें कक्षा के प्रत्येक लड़के की प्रगति पर बहस होने वाली थी। पढ़ाई के बीच जब देर तक की छुट्टी हुई तो यूरा कसात्किन ने, जो हमारे पायनियर जत्थे का नेता है, हमारी प्रगति के सम्बन्ध में बहस करने के लिए हम सबको एक साथ बुलाया। इसमें बहस की कुछ अधिक गुंजायश नहीं थी। हरेक ने कहा कि शिशकिन को और मुझे जल्दी ही अच्छे नम्बर प्राप्त करना शुरू कर देना चाहिए।

जैसा कि स्वाभाविक है, हमने सहमति प्रकट की। कुछ भी हो, हम भी २ नम्बर मिलने पर कुछ विशेष खुश थोड़े ही थे।

अगले दिन हमारी क्लास की मीटिंग हुई।

ओल्गा निकोलायेव्ना ने हमें बताया कि पूरी कक्षा कैसी चल रही है, हमें कितने नम्बर प्राप्त हो रहे हैं और हममें से हरेक को किस किस विषय पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। हम में से जिनको २ नम्बर मिले थे, उनकी भर्त्सना की गई, लेकिन ३ नम्बर लेनेवालों को भी आड़े हाथों लिया गया, क्योंकि जो हमेशा ३ ही नम्बर प्राप्त करते हैं, इससे पहले कि उन्हें पता चले, वे भी २ नम्बर के अधिकारियों की श्रेणी में आ सकते हैं।

इसके बाद उन्होंने बताया कि हमारी कक्षा का अनुशासन बहुत ख़राब है, और यह कि हम पढ़ाई के समय बातचीत करते रहते हैं और एक दूसरे को चुपके चुपके फुसफुसा कर बताते रहते हैं।



इसके बाद हमारे बोलने की बारी आई। मैंने 'हमारे' कहा है, किन्तु वास्तविकता यह है कि मैंने कुछ नहीं कहा। क्योंकि यह मेरी मूर्खता होती कि मैं अपने रिपोर्ट-कार्ड पर २ नम्बर लिए हुए खड़ा होता और अपनी नुमाइश करता। इसलिए मैं चुपचाप बैठा रहा और दूसरों को बोलता रहने दिया।

ग्लेब स्कमेइकिन सबसे पहले बोला। उसने कहा कि हर चीज़ की जड़ यह चुपके चुपके फ़ुसफ़ुसा कर इशारा करना है। इस लड़के के दिमाग़ पर 'चुपके-चुपके फ़ुसफ़ुसाना' हावी था। उसने कहा कि अगर हम इशारेबाज़ी का सिलसिला समाप्त कर दें, तो अनुशासन बेहतर हो कर रहेगा, और कोई भी दूसरों द्वारा चुपके-चुपके बताये जाने पर आश्रित नहीं रहेगा। क्योंकि अगर कोई उत्तर नहीं फ़ुसफ़ुसायेगा, तो वे लड़के, जो दूसरों द्वारा उत्तर फ़ुसफ़ुसाये जाने पर आश्रित हैं, अपने बारे में स्वयं सोचने को बाध्य होंगे।

"अब से मैं जानबूझ कर ग़लत उत्तर फ़ुसफ़ुसाया करूंगा। इससे उन्हें सबक मिलेगा, जो बताये जाने के लिए आश्रित हो चुके हैं," उसने कहा।

"दोस्ती निभाने की यह अच्छी तरकीब है, न!" वास्या येरोख़िन ने कहा।

"मेरे ख़याल से तुम फ़ुसफ़ुसा कर बताये जाने को दोस्ती निभाना समझते हो?"

"नहीं, इस तरह बताना भी दोस्ती नहीं है। आपको अपने साथियों को वह चीज़ समझानी चाहिये, जो वे न समझते हों, लेकिन यह फ़ुसफ़ुसा कर बताना हानिकारक ही है।"

"यही तो हम इतने अरसे से कहते चले आ रहे हैं, लेकिन अभी तक बताने का यह सिलसिला जारी है।"

"ठीक है, तो इन बतानेवालों को सामने लाया जाये, यही एक तरीका है।"

"आप उनको कैसे सामने लायेंगे?"

"दीवारी अख़बार में उनके बारे में लिख कर।"

"यह ठीक है!" ग्लेब चिल्लाया। "हम अख़बार में फ़ुसफ़ुसा कर संकेत द्वारा बताये जाने के विरुद्ध संघर्ष शुरू करेंगे।"

इसके पश्चात पहली और दूसरी पायनियर टोली के लड़के बोले। उन्होंने कहा कि वे पूरी कक्षा के सम्मान के लिए लड़ेंगे और उन्होंने अधिक नम्बर प्राप्त करने के लिए परिश्रम करने का वचन दिया।

फिर ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं। उन्होंने कहा कि यदि हम अपनी पढ़ाई-लिखाई भली प्रकार चलाने के इच्छुक हैं, तो हमें समुचित रूप से अपने समय को अनुशासनबद्ध करना होगा।

हमें जल्दी सोना और जल्दी जगना चाहिये। हमें अपना दिन व्यायाम से प्रारम्भ करना चाहिए और अधिक से अधिक समय तक जितना संभव हो सके, खुली हवा में रहना चाहिए। स्कूल के बाद लौटते ही पढ़ाई शुरू नहीं कर देनी चाहिए। हमें पहले, घंटे या दो घंटे तक विश्राम करना चाहिए। (बिलकुल वही बात, जो मैं हमेशा लीका से कहता रहता हूं!) परन्तु हमें अपना घर का काम दिन ही में निपटा लेना चाहिए, क्योंकि रात में देर तक पढ़ाई करना हानिकारक है, यह इसलिए कि तब तक दिमाग़ थक जाता है और आप ठीक तरह से सोच नहीं सकते। जब आप अपनी पढ़ाई करें, तो प्रारम्भ सबसे कठिन विषय से करें और जो सबसे आसान हों, उन्हें आखिर के लिए छोड़ें।

स्लावा वेदेरनिकोव बोला:

"ओल्गा निकोलायेव्ना, आपने कहा कि स्कूल के बाद हमें एक या दो घंटे विश्राम करना चाहिये। किन्तु हम आराम भला किस प्रकार कर सकते हैं? मुझे लीजिये, मैं बिना कुछ किये ख़ामोश नहीं बैठ सकता। मुझे खाली बैठे बैठे घबराहट होने लगती है।"

"विश्राम के मायने यही नहीं है कि तुम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहो। तुम घूमने जा सकते हो या कोई खेल खेल सकते हो।"

"क्या हम फ़ुटबाल खेल सकते हैं?" मैंने पूछा।

"क्यों नहीं। फ़ुटबाल का खेल विश्राम का बहुत अच्छा साधन है," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं। "लेकिन यह नहीं कि तुम सारे दिन फ़ुटबाल खेलते रहो। एक घंटे फ़ुटबाल खेलना, दिमाग़ को पढ़ाई के लिए तैयार कर देने के लिए काफ़ी है।"

"जल्दी ही बरसात शुरू हो जायेगी," शिशकिन बोला। "फ़ुटबाल के मैदान में कीचड़ ही कीचड़ होगी, और कोई दूसरी जगह खेलने के लिए नहीं होगी।"



"यह बात ठीक है, लड़को," वोलोद्या बोला। "हम जल्दी ही स्कूल में कसरत का प्रबन्ध करने वाले हैं। और हम सर्दियों में बास्केटबाल भी खेल सकेंगे।"

"बास्केटबाल!" शिशकिन चीख़ा, "ज़िन्दाबाद! मैं कप्तान बनूंगा! मैं एक बार बास्केटबाल की टीम का कप्तान रह भी चुका हूं, भई ईमान से रह चुका हूं!"

"अच्छा यही होगा कि तुम पहले अपनी रूसी पर ध्यान दो," वोलोद्या बोला।

"मेरी रूसी? ओह–क्यों नहीं! वह सब मैं कर लूंगा," शिशकिन ने कहा।

इसके बाद मीटिंग समाप्त हो गई।

"आप लोगों को अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए!" जब सब चले गये और केवल हमारी टोली रह गयी तो वोलोद्या बोला।

"क्यों?" हमने पूछा।

"तुमने केवल २ नम्बर नहीं लेने का ही वायदा किया, जबकि दूसरी तमाम टोलियों ने क़सम खाई है कि वे ४ नम्बर से कम कभी प्राप्त नहीं करेंगी।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि किस कारण से हम दूसरों से बदतर हैं," लेन्या अस्ताफ़्येव बोला। "यदि वे ४ नम्बर से कम हासिल नहीं कर सकते, तो हम भी क्यों नहीं कर सकते?"

"यह किसने कहा है कि वे हम से बेहतर हैं?" वान्या पख़ोमोव ने पूछा।

"सुनो, दोस्तो," वास्या येरोख़िन बोला। "हमें अपने आपको आगे बढ़ाना है। मैं ईमानदारी से ४ नम्बर से कभी कम हासिल न करने के लिए काम करने का वायदा करता हूं।"

मुझे बात जंची।

"वह ठीक कहता है," मैंने कहा। "हमारी टोली दूसरों से बदतर नहीं है। मैं भी अब पीछे नहीं रहूंगा। यह आप देखेंगे। मैंने केवल अभी बाक़ायदा प्रयत्न करना आरम्भ नहीं किया है, लेकिन अब मैं करूंगा। मुझे बस शुरू करने की देर है।"

"हां, तुम्हें तो केवल शुरू करने भर की देर है और फिर तुम चाहोगे कि शुरू ही न करो," शिशकिन बोला।

"तुम अपनी कहो," वोलोद्या ने उससे कहा। "क्या तुम अच्छे नम्बर पाना नहीं चाहते?"

"मेरा लक्ष्य ४ नम्बर नहीं है," शिशकिन ने कहा। "और तमाम विषयों को छोड़कर रूसी के लिए मैं केवल ३ नम्बर लेने का वायदा कर सकता हूं।"

"ज़रा आपकी सुनिये!" यूरा ने कहा। "तमाम कक्षा अधिक परिश्रम करने और अधिक नम्बर पाने की ज़िम्मेवारी ले रही है, केवल आपको छोड़कर। क्या कहने हैं आपके!"

"मैं ऐसे किसी काम को करने का वायदा क्यों करूं, जिसे मैं कर न सकूं? मैंने अपनी ज़िन्दगी में कभी रूसी में ३ से अधिक नम्बर नहीं पाये, और वही मुझे मिलने की आशा है। ३ नम्बर कुछ बुरे नहीं होते।"

"देखो शिशकिन," वोलोद्या ने कहा। "तुम्हें इतना अड़ियल नहीं होना चाहिए। क्या तुमने उस पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किये थे, जिसमें तुमने वायदा किया था कि तुम तमाम विषयों में ४ नम्बर से कम नहीं लोगे?"

"मैंने ऐसा वायदा कब किया था?"

"वह सब क्या है?" वोलोद्या ने दीवारी अख़बार की ओर इशारा करते हुए कहा, जिम पर हमारे वायदे मौजूद थे।

"तो मैंने वायदा किया था?" शिशकिन बोला। "मैं भूल गया था।"

"अच्छा अब तुम क्या कहते हो?"

"अब तो कोई और चारा ही नज़र नहीं आता। मुझे वायदा पूरा ही करना पड़ेगा," शिशकिन ने उत्तर दिया।

"हुर्रा!" दूसरों ने हर्षध्वनि की। "शाबाश शिशकिन! इसने हमें नीचा नहीं दीखने दिया। अब हम सब अपनी कक्षा के सम्मान के लिए संघर्ष करेंगे।"

किन्तु शिशकिन बिलकुल भी प्रसन्न नहीं था। वास्तव में वह इतना खिन्न था कि घर लौटते हुए तमाम रास्ते वह मुझ से बोला भी नहीं। वह मुझसे रुष्ट था, क्योंकि मैंने उसे अख़बार में उत्तर लिखने के लिए उकसाया था।



छठा अध्याय

मैं शिशकिन के बारे में तो नहीं कह सकता, परन्तु मैंने तो एकदम अपने जीवन को नये सिरे से ढालने का फ़ैसला कर लिया था। सबसे महत्वपूर्ण चीज़ थी कार्यक्रम। मैं ओल्गा निकोलायेव्ना के कहने के अनुसार जल्दी ही, लगभग १० बजे, सो जाया करूंगा और सुबह जल्दी ही उठ कर स्कूल जाने से पहले अपने पाठ दोहरा लूंगा। स्कूल के बाद म लगभग डेढ़ घंटे फ़ुटबाल खेलूंगा और इसके बाद ताज़ा दिमाग़ होकर अपने घर के काम पर बैठ जाऊंगा। इसके बाद मैं जो जी चाहे कर सकता हूं... लड़कों के साथ खेल सकता हूं या कोई पुस्तक पढ़ सकता हूं, जब तक कि सोने का समय न हो जाये।

मैंने हर चीज़ के बारे में भली भांति योजना बनाई और अपना स्कूल का काम करने से पहले, फ़ुटबाल खेलने चल दिया। मैंने निश्चय किया था कि डेढ़ घंटे या अधिक से अधिक दो घंटे से ज़्यादा फ़ुटबाल नहीं खेलूंगा, लेकिन जिस क्षण ही मैं मैदान में पहुंचा, हर बात मेरे दिमाग़ से हवा हो गई, और जब तक मुझे अपना निश्चय याद आया, काफ़ी अंधेरा हो चुका था। इस प्रकार देर हो जाने से पहले मैं अपनी पढ़ाई पर नहीं बैठ सका, जिसके फलस्वरूप मेरा दिमाग़ बाक़ायदा काम नहीं कर पाया। मैंने मन ही मन क़सम खाई कि आगे से मैं देर तक बाहर नहीं रहूंगा, किन्तु अगले दिन भी वही हुआ। पूरे खेल के दौरान मैं अपने आप से कहता रहा: "बस एक गोल और, फिर मैं घर चल दूंगा," लेकिन जैसे भी हो, हर बार हम ही गोल करते रहे, और मैं अगला गोल करने के चक्कर में अटका रहा। और यह सिलसिला फिर अंधेरा होने तक चलता रहा।

इस बार मैं अपने ऊपर बहुत ही नाराज़ था। "प्यारे भाई, इस तरह से काम नहीं चलेगा!" मैंने मन ही मन कहा, और मैं सोचने लगा कि क्या कारण है कि मैं अपने निश्चयों पर नहीं टिक पाता हूं। मैं सोचता रहा और बार-बार सोचता रहा, और अन्त में मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि इस सब मुसीबत का मुख्य कारण यह है कि मुझ में इच्छा-शक्ति का अभाव है। वैसे तो कुछ-कुछ इच्छा-शक्ति मुझ में थी, किन्तु वह इतनी कमज़ोर थी कि जो कुछ

मुझे करना चाहिए था, वह करने के लिए और जो कुछ नहीं करना चाहिए था, उसे रोकने के लिए अपने आपको तैयार नहीं कर पाता था। मान लीजिये, यदि मैंने कोई मनोरंजक पुस्तक पढ़ना आरम्भ कर दिया है, मैं अपने आपको आसानी से इसे छुड़ा नहीं पाता था। मुझे अभी अपनी पढ़ाई करनी हो, या सोने का समय हो गया हो, मैं पढ़ता ही रहूंगा। माताजी मुझे सो जाने के लिए कहेंगी। पिताजी कहेंगे कि सोने का समय हो गया है, लेकिन जब तक बत्ती न बुझा दी जाए, मैं इस पर कान ही नहीं धरूंगा। यही बात फ़ुटबाल के साथ भी है। मुझमें इतनी भी इच्छा-शक्ति नहीं कि खेलना बन्द कर दूं। यही सबसे बड़ी मुसीबत थी!

मैंने अनुभव किया कि मुझे अपने बारे में बहुत ग़लतफ़हमी रही है, मैं हमेशा अपने आपको एक बहुत ही दृढ़-चरित्र और प्रबल इच्छा-शक्ति रखने वाला व्यक्ति समझता आ रहा था। किन्तु मालूम हुआ कि मैं भी शिशकिन की तरह बे-पेंदी का लोटा था। मैंने फ़ैसला कर लिया था कि अब अपनी इच्छा-शक्ति दृढ़ करने के लिए साधना भी आवश्यक है। फिर लोग अपनी इच्छा-शक्ति के विकास के लिए क्या करते हैं? वे ऐसे काम करते हैं, जो वे नहीं करना चाहते और वह काम नहीं करते, जो वे करना चाहते हैं। जैसे मुझे प्रातःकाल व्यायाम करना बिलकुल पसन्द नहीं था, इसलिए मैंने फ़ैसला किया कि अब से मैं नियमित रूप से व्यायाम करना आरम्भ करूंगा। जब मेरी इच्छा बाहर जाने और फ़ुटबाल खेलने की होगी, मैं घर पर ही रहूंगा, तथा जब मेरी इच्छा कोई मनोरंजक पुस्तक पढ़ने की होगी, तो मैं कोई दूसरा काम ले बैठूंगा। यह सिलसिला मैं एकदम शुरू कर दूंगा।

इसी दिन ही यह घटना घटी कि माताजी ने चाय के साथ खाने के लिए मेरी प्रिय केक बनाई। इसके बिलकुल बीच का बेहतरीन हिस्सा मुझे दिया गया। किन्तु जब मैंने देखा कि मैं यह केक खाने के लिए बहुत ही बेसब्र हो उठा हूं, मैंने निश्चय किया कि मैं नहीं खाऊंगा। मैंने इसके बजाय साधारण रोटी का एक टुकड़ा खा लिया और अपनी केक तश्तरी में ही रखी रहने दी।

"तुम अपनी केक क्यों नहीं खा रहे हो?" माताजी ने मुझसे पूछा।

"मैं इसे परसों से पहले नहीं खाऊंगा। मैं आज से ठीक दो दिन बाद इसे चाय के साथ खाऊंगा।"

माताजी हंसी, "तब तक यह बिलकुल बासी हो जायेगा। अच्छा यही है कि तुम अभी खा लो।"

"नहीं, मैं अपनी इच्छा-शक्ति की परीक्षा ले रहा हूं। यदि मैं इसे दो दिन तक नहीं खाता हूं, तो इसके मायने होंगे कि मेरी इच्छा-शक्ति मज़बूत है।"

"अगर तुम खा लो, तो?" लीका ने जानना चाहा।

"सवाल ही बेहूदा है! अगर खा लेता हूं, तो इसके मायने होंगे कि मेरी इच्छा-शक्ति निर्बल है।"

"मेरे ख़याल से तुम अपने ऊपर काबू न रख सकोगे," लीका बोली।

"हम भी देख लेंगे।"

अगले दिन मैं उठा और मैंने व्यायाम किया, यद्यपि मेरी बिलकुल भी इच्छा नहीं थी। फिर मैं गया और अपने ऊपर ठंडा पानी डाल लिया, यह भी ऐसी बात है जिसे मैं नापसन्द करता हूं। इसके बाद मैंने नाश्ता किया और स्कूल चल दिया। मेरा केक का टुकड़ा मेरे स्थान के समीप मेज़ पर रखा था। जब मैं घर लौटा, तब भी यह वहीं रखा हुआ था, लेकिन माताजी ने उसे चीनी के कटोरे के ढकने से ढांक दिया था, ताकि वह ख़राब न हो जाये। मैंने ढकना उघाड़ कर उसे देखा, लेकिन वह अभी ख़राब होना शुरू भी नहीं हुआ था। मैं इसे निगल जाने के लिए बेचैन हो उठा, लेकिन मैंने अपनी इच्छा को दबा लिया।

मैंने निर्णय किया था कि आज मैं फ़ुटबाल नहीं खेलूंगा। मैं केवल एक घण्टा विश्राम करूंगा और फिर पढ़ने बैठ जाऊंगा। किन्तु न जाने लोग विश्राम कैसे करते हैं! यह कैसे हो सकता है कि आप खाली बैठे रहें और अंगूठे चटकाते रहें। ठीक तरह से आराम करने के लिए आप कोई खेल खेलेंगे या कोई और दिलचस्प काम करेंगे। "परन्तु मैं क्या करूंगा?" मैं सोचने लगा। "मैं कौन सा खेल खेलूंगा?" तब मुझे ख़याल आया: "मैं ज़रा फ़ुटबाल का खेल ही देख आऊंगा।"

लेकिन इससे पूर्व कि मैं कुछ सोच सकूं, मेरे पांव मुझे बाहर ले आये। केक का टुकड़ा तश्तरी में अभी तक पड़ा था।

सड़क पर जाते हुए मैंने अपने आपको खींचा। "वहीं खड़ा रह। तू क्या करने जा रहा है? तू फ़ुटबाल खेलना चाहता है, है न? और यही वह बात है जो तुझे नहीं करनी है। क्या इच्छा-शक्ति की साधना करने का यही तरीका है?" मैं वापस लौटने वाला था, किन्तु मैंने सोचा: "मैं वहां जाकर बस दूसरे लड़कों को खेलते देखूंगा। मैं स्वयं नहीं खेलूंगा।"

जब मैं मैदान में पहुंचा, खेल पूरे ज़ोरों पर था। शिशकिन ने मुझे देख लिया और चीख़ा:

"अरे तुम वहां खड़े क्या कर रहे हो! वे हम पर १० गोल कर चुके हैं! आकर हमारी सहायता करो!"

और यह समझने से पहले ही कि मैं मैदान में अतिरिक्त व्यक्ति हूंगा, गेंद के पीछे दौड़ने लगा।

स्पष्ट है कि जब मैं घर लौटा, तो फिर देर हो चुकी थी।

"मैं भी कैसा बे-पेंदी का लोटा हूं!" मैंने मन ही मन सोचा। "मैंने अपना दिन कितनी अच्छी तरह से आरम्भ किया था और इस कम्बख़्त खेल ने आकर सब कुछ चौपट कर दिया।"

जब मैं घर लौटा, तो केक अभी तक तश्तरी में रखी थी। मैंने उठाई और खा ली। "अब इससे क्या फ़र्क पड़ता है," मैंने सोचा। "मुझ में इच्छा-शक्ति है ही नहीं।"

लीका अन्दर आई और जब उसने तश्तरी खाली देखी तो बोली:

"आख़िर तुम अपने आप पर काबू नहीं रख सके, न?"

मैंने ऐसा दिखाया जैसे मैंने उसकी बात ही न सुनी हो।

"तुमने अपनी केक खा ली?"

"मैंने खा ली तो क्या हुआ! मेरा हिस्सा था, मैंने खा लिया, तुम्हारा तो नहीं खाया।"

"तुम इतने गर्म क्यों हो रहे हो? मैंने ऐसी कोई बात नहीं की। मैं तो समझती हूं कि तुमने अपने आप पर जितना काबू किया, कमाल है। वास्तव में तुम्हारा चरित्र बहुत ही मज़बूत है। मैं तो कभी भी ऐसा नहीं कर पाती।"

"तुम यह कैसे कह रही हो?"

"मुझे मालूम है, मैं ऐसा नहीं कर सकती थी। अगर तुम यह केक यहां और कुछ देर तक पड़ी रहने देते, तो मैं ख़ुद इसे खा गई होती।"

"तुम्हारा ख्याल है कि मेरा चरित्र मज़बूत है?"

"इसमें क्या शक है, वह तो है ही।"

इसके बाद मैंने पहले की अपेक्षा कुछ अच्छा अनुभव किया और मैंने फ़ैसला किया कि अगला दिन मैं फिर इसी तरह आरम्भ करूंगा, यद्यपि आज का दिन बुरी तरह असफल रहा है। मैं नहीं कह सकता कि यह दिन भी सफल रहता, यदि मौसम इतना अच्छा नहीं होता, किन्तु मेरा सौभाग्य ही समझिये कि तमाम दिन वर्षा होती रही, और जैसा कि शिशकिन ने कहा था, फ़ुटबाल का मैदान चौपट हो चुका था और खेल न होने की घोषणा कर दी गई थी। क्योंकि कोई दूसरा नहीं खेल रहा था, इसलिए मुझे भी खेलने की इच्छा नहीं हुई। इन्सान भी कितना विचित्र प्राणी है! आप मैदान में खेलते हुए लोगों के बारे में सोचते हुए जब अपने घर पर बैठे होंगे, तो आप अपने को अत्यन्त दुखी अनुभव करने लगेंगे। मैं कितना अभागा हूं! परन्तु जब आप यह समझते हुए घर पर हों कि आपकी तरह हरेक ही अपने घर पर बैठा है और कोई भी नहीं खेल रहा, तब आपको अपने बारे में बिलकुल भी अफ़सोस नहीं होगा।

इस समय भी वैसा ही था। बाहर बूंदाबांदी हो रही थी, जैसा कि शिशिर ऋतु में होती है, और मैं आराम से घर में बैठा अपनी पढ़ाई कर रहा था। गणित की बारी आने तक, हर चीज़ सुन्दर ढंग से चलती रही। मैंने सोचा कि इसके लिए बेकार का सिर दर्द मोल लेने में क्या तुक है, जब मैं किसी भी लड़के के पास जाकर उसकी मदद हासिल कर सकता हूं।

इसलिए मैं आलिक सोरोकिन के यहां चला गया। वह हमारी टोली में सबसे अच्छा गणित जानता है। उसको हमेशा ५ नम्बर मिलते हैं।

मैंने उसे अकेले ही शतरंज खेलते हुए पाया।

"मुझे बड़ी खुशी है कि तुम आ गये," वह बोला। "हम शतरंज की एक बाज़ी लड़ा सकते हैं।"

"मैं शतरंज खेलने नहीं आया हूं। मैं चाहता हूं कि तुम गणित में मेरी मदद करो।"

"गणित? मैं ज़रूर तुम्हारी मदद करूंगा। लेकिन गणित की अभी क्या जल्दी है! मैं यह सब तुम्हें चुटकियों में समझा दूंगा। पहले एक बाज़ी हो जाय। शतरंज खेलना तुम्हें लाभ पहुंचायेगा। शतरंज गणित-शास्त्र में सहायता देती है।"



"हिश्त!" मैंने कहा।

"यह बिलकुल सच बात है। तुम्हारे ख़याल में मैं गणित में इतना तेज़ क्यों हूं? क्योंकि मैं शतरंज खेलता हूं।"

"तब ठीक है, आग्रो खेलें," मैं बोला।

हमने ख़ानों में मोहरे जमाये और खेलना शुरू कर दिया। किन्तु मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि मैं उसके साथ नहीं खेल पाऊंगा। वह उन लोगों में से है, जो खेल के दौरान भयंकर रूप से उत्तेजित हो उठते हैं, और जब भी मैंने कोई ग़लत चाल चली तो हर बार वह नाराज़ हो उठा और मुझ पर चिल्लाना शुरू कर दिया।

"अरे, तुम कर क्या रहे हो? क्या यह कोई खेल का तरीक़ा है? क्या चाल चली है!"

"इसमें ग़लत क्या है?" मैंने पूछा।

"कुछ नहीं, सिर्फ़ इतना ही कि मैंने तुम्हारा प्यादा पीट दिया है।"

"तुम इसे पीट लो, लेकिन भगवान के वास्ते मुझ पर चिल्लाना बन्द करो!"

"मैं चिल्लाने से कैसे बाज़ आ सकता हूं, जब तुम खेल ही मूर्खतापूर्ण खेल रहे हो!"

"तुम्हें इसकी चिन्ता क्यों है?" मैंने कहा। "इससे तो तुम ही जल्दी जीतोगे!"

"मुझे अच्छे खिलाड़ियों को हराना पसन्द है, तुम्हारे जैसे काठ के उल्लुओं को नहीं।"

"तो मैं काठ का उल्लू हूं, क्यों?"

"हां, कुछ हो तो ऐसे ही।"

जब तक वह बाज़ी जीत नहीं गया, वह इसी क़िस्म की बेहूदा आवाज़ाकशी करता रहा, और फिर बोला:

"आओ, दूसरी बाज़ी खेलें।"

अब मेरे लिए ज़रूरी हो गया था कि उसके घमंड को नीचा दिखाने के लिए उसे हराया जाये।

"अच्छी बात है," मैं बोला। "लेकिन वायदा करो कि चिल्लाओगे नहीं, अगर तुमने ऐसा किया, तो मैं खेल बन्द करके अपने घर चल दूंगा।"

इस प्रकार हमने दूसरी बाज़ी शुरू की। इस बार वह चिल्लाया नहीं, लेकिन क्योंकि वह अपना मुंह बन्द नहीं रख सकता था, इसलिए उसने बन्दर की तरह बड़बड़ाना और मेरा मज़ाक उड़ाना जारी रखा।

"यह बात है!" वह बेहूदा ढंग से कहता। "तो यह है हमारे खेल का ढंग, है न? हूं! हूं! इस बार हम काफ़ी चुस्ती का खेल खेल रहे हैं, नहीं क्या! अच्छा, अच्छा, बहुत खूब!"

यह ढंग काफ़ी ऊबा देने वाला था।

मैं वह बाज़ी हार गया, और न जाने कितनी और।

इसके बाद हमारा रुख़ मेरे गणित की ओर हुआ। लेकिन उसमें भी उसका बेहूदा चरित्र उभर आया। वह बिना गर्म हुए कोई बात समझा ही नहीं सकता था।

"किन्तु यह तो बहुत ही सरल है! बच्चा भी इसे समझ सकता है! इसमें ऐसा कठिन क्या है? मुझे तुम पर आश्चर्य होता है! कमाल है, तुम इतना भी नहीं बता पा रहे कि कब जमा करना है और कब घटाना है! यह हमने तीसरी में सीखा था! तुम ऐसे दिखाई देते हो, जैसे तुम चांद से गिर पड़े हो!"

"सुनो," मैं बोला, "यदि तुम बिना चीखे-चिल्लाये नहीं समझा सकते, तो मैं किसी दूसरे के पास चला जाऊंगा।"

"मैं समझा रहा हूं, लेकिन तुम नहीं समझते!"



"तुम बिलकुल भी नहीं समझा रहे हो। तुम सिर्फ़ टाल रहे हो। मैं पूछना चाहूंगा कि इससे चांद का क्या वास्ता है?"

"अच्छी बात है, नाराज़ मत हो। मैं कोशिश करूंगा कि तुम आसानी के साथ समझ सको।"

लेकिन बेकार सिद्ध हुआ। मैंने उसके साथ पूरी दोपहरी गुज़ारी, किन्तु मुझे उससे किसी भी प्रकार की वास्तविक सहायता बिलकुल नहीं मिली। यह और भी बदतर रहा कि मैं एक बार भी उसे शतरंज में नहीं हरा पाया। यदि वह ऐसा घमंडी गधा नहीं होता, तो मुझे इसकी परवाह न रहती। किन्तु अब तो हर हालत में उसे पछाड़ना ही था, इसलिए इसके बाद से मैं उसके यहां प्रतिदिन अपने गणित में मदद के लिए जाने लगा और हम घंटों शतरंज कर गुज़ारने लगे।

धीरे-धीरे मुझे खेलना आ गया, और कभी-कभी तो मैं दरअसल जीतने भी लगा। यह सही है कि ऐसा प्रायः नहीं होता था, किन्तु जब भी यह हुआ, मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई; पहले तो इसलिए कि जब वह देखता कि वह हार रहा है, तो वह बन्दर की तरह बड़बड़ाना बन्द कर देता, और दूसरे इसलिए कि वह बुरी तरह बौखला उठता... वह उछलता और फिर बैठ जाता तथा अपना सिर पकड़ लेता। उसे इस हास्यास्पद मुद्रा में देख कर बड़ा मज़ा आता। जब मैं बाज़ी हारता हूं, तो कभी असन्तुलित नहीं होता, किन्तु मुझे अपने साथी के हारने पर भी कोई प्रसन्नता नहीं होती। परन्तु आलिक इसके बिलकुल विपरीत है, जब वह जीतता है तो अपनी खुशी कभी नहीं छिपा सकता, और जब वह हारता है, तो अपने बाल नोचने पर आमादा हो जाता है।

मैं बाक़ायदा शतरंज सीखने के लिए इतना उत्सुक था कि मैं लीका को घेर कर उसके साथ खेलने लगा, और जब कभी पिताजी को समय मिलता, उनके साथ भी खेलता। एक दिन पिताजी ने बताया कि कुछ दिन पहले वह शतरंज पर एक किताब ख़रीद कर लाये थे। वह घर पर कहीं पड़ी होगी। अगर मैं बाक़ायदा सीखना चाहता हूं, तो मुझे वह किताब पढ़नी चाहिये, उन्होंने कहा। मैंने उस किताब के लिए तमाम घर छान मारा और अन्त में मैंने उस सन्दूक की तली में से उसे ढूंढ़ निकाला, जिसमें हम पुरानी पुस्तकें रखते थे। आरम्भ में मैंने समझा था कि उसमें से मैं कुछ भी नहीं समझ पाऊंगा, लेकिन जब मैंने उसे पढ़ना शुरू किया, तो उसे वास्तव में काफ़ी सरल पाया। उसमें लिखा था कि लड़ाई की तरह शतरंज में भी आपको अपने मोहरों को आगे बढ़ा कर और उन्हें विरोधी की मोर्चाबन्दी में घुसा कर उसके बादशाह पर हमला करने में जितनी जल्दी हो सके पहल हथियाने का प्रयत्न करना चाहिए। इसमें बताया गया था कि आपको खेल कैसे शुरू करना चाहिए, कैसे हमले की तैयारी करनी चाहिए, कैसे आप अपनी रक्षा करें और इसी प्रकार की तमाम आवश्यक बातें उसमें लिखी थीं।

मैंने इसके पढ़ने में काफ़ी दिन लगाये, और मैं फिर आलिक के पास पहुंचा तथा मैंने कितनी ही बाज़ियां जीतीं। आलिक इतना आश्चर्यचकित रह गया कि वह समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या कहे। वह समझ नहीं सका कि यह हो क्या गया था। इतनी जल्दी ही मैं इतना

बढ़िया खेल रहा था कि वह एक भी बाज़ी, इत्तफ़ाक से भी, नहीं जीत सका था। अब पांसा पलट चुका था।

हमने शतरंज इतनी खेली कि गणित के लिए बहुत कम समय रह पाया था, और आलिक जल्दबाज़ी में ही जो कुछ बता सका, उससे विषय पहले की अपेक्षा और अधिक धुंधला बन गया था। मैं शतरंज खेलना सीख गया था, किन्तु मैंने ऐसा नहीं पाया कि इसने मेरे गणित में कुछ सहायता पहुंचाई हो, क्योंकि मैं इस विषय में अभी तक पीछे लटका हुआ था। अतः मैंने शतरंज खेलना बिलकुल ही बन्द कर देने का फ़ैसला किया। इसके अतिरिक्त मैं इससे ऊब गया था तथा आलिक के साथ और अधिक खेलने में मज़ा नहीं रहा था। इसलिए एक दिन मैंने उससे कह दिया कि मैं शतरंज से विदा ले चुका हूं।

"तुम सनकी हो!" वह बोला। "तुममें शतरंज के लिए वास्तविक प्रतिभा है। यदि तुम इसमें लगे रहे, तो किसी दिन तुम एक नामी शातिर बन सकते हो!"

"ख़ाक प्रतिभा है," मैंने कहा। "यह सब मैंने एक किताब से सीखा है!"

"कौन सी किताब?"

"शतरंज सीखने की किताब। तुम चाहो, तो वह मैं तुम्हें भी दे सकता हूं। उसे पढ़ो और फिर तुम भी मेरी तरह ही अच्छी शतरंज खेलने लगोगे।"

आलिक वह पुस्तक पाने के लिए इतना उत्सुक था कि वह मेरे साथ सीधा मेरे घर आया और किताब लेकर वह फ़ौरन ही पढ़ डालने के लिए, वापस अपने घर के लिए दौड़ गया। जहां तक मेरा प्रश्न है, मैंने निश्चय किया था कि जब तक मैं अपने गणित को नहीं सुधारता शतरंज नहीं खेलूंगा।



सातवाँ अध्याय

हमारे पायनियर लीडर, वोलोद्या ने हमें बताया कि स्कूल की ओर से आयोजित होने वाले संगीत-नाट्य समारोह का समय आ पहुंचा है। इस विचार से प्रत्येक उत्साह से भर गया। कुछ लड़कों ने कविताएं सुनाने का वायदा किया। दूसरों ने ऐसे व्यायाम का प्रदर्शन देने का वायदा किया, जो अन्त में सूच्याकार स्तम्भ की आकृति में समाप्त होगा। ग्रीशा वसील्येव ने कहा कि वह 'बलालाइका' (तारों वाला रूसी वाद्य-यंत्र) पर चुनी हुई धुनें बजायेगा, और पावलिक कोज़्लोव्स्की 'होपक' नृत्य प्रस्तुत करेगा। परन्तु वान्या पख़ोमोव और ईगोर ग्राचोव ने जो विचार रखा, वह सबसे बढ़िया था। उन्होंने पुश्किन की कविता 'रुस्लान और लुदमीला' के उस अंश को अभिनीत करने का सुझाव रखा जिसमें रुस्लान दैत्य के सिर से युद्ध करता है। यह अंश रूसी की हमारी पुस्तक में था, जिसे हम अभी पढ़ चुके थे। ईगोर ग्राचोव ने कहा कि वह दैत्य का सिर प्लाइवुड से बना कर उस पर रोग़न करके उसे अधिक से अधिक विकराल रूप दे देगा और स्वयं इसके पीछे छुप कर पंक्तियां बोलेगा, वान्या रुस्लान का अभिनय करेगा। वह स्वयं अपने लिए एक लकड़ी का भाला बनायेगा, जिसकी सहायता से उसे दैत्य के सिर से लड़ना है।

शिशकिन इस संगीत-नाट्य कार्यक्रम के लिए कुछ करने को बेचैन था, और वह मुझे साथ लेकर ओल्गा निकोलायेव्ना के पास पहुंचा और उनसे कहने लगा कि हमें भी इस प्रदर्शन में भाग लेने दिया जाना चाहिये। किन्तु उन्होंने मना कर दिया।

"जब तक तुम अपने नम्बरों में सुधार नहीं करोगे, इसमें भाग नहीं ले सकते," वह बोलीं।

तमाम लड़कों ने अपना अपना पार्ट याद करना और मंच पर उनका अभ्यास प्रारम्भ कर दिया, और शिशकिन तथा मैं ईर्षा-पूर्ण दृष्टि से उन्हें दीवार के ऊपर से झांक-झांक कर देखते रहते। ईगोर ने दैत्य का सिर बनाने में प्लाइवुड का पूरा तख़्ता इस्तेमाल कर डाला। उसने नीचे का जबड़ा अलग से बनाया था और उसे इस तरह से लगाया था कि मुंह खुल सके। फिर उसने उस तमाम पर चित्रकारी की थी, जिसमें आंखों को बहुत ही भयंकर रूप से फटी हुई

अंकित किया गया था। जब वह उसके पीछे छुपा और जबड़े को ऊपर नीचे करते हुए उसने अपनी पंक्तियों का पाठ किया, तो ऐसा मालूम हुआ जैसे वह सिर जीवित हो। वान्या का रुस्लान की भूमिका में भाला लिए उसकी ओर झपटना बहुत ही उत्तेजनापूर्ण था, और जब सिर ने उसे फूंक मार कर उड़ाया, तो वह पीछे की ओर कूदा, जैसे तूफ़ान के झोंके ने उसे उड़ा कर फेंक दिया हो।

एक दिन शिशकिन को एक पते की बात सूझी।

"मैंने कल रात 'रुस्लान और लुदमीला' दुबारा पढ़ी," वह मुझसे बोला, "उसमें लिखा है कि रुस्लान घोड़े पर सवार था, जबकि नाटक में उसे पैदल दिखाया जा रहा है।"

"बात तो सही है, लेकिन उसके पास घोड़ा कहां से आयेगा?" मैंने कहा। "और अगर उसे कहीं से घोड़ा मिल भी जाये तो भी वह मंच पर उस पर नहीं चढ़ सकेगा।"

"मुझे एक तरकीब सूझी है," वह बोला। "तुम और मैं घोड़ा बन सकते हैं।"

"तुम और मैं घोड़ा कैसे बन सकते हैं?"

"घर पर मेरे पास खेल और हास्य की एक पत्रिका है, उसमें लिखा है कि दो लड़के किस तरह मंच पर घोड़े का अभिनय कर सकते हैं। आप कपड़े के एक बड़े टुकड़े से घोड़े की खोल जैसी चीज़ तैयार कर सकते हैं... एक पूरा घोड़ा, जिसके आगे की ओर मुंह होगा, पीछे दुम और नीचे चार टांगें। तब मैं उस खोल के अगले भाग में घुस जाता हूं और घोड़े के सिर में अपना सिर डाल लेता हूं और तुम उसकी पीठ वाले भाग में घुस जाते हो और झुक कर मेरी पीठ पकड़ लेते हो, इस तरह तुम्हारी पीठ घोड़े की पीठ होगी। देखो? घोड़े की चार टांगें होती हैं न, सो मेरी तुम्हारी दोनों की मिला कर चार हो जायेंगी। तुम्हें बस वही करना होगा, जैसा मैं करता हूं, और फिर तुम्हारा घोड़ा तैयार है!"

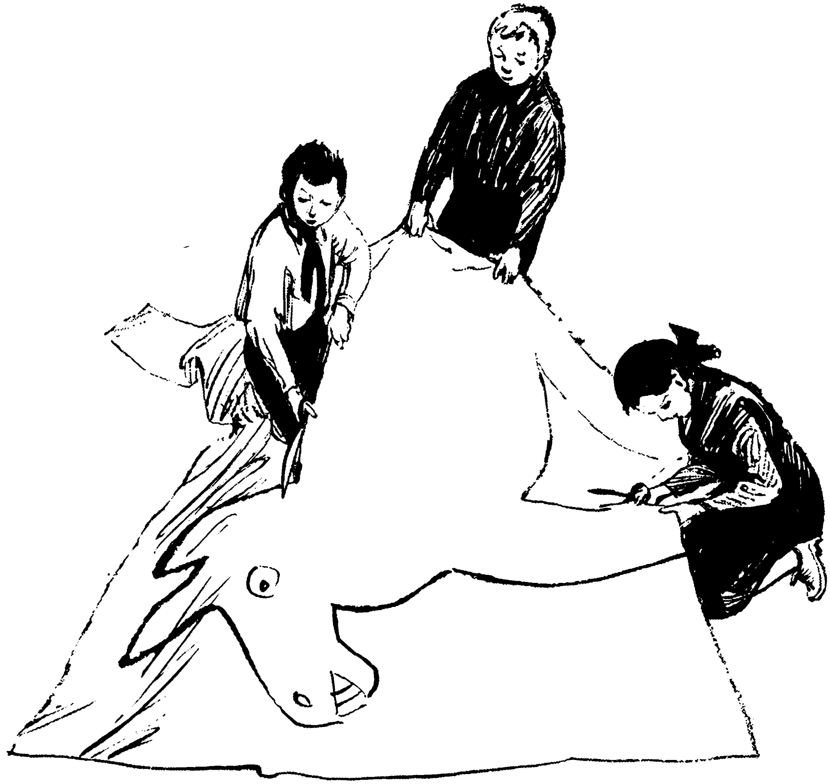
"लेकिन हम वह ऊपर का खोल कैसे बनायेंगे?" मैंने पूछा। "हम लड़कियां होते तो शायद हम इसे सी भी लेते। तमाम लड़कियां सीना-पिरोना जानती हैं। उन्हें स्कूल में यह पढ़ाया जाता है।"

"तुम अपनी बहन लीका से मदद करने के लिए कह सकते हो।"

मैंने लीका को इसके बारे में सब कुछ बताया और उसे सहायता देने के लिए कहा।

"मैं ज़रूर करूंगी," वह बोली। "लेकिन तुम्हें कपड़ा लाकर देना होगा।"

पहले तो हम परेशानी में पड़े, लेकिन कुछ देर बाद शिशकिन ने एक पुरानी दरी खोज निकाली जिसे किसी ने उसके घर के सबसे ऊपर वाले कमरे में फेंक दिया था। हमने इसे खोल कर झाड़ा और लीका के पास ले आये। लीका ने इस पर एक नज़र डाली और बताया कि इससे काम चल जायेगा। उसने इसे दुहरा करके बीच में से काट डाला और दोनों टुकड़ों को एक दूसरे के ऊपर रख कर हमसे ऊपर वाले हिस्से पर घोड़े की आकृति बनाने के लिए कहा। हमने चाक से सिर और टांगों सहित घोड़े की एक आकृति बना दी। लीका ने कैंची लेकर आकृति के अनुसार काट लिया और कपड़े के दोनों घोड़ों को पीठ और सिर की ओर



से सीकर जोड़ दिया। कोस्त्या और मैंने सुइयां लेकर सिलाई में उसकी सहायता की। टांगों ने हमें बहुत ही परेशान किया, क्योंकि हरेक टांग में दो दो सिलाइयां थीं। कोस्त्या और मैं अपनी अंगुलियां छिदाते रहे। अन्त में वह बन कर तैयार हो गया। अगले दिन हम कुछ सूखी हुई घास और पटसन के मोटे रेशे लाये और फिर अपने घोड़े के काम पर जुट गये। हमने उसका सिर तो घास से भरा, जिससे कि वह अच्छी तरह पकड़ में आ सके और पटसन के रेशों से हमने उसकी दुम और उसकी गर्दन के बाल बनाये। जब यह काम पूरा हो गया, तो कोस्त्या और मैं उसके पेट की तरफ़ से खुले सुराख़ से घोड़े के खोल में घुसे और चलने का प्रयत्न करने लगे। लीका हमें देख कर खूब हंसी। उसे हमारा घोड़ा बहुत पसन्द आया, उसने बस यह कहा कि वह कुछ पतला रह गया है, इसलिए ढीली जगहों में भरने के लिए हमें कुछ रद्दी और भूसा आदि और लाना चाहिये। उसने कहा कि अगर हम इस पर रंग कर लें, तो कोई भी नहीं कह सकेगा कि यह कपड़े का बना हुआ है। जब लीका गद्दी के टुकड़े इधर-उधर रख कर सी रही थी, शिशकिन घर गया और फ़र्श पर करने वाली पालिश उठा लाया और हमने इससे कपड़े को रंग डाला, जिसका परिणाम हुआ एक खूबसूरत, भूरे-लाल रंगवाला घोड़ा। फिर हमने उसकी आंखों, नथनों और मुंह तथा सुमों में रंग भरा। लीका ने सुझाया कि उसके कान भी लगाये जायें, क्योंकि बिना कानों के सिर अच्छा नहीं लग रहा था।

इसके बाद हम रेंग कर फिर उसके अन्दर पहुंचे। कोस्त्या ने ठीक घोड़े की हिनहिनाहट का स्वर निकाला और लीका ने तालियां बजाईं और इतना हंसी कि मुझे डर हुआ कहीं उसका पेट न फट जाये।

"यह तो बिलकुल असली घोड़े की तरह है!" वह चिल्लायी।

हमने थोड़ी-बहुत उछल-कूद के साथ कमरे में चलने का प्रयत्न किया। वह बिलकुल ठीक ही रहा होगा, क्योंकि लीका लगातार हंसती रही। तभी माताजी आ गयीं, और जब उन्होंने हमें देखा, तो वह भी हंसीं और जब पिताजी काम से घर लौटे, तो उन्होंने भी ऐसा ही किया।

उन्होंने पूछा कि यह हमने किस लिए बनाया है। हमने उन्हें बताया कि स्कूल में एक संगीत-नाट्य-आयोजन हो रहा है और कोस्त्या तथा मैं उसमें घोड़े का अभिनय कर रहे हैं।

"संगीत-नाट्य-आयोजन? सुन्दर आयोजन है," पिताजी बोले। "बच्चों को शरारत से अलग रखने का यह बेहतरीन तरीका है। इससे तुम लोगों को शरारत के अलावा कुछ काम की बात भी करने का अवसर मिलता है। जिस दिन तुम्हारा आयोजन हो, मुझे बताना। मैं अवश्य आऊंगा।"

इसके बाद हम शिशकिन की माताजी तथा चाची को अपना घोड़ा दिखाने के लिए उसके घर गये।

"अगर पिताजी आयोजन में पहुंचे और हमें अभिनय करने से मना कर दिया गया, तो?" मैंने कहा।

"हम किसी से कुछ भी नहीं कहेंगे," शिशकिन बोला। "हम औरों से जल्दी आयेंगे और मंच के पीछे छिप जायेंगे और जब वान्या मंच पर जाने वाला होगा तो हम उससे कहेंगे कि हम उसके लिए एक घोड़ा लाये हैं।"

"ठीक है!" मैंने कहा। "हम यही करेंगे।"

कोस्त्या और मैं इस आयोजन की इतनी बेसब्री के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे कि हम ठीक तरह अपनी पढ़ाई भी नहीं कर सके। प्रतिदिन हम अभ्यास के लिए घोड़े के खोल में घुस कर चला करते। लीका जहां-तहां गद्दियों के टुकड़े जोड़ती रही और अन्त में हमारा घोड़ा चिकना और सुथरा दीख पड़ने लगा। शुरू में कान नीचे की ओर कुछ अधिक ढलके हुए थे, किन्तु कोस्त्या को उनके अन्दर की तरफ़ तार लगाने की बात सूझ आई, इससे वे सीधे खड़े हो गये। उसने कानों में स्प्रिंग लगाने की भी सोची थी, ताकि वे असली घोड़े की तरह ऐंठे हुए रह सकें।

अन्त में चिर-प्रतीक्षित दिन आ पहुंचा।

हमने चोरी-चोरी खोल को स्कूल पहुंचाया और उसे मंच के पीछे छिपा दिया। फिर हमने वान्या की तलाश की और शिशकिन उसे अलग ले गया।

"सुनो, वान्या," वह बोला, "जब तुम दैत्य के सिर से लड़ने के लिए मंच पर जाने के लिए तैयार होगे, तो बाजू वाले परदों के पीछे तुम्हें एक घोड़ा तैयार मिलेगा। तुम इस पर चढ़ जाना और मंच पर घोड़े पर चढ़े हुए पहुंचना, जैसा कि पुस्तक में लिखा हुआ है।"

"घोड़ा? कैसा घोड़ा?"

"तुम इसकी चिन्ता मत करो। वह बहुत बढ़िया घोड़ा है। तुम बस उस पर चढ़ जाना, बाक़ी काम वह ख़ुद कर लेगा।"

"मैं नहीं जानता," वान्या ने सशंक हो कर उत्तर दिया। "हमने घोड़े पर चढ़कर तो अभ्यास नहीं किया है।"

"तुम बिलकुल गधे हो। घोड़े पर यह दस गुना अच्छा होगा! कविता में रुस्लान घोड़े पर चलता है या नहीं? इसके अलावा कविता में लिखा है: 'लो देखो, झंझा की गति से सरपट मैं दौड़ा आया हूं...' घोड़े पर सवार न हो, तो वह सरपट कैसे दौड़ सकता है? दूसरे, हमारी किताब में जो तस्वीर है, उसमें भी रुस्लान को घोड़े पर सवार दिखाया गया है।"

"अच्छी बात है," वान्या बोला। "वैसे मुझे भी बिना घोड़े का सरदार बनने का विचार पसन्द नहीं आया था!"

"लेकिन इस बारे में किसी से बातचीत नहीं करना, वरना सब गुड़-गोबर हो जायेगा।"

"ठीक है, मैं बिलकुल ख़ामोश रहूंगा।"

फिर जब दर्शकगण जमा होने आरम्भ हो गये, कोस्त्या और मैंने मंच के पिछले भाग पर कब्ज़ा जमा लिया, और घोड़े के खोल को बिलकुल तैयार रखे हुए खेल आरम्भ होने की प्रतीक्षा करने लगे। दृश्यों को अन्तिम स्वरूप देने के लिए लड़के मंच के आगे पीछे दौड़ रहे थे। आख़िरकार घण्टी बजी और कन्सर्ट शुरू हुआ। जहां हम खड़े थे, वहां से हमें मंच की हर चीज़ अच्छी तरह नज़र आ रही थी। जो भी गान-वाद्य आदि प्रस्तुत किया गया, वह हमने सुना और व्यायाम के प्रदर्शन देखे। मुझे व्यायाम विशेष रूप से पसन्द आया। लड़कों ने अपनी कसरतों के प्रदर्शन बहुत सफ़ाई के साथ पेश किये, संगीत के साथ कार्य-काल के सम्बन्ध को समुचित ढंग से निभाया गया था। उनका दो सप्ताह का अभ्यास बेकार नहीं गया था।

फिर परदा गिरा और मंच-सज्जा करने वालों ने दैत्य का सिर, उसके हिलने-डुलने वाले जबड़े के सहित, मंच पर जमा दिया, और ईगोर ग्राचोव ने इसके पीछे अपनी स्थिति संभाली। उसी समय वान्या मंच के पिछले भाग में आया। उसने गत्ते और सफ़ेद पन्नियों से बना योद्धाओं वाला फ़ौलादी टोप पहना हुआ था और उसके हाथ में लकड़ी का भाला था, जिस पर चांदी के रंग का रोग़न किया गया था।

"अच्छा, तुम्हारा घोड़ा कहां है?"

"बस, एक मिनट में लो।"

हम खोल में घुस गये और घोड़ा तैयार था।

"अब आओ और सवार हो जाओ," मैंने गद्गद होकर कहा।

किन्तु जब वान्या चढ़ा और उसने मेरी पीठ पर बैठ कर नीचे को दचका दिया, तो मुझे घोड़ों की हालत पर तरस आने लगा। बेचारे ग़रीब, दुनिया में इनका जीवन आसान नहीं है

मैंने सोचा कि मेरी पीठ टूट जायेगी ग्रौर मैंने सहारे के लिए शिशकिन की कमर को कस कर पकड़ लिया। इसी क्षण परदा उठा।

"चल बेटे!" रुस्लान (जो वान्या बना हुग्रा है) चिल्लाया, ग्रौर हम दुलकी चाल से ठीक मंच पर पहुंच गये। जब लड़कों ने हमें देखा, तो हंसी से लोट-पोट हो गये। हमारा घोड़ा, वास्तव में सफल रहा था। हम सीधे दैत्य के सिर की ग्रोर बढ़े।

"ठहरो! ठहरो!" रुस्लान फुसफुसाया। "मालूम है तुम कहां जा रहे हो! तुमने तो दैत्य को कुचल ही डाला था। पीछे हटो!"

हम थोड़ा पीछे हटे, उधर दर्शक हंस पड़े।

"ग्रबे बन्दरो, ऐसा मत करो!" वान्या फुसफुसाया। "घूमकर मुड़ो ग्रौर मंच के ठीक बीच में चलो। मुझे ग्रपना स्वगत-भाषण कहना है।"

हमने वैसा ही किया, ग्रौर वान्या ने करुण स्वर में कहना ग्रारम्भ किया:

ग्राह, युद्ध-क्षेत्र!
श्वेत ग्रस्थियां, तुम ग्रनन्त निज में फैलाये...

जिस समय वह ग्रच्छे वक्ताग्रों की तरह पीड़ित स्वर में धीरे-धीरे गुंजार रहा था, शिशकिन धागा खींच कर घोड़े के कान फड़का कर दर्शकों का मनोरंजन कर रहा था। ग्राख़िर स्वगत-भाषण समाप्त हुग्रा ग्रौर वान्या फुसफुसाया:

"ग्रब सिर की ग्रोर बढ़ चलो।"

हम मुड़े ग्रौर सिर की ग्रोर बढ़े। जब हम उससे पांच क़दम दूर रह गये तो शिशकिन ने हिनहिनाने का स्वर निकाला ग्रौर ग्रगले पांव उठाने शुरू कर दिये। मैंने भी पीछे की ग्रोर टांगें फेंकनी शुरू कर दीं यह दिखाने के लिए कि घोड़ा राक्षस से डर रहा है। रुस्लान ने घोड़े को एड़ लगाना शुरू कर दिया, दूसरे शब्दों में, उसने मेरी पसलियों में ठोकरें जमायीं। हम सिर की ग्रोर मुड़े ग्रौर रुस्लान ने ग्रपने भाले से उसके नथनों के साथ छेड़-छाड़ शुरू कर दी। सिर ने ग्रपना चौड़ा मुंह खोला ग्रौर ऐसी छींक मारी कि हम पीछे हटे ग्रौर घूम-घूम कर झूलने लगे, मानो हम हवा के प्रचण्ड झोंके से उड़ा दिये गये हों। रुस्लान गिरते गिरते बचा ग्रौर शिशकिन ने मेरे पांव पर पांव रख दिया, इससे मुझे इतनी पीड़ा हुई कि मैं लंगड़ाने लगा। वान्या ने कुछ ठोकरें ग्रौर मेरी पसलियों में जमाईं ग्रौर हम फिर दुलकी चाल से सिर तक पहुंचे, जिसने हमें फूंक मार कर फिर दूसरी ग्रोर धकेल दिया। हमने यह हरकत कितनी ही बार दोहरायी, यहां तक कि मैं बिलकुल भी खड़ा रहने योग्य नहीं रह गया।

"ग्ररे, तुम लोग इसे बन्द करो!" मैंने कहा। "इतनी देर तक इस तरह रहते-रहते मेरा पांव दर्द करने लगा है!"

इस प्रकार हम ग्रन्तिम बार फिर दुलकी चाल से सिर के निकट पहुंचे ग्रौर वान्या ने ग्रपने भाले से उस पर ऐसी चोट की कि रोग़न तक उड़ गया। सिर उलट कर गिर पड़ा ग्रौर

जब परदा गिरने लगा, तो घोड़ा लंगड़ाता हुआ मंच से जाने लगा। दर्शकों ने पागलों की तरह तालियां बजाईं। वान्या घोड़े से कूदा और सचमुच के अभिनेताओं की तरह झुक कर दर्शकों का अभिवादन करने के लिए दौड़ा।

"हम तमाम वाहवाही उसे ही क्यों लेने दें?" शिशकिन बोला। "हमें भी चलकर दर्शकों के सामने झुक कर अभिवादन करना चाहिये।"

जब घोड़ा अकड़ता हुआ मंच पर आया और उसने दर्शकों के समक्ष अपना सिर ऊपर नीचे हिलाना शुरू किया, तो भीषण रूप से तालियां बजीं। लड़के तालियों पर तालियां बजा रहे थे और हम अधिक तालियां प्राप्त करने के लिए तब तक बार-बार जाकर इठलाते हुए लौटते रहे, जब तक कि वोलोद्या ने परदा गिराने का आदेश नहीं दे दिया। हमने सोचा था कि इससे पहले कि हम पर किसी की नज़र पड़े, चुपके से बच निकलेंगे, लेकिन वोलोद्या ने घोड़े को कानों से पकड़ लिया।

"चलो, अब बाहर निकलो!" वह बोला, "कौन है इसके अन्दर?"

अब बाहर निकल आने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं था।

"अच्छा, तो तुम हो?" वोलोद्या बोला। "यह सब बेवकूफ़ी करने की आज्ञा तुम्हें किसने दी थी?"

"यह एक बढ़िया घोड़ा था, बोलो था, या नहीं?" शिशकिन बोला।

"घोड़ा तो ठीक था, लेकिन तुम लोगों को यह नहीं मालूम कि मंच पर कैसे व्यवहार किया जाना चाहिये। वान्या जब अपना स्वगत-भाषण कर रहा था, तब तमाम वक्त तुम्हारा घोड़ा चुलबुली करता हुआ अपनी टांगें पटकता रहा। तुमने घोड़े को ऐसा करते हुए कहीं देखा है?"

"मैं तो तब जानता जब तुम वान्या जैसी भारी भरकम लाश को अपनी पीठ पर लादे चुपचाप खड़े रहते," मैंने कहा। "इसका वज़न एक टन ज़रूर होगा।"

"हां, जब तुम मंच पर हो, तो तुम्हें चुपचाप शान्त भाव से खड़े रहना होगा। फिर जब रुस्लान कह रहा था: 'आह, युद्ध-क्षेत्र! श्वेत अस्थियां, तुम अनन्त निज में फैलाये ...' तब हर



कोई हंस रहा था। पहले तो मैं नहीं जान सका कि वे किस बात पर हंस रहे हैं, फिर मैंने देखा, घोड़ा अपने कान फड़का रहा है!"

"ठीक तो है, जब घोड़े सुनते हैं, तो हमेशा अपने कान फड़काते हैं, क्या ऐसा नहीं करते?" शिशकिन बोला।

"वह क्या सुन रहा था?"

"स्वगत-भाषण, इसमें भी कोई शक है?"

"यह इतना बुरा नहीं रहता कि वह कभी-कभी अपने कान इधर-उधर झटक देता, लेकिन तुमने उन्हें इस तरह फड़काया जैसे घोड़ा मक्खियां उड़ा रहा हो।"



"हो सकता है कि मैंने कुछ ऐसा कर दिया हो। मैंने डोरी को कुछ ज़्यादा खींच दिया होगा।"

"इसके लिए कुछ ऐसा कर दिया होगा, कहना इसे बहुत हल्के ढंग से रखना है। पहले तो तुम्हें कोई हक ही नहीं है कि इस तरह मंच पर आओ।"

इस सब से हमने बहुत खिन्नता का अनुभव किया। हमें विश्वास था कि ओल्गा निकोलायेव्ना हमें फटकारेंगी। लेकिन उन्होंने हमसे कुछ भी नहीं कहा और इसलिए हमें और अधिक अफ़सोस हुआ। उन्होंने समझ लिया होगा कि शिशकिन और मैं निकम्मे हो चुके हैं और हमें फटकारना भी बेकार होगा।

इस संगीत-नाट्य-आयोजन और शतरंज खेलने का जो सिलसिला चला था, इसमें मैं अपनी पढ़ाई के प्रति लापरवाह हो गया था, और जब हमें अपने पहले त्रैमासिक रिपोर्ट-कार्ड मिले तो मैंने देखा कि मुझे गणित में २ नम्बर मिले हैं।

सच बात तो यह है कि मुझे कम नम्बर मिलने की ही उम्मीद थी, लेकिन मैं यह आशा करता रहा था इस तिमाही के अन्त तक जैसे-तैसे कसर पूरी कर लूंगा। किन्तु इससे पहले कि मुझे मालूम हो, यह तिमाही समाप्त हो गई।

शिशकिन को रूसी में २ नम्बर मिले थे।

"भगवान जाने, लोग यह रिपोर्ट-कार्ड ठीक छुट्टियों से पहले ही क्यों देते हैं? अब मेरी तमाम छुट्टियां तबाह हो जायेंगी," घर लौटते हुए मैंने शिशकिन से कहा।

"क्यों?"

"क्योंकि घर जाने पर मुझे अपना कार्ड माताजी को दिखाना होगा," मैंने कहा।

"छुट्टियों के बाद तक मैं नहीं दिखाऊंगा," वह बोला। "मैं अपनी माताजी की छुट्टियां क्यों ख़राब करूं?"

"पर बाद में तो दिखाना पड़ेगा ही," मैंने कहा।

"हां, लेकिन तब तक छुट्टियां ख़त्म हो चुकी होंगी, फिर इससे कोई फ़र्क़ भी नहीं पड़ेगा। क्यों न वह अपनी छुट्टियां मज़े से मनायें। मैं अपनी माताजी को प्यार करता हूं। मैं नहीं चाहूंगा कि उन्हें कोई दुख हो।"

"अगर तुम अपनी माताजी को प्यार करते, तो तुम अच्छे नम्बर पाने की कोशिश करते," मैंने कहा।

"मुझे तो ऐसा नहीं दिखता कि तुम भी कुछ बहुत ऊंचे नम्बर हासिल कर रहे हो!"

"अच्छी बात है। मैं अब लेकर रहूंगा।"

हमने विषय को यहीं समाप्त कर दिया, और मैंने फ़ैसला किया कि मैं भी शिशकिन का अनुकरण करूंगा और छुट्टियां समाप्त होने तक अपना रिपोर्ट-कार्ड नहीं दिखलाऊंगा। आख़िरकार वे लोग हमेशा ही तो रिपोर्ट-कार्ड छुट्टियों से पहले नहीं देते, इसलिए ऐसा करना मेरे लिए कोई ग़लत बात तो होगी नहीं।

आठवाँ अध्याय



आख़िर महान अक्तूबर क्रान्ति का वह दिन ७ नवम्बर आ पहुंचा, जिसकी हम सब इतने दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं सुबह बहुत जल्दी उठ गया और खिड़की की ओर लपका। सूर्य अभी पूरी तरह उगा नहीं था, फिर भी प्रकाश फैल चुका था। आकाश बिल्कुल नीला था। तमाम घरों पर लाल पताकायें और लेनिन की तस्वीरें लगी हुई थीं। मैं इतना आनन्दित तथा उत्साहित था, जैसे वसन्त ऋतु पुनः आ गई हो। मुझे मालूम नहीं कि मैं हमेशा ७ नवम्बर के दिन इतना अच्छा क्यों अनुभव करता हूं; कुछ भी हो, यह दिन आपको अपने जीवन की सुखदतम घटनाओं पर विचार करने के लिए बाध्य करता है, और आप चाहने लगते हैं कि आप शीघ्र ही बड़े हो जायें ताकि शक्ति और वीरता से सम्पन्न होकर सभी प्रकार के शौर्यपूर्ण कार्य कर सकें, जैसे तैगा के जंगलों को चीर कर उनके मध्य तक जा पहुंचना, या ऊंचे पहाड़ों के उच्चतम शिखर पर पहुँचना, जिस पर आज तक कोई न चढ़ पाया हो, या नीले आकाश में वायुयान में बैठकर उड़ना, या लोहे की कच्ची धातु और कोयले के लिए ज़मीन की पर्त के नीचे गहरी खुदाई करना, या बंजर भूमि की सिंचाई के लिए नहरें बनाना, या जंगलों में वृक्ष उगाना, या किसी कारख़ाने में बढ़िया काम करना अथवा किसी आश्चर्यपूर्ण मशीन का आविष्कार करना, ताकि माताजी और पिताजी तथा ओल्गा निकोलायेव्ना भी, आप पर अभिमान कर सकें।

ये कुछ ऐसी बातें थीं, जिनके बारे में मैं प्रायः सपने देखा करता था। और पिताजी का कहना था कि कोई कारण नहीं कि ये बातें स्वप्न तक ही सीमित रह जायें, क्योंकि हमारे देश में आश्चर्यजनक काम करने की कोई सीमा नहीं है। तुम यह सब कर सकते हो—यदि तुममें करने की उत्कट इच्छा हो और तुम अपनी पढ़ाई पर डट कर परिश्रम करो। यह सब आज

इसलिए संभव हो सका है कि बहुत दिन पहले ७ नवम्बर के दिन पूंजीवादियों को उखाड़ फेंक दिया गया था, जो जनता पर अत्याचार करते थे। अब देश की प्रत्येक वस्तु जनता की सम्पत्ति है, अर्थात् प्रत्येक वस्तु मेरी है, क्योंकि मैं भी तो जनता हूं।

मुझे आज के दिन बहुत से तोहफ़े मिले। पिताजी ने मुझे जादुई लालटेन और इस पर चढ़ा कर दिखायी जाने वाली रंगीन स्लाइडें दीं। माताजी ने मुझे स्केट और लीका ने मुझे कुतुबनुमा दिया। मैंने लीका को रंगों का एक डिब्बा भेंट किया। फिर पिताजी मुझे और लीका को अपने कारख़ाने ले गये और फिर वहां से हम लोग कारख़ाने के मज़दूरों के साथ जुलूस में सम्मिलित होने के लिए चल दिये। बाजे बज रहे थे और हर कोई गा रहा था। लीका और मैंने भी गाया, बहुत मज़ा आया। पिताजी ने हमारे लिए गुब्बारे खरीदे, मेरे लिए एक लाल और लीका के लिए हरा। और जब हम अपने शहर के सबसे बड़े चौराहे पर पहुंचे, तो पिताजी ने हमें छोटे-छोटे दो लाल झंडे दिलवा दिये। हम उन्हें लिए हुए मंच के सामने से गुज़रे और पूरे चौराहे को पार किया।

इसके बाद हम घर पहुंचे, मेहमान आना शुरू हो गये थे। चाचा शूरा सबसे पहले आये। उनके हाथ में दो बण्डल थे, लीका और मैंने अनुमान लगाया कि वे भी हमारे लिए तोहफ़े होंगे। परन्तु चाचा शूरा ने आते ही सबसे पहले पूछा कि हमारा व्यवहार कैसा है। हमने कहा कि अच्छा है।

"तुम अपनी अम्मा का कहना मानते हो?"

"हां," हमने कहा।

"और स्कूल में तुम कैसे चल रहे हो?"

"बहुत अच्छी तरह," लीका बोली।

और मैंने भी कहा: "बहुत अच्छा।"

वह मेरे लिए एक बहुत खूबसूरत मकान बनाने वाले ब्लाकों का सेट और लीका के लिए ईंटों का बक्स लाये थे।

इसके बाद लीदा चाची और सेर्योझा चाचा आये। इनके बाद नाद्या चाची और यूरा चाचा तथा अन्त में नीना चाची आई। सब ही ने मुझ से पूछा कि मेरी स्कूल की पढ़ाई कैसी चल रही है। मैंने उनसे कह दिया कि बहुत अच्छी चल रही है और उन सब ने मुझे तोहफ़े दिये। लीका के पास भी तोहफ़ों का पूरा ढेर था। किन्तु मुझे उससे जितने अधिक तोहफ़े मिले, मुझे उतना ही दुख हुआ। मेरा अन्तर मुझे कचोटने लगा, क्योंकि मैंने हरेक से कहा था कि स्कूल में मेरी पढ़ाई अच्छी चल रही है। गणित में यह भयंकर २ का अंक मुझे चैन नहीं लेने देगा। मैं इस सम्बन्ध में काफ़ी देर तक सोचता रहा और अन्त में दृढ़ प्रतिज्ञा की कि मैं पूरी ईमानदारी के साथ तुरन्त ही अपने जीवन का नया अध्याय आरम्भ कर दूंगा, और जो कुछ पीछे होता रहा है, उसे फिर कभी नहीं होने दूंगा। इस निर्णय पर पहुंचने के बाद मेरा हृदय कुछ हलका हो गया और मैं धीरे धीरे प्रसन्नता का अनुभव करने लगा।

अगले दिन, ८ नवम्बर को भी छुट्टी थी। मैं अपने कुछ सहपाठियों से मिलने गया और कुछ मुझसे मिलने आये। हमने सभी तरह के खेल खेले और रात को हमने जादुई लालटेन के प्रदर्शन का आयोजन रखा। जब मैं सोने गया, तो मुझे मिले तमाम तोहफ़ों का ढेर मैंने अपने बिस्तर के पास एक मेज़ पर इकट्ठा कर लिया। लीका ने भी ऐसा ही किया, और हमारे वे गुब्बारे, जिन्हें लेकर हम जुलूस के साथ गुज़रे थे, छत से चिपके हुए तैर रहे थे। वे छत से सटे हुए बहुत खूबसूरत दिखाई देते थे।

जब मैं दूसरे दिन सुबह उठा तो गुब्बारे ज़मीन पर पड़े थे। वे सिकुड़ कर आधे रह गये थे। उनकी गैस ख़त्म हो चुकी थी, अब वे उड़ नहीं सकते थे।

जब मैं स्कूल से घर लौटा, तो समझ नहीं पा रहा था कि मैं अपने २ नम्बर के बारे में माताजी से किस प्रकार कहूं। जब तक उन्होंने रिपोर्ट-कार्ड के बारे में स्वयं नहीं पूछा, मैं ने उनसे कोई ज़िक्र नहीं किया। मैंने बिना एक शब्द कहे कार्ड अपने वस्ते से निकाला और उन्हें दे दिया। स्पष्ट है कि उनकी तेज़ निगाह सीधी २ के अंक पर जा रुकी।

"मुझे यही उम्मीद थी," उन्होंने उबलते हुए कहा। "अपनी पढ़ाई छोड़कर तमाम वक्त खेलते रहने का यही नतीजा होता है। और यह सब इसलिए भी कि तुम अपने से बड़ों का कहना नहीं मानते। तुमसे कितनी बार कहा गया कि अपनी पढ़ाई जल्दी कर लिया करो, बजाय इसके कि पूरी तरह थक कर चूर हो जाने तक खेलते हुए कूदते फिरो। लेकिन तुम्हें कुछ कहना-सुनना बेकार है। क्या तुम चाहते हो कि एक साल पीछे रह जाओ?"

मैंने उनसे कहा कि अबसे अपनी पढ़ाई पर अधिक परिश्रम करूंगा और भविष्य में कभी भी अपने कार्ड पर २ नम्बर प्राप्त नहीं करूंगा। किन्तु माताजी ने केवल अपने कन्धे उचका दिये जिससे समझा जा सकता था कि उन्हें मुझ पर अपने बचन का पालन करने का विश्वास नहीं था। मैंने उनसे कार्ड पर हस्ताक्षर कर देने के लिए कहा, ताकि मैं अपनी अध्यापिका को ले जाकर वापस कर दूं, किन्तु वे बोलीं:

"नहीं, तुम्हारे पिताजी भी इसे देखेंगे।"

अब मारे गये! मैंने सोचा था कि माताजी इस पर हस्ताक्षर कर देंगी और इसके बाद मुझे पिताजी को कार्ड दिखाने की आवश्यकता नहीं होगी। किन्तु अब मुझे पिताजी की खरी-खोटी की घूंट भी पीनी पड़ेगी। मैं इतना चिन्तित हो उठा कि पढ़ने के लिए मेरी तबीयत ही नहीं हुई।

"अच्छा है पिताजी की डाट-फटकार तक मैं इन्तज़ार ही कर लूं," मैंने सोचा। "पढ़ाई तो मैं बाद में भी कर सकता हूं।"

आख़िरकार पिताजी काम से घर लौटे। उनके खाना खाने तक मैं इन्तज़ार करता रहा, क्योंकि खाने के बाद हमेशा उनका मिज़ाज बेहतर हो जाता है। फिर मैंने अपना रिपोर्ट-कार्ड उनकी मेज़ पर रख दिया, ताकि वह उसे देख लें। उनकी नज़र जल्दी ही उस पर पड़ गई। उन्होंने इसे उठा लिया और जांचने लगे।

"तुम हो, होशियार लड़के!" जब उनकी नज़र २ के अंक पर पड़ी, तो वह बोले, "तुम्हें अपने पर शर्म आनी चाहिए! तुम्हारे सहपाठी तुम्हारे बारे में क्या सोचेंगे?"

"मैं ही अकेला नहीं हूं, जिसे २ नम्बर मिले हों," मैंने कहा।

"दूसरा कौन है?"

"शिशकिन।"

"क्या तुम्हें शिशकिन के पीछे चलना चाहिए? क्या शिशकिन ऐसा प्रकाशपुंज है?"

"वह बिलकुल भी प्रकाश नहीं है।"

"तुम्हें परिश्रम करना चाहिए और अच्छे नम्बर पाने चाहिए। तुम्हें शिशकिन को भी ऐसा ही करने में सहायता देनी चाहिये। मुझे यकीन है कि तुम दोनों में से कोई भी दूसरों से पिछड़ा नहीं रहना चाहता।"

"जी, हम बिलकुल नहीं चाहते," मैंने कहा। "मैं जीवन को नये सिरे से ढालूंगा और परिश्रम के साथ काम करूंगा।"

"तुमने यह पहले भी कहा है।"

"हां, लेकिन इस बार मैं निश्चय कर चुका हूं।"

"अच्छी बात है, हम देखेंगे कि तुम अपने वचन का पालन किस प्रकार करते हो।"

पिताजी ने कार्ड पर हस्ताक्षर कर दिये और आगे कुछ नहीं कहा। मुझे भी थोड़ी सी निराशा हुई। मुझे एक लम्बे भाषण की उम्मीद थी, किन्तु ऐसा मालूम दिया जैसे पिताजी ने सोचा हो कि मेरे साथ और अधिक बात करने में समय नष्ट करने से क्या लाभ, क्योंकि मैं कभी भी अपने वचन का पालन नहीं करता। इसने मुझे यह दिखाने के लिए और अधिक दृढ़ निश्चयी बना दिया कि मैं अपने वचन का पालन कर सकता हूं। मुझे अफ़सोस हुआ कि उस दिन हमारे पास गणित का काम घर पर करने के लिए नहीं था, क्योंकि मुझ में जीवन को नये रूप में ढालने की इच्छा तीव्र रूप से जाग चुकी थी और मुझे विश्वास था कि मैंने आज तमाम सवाल स्वयं ही निकाल लिये होते।

अगले दिन मैंने शिशकिन से इस सम्बन्ध में बातचीत की।

"अच्छा, क्या तुम्हारी माताजी ने भी तुम्हें २ नम्बर के बारे में डांटा-फटकारा?" मैंने उससे पूछा।

"भला मैं क्यों बरी हो जाता! बल्कि ज़ीना चाची ने और अलग से डांटा। मैं नहीं समझता कि उन्हें बेकार में अपनी टांग अड़ाने की क्या ज़रूरत थी। वह हमेशा कहती रहती हैं, 'ठहरो, जल्दी ही किसी दिन तुम्हारा सिलसिला अपने हाथ में लेने वाली हूं!' लेकिन मैं जानना चाहूंगा कि वह ऐसा कब कर रही हैं! उन्होंने कहा था कि हर शाम वह मेरा घर का काम जांचा करेंगी। लेकिन उन्होंने बस एक या दो बार ही किया होगा, और जब से उन्होंने अपने ड्रामा सर्किल में अध्ययन के लिए जाना शुरू किया है, वह किसी भी शाम को घर नहीं होतीं। फिर किसी शाम को अचानक कहने लगती हैं, 'मुझे अपनी कापियां

दिखा। मैं तेरा घर का काम जांचूंगी।' ज़ाहिर है कि दिखाने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं होता, क्योंकि मैं किसी से अपने आपको जंचवाने का आदी नहीं हूं। लेकिन ऐसा कभी छठे-चौमासे ही होता है। अकसर शामों को वह ड्रामा सर्किल या थियेटर में होती हैं।"

"ठीक तो है, अगर वह नाट्य-स्कूल में पढ़ती हैं तो उन्हें नाटक देखने तो जाना ही पड़ेगा, या नहीं ?" मैंने कहा।

"मैं यह नहीं कहता कि वह न जायें," उसने कहा। "माताजी भी शाम के स्कूल में जाती हैं, लेकिन वह कभी यह धमकी नहीं देतीं कि मुझे अपने हाथ में लेंगी। वह सिर्फ़ मुझसे इतना भर कहती हैं कि मुझे स्कूल में अच्छी तरह पढ़ना चाहिये और जब कभी वह मुझसे नाराज़ भी हो जाती हैं, तो मैं ख़याल नहीं करता। लेकिन जब ज़ीना चाची यह सब बातें करती हैं, तो मुझे बहुत ख़याल होता है, क्योंकि अगर कोई किसी काम की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेता है, तो उसे इसके बारे में बातचीत करने के बजाय काम को भी पूरा करना चाहिए। ख़ासकर जब कि वह जानती हैं कि मैं इस बात की प्रतीक्षा में हूं कि वह मेरा नियंत्रण अपने हाथ में लें और इसलिए मैं अपने आप कुछ नहीं कर रहा हूं। मैं इसमें क्या कर सकता हूं, मेरा स्वभाव ही ऐसा है।"

"तुम सिर्फ़ अपना दोष किसी दूसरे के सिर मढ़ रहे हो," मैंने कहा। "तुम्हें कोशिश करके अपना नियंत्रण अपने हाथ में लेना चाहिये।"

"तुम अपनी कहो? कोई यह सोचेगा जैसे तुम्हें बहुत अच्छे नम्बर मिल रहे हों!"

"अभी नहीं, लेकिन मैं पाऊंगा," मैंने कहा।

"अच्छा तो मैं भी ऐसा करूंगा," शिशकिन ने उत्तर दिया।

उसी दिन हमारे व्यायाम अध्यापक, ग्रिगोरी इवानोविच ने हमें बताया कि हमारे खेल-कूद के मैदान में बास्केटबाल खेलने की व्यवस्था कर दी गई है, और यदि हम चाहें तो टीम बना सकते हैं। हमें यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई और तुरन्त टीम के लिए हस्ताक्षर कर दिये गये। शिशकिन और मैं भी टीम में शामिल होना चाहते थे, किन्तु ग्रिगोरी इवानोविच ने हमें स्वीकार नहीं किया।

"जिन्हें अच्छे नम्बर मिले हैं, सिर्फ़ वे ही शामिल हो सकते हैं," वह बोले।

शिशकिन बहुत ही परेशान था। वह बहुत दिनों से यह आशा करता आ रहा था कि वह बास्केटबाल खेलेगा, और अब, जब तमाम लड़के खेल रहे होंगे, हम अलग पड़े मुंह ताकेंगे। मुझे इतनी चिन्ता नहीं हुई, क्योंकि मैं कक्षा में अपनी स्थिति को सुधारने का निश्चय कर चुका था और मैं जानता था कि इससे मुझे टीम में सम्मिलित होने की आज्ञा मिल जायेगी।

पढ़ाई के बाद हमारी क्लास की मीटिंग हुई। ओल्गा निकोलायेव्ना ने बताया कि हममें से अधिकांश ने अच्छा काम करना शुरू कर दिया है। प्रथम पायनियर ग्रुप सर्वश्रेष्ठ है। उनमें कोई ऐसा नहीं, जिसे २ नम्बर मिले हों, और जिन्हें ३ नम्बर मिले हैं, ऐसे केवल दो ही लड़के हैं। उन्होंने कहा कि जब यह लड़के ३ से निकल जायेंगे, तब वे अपने उस लक्ष्य पर पहुंच

जायेंगे, जो उन्होंने पिछली मीटिंग में निर्धारित किया था — कि ४ नम्बर से कभी कम न लेने के लिए परिश्रम करेंगे। उन्होंने हमारे ग्रुप को सबसे ख़राब बताया, क्योंकि इसमें अभी तक २ नम्बर प्राप्त करने वाले मौजूद थे, मैं और शिशकिन।

"देखा तुमने," यूरा बोला, "हम फिर कक्षा में सबसे नीचे रहे! इस बारे में कुछ न कुछ करना पड़ेगा।"

"यह सब इन दोनों के कारण है," लेन्या अस्ताफ़्येव मेरी और शिशकिन की ओर इशारा करते हुए बोला। "आखिर तुम लोगों के साथ दिक़्क़त क्या है? तुम पूरे ग्रुप का अपमान करा रहे हो! दूसरे तमाम लोग खूब मेहनत कर रहे हैं, लेकिन तुम्हें अपने नम्बरों की कोई परवाह नहीं है। इस बारे में तुम कुछ क्यों नहीं करते हो, मलेयेव?"

फिर बाक़ी सब मेरे ऊपर टूट पड़े।

"तुम्हारी परेशानी क्या है? क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि तुम्हें अपनी पढ़ाई को अच्छा करना चाहिए?"

"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम लोगों ने इस सिलसिले में इतनी मुसीबत क्यों खड़ी कर रखी है!" मैं बोला। "मैं पहले ही अपनी पढ़ाई को सुधारने का फ़ैसला कर चुका हूं, इसलिए इसे बार बार दोहराने की ज़रूरत नहीं रहती।"

"फ़ैसले करना काफ़ी नहीं है, तुम्हें नतीजा दिखाना होगा," आलिक सोरोकिन बोला। "ज़रा अपने नम्बरों पर तो नज़र डालो!"

"ये नम्बर पिछली तिमाही के हैं। मैंने अपना निश्चय परसों ही किया था।"

"कोई न कोई बहाना चाहिए! जैसे कि तुम इससे पहले निश्चय नहीं कर सकते थे।"

"लड़को, तुम्हें अब झगड़ना नहीं चाहिये," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं। "जो लड़के फिसड्डी हैं, उनकी सहायता की जानी चाहिये। तुम्हारे ग्रुप में कई अच्छे विद्यार्थी हैं, तुम्हें उनमें से किसी को शिशकिन और मलेयेव की सहायता के लिये नियुक्त करना चाहिये।"

वान्या पख़ोमोव ने अपने को मेरी सहायता के लिए प्रस्तुत किया।

"मैं शिशकिन की सहायता करूंगा," आलिक सोरोकिन बोला। "क्या मैं कर सकता हूं?"

"क्यों नहीं," ओल्गा निकोलायेव्ना ने कहा। "मैं स्वयं तुम्हें एक दूसरे की सहायता करते हुए देखना चाहती हूं।"

मीटिंग के बाद ओल्गा निकोलायेव्ना ने शिशकिन को और मुझे अध्यापकों के कमरे में बुलाया और हमसे काफ़ी देर तक बातचीत करती रहीं। उन्होंने हमसे कहा कि हम अपने घर के काम को मेहनत से नहीं करते या उस पर काफ़ी समय नहीं देते हैं और यही कारण है कि हम प्रगति नहीं कर पा रहे। हमने जो कुछ सीखा था उसे याद रखने का कष्ट नहीं उठाया, इसीलिए हमारे दिमाग़ में इतना कम बाकी रह गया था। उन्होंने शिशकिन को सलाह दी कि उसे अपनी रूसी के अभ्यासों के लिए अधिक समय देना चाहिए और लिखने से पहले प्रत्येक शब्द समझना चाहिये और उन्होंने उससे कहा कि उसे व्याकरण के तमाम क़ायदे ज़बानी याद करने

चाहिये। उन्होंने सलाह दी कि उसे और अधिक अध्ययन करना चाहिये और कहा कि वह उसके घर के काम की कापियों को अधिक ध्यान से जांचा करेंगी।

"और वीत्या, जहां तक तुम्हारा प्रश्न है, तुम्हें स्वयं ही अधिक परिश्रम करना पड़ेगा," वह बोलीं। "जब तुम्हारे सामने कठिनाइयां आयेंगी, तो मेरा ख़्याल है कि तुम अपनी माताजी अथवा पिताजी की सहायता लेते हो।"

"जी नहीं," मैंने कहा। "मैं अब पिताजी को और अधिक परेशान नहीं करूंगा। जब वह काम कर रहे हों, तो मैं क्यों उसमें दखल दूं? मैं किसी लड़के से सहायता ले सकता हूं।"

"यह तो वही बात हुई। मेरा मतलब है कि तुम अपना घर का काम ख़ुद करना सीखो। यदि तुम तब तक अपने सवालों पर बैठे रहो कि तुम स्वयं ही उनको हल करने का रास्ता न निकाल लो, तुम कुछ सीखोगे। लेकिन अगर तुम हमेशा किसी दूसरे को ही अपने लिए सोचने के लिए पकड़ते रहे तो तुम कभी भी नहीं सीख सकोगे। हम तुम्हें सवाल इसलिए तो देते हैं कि तुम स्वयं सोचना सीखो।"

"अच्छी बात है," मैं बोला। "अब से मैं स्वयं ही उन्हें हल करने का प्रयत्न करूंगा।"

"अच्छे लड़के ऐसा ही करते हैं। जब तुम कोई प्रश्न हल कर ही न सको, और तुमने इसके लिए खूब कोशिश कर ली हो, केवल तभी तुम्हें दूसरे की सहायता मांगनी चाहिये, चाहे वे तुम्हारे सहपाठियों में से कोई हो या मैं होऊं।"

"जी नहीं," मैंने कहा। "मेरा ख़याल है मैं स्वयं ही हल कर सकूंगा, और यदि नहीं कर सका तो वान्या के पास चला जाऊंगा।"

"मुझे विश्वास है कि यदि तुम सचमुच प्रयत्न करो तो कोई भी सवाल हल कर सकते हो," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं।



नवाँ अध्याय

जैसे ही मैं घर पहुंचा, काम पर बैठ गया। मैं ऐसे निश्चय से परिपूर्ण था कि मुझे स्वयं पर आश्चर्य हो रहा था। जैसा कि ओल्गा निकोलायेव्ना ने कहा था, मैंने सबसे कठिन विषय से आरम्भ किया और सरल विषयों को बाद में करने के लिए रख दिया। उस दिन हमें गणित का एक प्रश्न करना था, और मैंने बिना किसी दुविधा के गणित की पुस्तक खोली और प्रश्न पढ़ा:

"एक दूकान में ८ आरे और उससे ३ गुना अधिक कुल्हाड़ियां थीं। दूकान ने बढ़इयों के एक जत्थे को आधी कुल्हाड़ियां और ३ आरे ८४ रूबल में बेचे। शेष कुल्हाड़ियां और आरे बढ़इयों के दूसरे जत्थे को १०० रूबल में बेच दिये गये। एक कुल्हाड़ी और एक आरे की क्या कीमत थी?"

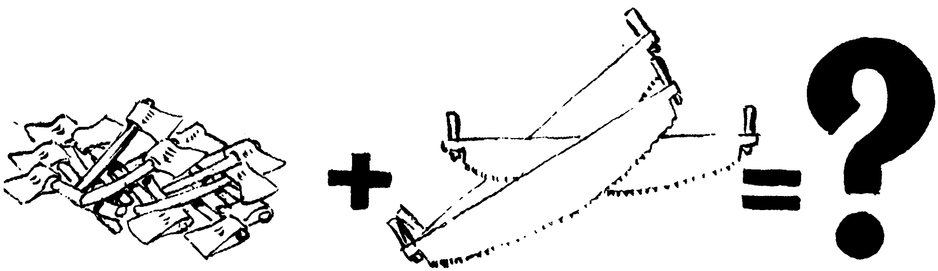
पहले तो मुझे इसके सिर पैर का पता नहीं चला, इसलिए मैंने उसे एक बार और पढ़ा और फिर तिबारा... कुछ देर बाद मैंने सोचा कि जो लोग यह सवाल बनाते हैं, वे सीधे सीधे चलने के बजाय हर चीज़ को गड़बड़ कर देते हैं, सिर्फ़ इसलिए कि यह विद्यार्थी के लिए कठिन हो जाये। "एक दूकान में ८ आरे और इससे ३ गुना अधिक कुल्हाड़ियां हैं।" क्या वे २४ कुल्हाड़ियां कह कर किस्सा ख़त्म नहीं कर सकते थे? अगर वहां ८ आरे हैं और उनकी ३ गुना अधिक कुल्हाड़ियां हैं, तो कोई भी प्रत्येक कह सकता था कि वहां २४ कुल्हाड़ियां होनी चाहिये थीं। और दूसरी बात: "दूकान ने आधी कुल्हाड़ियां और ३ आरे बढ़इयों की एक टोली को ८४ रूबल में बेच दिये।" जैसे कि वे इसे इस तरह रख ही नहीं सकते थे: "१२ कुल्हाड़ियां बेच दीं।" क्योंकि जब वहां २४ कुल्हाड़ियां थीं, तो उनका आधा हुआ १२। यह सब ८४ रूबल में बेचा गया था। इसके बाद आगे चल कर कहते हैं कि "बाक़ी आरे और कुल्हाड़ियां, बढ़इयों की दूसरी टोली को १०० रूबल में बेचे गये।" अब बताइये, क्या यह सवाल को रखने का बेवकूफ़ी तरीका नहीं है! अगर वहां कुल २४ कुल्हाड़ियां थीं और उसमें से उन्होंने १२ बेच दीं, इसके मायने यह हुए कि १२ बचीं। इसी तरह अगर शुरू में ८ आरे थे और उन्होंने ३ किसी एक टोली को बेच दिये, इसके मायने हैं कि दूसरी टोली ने ५ खरीदे। तब वे बेहूदा तरीक़े

से बात को घुमा फिरा कर कहने की बजाय, इसे इस तरह सीधे सादे ढंग से क्यों नहीं रख सकते थे? इस पर ये स्कूल के लड़कों पर इस तरह के सवालों को हल न कर पाने का दोष मढ़ते हैं!

मैंने सवाल अपने ढंग से लिखा, ताकि यह कुछ बाक़ायदा दिखाई दे; मैंने इसे इस प्रकार लिखा:

"एक दूकान में ८ आरे और २४ कुल्हाड़ियां थीं। दूकान ने १२ कुल्हाड़ियां तथा ३ आरे बढ़इयों की एक टोली को ८४ रूबल में बेच दिये और १२ कुल्हाड़ियां तथा ५ आरे बढ़इयों की दूसरी टोली को १०० रूबल में बेच दिये। एक आरे और एक कुल्हाड़ी का क्या मूल्य होगा?"

इसे दुबारा लिखने के बाद मैंने इसे फिर पढ़ा। अब यह कुछ छोटा हो गया था, किन्तु मुझे अभी तक इस सवाल को हल करने के लिए आरम्भ किये जाने का तरीका बिल्कुल भी



मालूम नहीं था, क्योंकि मेरे दिमाग़ में आंकड़ों की गपड़चौथ चलती रही, इसलिए मैं सीधे ढंग से नहीं समझ सका। मैंने फ़ैसला किया कि इसे और छोटा किया जाये, ताकि आंकड़े कुछ और कम हो जायें। स्पष्ट है, यदि दूकान ने तमाम आरे और कुल्हाड़ियां बेच डालीं, तो उनकी संख्या का कोई वास्तविक महत्व नहीं रहता। इसलिए मैंने सवाल को काट कर छोटा कर दिया, जिसका परिणाम यह था:

"बढ़इयों की एक टोली ने १२ कुल्हाड़ियां और ३ आरे ८४ रूबल में खरीदे। दूसरी टोली ने १२ कुल्हाड़ियां और ५ आरे १०० रूबल में खरीदे। एक आरे और एक कुल्हाड़ी का क्या मूल्य होगा?"

अब सवाल अपेक्षाकृत छोटा हो गया था। किन्तु मैं सन्तुष्ट नहीं था। मैं इसे और भी छोटा करना चाहता था। कुछ भी हो, इस बात से क्या फ़र्क पड़ता है कि आरे और कुल्हाड़ियां किसने खरीदीं? महत्व की बात यह है कि उन्होंने कितना मूल्य अदा किया। मैं ख़ूब सोचता रहा और अन्त में मैंने सवाल को इस प्रकार लिखा:

"१२ कुल्हाड़ियों और ३ आरों का मूल्य=८४ रूबल।

"१२ कुल्हाड़ियों और ५ आरों का मूल्य=१०० रूबल।

"एक कुल्हाड़ी और एक आरे की क्या कीमत होगी?"

मैं इसे इससे अधिक छोटा नहीं कर पाया, और इसलिए इसे किस प्रकार हल किया जाय, सोचना आरम्भ कर दिया। पहले मैंने सोचा कि जब १२ कुल्हाड़ियों और ३ आरों का मूल्य ८४ रूबल है तब आपको कुल्हाड़ियों और आरों को एक साथ जोड़ देना होगा और जो जोड़ आये उससे ८४ को तक़सीम कर दीजिये। मैंने १२ कुल्हाड़ियां और ३ आरे जोड़ दिये, जो १५ हुए। तब मैंने ८४ को १५ से भाग देने की कोशिश की, किन्तु सवाल नहीं निकला, क्योंकि उसमें कुछ बाक़ी बचा रह गया था। मैंने सोचा मुझ से कोई ग़लती हो गई है, मैंने दूसरा तरीका निकालने का यत्न किया। मैंने १२ कुल्हाड़ियों और ५ आरों को जोड़ा और १०० को १७ से विभक्त करने की कोशिश की, किन्तु कोई नतीजा नहीं निकला। इसके बाद मैंने २४ कुल्हाड़ियों और ८ आरों को आपस में जोड़ दिया और उधर तमाम रूबल जोड़ डाले तथा रूबलों को कुल्हाड़ियों और आरों से विभक्त करने की कोशिश की, परन्तु इस तरह भी समस्या नहीं सुलझी। इसके बाद मैंने आरों को कुल्हाड़ियों में से घटा दिया और जो बाक़ी बचा, उससे रूबलों को विभाजित किया, पर यह भी ठीक नहीं बैठा। मैंने आरों और कुल्हाड़ियों को अलग अलग जोड़ा और कुल कुल्हाड़ियों को कुल रकम में से घटाया और जो शेष रहा उसे आरों से विभाजित किया। न जाने मैंने कितने तरीकों का प्रयोग किया होगा, लेकिन किसी से भी काम नहीं बना। आख़िर, मैंने गणित की पुस्तक उठाई और वान्या पख़ोमोव के यहां चल दिया।

"देखो," मैंने कहा। "तुम्हारे लिए एक सवाल लाया हूं। यदि १२ कुल्हाड़ियों और ३ आरों का मूल्य ८४ रूबल है, और ५ आरों और १२ कुल्हाड़ियों का मूल्य १०० रूबल है तो एक कुल्हाड़ी और एक आरे का क्या मूल्य होगा? तुम इसे किस तरह करोगे?"

"तुम्हारे ख़याल में इसे किस तरह करना चाहिए?" उसने पूछा।

"मेरे ख़याल से तुम १२ कुल्हाड़ियां और ३ आरे जोड़ोगे और ८४ को १५ से भाग दे दोगे।"

"तुम आरों और कुल्हाड़ियों को जोड़ना क्यों चाहते हो?"

"यह जानने के लिए कुल अदद कितने थे और फिर मैं कुल अदद से ८४ को भाग देकर मालूम कर लूंगा कि एक का मूल्य क्या है।"

"एक क्या? एक आरा या एक कुल्हाड़ी?"

"एक आरा या एक कुल्हाड़ी।"

"लेकिन तब उनका मूल्य एक ही होगा।"

"क्या ऐसा है नहीं?"

"बेशक नहीं है। सवाल यह नहीं कहता कि उन दोनों का मूल्य एक है। असल में तुम्हें यह मालूम करना है एक कुल्हाड़ी और एक आरे का मूल्य अलग अलग क्या है। इसके मायने यह हुए कि तुम्हें दोनों को जोड़ना नहीं चाहिये।"

"तुम इन बेकार चीज़ों को एक दूसरे में जोड़ो या न जोड़ो, इससे तो कोई फ़र्क पड़ता नहीं, किसी तरह भी इसका हल नहीं निकलता।"

"यह इसलिए कि तुम ठीक ढंग से नहीं कर रहे हो।"

"तब फिर तुम कैसे करते हो?"

"अपना दिमाग़ लड़ाओ।"

"मैं पिछले दो घण्टों से इसके अलावा कुछ नहीं कर रहा हूं!"

"सवाल को फिर पढ़ो," वान्या बोला। "यह कहता क्या है?"

"यह कहता है कि १२ कुल्हाड़ियों और ३ आरों का मूल्य है ८४ रूबल, और १२ कुल्हाड़ियों और ५ आरों का मूल्य है १०० रूबल।"

"ठीक, क्या तुमने यह नहीं देखा कि कुल्हाड़ियों की संख्या दोनों बार एक ही है, किन्तु आरों की संख्या दूसरी बार २ अधिक है?"

"हां, ठीक है।"

"और दूसरी टोली ने १६ रूबल अधिक दिये, है न?"

"हां, यह भी मैंने देखा। पहली बार उन्होंने ८४ रूबल दिये और दूसरी बार १०० रूबल। १०० में से ८४ घटा दें तो १६ बचते हैं।"

"अब तुम बता सकते हो कि दूसरी टोली ने १६ रूबल ज़्यादा क्यों दिये?"

"यह तो साफ़ है," मैंने कहा। "उन्होंने २ आरे ज़्यादा खरीदे, इसलिए उन्हें १६ रूबल अधिक देने पड़े।"

"इसके मायने हुए कि २ आरों का मूल्य हुआ १६ रूबल, ठीक है न?"

"हां, ठीक है।"

"तब एक आरे का मूल्य क्या हुआ?"

"भई, जब २ का मूल्य है १६, तो एक का हुआ ८।"

"ठीक, बिलकुल ठीक, अब तुम्हें मालूम हो गया कि एक आरे का मूल्य क्या है।"

"हत्तेरे की!" मैं बोला, "यह तो बिलकुल ऐसा है जैसे मकान गिर रहा हो! मैं ख़ुद यह क्यों नहीं देख सका?"

"अब, यह मालूम करना रहता है कि एक कुल्हाड़ी का मूल्य क्या है।"

"अरे, यह तो मामूली बात है," मैं बोला। "१२ कुल्हाड़ियों और ३ आरों का मूल्य है ८४ रूबल। तीन आरों का मूल्य है २४ रूबल। ८४ में से २४ घटा दो, बाकी बचे ६०। इसके मानी हुए कि १२ कुल्हाड़ियों का मूल्य हुआ ६० रूबल, एक कुल्हाड़ी का मूल्य हुआ ६० की १२ से तकसीम, यानी ५।"

मैंने वान्या को धन्यवाद दिया और अपने प्रति कुढ़ता हुआ कि मैं बिना उसकी सहायता के इतना मामूली सा सवाल भी नहीं निकाल सका, अपने घर लौट आया। मैंने निश्चय किया कि अगला सवाल मैं अपने आप ही हल करूंगा, चाहे मुझे उसके लिए ५ घण्टे ही क्यों न बैठना पड़े।

अगले दिन हमें गणित का कोई सवाल घर पर करने के लिए नहीं दिया गया और मुझे ख़ुशी थी, क्योंकि हर वक़्त गणित के सवाल ही हल करते रहने में क्या तुक है।

"यह अच्छा है," मैंने अपने मन में कहा। "कम से कम एक दिन तो मुझे बिना गणित का मिलेगा।"

किन्तु जैसा प्रायः होता है, मुझे बिलकुल भी आराम नहीं मिल सका। मैं अभी अपनी पढ़ाई पर बैठा ही था कि लीका का नक्की स्वर आया:

"वीत्या, हमें एक सवाल दिया गया है, मैं इसे बिलकुल भी नहीं कर पा रही हूं। भैया, इसे समझा दो।"

मैंने सवाल पर दृष्टि डाली और मुझे कंपकंपी चढ़ आई। यदि मैं यह सवाल नहीं निकाल सका, तो? बड़े भाई के अधिकार फिर कहां रह जायेंगे?

इसलिए मैंने कहा:

"लीका, अभी तो मैं बहुत काम कर रहा हूं। घर पर करने के काम का ढेर पड़ा है। मेरे ख़याल से तुम ज़रा बाहर घूम आओ। जब तुम लौटोगी, तो तुम्हें समझा दूंगा।"

और मैंने मन में सोचा: "जब तक वह बाहर रहेगी, तब तक मैं इस सवाल पर मेहनत कर लूंगा, और जब तक वह लौटेगी, मैं उसे समझाने लायक़ हो जाऊंगा।"

"अच्छी बात है, मैं जाकर लड़कियों के साथ खेल लूंगी," लीका बोली।

"हां, तुम जाओ," मैंने कहा। "लेकिन बहुत जल्दी आकर मुझे परेशान मत करना। तुम दो घण्टे और चाहो तो तीन घण्टे बाहर रह सकती हो। बात यह है कि एक लम्बी दौड़ लगाओ।"

जैसे ही वह बाहर गई, मैंने उसकी किताब उठाई और सवाल पढ़ डाला:

"एक लड़का और एक लड़की जंगल में अखरोट तोड़ने गये। उन्होंने कुल १२० अखरोट तोड़े। जितने लड़के ने तोड़े, लड़की ने उससे आधे तोड़े। उन दोनों ने कितने कितने अखरोट तोड़े?"

यह इतना आसान दिखाई दिया कि मुझे हंसी सी आने लगी। "आप इसे सवाल कहेंगे?" मैंने मन में सोचा। "केवल आपको १२० को २ से भाग देना है, जो होता है ६०। इसके मायने हैं लड़की ने ६० अखरोट तोड़े। यह मालूम करने के लिए कि लड़के ने कितने तोड़े, १२० में से ६० घटा दीजिये और वह होगा ६०। ऊं हूं! कुछ गड़बड़ रह गयी। इसके तो मायने हो जायेंगे कि दोनों ने बराबर बराबर तोड़े, लेकिन प्रश्न में कहा है कि लड़की ने लड़के से आधे तोड़े। हां ठीक तो है, आप ६० को २ से विभाजित कीजिये, जिससे बने ३०। इसके मायने यह हुए कि लड़के ने ६० तोड़े और लड़की ने ३०।" मैंने पुस्तक के अन्त में दिये प्रश्नों के उत्तरों में इसका उत्तर देखा, पर इसमें दिया था: लड़के ने ८०, और लड़की ने ४०।

"ज़रा एक मिनट ठहरो!" मैंने स्वयं से कहा। "यह कैसे हो सकता है? मेरा उत्तर है ३० और ६० और किताब में दिया है ४० और ८०।"

मैंने प्रश्न को दुबारा पढ़ा। उन्होंने कुल मिला कर १२० अखरोट तोड़े। यदि लड़के ने ६० तोड़े और लड़की ने ३०, यह तो कुल ९० होते हैं, जो ग़लत है। मैंने सवाल को बार बार नये

सिरे से किया, किन्तु उत्तर वही ३० और ६० आता रहा। पुस्तक में ४० और ८० कैसे लिखा हुआ है? मेरी समझ में इसका सिर-पैर नहीं आया।

मैंने बहुतेरा सिर मारा। सवाल को कम से कम एक दर्जन बार पढ़ा, लेकिन मुझे पता नहीं चला कि गड़बड़ क्या थी।

"बेचारी तीसरी के इन बच्चों की हालत भी कितनी दयनीय है," मैंने सोचा। "इन्हें ऐसे सवाल दिये जाते हैं, जिन्हें हम चौथी वाले भी नहीं निकाल सकते।"

मैंने सवाल के सम्बन्ध में दुबारा सोचा। इसको न निकाल पा सकने के कारण मुझे अपने प्रति अत्यन्त लज्जा का अनुभव होने लगा। लीका क्या कहेगी? मैंने अधिक ध्यानपूर्वक सोचा, किन्तु बात नहीं बनी। मेरा दिमाग़ बिलकुल कोरा था, मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाये। सवाल में १२० अखरोट कहे गये हैं, और आपको इन्हें इस प्रकार बांटना है कि लड़के ने लड़की से दुगने तोड़े हों। यदि आंकड़े कुछ दूसरे होते, तो शायद आप कुछ कर भी सकते, किन्तु १२० और २ के रहते हुए आप इन्हें क़यामत के दिन तक जोड़ते, घटाते हैं या गुणा करते रहें अथवा तकसीम करते रहें, किसी प्रकार आपको ४० और ८० का उत्तर नहीं मिलेगा।

निराश होकर मैंने हाशिये में १२० अखरोट वाला जैतून जैसा का एक वृक्ष बनाना आरम्भ कर दिया, और उसके नीचे एक लड़का और एक लड़की को खड़ा हुआ चित्रित किया। बनाते हुए मैं सवाल के बारे में सोचता रहा, केवल इतना ही था कि मेरे विचार ग़लत दिशा में जा रहे थे। पहले तो मुझे आश्चर्य हुआ कि लड़का लड़की से ज़्यादा अखरोट किस प्रकार तोड़ सका? फिर मैंने अनुमान लगाया कि वह वृक्ष पर चढ़ा होगा, जबकि लड़की नीचे लटकी हुई टहनियों से ही तोड़ सकी होगी। मैंने स्वयं अखरोट तोड़ने शुरू कर दिये, वह इस प्रकार कि मैं उन्हें एक एक करके रबड़ से मिटाता रहा और लड़के तथा लड़की के सिर पर उन्हें इसी क्रम से बना कर, उन दोनों के बीच उन्हें बांटता रहा। फिर मुझे ख़याल आया कि उन्होंने तोड़े हुए अखरोट अपने जेबों में भरे होंगे। मैंने लड़के की वास्कट में दो और लड़की की फ़्रॉक में एक जेब बनाया। मैंने सोचा शायद लड़की ने अपेक्षाकृत कम अखरोट तोड़े होंगे, क्योंकि उन्हें रखने के लिए उसके पास केवल एक ही जेब था। मैं बैठा हुआ अपने चित्र की ओर एकटक दृष्टि से देखता रहा: लड़के के दो जेब हैं और लड़की का एक, धीरे-धीरे मुझे प्रकाश की किरण दिखाई देने लगी। मैंने जो अखरोट उनके सिरों पर बनाये थे, उन्हें मिटा दिया और जेबों को गहरी पेन्सिल से इस प्रकार दिखाया, जैसे वे अखरोटों से ठसाठस भरे हुए हों। अब मेरे सामने तमाम अखरोट तीन जेबों में बंटे हुए थे... लड़के के दो जेबों में और लड़की के एक जेब में। और अचानक मैंने अनुभव किया जैसे बिजली कौंध गई हो और आकाश प्रकाशित हो उठा हो। हां, इसमें क्या शक है, १२० अखरोटों को तीन से विभाजित किया जाना चाहिये! लड़की को एक भाग मिलेगा और शेष दो भाग लड़के के होंगे, और इस प्रकार इसे लड़की से दुगने मिल जायेंगे! मैंने १२० को ३ से विभक्त किया, जो बना ४०। यह लड़की का भाग

था। फिर मैंने ४० को २ से गुणा किया और उत्तर आया ८०, और यही उत्तर था जो पुस्तक में पीछे दिया हुआ था! मैं खुशी के मारे उछलता उछलता रह गया। मैं उठा और यह बताने के लिए कि मैंने एक सवाल स्वयं निकाला है, वान्या के घर की ओर लपका।

जब मैं गली में दौड़ा जा रहा था, रास्ते में शिशकिन मिला, जो मेरे यहां ही आ रहा था।

"सुनो, कोस्त्या," मैंने कहा। "एक लड़का और एक लड़की अखरोट तोड़ने के लिए जंगल में गये। उन्होंने कुल मिलाकर १२० अखरोट तोड़े, लड़के ने लड़की से दुगनी संख्या में लिये। तुम इसे कैसे करोगे?"

"मैं लड़के की नाक नोच लूंगा कि वह इतना लालची है।"

"तुम बेवकूफ़ हो! मेरे कहने का मतलब यह बिलकुल नहीं है। तुम अखरोटों की कुल संख्या को किस प्रकार विभाजित करोगे कि लड़के को लड़की से दुगने मिलें?"

"मुझे इसकी परवाह नहीं कि तुम किस तरह बांटते हो! मुझे अकेला छोड़ दो। वे उन्हें आपस में बराबर बराबर क्यों नहीं बांट लेते, किस्सा खत्म हो?"

"अनाड़ी मत बनो। यह एक सवाल है।"

"कैसा सवाल है?"

"गणित का।"

"भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारा सवाल," शिशकिन चिल्लाया। "मेरा सफ़ेद चित्तियों वाला चूहा मर गया है, जिसे मैंने परसों ही खरीदा था, और तुम मुझे अपने जहालत के सवालों से परेशान कर रहे हो!"

"मुझे बड़ा अफ़सोस है," मैंने क्षमायाचना की। "मुझे मालूम नहीं था कि तुम शोक मना रहे हो।"

मैं वान्या के घर की ओर दौड़ा।

"देखो!" मैं बोला। "तुम्हारे लिए एक विलक्षण सवाल लाया हूं: एक लड़के और एक लड़की ने १२० अखरोट तोड़े। लड़के ने लड़की से दुगने अखरोट लिये। उत्तर के लिए तुम इन्हें ३ से विभक्त करोगे, इसी तरीके से तुम यह सवाल निकालोगे, न?"

"बिलकुल ठीक," वान्या बोला। "लड़की एक भाग लेती है और लड़का दो भाग और इस तरह उसे लड़की से दुगना प्राप्त होता है।"

"मैंने इसे पूरा ख़ुद निकाला है," मैंने उसे बताया। "उन्होंने तो इसे अधिक से अधिक उलझाने की कोशिश की थी और सोचा था, कि इसे कोई भी नहीं निकाल सकेगा, लेकिन मैंने निकाल दिया।"

"यह तो तुम्हारे लिए बहुत अच्छी बात है!"

"और अब से भविष्य में मैं अपने प्रश्न ख़ुद ही निकाला करूंगा।"

"ठीक है, तुम्हें ऐसा ही चाहिये भी। यह हमेशा अच्छा रहता है। तुम्हें इससे अधिक लाभ होता है," वान्या बोला।

मैं वापस घर की ओर लपका। रास्ते में यूरा कसात्किन से भेंट हो गई।

"सुनो यूरा," मैं बोला, "एक लड़का और एक लड़की जंगल में अखरोट तोड़ने गये..."

"हां-हां, वे गये सो गये! लेकिन तुम मुझे यह बताओ कि तुम घर में बैठ कर अपनी पढ़ाई करने के बजाय यों दौड़ते हुए क्यों फिर रहे हो?"

"लेकिन मैं अपनी पढ़ाई कर रहा हूं, भई ईमान से!"

"ख़ाक पढ़ाई कर रहे हो! तुम लोग पूरी कक्षा के लिए अपमान का कारण क्यों बने हुए हो, तुम और तुम्हारा वह शिशकिन?"

"लेकिन मैं ईमानदारी से पढ़ रहा हूं। और शिशकिन का सफ़ेद चित्तियों वाला चूहा मर गया है। तुम कहां जा रहे हो?"

"मैं तुम्हारे घर देखने के लिए गया था कि तुम पढ़ाई कैसी कर रहे हो। लेकिन तुम ग़ायब थे।"

"यूरा," मैंने अपने आपको उभारते हुए कहा। "मैंने क़सम उठा कर तुम्हें बता दिया है कि मैं अपनी पढ़ाई कर रहा था। मैंने एक सवाल अपने आप निकाला था, इसलिए यह बताने के लिए मैं ज़रा वान्या की तरफ़ चला गया था। तुम मेरे साथ चल सको, तो आओ, तुम्हें दिखाऊं।"

हम दोनों घर पहुंचे और मैंने उसे अखरोटों वाला सवाल दिखाया।

"अखरोट!" यूरा ने कहा। "हमने ये सवाल तीसरी कक्षा में किये थे।"

"हां," मैं जल्दी से बोल उठा। "मैं जानने के लिए पिछले साल का गणित दोहरा रहा हूं कि वह मुझे ठीक तरह आता भी है या नहीं। तुम्हें पता है; पिछले साल मैं गणित में ऐसा अच्छा नहीं था और इसीलिए मैं अपनी पिछली कमज़ोरी को पूरा करना चाहता हूं।"

"यह अच्छी तरकीब है! इस तरह तुम्हें अपनी कमज़ोरी को पूरा करने में आसानी हो जायेगी।"

यूरा चला गया। तभी थोड़ी देर बाद लीका आ गई और मैंने उसे सवाल समझाया। मैंने टहनियों पर अखरोटों सहित एक वृक्ष की आकृति बनाई और एक लड़के को दो जेबों सहित और एक लड़की को एक जेब के साथ, वहां खड़े दिखाया।

"वीत्या भैया," लीका बोली, "तुम हर चीज़ कितने बढ़िया तरीके से साफ़ साफ़ समझा कर बताते हो! मैं तो इसे कभी भी अपने आप न निकाल पाती।"

"यह तो 'अ, आ, ई' की तरह आसान है," मैंने कहा। "जब भी तुम्हें अपने सवालों में किसी तरह की कठिनाई लगे, मुझसे पूछ लेना। मैं तुम्हें बताऊंगा कि उन्हें चुटकियों में कैसे किया जाता है।"

आश्चर्य है, आदमी कितनी जल्दी बदलता है! मैं हमेशा उन लोगों में से रहा हूं, जिन्हें सहायता की आवश्यकता होती थी, और अब मैं दूसरों की सहायता कर रहा हूं। और सब से अधिक आश्चर्य की बात यह है कि मैं गणित में अभी तक ५ में से २ नम्बर हासिल कर रहा था!



दसवाँ अध्याय

अगले दिन सुबह जब मैं उठा और खिड़की के बाहर देखा, तो पाया कि शरद ऋतु आ गई है। मकान का पिछला चौक बर्फ़ से ढका हुआ था। फ़र्श और छत... प्रत्येक वस्तु सफ़ेद थी, तथा वृक्ष, जिनकी प्रत्येक टहनी पर बर्फ़ का आवरण चढ़ा हुआ था, फेनिल फ़ीते के समान दिखाई देते थे। मैं तो माताजी के दिये स्केटिंग के जूते ले कर बर्फ़ पर फिसलने वाले मैदान की ओर भाग लेता, किन्तु मुझे स्कूल जाना था। और स्कूल के बाद सीधा आकर मैं अपने स्कूल के काम पर बैठ गया और जब वह समाप्त हो गया, तो मैंने लीका के गणित में से बहुत से सवाल निकाले।

मैंने पिछले वर्ष के गणित को शुरू से आखिर तक दोहराने का निश्चय कर लिया था। अधिकांश सवाल तो इतने आसान थे कि जैसे मटर का छीलना, किन्तु कुछ ऐसे थे, जिन्होंने मुझे काफ़ी परेशान किया। लेकिन अब मैंने इस प्रकार की चिन्ता करनी छोड़ दी थी। मैंने सिद्धान्त बना लिया था कि आगे बढ़ने से पहले प्रत्येक प्रश्न निकाला जाये। यह सही है कि मैंने यह पूरी पुस्तक कोई एक दिन में समाप्त नहीं की। दरअसल मैंने इस पर दो तीन सप्ताह लगाये। इस प्रकार स्केटिंग के लिए केवल शाम का समय ही शेष रहता था। किन्तु इससे लाभ हुआ, क्योंकि पिछले वर्ष के गणित के तमाम सवाल निकाल चुकने के बाद मैं इतना होशियार हो गया था कि बिना किसी की सहायता लिये, चौथी कक्षा के गणित के प्रश्न को हल कर सकता था। मैंने अनुभव किया कि गणित की हमारी पुस्तक में बहुत से प्रश्न बिलकुल तीसरी कक्षा के प्रश्नों जैसे हैं, बस ज़रा मुश्किल भर हैं। किन्तु कठिन प्रश्नों से डरना मैंने छोड़ दिया था। वास्तव में कठिन प्रश्नों में मुझे अधिक आनन्द मिलता था। आप कल्पना नहीं कर सकते कि गणित के भय से मुक्ति क्या होती है जिस भय से मैं पहले ग्रसित रहा करता था। वह बोझा मेरे मस्तिष्क से उतर चुका था। ओल्गा निकोलायेव्ना मुझसे खुश थीं और उन्होंने मुझे अच्छे नम्बर दिये थे। दूसरे लड़कों ने मेरे पीछे रहने के बारे में मुझे परेशान करना छोड़ दिया, और माताजी तथा पिताजी मेरी प्रगति देख कर प्रसन्न थे। मुझे बास्केटबाल की टीम में ले लिया

गया था और मैंने दूसरे लड़कों के साथ प्रति दिन दो घण्टे खेलना भी शुरू कर दिया था और जिस दिन बास्केटबाल नहीं खेलता उस दिन मैं दूसरे लड़कों के साथ स्केटिंग के जूते पहने बर्फ़ पर दौड़ता, बर्फ़ पर खेली जाने वाली हाकी खेलता या बर्फ़ पर स्कीइस पहन कर फिसलता। अरे, अब तो करने को बहुत कुछ पड़ा था!

उधर शिशकिन अपने स्कूल के काम को आगे बढ़ाने के बजाय अपने लिए बहुत से चित्तीदार चूहे, सफ़ेद चूहे, कछुवे और न जाने क्या क्या ख़रीद लाया था। उसके पास तीन कांटेदार जंगली चूहे थे। अब भला बताइये, एक लड़का तीन कांटेदार जंगली चूहों का क्या बनायेगा? वह अपना तमाम वक़्त अपने जानवरों के साथ, उन्हें खिलाने और उनकी देखभाल में व्यतीत करता, किन्तु वे हमेशा बीमार होते और मर जाते। और इन सब पर लोबज़िक था। लोबज़िक एक पिल्ला था, जो आयु की दृष्टि से काफ़ी बड़ा था, किन्तु फिर भी वह बहुत खेल करता था। उसके बाल रूखे और काले थे तथा कान लम्बे, नीचे की ओर लटकते हुए। शिशकिन ने उसे गली में पाया था। एक दिन जब शिशकिन घर आ रहा था, तो यह कुत्ता उसके पीछे पीछे चला आया।

इस प्रकार शिशकिन अपनी पढ़ाई से बिलकुल दूर, दूसरे कामों में व्यस्त रहता था। वह केवल तभी अपने स्कूल का काम करने बैठता, जबकि माताजी उसे बीस बार इसका ध्यान दिलातीं। उसकी माताजी अपने काम से घर आते ही सबसे पहला सवाल उससे पूछतीं:

"तुमने अपनी पढ़ाई कर ली है?"

"अभी नहीं, लेकिन अभी एक मिनट में करता हूं!"

"नहीं, तुम फ़ौरन बैठो।"

"अभी एक मिनट में, मां, मैं कछुवे को खिला दूं, फिर अपनी पढ़ाई पर बैठ जाऊंगा।"

उसकी माताजी रसोई में चली जातीं और कोस्त्या अपने कछुवे को खिलाने लगता, और फिर उसे ख़याल आता कि उसे चित्तीदार चूहे के लिए पिंजरा बनाना है, और वह बनाना शुरू कर देता। कुछ देर बाद उसकी माताजी फिर कमरे में वापस आतीं और देखतीं कि वह अपने जानवरों में उलझा हुआ है।

"तुम अपनी पढ़ाई कब करोगे?"

"अभी एक मिनट में, मां।"

"यह तो तुमने आधा घण्टा पहले कहा था। अपनी किताबें निकालो!"

"ओह, अम्माजी, मुझे अपना पिंजरा बना लेने दीजिये।"

"तुम्हें यह पिंजरा बनाने में तीन दिन लगेंगे। इसे फ़ौरन बन्द करो और अपनी पढ़ाई का काम लेकर बैठो।"

"अच्छा, तो ठीक है," वह कहता। "मैं इसे कल बना लूंगा। मैं ज़रा जाकर साहियों के लिए पानी ले आऊं।"

साहियों की देखभाल के बाद उसे देखना पड़ता कि दूसरे जानवरों के लिए पानी काफ़ी है या नहीं। तब वह खोज निकालता कि एक साही ग़ायब हो गयी है और वह उसे ढूंढ़ने के लिए तमाम घर छान मारता। आधे घण्टे बाद उसकी माताजी फिर उसकी पढ़ाई के बारे में पूछतीं।

"एक मिनट," वह कहता। "मैं पहले उस बेवकूफ़ साही को ढूंढ़े लूं। पता नहीं वह किधर चला गया है।"

प्रतिदिन यही क्रम चलता। एक बात ख़त्म होती, तो दूसरी तैयार। और जब उसकी माताजी उसके पास नहीं रहतीं, तो उसे अपनी पढ़ाई का ध्यान ही न आता। वह अपनी पढ़ाई को काफ़ी देर तक स्थगित रखता, जब तक कि सोने का वक्त न हो जाता और इस तरह उसे किताबें खोलने तक का अवसर न मिलता। वास्तव में उसने किसी भी विषय को ठीक तरह से नहीं पढ़ा था। लेकिन जैसे तैसे उसने इस बार ३ नम्बर और एक बार ४ नम्बर हासिल करने की तरकीब भिड़ा ही ली थी। किन्तु ऐसा प्रायः कम ही होता था। वह रूसी में बहुत ही कमज़ोर था, और यदि मैं उसे फ़ुसफ़ुसा कर चुपके से बताता न होता, तो न जाने वह क्या करता। वैसे हमारी कक्षा में साधारणतः यह फ़ुसफ़ुसा कर चुपके से बताने वाला सिलसिला समाप्त हो गया था, क्योंकि कोई भी अपना नाम इस सम्बन्ध में दीवारी अख़बार पर उछाला जाना नहीं चाहता था किन्तु मैं शिशकिन के लिए यह सब करता रहा। कुछ भी हो, वह मेरा मित्र था। मैं यह बिलकुल स्वीकार करूंगा कि इससे कुछ विशेष लाभ नहीं हुआ, क्योंकि जिस दिन हमें इमला बोली जाती या निबन्ध आदि लिखवाया जाता, उस दिन वह बिलकुल भी स्कूल नहीं आता। एक बार ओल्गा निकोलायेव्ना ने हमसे कहा कि अगले दिन हमें इमला लिखवायी जायेगी। उस दिन सुबह शिशकिन ने बीमारी का बहाना कर लिया। उसने अपनी माताजी से कहा कि उसके सिर में दर्द है, और उन्होंने उसे घर रह जाने दिया और बोलीं कि वह काम से घर लौटते ही डाक्टर को बुला देंगी। किन्तु जब वह घर लौटीं तो शिशकिन ने बताया कि सिर का दर्द दूर हो गया है, इसलिए डाक्टर को बुलाने की आवश्यकता नहीं है। उसकी माताजी ने अध्यापिका को लिख दिया कि उन्होंने कोस्त्या की तबीयत ख़राब हो जाने के कारण घर रोक लिया था, और इस प्रकार हर चीज़ मज़े के साथ चलती रही। अगली बार हमें निबन्ध लिखना था, शिशकिन के सिर में फिर दर्द हो गया, और उसकी माताजी ने वैसा ही दूसरा पत्र अध्यापिका को लिख भेजा। जब माताजी घर लौटीं और उन्होंने कोस्त्या को फिर ठीक पाया, तो उन्हें आश्चर्य तो अवश्य हुआ, किन्तु किसी प्रकार शक नहीं हुआ। परन्तु जब तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ तो उन्हें शक होना शुरू हो गया। पहले तो कोस्त्या ने स्वीकार नहीं किया कि वह बहाना कर रहा था, किन्तु जब माताजी ने कहा कि वह स्वयं स्कूल जाकर तमाम बात मालूम कर लेंगी, तो उसने स्वीकार किया।

जब उन्हें मालूम हुआ कि वह उन्हें धोखा देता रहा है, तो उन्हें बेहद गुस्सा आया, जैसा कि स्वाभाविक भी है। इत्तफ़ाक से यह वही दिन था, जिस दिन शिशकिन लोबज़िक को

घर लाया था। शिशकिन की माताजी पहले ही उसे दुनिया भर के जानवर घर पर इकट्ठा करने और अपनी पढ़ाई करने के बजाय जानवरों में उलझे रहने के कारण हमेशा ही फटकारती रहती थीं, इसलिए उसने लोबज़िक को काठ-कबाड़ वाले कमरे में छिपा दिया। और घटना इस प्रकार शुरू हुई कि जब माताजी उसे अपनी बीमारी का बहाना करके धोखा देने के लिए डांट रही थीं, तभी लोबज़िक कमरे में आ पहुंचा।

"यह क्या है!" वह चिल्लाईं।

"यह... यह... जी कुत्ता।"

"इसे यहां लाने के लिए तुमसे किसने कहा? तुमने इस घर को अच्छा ख़ासा जंगली जानवरों का अजायबघर बना रखा है। तुम बजाय अपनी पढ़ाई-लिखाई करने के अपना तमाम वक़्त इन जानवरों पर बरबाद करते रहते हो। मैं बहुत बर्दाश्त कर चुकी हूं! फ़ौरन इन जानवरों को बाहर निकालो! सब के सब... चूहे, साही! और देखो, यह कुत्ता मुझे फिर दुबारा नज़र न आये!"

बेचारे कोस्त्या ने देखा कि बहस करने से कोई लाभ नहीं, तो आंखों में आंसू भरे उसने अपने समस्त पशुओं को घर से ले जाकर अपनी जान-पहचान के सभी लड़कों में बांट दिया। एक साही को छोड़ कर, जिसे कोई भी लेना नहीं चाहता था, उसने सब जानवर दे डाले। मैं भी साही नहीं लेना चाहता था, क्योंकि उसने मुझे जो सफ़ेद चूहे पहले दिये थे, उनका परिवार इतना बढ़ गया था कि पूरा घर उनसे भरा हुआ था और उनमें से कुछ ने तो दराज़ों में रहना शुरू कर दिया था। इसके अलावा यह साही इतना मुर्झायी सी नज़र आ रही थी कि मैंने समझा वह बीमार है। किन्तु शिशकिन ने बताया कि वह बीमार बिलकुल नहीं है, बल्कि वह एक लम्बी नींद लेने की तैयारी में है, क्योंकि तमाम साही सर्दी भर सोती हैं। इसलिए मैं इसे लेने के लिए तैयार हो गया। फिर शिशकिन ने कहा था कि वसन्त ऋतु में जब यह अपनी शरद ऋतु की नींद से जागेगी, तो वह इसे वापस ले लेगा।

किन्तु उसने लोबज़िक को अपने से पृथक नहीं किया और उसने उसे सबसे ऊपर वाले कमरे में छुपाने की सोची। उसने उसके लिए चिमनी के पास बिस्तर बना दिया और उसे पट्टे के सहारे खम्भे से बांध दिया। ऊपर वाले कमरे में सर्दी थी, लेकिन चिमनी गर्म थी, इसलिए लोबज़िक को ख़ास दिक़्क़त नहीं हुई। किन्तु मैं इतना अवश्य कह सकता हूं कि उस बेचारे कुत्ते को कभी कभी तकलीफ़ ज़रूर होती होगी; विशेष रूप से जब बाहर बहुत सर्दी होती होगी, क्योंकि तब चिमनी बहुत तेज़ गर्म हो जाती होगी, इसलिए वह एक तरफ़ तो सर्दी से जमा जाता होगा और दूसरी ओर गर्मी की तपन से। कोस्त्या को डर था कि कहीं लोबज़िक के कानों को पाला न मार जाये या उसे निमोनिया न धर दबाये। वह उसके लिए चोरी से खाना ले जाता और अपना ख़ाली समय उसके पास बैठ कर व्यतीत करता, ताकि लोबज़िक अपने को अकेला महसूस न करे। जब उसकी माताजी बाहर गई होतीं, तो वह उसे नीचे ले आता और उसके साथ खेलता, और जब माताजी का काम से लौटने का समय हो जाता, तो वह फिर उसे ऊपर ले

जाता। शुरू में तो यह सिलसिला ठीक चलता रहा, किन्तु एक दिन वह लोबज़िक को समय पर ऊपर ले जाना भूल गया, या शायद माताजी वक़्त से कुछ पहले काम से वापस ग्रा गईं, बहरहाल शिशकिन 'रंगे हाथों' पकड़ लिया गया।

खैर, बेचारे शिशकिन को स्वीकार करना पड़ा कि उसने माताजी ने जैसा कहा था, वैसा नहीं किया था, ग्रौर इस दौरान तमाम वक़्त लोबज़िक सबसे ऊपर वाले कमरे में रहता रहा था। उसने ग्रपनी माताजी से कहा कि वह लोबज़िक को खिलाता तथा उसकी देखभाल करता रहा है, क्योंकि वह उसे बहुत ही प्यार करता है; इसलिए उसका मन नहीं चाहता कि एक ग़रीब, बेघर कुत्ते को बर्फ़ के सहारे छोड़ दे।

"ग्रगर तुम ग्रपनी पढ़ाई के लिए ग्रधिक समय दो, तो शायद मैं तुम्हें लोबज़िक को रखने भी दूं। लेकिन तुम क़तई काम पर नहीं बैठोगे।"

"मैं कैसे बैठ सकता हूं, जबकि मैं हर वक़्त लोबज़िक के बारे में ही सोचता रहूंगा?" शिशकिन बोला। "जब भी मैं स्कूल के काम पर बैठता हूं, मेरा ध्यान पूरे वक़्त ऊपर के कमरे में ग्रकेले पड़े हुए लोबज़िक पर लगा रहता है, ग्रौर मुझे उसके बारे में इतना दुख होता है कि मैं ग्रपनी पढ़ाई नहीं कर सकता।"

उसकी माताजी को उस पर दया ग्रा गई। "ग्रच्छी बात है," वह बोलीं, "ग्रगर तुम स्कूल से ग्राते ही ग्रपनी स्कूल की पढ़ाई निबटाने का वायदा करो, तो मैं तुम्हें कुत्ता रखने की ग्राज्ञा दे सकती हूं।"

कोस्त्या ने वायदा किया।

"हम भी देखेंगे कि तुम ग्रपना वचन किस तरह निभाते हो," उसकी माताजी बोलीं। "मैं ग्रब से प्रतिदिन तुम्हारा स्कूल का काम जांचा करूंगी।"

ग्रगले दिन कोस्त्या ने स्कूल से घर ग्राते हुए मुझे पूरी कहानी सुनाई।

"मेरे साथ घर चलो, तुम्हें दिखाऊंगा कि मैं लोबज़िक को किस तरह सिखा रहा हूं," वह बोला। "तुम्हें पता चलेगा कि वह कितना होशियार कुत्ता है। वह मुंह में लकड़ी पकड़ना सीख भी चुका है।"

"मैं नहीं समझता कि यह करने के लिए कुछ ज़्यादा दिमाग़ की ज़रूरत है," मैंने जवाब दिया।

"तुम्हारे लिए न हो," वह बोला, "लेकिन एक कुत्ते के लिए तो है।"

हम उसके घर गये। उसने ग्रलमारी में से शक्कर का प्याला निकाला ग्रौर लोबज़िक को बुलाया। ज्यों ही लोबज़िक ने शक्कर का प्याला देखा उसने ग्रपनी दुम हिलाना शुरू कर दी। ग्राप देख सकते थे कि वह शक्कर के प्याले को पहचानता है। कोस्त्या ने उसकी नाक के नीचे लकड़ी सरका दी ग्रौर कहा:

"ग्रब, बस लकड़ी को मुंह से पकड़, फिर तुझे शक्कर की एक डली मिलेगी।"

लोबज़िक लकड़ी से ग्रलग हट गया ग्रौर उसने शक्कर के प्याले पर दृष्टि डाली।

"शक्कर के प्याले की परवाह मत कर, तू लकड़ी उठा!" कोस्त्या उसपर चिल्लाया।

किन्तु लोबज़िक की लकड़ी में बिलकुल भी दिलचस्पी नहीं थी। कोस्त्या ने ज़बरदस्ती उसका जबड़ा खोला और उसके दांतों के बीच में लकड़ी ठूंस दी, किन्तु ज्यों ही उसने उसे छोड़ा, लोबज़िक ने अपना मुंह खोल दिया और लकड़ी फ़र्श पर गिर पड़ी।

"तू बहुत खराब कुत्ता हो गया है, कल जो कुछ तुझे सिखाया था, सब भूल गया," कोस्त्या ने उसे फटकारा। "हमें फिर नये सिरे से शुरू करना होगा।"

उसने फिर लोबज़िक के मुंह में लकड़ी ठूंस दी और मुझसे उसकी नाक दबाकर पकड़े रहने के लिए कहा, ताकि वह अपना मुंह न खोल सके। लोबज़िक ने कुछ देर लकड़ी मुंह में रखी, और हमने पुरस्कार स्वरूप उसे शक्कर का एक टुकड़ा दिया। हमने यह कितनी ही बार किया, जब तक कि लोबज़िक यह अनुभव नहीं करने लगा कि जब भी वह लकड़ी मुंह में दबाता है उसे शक्कर मिलती है। इस प्रकार उसने बिना हमारी सहायता के अपने आप ही मुंह से लकड़ी पकड़ना शुरू कर दिया। यह सही है कि वह उसे जितनी जल्दी हो सकता था, गिरा देता था, ताकि उसे तुरन्त शक्कर मिल जाये, किन्तु जब भी वह ऐसा करता, कोस्त्या उसे शक्कर नहीं देता था और उससे यह खेल फिर नये सिरे से करवाता था।

मैं इस शाम बहुत देर से घर पहुंचा और अनुभव किया कि मैंने अपना टाइम-टेबिल भंग कर दिया है। मैंने सोचा कि जब गर्मियों की छुट्टियां होंगी, तो मैं एक कुत्ता लूंगा और उसे सिखाना शुरू करूंगा, किन्तु मैंने अनुभव किया कि जब तक स्कूल बन्द न हो, मेरे लिए कुत्तों के बारे में सोचना अनुचित होगा, क्योंकि जानवरों को सिखाने में बहुत समय खपाना पड़ता है। मैंने अभी हाल ही में गणित में अच्छे नम्बर लेने शुरू किये थे, और मुझे यक़ीन था कि यदि मैं अपनी पढ़ाई पर बाक़ायदा नहीं जमा रहा, तो फिर २ नम्बर मिलने लगेंगे। मैंने सोच लिया था कि कुत्ते को सिखाने से पहले किसी व्यक्ति को स्वयं अपनी चीज़ें याद करनी चाहियें।

किन्तु शिशकिन ने अपना ख़ाली समय लोबज़िक के साथ बिताना जारी रखा। उसने लोबज़िक को अपने दांतों से न केवल लकड़ी पकड़ना सिखाया, बल्कि उसे कभी-कभी लकड़ी दबा कर ले चलना भी सिखा दिया। इसमें सन्देह नहीं कि लोबज़िक यह सब निस्वार्थ भाव से नहीं करता था, बल्कि इसके लिए उसे बहुत सी शक्कर मिलती थी, किन्तु मैं इतना अवश्य कहूंगा कि उसने परिश्रम किया था। शक्कर के छोटे से टुकड़े के लिए, वह घर से वोकज़ाल्नी गली तक लकड़ी को तमाम रास्ते मुंह में दबा कर ले जाता।

शिशकिन ने बताया था कि वह लोबज़िक को सभी तरह के खेल सिखा सकता है। परन्तु उसने उसे और दूसरा खेल सिखाने का प्रयत्न नहीं किया, क्योंकि शिशकिन का स्वभाव उन जैसा था, जो एक काम को करते करते उकता जाते हैं और हमेशा एक काम से दूसरे की ओर झपटते हैं।

ग्यारहवाँ अध्याय



हमारी कक्षा बहुत दिनों से सर्कस देखने जाने के लिए इच्छुक थी। और आप उस समय हमारे हर्ष का अनुमान भली भांति लगा सकते हैं, जब एक दिन वोलोद्या ने बताया कि वह हम सब के लिए सर्कस के टिकट खरीदने जा रहा है। हम सब एक साथ फ़िल्में देखने तो बहुत बार गये थे, किन्तु सर्कस देखने कभी नहीं। मैंने स्वयं बहुत दिनों से सर्कस नहीं देखा था, और शिशकिन को देखे तो इतने दिन हो चुके थे कि वह यह तक भूल चुका था कि वह होता कैसा है। उसे केवल इतना भर याद था कि उसने कुछ बड़े बड़े जानवर देखे थे, किन्तु वे शेर, चीते या घोड़े थे, वह बताने में असमर्थ था। उस समय वह केवल बच्चा ही था।

हम विशेष रूप से उस मोटर-साइकिल सवार को देखने के लिए उत्सुक थे, जो ग्लोब के आकार के बने हुए लोहे के पिंजरे के भीतर चारों ओर गोलाई में मोटर-साइकिल चलाता था, बस केवल इतना था कि आप पिंजरे की छड़ों के आरपार देख सकते थे। हमने इश्तहार देखे थे और जो लोग स्वयं देख आये थे, उनके मुंह से इस बारे में बड़ी रोमांचकारी कहानियां सुनी थीं। उनका कहना था कि यह मोटर-साइकिल सवार बड़ी तेज़ रफ़्तार से पिंजरे के भीतर चारों ओर मोटर-साइकिल चलाता है। उसके बाद पिंजरे का नीचे वाला आधा हिस्सा अलग कर लिया जाता है और उसे, उलटे हुए प्याले के समान ऊपर वाले आधे भाग में मोटर-साइकिल चलाते हुए छोड़ दिया जाता है... उसके नीचे कुछ नहीं रहता। उनका कहना है कि उसकी इस रफ़्तार से केन्द्र-अपसारी शक्ति जैसी कोई चीज़ पैदा हो जाती है, और वह उसे गिरने से रोके रहती है। किन्तु यदि चाल कम हो जाये, तो केन्द्र-अपसारी शक्ति कम हो जायेगी और मोटर-साइकिल गिर जायेगी।

कुछ लड़कों ने कहा कि हम तमाम लड़के सर्कस नहीं जा पायेंगे, क्योंकि वोलोद्या को इतने टिकट नहीं मिल सकेंगे। इसलिए केवल वही जा सकेंगे, जो हर विषय में ५ नम्बर प्राप्त करते हैं।

कुछ का कहना था कि शिशकिन को छोड़ कर बाकी सब जायेंगे। और दूसरों का कहना था कि कोई भी नहीं जा सकेगा क्योंकि बहुत देर पहले ही तमाम टिकट समाप्त हो चुके होंगे।

आख़िरकार टिकट खरीद लिये गये और हम गये, शिशकिन भी गया। हम खेल शुरू होने से काफ़ी देर पहले ही पहुंच गये थे, किन्तु हमने इसकी कोई परवाह नहीं की। वहां जल्दी ही पहुंचना अच्छा था, क्योंकि देर से पहुंचने पर शायद आपको जगह नहीं मिलती। हमने देखा कि जो सीटें हमें मिली थीं, वहां से करतब दिखाने का अखाड़ा अच्छा नज़र आता था। यह अखाड़ा एक बड़ी दरी से ढका हुआ था। अनेकों प्रकार की रस्सियां छत से नीचे लटक रही थीं तथा शामियाने के गुम्बद के नीचे कसरत करने के झूलते हुए डंडे, कड़े और रस्सियों की सीढ़ी, और इसी प्रकार की दूसरी वस्तुएं ऊपर से लटकी हुई थीं। धीरे धीरे सर्कस भरना आरम्भ हो गया और जल्दी ही ऐसा मालूम देने लगा, जैसे पूरा शहर ही वहां आकर इकट्ठा हो गया हो। मैंने लोगों को गिनने की कोशिश की, पर गिनते-गिनते जब मैं दो सौ तीस पर पहुंचा, तो गिनती भूल गया। मैंने दुबारा गिनना शुरू ही किया था कि दर्जनों बत्तियां चमक उठीं और बिल्कुल दिन की तरह उजाला छा गया। प्रत्येक वस्तु सजीव और आह्लादपूर्ण तथा उत्साह से भरी दिखाई दे रही थी। मैंने सोचा कि अभी खेल शुरू होने में एक मुद्दत पड़ी होगी। मैं दर्शकों को घूर रहा था कि अचानक झांझ झनक उठी, ढोल बजने लगे, वाइलिन चहक उठा, नगाड़ा कड़का और कसरतबाज़ दौड़ते हुए अखाड़े में आये। वे हवा में उछले और कलाबाज़ियां खाईं, गाड़ी के पहिये के आकार की मुद्रा में अपने हाथों से एक दूसरे को उछालना शुरू कर दिया। उन्होंने यह सब इतने सहज और सुन्दर ढंग से किया कि उन्हें देखने वाला प्रत्येक व्यक्ति ऐसा अनुभव कर रहा था कि वह कूद कर अखाड़े में जा पहुंचे और उनके साथ कलाबाज़ियां खाना शुरू कर दे। मैं भी उछला, और अखाड़े में उतर पड़ने की सोच ही रहा था, लेकिन ओल्गा निकोलायेव्ना ने मुझे बैठ जाने का आदेश दिया क्योंकि मैं दूसरों के आनन्द में विघ्न डाल रहा था। मैंने चारों ओर नज़र दौड़ाई और देखा कि सब लोग अपने अपने स्थान पर बैठे हैं, इसलिए मैं भी बैठ गया। किन्तु जब कसरतबाज़ अपना खेल दिखा रहे थे, मुझे चुपचाप बैठे रहने में बड़े कष्ट का अनुभव हो रहा था। मैं तो तमाम शाम उनके करतब देखता रहता, किन्तु वे शीघ्र ही वापस भाग गये और उनके स्थान पर जंगली जानवरों का एक प्रशिक्षक रीछों के साथ वहां उपस्थित हुआ। कमाल है, ये रीछ कितने चतुर थे! वे कस कर खींचे हुए रस्से पर चले, झूलों पर झूले और चलते पीपे पर, बिना एक बार भी अपने कदमों में भूल किये, अपने पांवों के बल चले। और उनमें से दो ने सचमुच बाइसिकलें भी चलाईं!

अगली बारी बाजीगरों की थी, किन्तु उन्होंने अपनी बाजीगरी हाथ से न दिखा कर पांवों से दिखाई। अपनी-अपनी पीठ के बल लेटे हुए उन्होंने रंगीन गोल बेलनाकार डिब्बों को अपने पांवों पर चारों ओर घुमाया, एक पैर से दूसरे पर आगे-पीछे उछाला तथा ऐसे अन्य करतब दिखाये, जिन्हें लोग अपने हाथों तक से नहीं कर सकते।

इसके बाद कुत्ते आये। वे उछले और कलाबाज़ियां खाईं, उन्होंने अपना खेल अपनी पिछली टांगों पर दिखाया। उन्होंने एक दूसरे को छोटी गाड़ियों में खींचा और फ़ुटबाल खेली। एक कुत्ता बहुत ही बहादुर था। वे उसे उठा कर ऊपर सर्कस की छत तक ले गये और वहां से वह हवाई छतरी द्वारा नीचे कूदा! इसके बाद कुत्तों की प्रशिक्षिका ने घोषणा की कि उसके पास एक ऐसा कुत्ता है, जो गिन सकता है। वे एक स्टूल लाये और उस पर एक छोटे से काले कुत्ते को बिठा दिया। प्रशिक्षिका ने लकड़ी के तीन टुकड़े कुत्ते के सामने रख दिये और उससे उन्हें गिनने के लिए कहा। हमें आश्चर्य हुआ कि जब कुत्ता बोल तक नहीं सकता, तो भला गिन कैसे सकता है। हां, कुत्ता बोला तो नहीं, लेकिन वह तीन बार भोंका। हरेक ने ज़ोर से तालियां बजाईं। प्रशिक्षिका ने कुत्ते को शाबाशी दी और उसे शक्कर का एक टुकड़ा खाने के लिए दिया। इसके बाद उसने कुत्ते के सामने पांच टुकड़े रखे और कहा:

"गिनो!"

कुत्ता पांच बार भोंका।

प्रशिक्षिका ने एक गत्ते पर छपे हुए काफ़ी बड़े-बड़े अंकों, जिन्हें हरेक देख सकता था, की ओर इशारा किया और कुत्ते ने हर बार भोंक कर सही उत्तर दिया।

"अब, दो को दो से गुणा करने पर कितना होता है?" प्रशिक्षिका ने पूछा।

कुत्ता चार बार भोंका।

"तीन और चार कितने होते हैं?"

कुत्ता सात बार भोंका।

"दस में से चार घटाओ!"

कुत्ता छः बार भोंका।

हम आश्चर्य में ठगे से बैठे रहे। कुत्ता भी जोड़-घटा सकता है! इसके बाद और बाजीगर आये। उनमें से दो ने प्लेटों और दूसरी अनेकों वस्तुओं को फेंका और फिर उन्हें ऊपर ही ऊपर लपक लिया। उन दोनों में से हरेक ने एक ही बार में चार-चार प्लेटों से बाजीगरी के खेल दिखाये और फिर प्लेटों को एक दूसरे की ओर फेंकते रहे। इस प्रकार प्लेटों को क्रमबद्ध आगे आते और पीछे जाते हुए देखना काफ़ी दिलचस्प था, जैसे वे प्लेटें जीवित हो उठी हों और उन में से कोई भी गिर कर नहीं टूटी।

अरे, जोकर के बारे में तो मैं भूल ही गया! उसने हल्के नीले रंग की पतलून और पीले रंग की वास्कट पहन रखी थी और एक हरा टोप लगाया हुआ था। उसकी नाक ऐसी लाल थी कि आपने किसी की नहीं देखी होगी। खिलाड़ी जितने खेल खेलते, वह सब करता था, बस केवल इतना है कि वह सब में गड़बड़ी डाल देता था। जब बाजीगर अपने करतब दिखाकर वापस गये तो वह लकड़ी के तीन टुकड़े लिए बाहर आया और उनसे बाजीगरी करना शुरू कर दिया। किन्तु उसने देर तक ऐसा नहीं किया, जैसा कि पहले किया गया था, बल्कि उसने एक टुकड़े को अपने सिर पर बुरी तरह दे मारा और भाग गया। और इसके बाद जब रीछ साइकिल चला

चुके, तो वह एक साइकिल पर सवार हो कर आया और सीधा अखाड़े के चारों ओर बनी रोक पर चढ़ गया और उसकी साइकिल गिर कर छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर गई। इसके बाद जब घुड़सवार अखाड़े में आये, तो उसने उनसे अपने लिए भी एक घोड़े की याचना की, किन्तु उसे अपने गिर जाने का इतना भय था कि उसने अपने को एक पेटी से छत से लटकाई हुई सुरक्षा-रस्सियों के साथ बांध देने के लिए उनसे कहा। फिर उसने पूंछ के सहारे घोड़े पर चढ़ने का प्रयत्न किया, किन्तु घोड़े ने उसे लातें जमाईं। उसने भाग कर सीढ़ी लाना चाहा, किन्तु वह भूल गया कि वह रस्सी से बंधा हुआ है! अतः उसने एक घुड़सवार से प्रार्थना की कि वह उसे उठा कर चढ़ा दे। घुड़सवार ने पूरी शक्ति से उसे नीचे से धकेला, किन्तु जोकर बजाय घोड़े पर चढ़ने के किसी प्रकार घुड़सवार की पीठ पर चढ़ बैठा! और घुड़सवार उस पीली वास्कट वाले सनकी को अपनी पीठ पर पूरे दंगल में दुलकी चाल से घुमाता फिरता रहा।

"ऐ, क्या करता है! तुम ग़लत घोड़े पर सवार है!" घुड़सवार चिल्लाया।

आख़िरकार जैसे तैसे उन्होंने जोकर को घोड़े पर चढ़ाया। घोड़ा दुलकी चाल से दौड़ने लगा और जोकर गिर पड़ा, किन्तु वह ज़मीन पर नहीं गिरा, क्योंकि वह रस्सी से लटका हुआ था। इस पर उसने अपने हाथ और टांगें फैला लीं और सर्कस में चारों ओर उड़ने लगा। लोग ठहाका मार कर हंस रहे थे। वह उन लोगों में था, जो कोई भी काम ठीक ढंग से कर ही नहीं सकते। वह केवल एक ही काम कर सकता था, और वह काम था लोगों को हंसाना।

कार्यक्रम का अन्तिम खेल था मोटर-साइकिल चलाना। हम मध्यांतर में कहीं नहीं गये, बल्कि अपनी जगहों पर बैठे रहे और तमाम तैयारियां देखते रहे। पहले उन्होंने पिंजरे का ऊपर का आधा भाग जोड़ा। वह इतना बड़ा था कि उसके भीतर अधिक नहीं तो २० व्यक्ति आसानी से समा सकते थे। फिर ऊपर वाले आधे हिस्से को ऊपर उठा लिया गया और नीचे वाले आधे भाग को भी जोड़कर दंगल में रख दिया गया। इसके भीतर दो मोटर-साइकिलें और दो



साइकिलें रखी गईं, और फिर इस पूरे हिस्से को ऊपर उठा कर, ऊपर वाले हिस्से से मिला दिया गया। पिंजरे के नीचे की ओर एक सूराख़ सा था, जिसमें से एक रस्सियों की बनी सीढ़ी लटक रही थी।

आख़िरकार मध्यांतर समाप्त हुआ और हाल फिर भर गया। रंगीन बत्तियां जला दी गईं और मोटर-साइकिल चालक मैदान में आये। उन्होंने कपड़ों के ऊपर पहने जाने वाले नीले लबादे पहन रखे थे और सिरों पर फ़ौलादी कनटोप ओढ़े हुए थे। ये चालक तीन जने थे, ो पुरुष और एक स्त्री। उन्होंने दर्शकों के समक्ष अपनी गर्दनें झुकाईं। फिर बाजा बजने लगा और वे रस्सी की सीढ़ी पर चढ़ने लगे। वे एक एक करके सीढ़ी द्वारा सूराख़ के भीतर चढ़े, अन्दर से सूराख़ बन्द किया और पिंजरे के भीतर चारों ओर साइकिलों पर चढ़कर चक्कर लगाने लगे। शुरू में तो धीरे धीरे चले, और साइकिलों ने पिंजरे की तली में छोटे छोटे घेरे बनाने आरम्भ कर दिये, किन्तु बाद में उन्होंने अपनी रफ़्तार बढ़ा दी और ऊपर चढ़ते चले गये, जबतक कि वे बिलकुल ही क्षितिज के समानान्तर नहीं हो गये और आप भी यह न समझने लगे कि आख़िर वे नीचे क्यों नहीं गिर पड़ते। वे साइकिल पर चढ़े हुए अपनी बारी बदलते और स्त्री ने भी पुरुषों के समान ही करतब दिखाये।

इसके बाद उनमें से एक ने मोटर-साइकिल की सवारी शुरू की। बहुत ही भयंकर आवाज़ हुई, जैसे कोई मशीनगन चल रही हो, और मोटर-साइकिल सवार बहुत ही तेज़ रफ़्तार से पिंजरे को चीरता हुआ सा, उसके चारों ओर चक्कर लगाने लगा। कभी कभी तो वह पिंजरे में ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर चक्कर लगाने लगता। हमें डर लग रहा था कि कहीं वह अपनी सीट से गिर न पड़े, किन्तु ऐसा नहीं हुआ। दूसरे मोटर-साइकिल सवार ने अपनी मोटर-साइकिल स्टार्ट की और पहले के पीछे चढ़ दौड़ा। उन दोनों ने क्या कतार बनाई थी। कान फटे जा रहे थे। दूसरा मोटर-साइकिल सवार पिंजरे के निचले हिस्से पर नीचे उतर आया और अपनी मोटर-साइकिल बन्द कर दी। किन्तु पहला पिंजरे के ऊपरी भाग पर उसी प्रकार मोटर-साइकिल चलाता रहा।

फिर नीचे वाला भाग अलग कर दिया गया और मोटर-साइकिल सवार अभी तक ऊपर वाले भाग में चारों ओर अपनी मोटर-साइकिल दौड़ा रहा था। जब नीचे वाला हिस्सा नीचे ज़मीन पर लाकर रखा गया तो दूसरा चालक और स्त्री उसमें से बाहर निकल आये। परन्तु तीसरा मोटर-साइकिल सवार अभी तक ऊपरी भाग में चारों ओर चक्कर लगा रहा था। जब तक हम उसकी ओर देखते रहे, हमारी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे ही रही। "यदि इंजन ख़राब हो जाये, तो क्या हो?" मैंने मन ही मन सोचा। वह केवल अधिकतम रफ़्तार के कारण ही इस प्रकार चला सकता है, और यदि वह वहीं रुक जाये तो केन्द्र-अपसारी शक्ति समाप्त हो जायेगी और वह धम्म से नीचे आ गिरेगा।

कभी-कभी तो मुझे लगा कि किसी भी क्षण इंजन फ़ेल होने वाला है, किन्तु अन्त तक यह सिलसिला भली भांति चलता रहा। पिंजरे का नीचे वाला हिस्सा पुनः ऊपर उठा दिया गया,

मोटर-साइकिल सवार फिर नीचे आकर पिंजरे के मध्य चक्कर लगाने लगा। ये चक्कर क्रमशः छोटे होते गये। और अन्त में उसने अपना करतब समाप्त कर दिया, वह रेंग कर सूराख से निकला और सीढ़ी द्वारा नीचे आया। तालियों की ध्वनि से सारा सर्कस गूंज उठा।

यह कार्यक्रम का अन्तिम खेल था। ओह! हमें इसके समाप्त हो जाने का कितना दुःख था और सर्कस को छोड़ते हुए कितना बुरा लग रहा था! मैंने निश्चय किया कि जब मैं बड़ा हो जाऊंगा, तो प्रतिदिन सर्कस देखने जाया करूंगा। हो सकता है प्रतिदिन संभव न हो, लेकिन सप्ताह में एक बार तो अवश्य ही जाया करूंगा। मैं सर्कस से कदापि नहीं ऊबूंगा।



बारहवाँ अध्याय

अगले दिन, यह जानने के लिए कि साही को क्या खिलाया जाये, मैं शिशकिन के यहां गया, क्योंकि मालूम ऐसा होता था कि साही ने लम्बी नींद में सोने का विचार छोड़ दिया है। तमाम रात वह कमरे में चक्कर लगाता रहा और काग़ज़ों को खड़खड़ाता रहा, जिससे कोई भी न सो सका। जब मैं शिशकिन के कमरे में पहुंचा, तो वह अपनी टांगें ऊपर उठाये हुए फ़र्श पर लेटा हुआ था और एक सूटकेस उसके हाथों में थमा था।

"तुम फ़र्श पर क्या कर रहे हो?" मैंने उससे पूछा।

"मैंने बाजीगर बनने का फ़ैसला कर लिया है," वह बोला। "देखो! अपने पांवों से इस सूटकेस के साथ बाजीगरी करूंगा।"

उसने सूटकेस अपने पांवों पर उठाकर संतुलन रखने की कोशिश की, किन्तु वह असफल रहा।

"बस, मैं इसे उठा भर सकूं!" उसने हांपते हुए कहा। "वीत्या, मेरी मदद करना।"

मैंने सूटकेस उठा कर उसके पांवों के ऊपर रख दिया। उसने थोड़ी देर तक तो उसे वहीं रखा रहने दिया, फिर उसने उसे धीरे से पलटने का प्रयत्न किया, किन्तु उसका ढकना खुल गया और वह फ़र्श पर गिर पड़ा।

"नहीं," शिशकिन बोला, "यह तरीक़ा नहीं है। मेरे बूटों के तले बहुत फिसलने वाले हैं। मुझे अपने बूट उतार देने चाहिए।"

उसने अपने बूट उतार डाले, फिर फ़र्श पर अपनी कमर टिका कर लेट गया और अपनी टांगें ऊपर उठा दीं। मैंने सूटकेस फिर उसके पांवों पर रख दिया।

"हां, यह बेहतर है!" वह बोला।

उसने फिर अपने पांवों से उसे पलटने की कोशिश की और सूटकेस दुबारा फिसल गया। लेकिन इस बार सूटकेस सीधा दनदनाता हुआ उसके पेट पर गिरा। शिशकिन ने अपना पेट पकड़ लिया और दर्द से कराहने लगा।

"ओह! ओह! बड़ी ज़ोर से लगा है। यह सूटकेस बहुत भारी है, ठीक यही होगा कि मैं किसी हल्की चीज़ से अभ्यास करूं।"

हम किसी हल्की चीज़ के लिए इधर-उधर तलाश करते रहे, किन्तु हमें कोई भी उचित वस्तु नहीं मिली। इस पर शिशकिन ने सोफ़े से गद्दी उठा ली, इसे मज़बूती के साथ गोल किया और इसे एक डोरे से बांध दिया, जिससे वह सोसेज का एक गुच्छा सा नज़र आने लगा था।

"यह अच्छा और मुलायम है," वह बोला। "अगर गिरे, तो भी चोट नहीं लगेगी।"

वह फिर फ़र्श पर लेट गया और मैंने वह 'सोसेज का गुच्छा' उसके ऊपर उठे हुए तलवों पर रख दिया। उसने उसे जल्दी-जल्दी चारों ओर उलट पुलट कर एक क्रम बनाने की कोशिश की, पर सफल न हो सका।

"नहीं," उसने कहा, "पहले मैं इसे अपने पांवों से पकड़ना सीखूंगा, जैसा कि सर्कस के बाजीगर ने किया था। तुम इसे वहां से मेरी ओर फेंको, मैं इसे पांवों से लपकूंगा।"

मैंने गद्दी उठाई और कमरे की दूसरी ओर चला गया और वहां से गद्दी फेंकी। वह उसके पांवों पर पहुंचने के बजाय ठीक उसके सिर पर जा कर लगी।

"अबे गधे!" शिशकिन चिल्लाया। "तुझे दिखाई नहीं देता कि कर क्या रहा है? इसे मेरे पांवों पर ताक कर फेंक, मेरे सिर पर नहीं!"

मैंने गद्दी उठा ली और निशाना साधा। उसने अपने पांव चौड़े फैला लिये, किन्तु वह इसे लपक नहीं सका। मैंने गद्दी लगभग बीस बार फेंकी और वह उसे केवल एक ही बार लपक सका।

"देखा!" वह मगन होकर बोला। "बिल्कुल सर्कस की तरह लपका है!"

मैंने सोचा कि मैं भी उसे इसी तरह फिंकवा कर लपकूं। मैं भी पीठ के बल फ़र्श पर लेट गया और अपने पांवों से गद्दी पकड़ने की कोशिश की, किन्तु मैं उसे एक बार भी नहीं पकड़ सका। अन्त में मुझे यह विचार त्याग देना पड़ा, क्योंकि मेरी पीठ दर्द करने लगी थी, मानो किसी ने उस पर सवारी की हो।

"अच्छी बात है," शिशकिन बोला, "आज के लिए गद्दी की यह कसरत काफ़ी है। आओ, अब हम कुर्सियों पर आज़माइश करें।"

वह कुर्सी पर बैठ गया और इसे धीरे-धीरे पीछे की ओर झुकाने लगा ताकि वह उसके पिछले दो पायों पर संतुलन स्थिर रख सके। कुर्सी धीरे-धीरे पीछे की ओर झुकती रही, यहां तक कि अन्त में बिलकुल लुढ़क गई। शिशकिन उछल कर फ़र्श पर चारों खाने चित्त गिरा और उसे चोट आई। इसके बाद मैंने प्रयत्न किया, किन्तु वही दशा मेरी हुई: मैं गिर पड़ा और अपना सिर तुड़ा लिया।

"मेरे ख़याल से हमें इस तरह के उस्तादी भरे खेलों के लिए कोशिश करना काफ़ी जल्दबाज़ी है," कोस्त्या बोला। "हमें इसके बजाय हाथों से बाजीगरी करने का अभ्यास करना चाहिये।"

"लेकिन हम बाजीगरी करेंगे किस चीज़ से?"

"तश्तरियों से, और काहे से। जैसे वे सर्कस में करते हैं।" उसने अल्मारी खोली और दो तश्तरियां निकाल लाया।

"अब तुम अपनी तश्तरी मेरी तरफ़ फेंको और मैं अपनी तुम्हारी तरफ़ फेंकूंगा। जैसे ही मैं अपनी तश्तरी तुम्हारी तरफ़ फेंकूं, तुम अपनी मेरी तरफ़ फेंकना। तुम मेरी लपकना और मैं तुम्हारी लपकूंगा।"

"देखो," मैंने कहा, "इस तरह हम सिर्फ़ तश्तरियां ही तोड़ेंगे और यहीं इस सिलसिले का अन्त हो जायेगा।"

"बात तो ठीक है," वह बोला। "तुम जानते हो हम करेंगे क्या? हमें एक तश्तरी से शुरू करना चाहिये। जब हम एक को ठीक तरह से लपकना सीख जायेंगे, तो दो तश्तरियों से अभ्यास कर सकते हैं और इसी तरह तीन से, चार से, और फिर हम सचमुच के बाजीगर हो जायेंगे।"

हमने एक तश्तरी को आगे-पीछे दो ही बार उछाला था कि वह गिरकर टूट गई। हमने दूसरी तश्तरी ली और वह भी टूट गई।

"यह तो अच्छा नहीं रहा," शिशकिन बोला। "इस तरह तो हम तमाम तश्तरियां तोड़ डालेंगे और सीखेंगे कुछ भी नहीं। ठीक यही है कि किसी न टूटने वाली चीज़ से अभ्यास किया जाये।"

वह रसोई में गया और तामचीनी का एक बर्तन ढूंढ़ लाया। हम थोड़ी देर तक इसे उछाल कर लपकते रहे कि जब तक यह न जाने किस तरह खिड़की से न टकरा गया। हमारा सौभाग्य था कि खिड़की का शीशा चकनाचूर नहीं हुआ; उसमें सिर्फ़ बाल ही आया था।

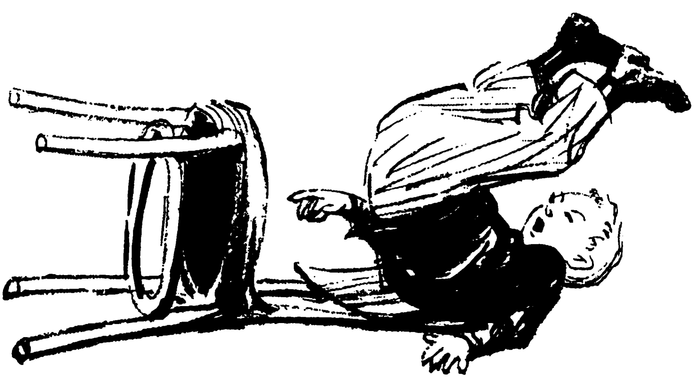
"यह तो बहुत ही बुरा हुआ!" कोस्त्या बोला। "हमें इसके बारे में कुछ सोचना होगा।"

"हम इस टूटी हुई जगह चिपकाने वाला काग़ज़ लगा दें, तो?"

"नहीं, उससे यह और भद्दा हो जायेगा। हमें गलियारे वाली खिड़की का शीशा उतार कर उसे यहां लगा देना चाहिये और इस शीशे को वहां लगा देना ठीक रहेगा। गलियारे की खिड़की के टूटे हुए शीशे पर किसी की नज़र नहीं पड़ेगी।"

हमने प्लास्तर खुरचा और टूटे हुए शीशे को निकालने का प्रयत्न किया। किन्तु शीशे की टूट बड़ी होती गई और अन्त में शीशे के दो टुकड़े हो गये।

"परवाह मत करो," शिशकिन बोला। "गलियारे के लिए इससे काम चल जायेगा।"



फिर हमने गलियारे की खिड़की से शीशा निकाला, किन्तु वह कमरे की खिड़की से बड़ा निकला इसलिए चौखटे में ठीक नहीं बैठा।

"हमें इसे काटना पड़ेगा," शिशकिन बोला। "तुम किसी को जानते हो, जिसके पास शीशा काटने का औज़ार हो?"

"मेरे ख़याल से वास्या येरोख़िन के पास एक है।"

हम वास्या के घर गये। उससे शीशा काटने का औज़ार लिया और घर वापस लौटे। परन्तु शीशा गायब था।

"अजीब तमाशा है," शिशकिन कुढ़ते हुए बोला। "शीशा कहां ग़ायब हो गया?"

इसी क्षण उसने शीशे पर अपना पांव रख दिया। वह वहीं फ़र्श पर पड़ा था। उसके बूट के नीचे उसकी कड़क कड़क की कर्णकटु आवाज़ सुनाई दी।

"किस बेवकूफ़ ने शीशा लाकर फ़र्श पर रख दिया?" शिशकिन चिल्लाया।

"तुमने ख़ुद रखा था," मैंने कहा।

"इसके मायने हुए कि तुमने इसे यहां रखा था।"

"नहीं, मैंने इसे छूआ तक नहीं। तुम्हें इसे फ़र्श पर नहीं रखना चाहिये था, क्योंकि जब शीशा फ़र्श पर रखा हो, तो उसे देखा नहीं जा सकता।"

"अगर तुम इतने तेज़ हो, तो तुमने उसी वक़्त ऐसा क्यों नहीं कहा?"

"मुझे उस वक़्त यह ख़याल ही नहीं आया।"

"तुम्हें इसका ख़याल ही नहीं आया! अब मुझे माताजी की अच्छी खासी फटकार सुनने को मिलेगी और साथ साथ तुम्हें भी। अब मैं क्या करूंगा? इसके तो पांच टुकड़े हो गये हैं। अच्छा यही होगा कि हम इसे जोड़ कर वहीं गलियारे वाली खिड़की पर लगा दें, और दूसरे को फिर यहीं वापस लाकर लगा दिया जाये। वह इतना बुरा नहीं है।"

इस प्रकार हम टूटे हुए शीशे को गलियारे की खिड़की में लगाने में जुट गये, किन्तु टुकड़ों ने अपना स्थान नहीं पकड़ा। हमने उन्हें जोड़ने की कोशिश की, किन्तु सर्दी होने के कारण चेप चिपक न सका। इसलिए हमने यह इरादा बदल दिया और दूसरे शीशे को दुबारा उसके स्थान पर लगाना आरम्भ कर दिया। परन्तु शिशकिन ने जाकर उस शीशे के एक हिस्से को गिरा दिया और वह चकनाचूर हो गया। उसी क्षण दरवाज़ा खुला और उसकी माताजी अन्दर दाख़िल हुईं। शिशकिन ने अपनी तरफ़ से घटना को समझाने की पूरी कोशिश की।

"तुम गोदी के बच्चे से भी गये-गुज़रे हो," उसकी माताजी बोलीं। "तुम्हें घर में अकेला छोड़ना यक़ीनन ख़तरनाक है। भगवान ही जानता है कि तुम आगे क्या करोगे!"

"मैं शीशा लगा दूंगा। मैं न लगा दूं, तो आप कहियेगा," शिशकिन बोला। "मैं तमाम टुकड़े इकट्ठे कर लूंगा।"

"तुम इस किस्म की कोई हरकत नहीं करोगे। हां, टुकड़े ज़रूर चुन लो। मुझे शीशा लगाने वाला बुलाना पड़ेगा। और यहां यह क्या गड़बड़ कर रखी है?"



"मैंने एक तश्तरी तोड़ दी है," शिशकिन बोला।

"ओह!" उसकी माताजी ने केवल इतना ही कहा। उन्होंने अपनी आंखें बन्द कर लीं और फिर अपने दोनों हाथ अपने माथे पर रख लिये, जैसे अचानक उनके सिर में दर्द हो गया हो। फिर उन्होंने अपने हाथ नीचे कर लिए और कहा:

"इसको फ़ौरन साफ़ करो और अपनी पढ़ाई पर बैठ जाओ! मुझे यकीन है कि तुम्हें आज अपनी किताबें खोलने तक का ख़याल नहीं आया होगा।"

कोस्त्या और मैंने टूटे हुए टुकड़े चुने और ले जाकर कूड़े के कनस्तर में डाल दिये।

"तुम्हारी माताजी बहुत ही रहमदिल हैं," मैंने उससे कहा। "अगर मैंने अपने घर पर इस तरह की कोई हरकत की होती, तो वे लोग तमाम दिन इसकी चर्चा छेड़े रखते।"

"अरे, घबराओ नहीं, भरपेट चर्चा चलेगी। ज़ीना चाची के आने तक ज़रा इन्तज़ार करो। वह मुझे भी सुनायेंगी और साथ साथ तुम्हें भी।"

मैंने फ़ैसला किया कि ज़ीना चाची के आने तक प्रतीक्षा नहीं करूंगा। मैंने अलविदा कहा और चल दिया।

अगले दिन शिशकिन मुझे गली में मिला। उसने बताया कि वह आज स्कूल नहीं जायेगा। उसने कहा कि वह डाक्टर के यहां जा रहा है और उसकी तबीयत कुछ अच्छी नहीं है। मैं स्कूल गया, और जब ओल्गा निकोलायेव्ना ने शिशकिन के न आने का कारण पूछा, तो मैंने उन्हें बता दिया कि वह डाक्टर के यहां जाते हुए मुझे आज सुबह मिला था।

"स्कूल के बाद तुम उसके घर जाना," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं।

उस दिन हमें इमला लिखवाई गई थी। जब मैं स्कूल से घर लौटा, तो मैंने अपना स्कूल का काम निबटाया और शिशकिन से मिलने चल दिया। उसकी माताजी घर ही पर थीं। ज्योंही मैं अन्दर पहुंचा, शिशकिन ने अपने होंठों पर उंगली रख कर और अपना सिर हिलाकर इशारे करने शुरू कर दिये। मैंने देखा कि वह किसी चीज़ के बारे में मुझे ख़ामोश रखना चाह रहा है, इसलिए उसके साथ साथ गलियारे में निकल आया।

"माताजी से मत कहना कि मैं आज स्कूल से ग़ैरहाज़िर रहा हूं," वह बोला।

"अच्छी बात है। लेकिन तुम स्कूल आये क्यों नहीं? अस्पताल में उन्होंने क्या बताया?"

"उन्होंने कुछ भी नहीं कहा।"

"क्यों?"

"अरे यार, उन्होंने वहां एक निहायत बेहूदा और पत्थर दिल डाक्टर रख छोड़ा है। मैंने

उससे कहा कि मैं बीमार हूं, लेकिन वह बोला कि तुम भले-चंगे हो। मैंने उसे बताया कि सुबह मुझे इतनी छींकें आईं कि मैंने समझा मेरा सिर ही उड़ जायेगा, तो वह बोला: 'यह बहुत अच्छा है, दिमाग़ की सफ़ाई के लिए खुल कर अच्छी छींक आने से बेहतर कोई चीज़ है ही नहीं।'"

"लगता है कि तुम सचमुच बीमार नहीं थे?"

"सच, मैं नहीं था।"

"तब फिर तुम डाक्टर के पास क्यों गये?"

"बात यह है कि सुबह मैंने माताजी से कहा कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है, इस पर उन्होंने कहा कि ऐसी हालत में मुझे डाक्टर के पास जाना चाहिये, क्योंकि वह मेरे स्कूल ले जाने के लिए और चिट्ठियां लिखने को तैयार नहीं थीं। मैं पहले भी इसी तरह स्कूल से ग़ैरहाज़िर रहा था।"

"जब तुम बिलकुल भी बीमार नहीं थे, तो तुमने अपनी माताजी से क्यों कहा कि तुम बीमार हो?"

"तुम्हारे दिमाग़ में भूसा भरा है! क्या ओल्गा निकोलायेव्ना ने नहीं कहा था कि आज इमला लिखवाई जायेगी? मेरे वहां जाने और २ नम्बर लेने से क्या फ़ायदा था!"

"लेकिन तुम अब क्या करोगे? कल ओल्गा निकोलायेव्ना तुमसे पूछेंगी कि कल स्कूल क्यों नहीं आये थे।"

"मुझे मालूम नहीं कि मुझे करना क्या चाहिये। मेरे ख़याल से मुझे कल भी स्कूल नहीं जाना चाहिये। ओल्गा निकोलायेव्ना पूछें, तो तुम उनसे कह देना कि मैं बीमार हूं।"

"देखो," मैंने कहा, "यह बेवकूफ़ी होगी। ठीक यही है कि असल बात मंजूर कर लो और अपनी माताजी से चिट्ठी लिख देने के लिए कहो।"

"नहीं, यह नहीं चलेगा। माताजी कह चुकी हैं कि वह अब और कोई चिट्ठी नहीं लिखेंगी, नहीं तो मुझे स्कूल से ग़ैरहाज़िर रहने की आदत पड़ जायेगी।"

"लेकिन अब इसके अलावा और चारा भी क्या है?" मैंने कहा। "तुम हर रोज़ तो स्कूल से ग़ायब रह नहीं सकते, या रह सकते हो? तुम अपनी माताजी से कहो, वह बात समझ जायेंगी।"

"अच्छी बात है, यदि मुझमें इतनी हिम्मत आ सकी तो उनसे कहूंगा।"

अगले दिन शिशकिन फिर स्कूल नहीं आया, और मैं समझ गया कि वह अपनी माताजी से कहने का साहस नहीं कर सका। ओल्गा निकोलायेव्ना ने मुझसे शिशकिन के बारे में पूछा, मैंने कह दिया कि वह बीमार है, और जब उन्होंने यह पूछा कि उसे बीमारी क्या है, तो मैंने कह दिया कि उसे इन्फ़्ल्युएन्ज़ा हो गया है।

और इस प्रकार शिशकिन की बदौलत मुझे सफ़ेद झूठ बोलना पड़ा। किन्तु मैं इसके अतिरिक्त और कर भी क्या सकता था; भला कुछ और किया जा सकता था, जब उसने मुझसे ख़ास तौर पर किसी से कुछ भी न कहने के लिए कह दिया था?



तेरहवाँ अध्याय

स्कूल के बाद मैं शिशकिन के यहां गया और उसके लिए मुझे ओल्गा निकोलायेव्ना से जो झूठ बोलना पड़ा था, इसका उससे ज़िक्र किया। उसने मुझे बताया कि वह स्कूल जाने के बजाय तमाम शहर में घूमता फिरा, क्योंकि वह अपनी माताजी को यह बताने से डरता था कि वह बिना उनकी चिट्ठी लिए स्कूल नहीं जा सकता।

"लेकिन तुम करोगे क्या?" मैंने उससे पूछा। "तुम उन्हें आज बता दोगे, या नहीं?"

"मुझे नहीं मालूम । मुझे एक और उपाय सूझा है। मैं सोचता हूं कि मैं सर्कस में भर्ती हो जाऊं।"

"सर्कस में भर्ती हो जाओ?"

"हां, मैं उनके पास जाऊंगा और कहूंगा कि मुझे खेल दिखाने वाले की हैसियत से अपने यहां रख लें।"

"लेकिन तुम सर्कस में जाकर क्या तीर मारोगे?"

"मैं वही करूंगा, जो दूसरे करतब दिखानेवाले करते हैं। जैसे हमने वहां जन्तुओं के प्रशिक्षक को देखा था, उसी तरह मैं भी लोबज़िक को गिनना सिखाऊंगा, और फिर मुझे विश्वास है कि वे मुझे भर्ती कर लेंगे।"

"मान लो, वे न करें, तब?"

"भई, मुझे विश्वास है, वे मुझे रख लेंगे।"

"लेकिन स्कूल का क्या होगा?"

"अब मैं और स्कूल नहीं जाऊंगा। तुम ओल्गा निकोलायेव्ना से तो मेरी शिकायत नहीं करोगे, न? मेरे अच्छे दोस्त, वीत्या!"

"लेकिन तुम्हारी माताजी को एक दिन ज़रूर पता चल जायेगा कि तुम स्कूल नहीं जा रहे हो।"

"उन्हें काफ़ी दिनों तक मालूम नहीं हो सकेगा, और तब तक मैं सर्कस का खिलाड़ी बन चुका हूंगा, फिर सब मामला ठीक हो जायेगा।"

"मान लो कि तुम लोबज़िक को नहीं सिखा पाये?"

"ओह, मैं सिखाकर ही छोड़ूंगा। मैं क्यों नहीं सिखा सकता? आओ, अभी से कोशिश करें। लोबज़िक!"

लोबज़िक एकदम लपक कर दौड़ा हुआ आया।

शिशकिन अलमारी से शक्कर का प्याला लाया।

"लोबज़िक," उसने कहा, "अब हम तुम्हें गिनना सिखायेंगे। तुम अच्छे कुत्ते हुए, तो जल्दी से सीख लोगे और तुम्हें खाने को कुछ शक्कर मिलेगी। अगर तुम नहीं सीखते, तो तुम्हें नहीं मिलेगी।"

लोबज़िक ने शक्कर के प्याले की ओर देखा और उसके मुंह में पानी भर आया।

"अभी से मुंह में पानी मत लाओ, पहले कुछ गिनती करो," शिशकिन ने कहा और प्याले में से दस टुकड़े चीनी के निकाल लिये।

"पहले हम दस तक गिनना सीखेंगे और फिर आगे चलेंगे। देखो, लोबज़िक मेरे पास शक्कर की दस डलियां हैं। मैं इन्हें गिनना शुरू करता हूं, और तुम्हें याद रखने की कोशिश करनी चाहिये।"

उसने लोबज़िक के सामने रखे हुए स्टूल पर शक्कर की दस डलियां ज़ोर से गिन-गिन कर: "एक, दो, तीन..." डाल दीं।

"एक साथ पूरी दस डलियां मिलेंगी देखा, लोबज़िक?"

लोबज़िक ने अपनी दुम हिलाई और शक्कर के लिए झपटा।

कोस्त्या ने उसकी नाक पर एक थप्पड़ रसीद किया। "नहीं, तुम्हें नहीं मिलेगी। तुम्हें पहले गिनना सीखना होगा।"

"तुम उससे यह कैसे उम्मीद कर सकते हो कि वह एकदम दस तक गिनना शुरू कर देगा?" मैंने कहा। "इस तरह तो बच्चों तक को भी नहीं सिखाया जाता।"

"तब तो हमें पांच से शुरू करना चाहिये, बल्कि तीन से ही।"

"बिलकुल," मैंने कहा, "तीन से शुरू करो। यह उसके लिए आसान होगा।"

"नहीं, मेरी समझ से दो से शुरू करना बेहतर रहेगा," कोस्त्या बोला। "यह काफ़ी आसान होना चाहिये।"

उसने स्टूल पर दो डलियां छोड़ कर बाकी सब उठा लीं।

"देखो, लोबज़िक। अब यहां शक्कर की सिर्फ़ दो ही डलियां हैं। एक, दो। देखा? अगर मैं एक को उठा लूं, तो एक बाकी बचती है। और अगर मैं फिर दुबारा उसे वहीं रख दूं, तो फिर दो हो जायेंगी। अब, मुझे बताओ कि वहां शक्कर की कितनी डलियां हैं?"



लोबज़िक खड़ा-खड़ा दुम हिलाता रहा, फिर वह ग्रपनी पिछली टांगों पर बैठ गया ग्रौर ग्रपने मुंह से लार गिराने लगा।

"तुम उससे जवाब देने की उम्मीद कैसे कर सकते हो?" मैंने कहा। "कुछ भी कहो, उसने ग्रभी तक इन्सानों की बोली में बात करना तो सीखा नहीं है।"

"उसे इन्सानों की बोली में बोलने की ज़रूरत नहीं। वह सर्कस के कुत्ते की तरह, कुत्तों की ही बोली में बोले। भों-भों, लोबज़िक। देखा? भों-भों! इसके मायने होंगे दो।"

लोबज़िक ने मेरी ग्रोर देखा ग्रौर फिर शिशकिन की ग्रोर, किन्तु वह बोला कुछ नहीं।

"तुम जवाब क्यों नहीं देते?" शिशकिन ने कहा। "क्या तुम्हें ग्रौर शक्कर नहीं चाहिये?"

उत्तर देने के बजाय लोबज़िक शक्कर पर फिर झपटा।

"दूर हट, गन्दे कुत्ते!" शिशकिन चिल्लाया।

लोबज़िक पीछे हट गया, लेकिन मुंह से लार टपकाता रहा।

"चलो ग्राग्रो 'भों-भों' कहो! कहो 'भों-भों'!" हमने उससे ग्रनुनय के स्वर में कहा।

"वह यह नहीं समझता," शिशकिन चिल्लाया। वह बहुत ही परेशान था। "हमें इसे झिंकाना पड़ेगा। मैं जानता हूं! इसके बजाय मैं तुम्हें सिखाऊंगा। इस तरीके से यह जल्दी सीखेगा।"

"मुझे सिखाग्रोगे? इसकी तरह!"

"हां, तुम ग्रपने हाथों ग्रौर घुटनों के बल बैठ जाग्रो। जब यह तुम्हें करते हुए देखेगा, तो वह भी समझ लेगा।"

मैं लोबज़िक की बगल में ग्रपने हाथों ग्रौर घुटनों पर बैठ गया।

"यहां शक्कर की कितनी डलियां हैं?" शिशकिन ने पूछा।

"भों-भों!" मैंने ज़ोर से भोंकते हुए उत्तर दिया।

"ग्रच्छा कुत्ता है!" शिशकिन ने मेरा सिर थपथपाया ग्रौर मेरे मुंह में शक्कर की एक डली धकेल दी।

मैंने, जितनी भी तेज़ ग्रावाज़ में संभव था, शक्कर को ग्रपने दांतों से कुतरा, ताकि लोबज़िक जलने लगे। लोबज़िक ने मुझे देखा ग्रौर उसके मुंह से पानी गिरने लगा।

"देखो, लोबज़िक, ग्रब शक्कर की सिर्फ़ एक डली बची है। 'भों' के मायने हैं एक। देखो? ग्रब मुझे बताग्रो कि यहां कितनी शक्कर है?"

लोबज़िक बेसब्री से गुर्राने लगा ग्रौर ग्रांखें तरेरता हुग्रा ज़मीन पर बार-बार ग्रपनी पूंछ पटकने लगा।

"चलो, जवाब दो!" शिशकिन उसके सिर रहा।

किन्तु लोबज़िक नहीं समझ सका कि उससे ग्राख़िर चाहा क्या जा रहा है।

"तुम बेवकूफ़ कुत्ते हो!" शिशकिन ने कहा ग्रौर मेरी ग्रोर मुड़ा। "इसकी जगह तुम जवाब दो!"

"भों!" मैं भोंका ग्रौर शक्कर की दूसरी डली ले ली।

लोबज़िक केवल ग्रपने मुंह से पानी गिराता हुग्रा गुर्राता रहा।

"मिनट भर में हम इसे सचमुच में गुस्सा कर देंगे," शिशकिन बोला।

उसने शक्कर की एक डली स्टूल पर फिर रखी ग्रौर कहा:

"ग्रब, जो पहले जवाब देगा उसे शक्कर मिलेगी। ग्रब, गिनो!"

"भों!" मैं चिल्लाया।

"यह है ग्रच्छा कुत्ता!" शिशकिन बोला। "ग्रौर तुम, लोबज़िक, बिलकुल गधे हो!"

उसने शक्कर की डली उठाई ग्रौर लोबज़िक को ललचाने के लिए उसे रख दिया, फिर उसने डली उठा कर मेरे मुंह में डाल दी। मैंने पूरी ग्रावाज़ से उसे कुतरा ग्रौर गरीब लोबज़िक के मुंह से लार गिरती रही, वह छींका ग्रौर उसने ग्रपना सिर भेड़ की तरह हिलाया।

"ग्रहा-हा, जलन हो रही है?" शिशकिन प्रसन्न था। "जो भोंकता है उसे शक्कर मिलती है ग्रौर जो नहीं भोंकता, उसे नहीं।"

उसने लोबज़िक के सामने शक्कर की दूसरी डली रखी ग्रौर कहा: "ग्रब गिनो।"

लोबज़िक के मुंह से लार गिरने लगी, उसने ग्रपना सिर हिलाया, उठा ग्रौर फिर बैठकर गुर्राने लगा।

"गिनो, गिनो, वरना तुम्हें शक्कर नहीं मिलेगी!"

लोबज़िक पूरी तेज़ी के साथ उठा, फिर थोड़ा पीछे की ग्रोर हटा तथा ग्रचानक भीषण रूप से भोंका।

"हुर्रा!" शिशकिन चिल्लाया। "वह समझ गया है!" ग्रौर उसने उसकी ग्रोर शक्कर की डली डाल दी।

लोबज़िक ने इसे ऊपर ही ऊपर लपक लिया ग्रौर एकदम निगल गया। "ग्रब, फिर करो!" शिशकिन चिल्लाया।

"भों!" लोबज़िक ने उत्तर दिया।

ग्रौर फिर उसके मुंह में शक्कर की डली उड़ कर जा पहुंची।

"चलो, एक बार ग्रौर!"

"भों!"

"वह समझता है!" शिशकिन ने बेहद ख़ुशी के साथ कहा। "ग्रब हम लोबज़िक को सिखाना फ़ौरन ही शुरू कर देंगे।"

इसी वक्त शिशकिन की माताजी काम से लौटीं।

"शक्कर के प्याले का मेज़ पर क्या हो रहा है?" उन्होंने पूछा।

"मैंने लोबज़िक को सिखाने के लिए थोड़ी सी शक्कर ली थी।"

"यानी तुम्हारी कुछ और बेवकूफ़ियां!"

"लेकिन, माताजी, आप देखें तो सही, यह किस तरह गिनता है। देखिये!"

उसने शक्कर की एक डली लोबज़िक के सामने रखी और कहा:

"लोबज़िक, माताजी को दिखाओ कि तुम किस तरह गिन सकते हो।"

"भों!" लोबज़िक ने कहा।

"बस यही?" माताजी बोलीं।

"और क्या।"

"फिर तो मैं नहीं कह सकती कि इसने कुछ ज़्यादा सीख लिया है।"

"ओह, लेकिन माताजी, कुछ भी हो लोबज़िक इन्सान तो है नहीं। उसने अभी एक तक ही गिनना सीखा है, अब हम उसे दो तक गिनना सिखायेंगे, फिर तीन तक, और इस तरह आपके जानने से पहले ही वह पूरी गिनती सीख जायेगा।"

"फिर तो मुझे शक्कर का प्याला छुपा कर रखना होगा," शिशकिन की माताजी बोलीं।

"लेकिन शक्कर मैं अपने लिए थोड़े ही ले रहा हूं," शिशकिन ने दुखी स्वर में कहा, "यह तो शिक्षा के लिए ली जा रही है।"

उसकी माताजी हंसीं। "शिक्षा? तुम्हारी अपनी शिक्षा का क्या हाल है, नौजवान? तुमने अपनी पढ़ाई कर ली?"

"जी, अभी नहीं, लेकिन मैं एक मिनट में ही शुरू करनेवाला हूं।"

"क्या तुमने वायदा नहीं किया था कि मेरे घर आने से पहले ही तुम अपनी पढ़ाई निबटा दिया करोगे?"

"मैं जानता हूं, माताजी। लेकिन लोबज़िक की वजह से मैं आज ज़रा भूल गया था।"

"अच्छी बात है, ख़याल रखना कि आगे न भूलो, वरना मैं शक्कर का प्याला छुपा कर रख दूंगी।"

कोस्त्या और मैं अपनी पढ़ाई करने बैठ गये, क्योंकि उसे तो यह भी नहीं मालूम था कि स्कूल में काम क्या क्या दिया गया है।

अगले दिन, ज्योंही मैं स्कूल से लौटा, हम फिर लोबज़िक को सिखाने में लग गये।

"उसके लिए शक्कर की डलियां गिनना ही काफ़ी नहीं है," कोस्त्या बोला। "उसे अंक भी सीखने चाहिए।"

हमने गत्ते का टुकड़ा लिया, उसपर "१" का अंक बनाया और लोबज़िक को दिखाया।

"देखो, लोबज़िक, यह एक का अंक है। यह वैसा ही है जैसे शक्कर की एक डली," शिशकिन ने उसे समझाया। "अब मुझे बताओ, यह कौन सा अंक है?"

"भों!" लोबज़िक ने उत्तर दिया।

"मेरा अच्छा कुत्ता! इसने कितनी जल्दी सीखा है, नहीं क्या?" शिशकिन प्रसन्न था। "अब, दूसरा अंक है दो।"

उसने लोबज़िक के सामने शक्कर की दो डलियां रख दीं।

"गिनो!"

"भों!" लोबज़िक भोंका।

"नहीं, यहां दो डलियां हैं, एक नहीं। अब फिर सोचो।"

"भों!" लोबज़िक फिर भोंका।

"'भों' तेरा सिर!" कोस्त्या ने उसकी नक़ल की। "तुम 'भों' क्यों कहते हो, जब तुम अच्छी तरह जानते हो कि यह 'भों-भों' होना चाहिये। तुम्हारा दिमाग़ शलजम की तरह ठोस है!"

"भों!" लोबज़िक भोंका।

"उल्लू कहीं का!" कोस्त्या चिल्लाया। "तुम्हें दिखाई नहीं देता कि वहां कितनी डलियां पड़ी हैं?"

लोबज़िक डर से पीछे हट गया।

"तुम्हें चिल्लाना नहीं चाहिये," मैंने कहा, "कुत्तों के साथ तुम्हारा व्यवहार नम्र होना चाहिये, वरना वे डरने लगेंगे और फिर तुम उन्हें कुछ भी नहीं सिखा सकोगे।"

शिशकिन ने अपनी आवाज़ हल्की की और लोबज़िक को एक और दो का अन्तर समझाने लगा।

"अब गिनो!" उसने आज्ञा दी।

"भों!"

"दुबारा भोंको!" मैंने इशारे से उसे 'भों' करके बताया।

लोबज़िक ने तिरछी निगाह से मेरी ओर देखा। जितना मैं कर सकता था, मैंने गर्दन हिलाई और आंख मिचकाई और भयग्रस्त सा वह भोंका।

"यह है–दो!" शिशकिन चिल्लाया और उसके सामने शक्कर की एक डली फेंकी। "चलो, अब फिर कोशिश करें।"

किन्तु लोबज़िक एक ही बार भोंका।

"दुबारा भोंको! भोंको दुबारा!" मैंने पहले ही की तरह फुसफुसा कर कहा।

"तुम इसे इशारा मत दो," शिशकिन बोला। "उसे अपने आप सीखने दो। चलो, लोबज़िक!"

लोबज़िक दुबारा भोंका।

"यह ठीक है!" शिशकिन बोला। "लेकिन तुम्हें एक साथ दो बार भोंकना चाहिये।"

उसने उससे दुबारा करवाया। लोबज़िक फिर एक ही बार भोंका, किन्तु जब उसने देखा कि हम किसी बात की और प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो दूसरी बार फिर भोंका। धीरे धीरे हम

उससे लगातार दो बार भुंकवा लेने में सफल हो गये और इसी प्रकार सिलसिला चलता रहा। उस दिन हर चीज़ ठीक प्रकार होती रही, किन्तु जब अगले दिन हमने शुरू किया, तो हमें मालूम हुआ उसके दिमाग़ में हर चीज़ गड़बड़ा गई है। जब हमने उसे तीन का अंक दिखलाया, तो वह चार अथवा इससे भी अधिक बार भोंका। जब हमने दस का अंक दिखाया तो वह दो बार भोंका, और इसी प्रकार की बहुत सी मूर्खतापूर्ण हरकतें करता रहा। कोस्त्या को बहुत गुस्सा आया और वह उस पर चिल्लाया। उसने यह समझ लिया था कि लोबज़िक यह सब जानबूझ कर कर रहा है। कभी-कभी लोबज़िक ने सही उत्तर दिया, बहुत हद तक यह इत्तफ़ाक ही था, किन्तु कोस्त्या को विश्वास था कि यह इत्तफ़ाक नहीं था।

"देखा, इस बार इसने ठीक उत्तर दिया है। इसके मायने हैं कि यह अंक पहचानता है, लेकिन अगर तुम इससे अगली बार पूछोगे, तो ग़लत जवाब देगा।"

उसके ख़याल में लोबज़िक गिनना सीखने से थक चुका था और वह इस आशा से जानबूझ कर ग़लत उत्तर दे रहा था कि हम यह धन्धा छोड़ देंगे। उदाहरणार्थ, कोस्त्या ने उसे पांच का अंक दिखाया और लोबज़िक ने उसे चार बताया।

"यह चार नहीं है, लोबज़िक, दुबारा देखो," कोस्त्या ने नम्रतापूर्वक कहा। लोबज़िक फिर चार बार भोंका।

"अब बेवकूफ़ मत बनो, लोबज़िक, तुम अच्छी तरह जानते हो कि यह चार नहीं है," कोस्त्या ने उसकी चापलूसी करते हुए कहा।

"चार," लोबज़िक ने फिर कहा।

"गधा!" उसका पारा चढ़ रहा था। "फिर सोच ले। मैं तुझे एक मौका और दूंगा।"

"चार," लोबज़िक ने उत्तर दिया।

"तेरी नाक पर चार घूंसे लगेंगे, अगर होशियारी से जवाब नहीं दिया!" कोस्त्या चिल्लाया। "ज़रा अब के कह कर देख, फिर तुझे मज़ा चखाऊंगा!"

"भों, भों, भों, भों!"

कोस्त्या भभका "ओ नीच, चालाक कुत्ते!" वह चीख़ा। "तू मुझे पागल बना कर छोड़ेगा!" उसने लिखा हुआ "४" का अंक उठाया और उसकी नाक के नीचे धकेल दिया।

"अच्छा। यह कौन सा अंक है?"

"भों, भों, भों, भों, भों," लोबज़िक ने उत्तर दिया।

"ज़रा इसे देखना तो!" कोस्त्या चिल्लाया। "जब तुम इसे पांच दिखाओगे तो यह चार कहेगा और जब इसे चार दिखाओगे, तो यह मज़े के साथ खड़ा हुआ पांच बताता रहेगा! इस पर तुम कहते हो कि यह जानबूझकर नहीं कर रहा है। मैं जानता हूं यह इतनी बदमाशी क्यों कर रहा है। सुबह बेध्यानी में मेरा पांव इसके पंजे पर पड़ गया था और अब यह मुझसे उसका बदला ले रहा है।"

मैं नहीं कह सकता कि वह लोबज़िक के बारे में क्या सोचता था, लेकिन यह साफ़ था कि हमारा प्रशिक्षण बेकार सिद्ध हुआ था। संभव है, हम यह ठीक ढंग से न कर रहे हों, या हो सकता है कि लोबज़िक का दिमाग़ गणित में बिलकुल चलता ही न हो।

"क्या यह ठीक नहीं होगा कि तुम अपनी माताजी के सामने कबूल लो और फिर स्कूल जाने लगो?" मैंने सलाह दी।

"नहीं, नहीं! अब मैं यह नहीं कर सकता। इतने दिन तक स्कूल से ग़ैरहाज़िर रहने के बाद तो यह हो ही नहीं सकता। मैं नहीं कह सकता कि यह सब मालूम होने पर माताजी की क्या हालत होगी। यह कोई ऐसी बात तो है नहीं कि मैं एक दिन ही स्कूल न गया हूं। यह मज़ाक नहीं है!"

"मान लो कि अगर तुम ओल्गा निकोलायेव्ना से सब बता कर उनकी राय लो?"

"नहीं, ओल्गा निकोलायेव्ना से कहते हुए मुझे बहुत ही शर्म लगती है।"

"तुम्हें शर्म लगती है, तो मैं उनसे इस बारे में बातचीत करूं?"

"तुम? मुझे अकेले छोड़ कर भाग जाना चाहते हो? खूब दोस्त निकले!"

"यह किसने कहा कि मैं तुम्हें छोड़ भागना चाहता हूं? मेरा मतलब यह बिलकुल नहीं था। यह तो तुमने ख़ुद कहा था कि तुम्हें इस मामले पर बातचीत करते हुए शर्म लगती है, इसलिए मैंने सोचा कि मैं तुम्हारी मदद कर दूं।"

"मूर्खराज! अगर तुम कहोगे, तो मुझे दस गुना शर्मिन्दा होना पड़ेगा। अगर तुम कोई अच्छी सलाह नहीं दे सकते, तो तुम्हें ख़ामोश रहना चाहिये।"

"लेकिन अब किया क्या जाये?" मैंने कहा। "लोबज़िक असफल रहा। तुम्हें सर्कस में काम मिल नहीं सकता। क्या तुम अब भी यह सोचते हो कि तुम उसे सिखा सकोगे?"

"नहीं, मेरे विचार में इससे कोई फ़ायदा नहीं। अगर तुम मुझसे पूछो, यह लोबज़िक या तो ज़बरदस्त धोखेबाज़ है या बिलकुल मूर्ख। तुम इससे कुछ आशा नहीं कर सकते। मैं दूसरा कुत्ता लाऊंगा। या फिर यह अच्छा रहेगा कि मैं एक कसरती कलाबाज़ बन जाऊं।"

"तुम कसरती कलाबाज़ बनने की आशा क्योंकर करते हो?"

"मैं कलाबाज़ियां खाऊंगा और अपने हाथों के बल चलूंगा। मैंने इसका अभ्यास किया है और मैं कुछ बहुत बुरा भी नहीं करता, सिवाय इसके कि मैं अपने हाथों पर काफ़ी देर तक खड़ा नहीं रह सकता। मुझे कोई ऐसा तलाश करना पड़ेगा, जो शुरू में मेरी टांगें पकड़े रहे, जबतक कि मुझे इसका अभ्यास न हो जाये। तुम मेरी टांगें पकड़ो और मैं एक बार करके देखूं।"

वह अपने हाथों और पांवों के बल नीचे झुक गया, और जब वह अपने पंजों के बल कमरे में चला, तब मैं उसकी टांगों को ऊपर पकड़े रहा, किन्तु जल्दी ही उसके बाजू थक कर जवाब दे गये, वह गिर पड़ा और उसका सिर फ़र्श से जा टकराया।

"यह ठीक है," उसने कहा और अपने माथे की चोट को सहलाते हुए उठ खड़ा हुआ। "धीरे धीरे मेरे बाज़ू मज़बूत हो जायेंगे, और तब मैं अपने-आप चलने लायक़ हो जाऊंगा।"

"कसरती कलाबाज़ी सीखने में बहुत समय लगता है," मैंने कहा।

"कोई हर्ज नहीं। जल्दी ही सरदियों की छुट्टियां होने वाली हैं। तब तक मैं किसी न किसी तरह सीखने का इंतज़ाम कर ही लूंगा।"

"लेकिन इसके बाद तुम क्या करोगे? यह छुट्टियां तो चुटकियों में गुज़र जायेंगी।"

"फिर क्या हुआ, इसके बाद गर्मियों की छुट्टियां होंगी।"

"काफ़ी लम्बे समय के बाद।"

"अरे, वह सब ठीक है।"

विलक्षण प्राणी है, शिशकिन! यही उत्तर था जो उसकी हर बात के लिए दिया जा सकता था। उसे किसी बात के पूरा हो जाने की कल्पना किए, बस केवल वह बात उसके दिमाग़ में आने भर की ज़रूरत थी। परन्तु मैं जानता था, यह सब कुछ नहीं, कोरी बातें हैं और कुछ दिन बाद वह कोई और बात सोचने लगेगा।

चौदहवाँ अध्याय



कोस्त्या की माताजी तथा चाची को बिलकुल पता नहीं था कि वह स्कूल नहीं जा रहा है। उसकी माताजी काम से घर आते ही उसकी कापियों को देखतीं, लेकिन तब तक कोस्त्या अपना काम किये रहता, क्योंकि मैं रोज़ उसके यहां जाता था और हमें जो काम स्कूल में घर पर करने के लिए मिलता, उसे बता देता था। माताजी को मालूम न हो जाये, इस डर से वह अपनी पढ़ाई अपने स्कूल जाने के दौरान की पढ़ाई की अपेक्षा अधिक नियमित रूप से करने लगा था। हर सुबह वह अपना बस्ता उठा कर घर से चल देता, किन्तु स्कूल जाने के बजाय वह तमाम शहर में चक्कर लगाता रहता। वह घर पर नहीं रहता था, क्योंकि ज़ीना चाची दोपहर ढलने से पहले अपने नाट्य-स्कूल नहीं जाती थीं। परन्तु गली में रहना भी सुरक्षित नहीं था। एक दिन वह हमारी अंग्रेज़ी की अध्यापिका से टकराते-टकराते बचा, और वह तेज़ी के साथ बराबर वाली गली में घुस गया, इसलिए वह उसे न देख पाईं। दूसरी बार उसने गली में एक पड़ोसिन को देखा और वह अत्यन्त समीप वाले मकान की दहलीज़ में झट से सरक गया, जब तक कि वह चली न गई। इसका परिणाम यह हुआ कि वह गलियों में फिरने से डरने लगा था, इसलिए वह अपने आस-पड़ोस से जितनी अधिक दूर जा सकता था, चला जाता, ताकि उसका सामना किसी ऐसे व्यक्ति से न हो जाये, जो उसे जानता हो। इसी तरह वह कल्पना करता कि तमाम राहगीर उसकी ओर घूर रहे हैं, जैसे वे यह जानते हों कि वह स्कूल से भाग कर खेल रहा है। उस समय पाला ज़ोरों से पड़ रहा था और बाहर देर तक ठहरने पर बहुत ठंड लगना शुरू हो गई थी, इसलिए गर्मी के लिए वह कभी कभी किसी दूकान की शरण ले लेता और फिर चल देता।

मुझे इस तमाम स्थिति से बहुत परेशानी होने लगी और मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं। मैं एक मिनट के लिए भी शिशकिन को अपने दिमाग़ से नहीं हटा पा रहा था। मेरे डेस्क की बराबर वाली खाली जगह मुझे हर वक्त उसका ध्यान दिलाती रहती



थी। जब हम अपनी कक्षा के गर्म कमरे में बैठे होते, उसका चोरों की तरह लोगों से अपने आपको बचाते हुए, अकेले तमाम शहर में घूमते-फिरते रहने अथवा गर्मी प्राप्त करने के लिए दूकानों में जाने की बात मेरे दिमाग़ में उभर आती। मैं उसके बारे में इतना अधिक सोचता रहता कि मैं अपनी पढ़ाई पर बाक़ायदा ध्यान नहीं दे पा रहा था। घर पर भी वह हर समय मेरे दिमाग़ पर छाया रहता। मैं सो नहीं पाता था, क्योंकि तमाम क़िस्म की बातें सोचता रहता और उसके लिए कोई रास्ता निकालने की माथापच्ची करता रहता था। यदि मैं ओल्गा निकोलायेव्ना से कहता, तो वह उसे फ़ौरन पकड़ कर स्कूल वापस ले आतीं, किन्तु मुझे डर था कि अगर मैंने ऐसा किया, तो सभी मुझे चुगलखोर समझेंगे। परन्तु मैं इस सम्बन्ध में किसी से बातचीत करने के लिए इतना बेचैन था कि मैंने लीका से कह डालने का फ़ैसला कर लिया।

"सुनो, लीका," मैंने कहा, "क्या तुम्हारी क्लास में लड़कियां एक दूसरे की शिकायत करती हैं?"

"एक दूसरे के बारे में शिकायत करती हैं? तुम्हारा मतलब क्या है?"

"अच्छा, अगर कोई लड़की ऐसी कोई हरकत करती है, जो उसे नहीं करनी चाहिये, तो क्या दूसरी लड़कियों में से कोई भी इस बारे में अध्यापिका से कहती है? क्या कभी ऐसी कोई बात तुम्हारी कक्षा में हुई है?"

"हां," लीका बोली। "एक दिन पेत्रोवा ने खिड़की की चबूतरी पर रखा फूलों का गमला तोड़ दिया। अन्तोनिना इवानोव्ना ने समझा कि सिदोरोवा ने तोड़ा है और इसलिए वह उसे सज़ा देनेवाली थीं। लेकिन मैंने पेत्रोवा को तोड़ते देखा था, इसलिए मैंने बता दिया।"

"तुमने बता दिया? मैंने कभी नहीं सोचा था कि हमारे घर में एक चुगलखोर भी है!"

"मैं चुगली थोड़े ही कर रही थी। मैं तो सिर्फ़ सच बात बता रही थी। अगर मैं कुछ न कहती, तो अन्तोनिना इवानोव्ना सिदोरोवा को सज़ा दे देतीं, जब उसका कोई कसूर नहीं था।"

"कुछ भी कहो, थी यह चुग़लख़ोरी ही," मैंने कहा। "हमारी क्लास में कोई किसी की शिकायत नहीं करता।"

"तो मेरा ख़याल है तुम लोग अपने दोष एक दूसरे पर मढ़ते होगे।"

"कैसे दोष?"

"अच्छा मान लो, क्लास का फूलदान तुमने तोड़ा हो और अध्यापिका इसे तोड़ने के अपराध में किसी और को सज़ा दे..."

"हमारी कक्षा में फूलों का नहीं, नागफनी का गमला है।"

"उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मान लो, तुमने नागफनी का गमला तोड़ा और तुम्हारी अध्यापिका ने यह अपराध शिशकिन पर लगा दिया। अगर तुम क़बूल नहीं करते, और कोई दूसरा भी कुछ नहीं कहता, तो शिशकिन को यह अपराध अपने सिर पर लेना होगा।"

"ठीक है, पर शिशकिन के मुंह में भी तो ज़बान है, या नहीं? वह कहेगा कि उसने ऐसा नहीं किया और मामला वहीं ख़त्म हो जायेगा।"

"इतने पर भी उसको शक की नज़र से देखा ही जायेगा।"

"इससे क्या होता है? जब उसने किया ही नहीं तो यह साबित ही कौन कर सकता है कि उसने किया? भला, कर सकते हैं?"

"हम अपने स्कूल में ऐसी बातें नहीं करते," लीका बोली। "हम बेकार में ही किसी पर शक क्यों होने दें? अगर तुम कोई काम ग़लत करते हो, तो तुम्हें ख़ुद इसे मान लेना चाहिये, अगर तुम ऐसा नहीं करते, किसी दूसरे को हक़ है कि वह सच बात कह दे।"

"तुम्हारे यहां सब की सब चुग़लखोर भरी हुई हैं।"

"हमारे में कोई ऐसा नहीं है। तुम्हारे ख़याल से पेत्रोवा ने ईमानदारी बरती? अन्तोनिना इवानोव्ना उसकी करनी पर किसी और लड़की को सज़ा दे रही थीं। लेकिन वह चुपचाप बैठी रही और कुछ नहीं बोली। वह इस बात से खुश थी कि उसकी जान बच गई। मैं कुछ न कहती, तो मैं भी उतनी ही कसूरवार होती, जितनी वह थी। क्या यह अच्छी बात होती?"

"यह तो एक ख़ास मौक़े की बात हुई," मैंने कहा। "लेकिन मान लो, एक लड़की बिना घरवालों को बताये स्कूल से ग़ैरहाज़िर रहे। क्या ऐसी कोई बात तुम्हारे यहां हुई है?"

"नहीं।"

"ज़रूर," मैंने कहा, "तुम लड़कियां भला ऐसा बुरा काम किस तरह कर सकती हो? तुम सब तो बहुत ही अच्छी लड़कियां ठहरीं न।"

"कुछ कहो," लीका बोली, "हमारी कक्षा है बहुत अच्छी। लेकिन तुम यह सब क्यों पूछते हो? क्या ऐसी कोई बात तुम्हारे स्कूल में हो गई है?"

"नहीं," मैं बोला, "कभी नहीं।"

"फिर तुमने पूछा क्यों?"

"अरे, यों ही, ज़रा जानना चाहता था।"

इसके बाद मैंने लीका से इस सम्बन्ध में कोई बात नहीं की, किन्तु शिशकिन के बारे में मेरा सोचना बन्द नहीं हुआ। मैं माताजी की सलाह लेने के लिए अत्यन्त उत्सुक था, किन्तु मुझे डर था कि वह यह सूचना स्कूल को दे देंगी, और फिर मामला बिगड़ जायेगा। माताजी ने भांप लिया कि मैं कुछ परेशान हूं। वह कभी-कभी मेरी ओर कुछ ऐसी नज़रों से देखतीं, जैसे वह जानती हों कि मुझे उनसे कुछ कहना है। जब भी मैं उनसे कोई बात कहना चाहता हूं, माताजी तुरन्त ताड़ जाती हैं। किन्तु वह कभी नहीं पूछतीं—पहले मैं बोलूं, इस बात की

प्रतीक्षा करती रहती हैं। जब कोई बात हो जाती है, तो वह कहती हैं कि मेरे लिये अच्छा तो यही है कि बजाय इसके कि मुझे बताने के लिए मजबूर कर दिया जाये, मैं स्वयं ही स्वीकार कर लूं। भगवान ही जाने, वह कैसे अनुमान लगा लेती हैं, यह मेरी तो समझ से बाहर की बात है। मेरे ख़याल से मेरा चेहरा ही कुछ इस प्रकार का है, जो लोगों को बता देता है कि मेरे दिमाग़ में क्या चल रहा है। उस दिन मैं बैठा हुआ कभी-कभी उनकी ओर देखता हुआ, यह निश्चय करने की उधेड़बुन में था कि उन्हें बताया जाये या नहीं। माताजी भी मुझे देखती रहीं, मानो वह मेरे बोलने का इन्तज़ार कर रही हों। हम दोनों काफ़ी देर चुप रहे, मैंने पुस्तक पढ़ने का बहाना किया और उन्होंने सिलाई का। यदि मैं शिशकिन के बारे में परेशान नहीं होता, तो यह काफ़ी अजीब सा लगता। अन्त में माताजी से अधिक न रहा गया, और वह हंसी।

"अच्छा, अब बताओ बात क्या है!"

"बताऊं, क्या बताऊं?" मैंने पूछा, यह दिखाते हुए, जैसे उन्होंने जो कुछ कहा है, मैं उसका अर्थ ही नहीं समझा हूं।

"तुम्हारे दिमाग़ में क्या है?"

"मेरे दिमाग़ में? कुछ ख़ास नहीं।" मैंने निकलने की कोशिश की, किन्तु मैंने अनुभव किया कि मैं एक मिनट में ही हर बात, बिना सोचे-समझे उगलने ही वाला था, साथ ही मुझे ख़ुशी थी कि माताजी पहले बोलीं, क्योंकि इससे मामले में हमेशा आसानी हो जाती है।

"जैसे कि मैं यह देख नहीं सकती कि तुम मुझे कुछ बताने के लिए बेचैन हो रहे हो! तुम तीन दिन से मुंह लटकाये घूम रहे हो और सोच रहे हो कि किसी ने महसूस ही नहीं किया। अब तो बताओ, आख़िर बात क्या है। आख़िर तुम्हें बताना ही पड़ेगा, यह तुम जानते ही हो। क्या बात है? क्या स्कूल में कोई गड़बड़ हो गई है?"

"नहीं, स्कूल में नहीं," मैंने कहा। "हां, स्कूल में ही।"

"तुम्हें दुबारा तो २ नम्बर नहीं मिले?"

"जी नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।"

"तब फिर कौन सी बात है?"

"बात मेरे बारे में नहीं है। मेरे साथ कोई बात नहीं है।"

"तब बात किस के बारे में है?"

"वह... वह है शिशकिन।"

"और शिशकिन के साथ क्या गड़बड़ है?"

"वह पढ़ना नहीं चाहता।"

"वह पढ़ना नहीं चाहता? ऐसा क्यों?"

"बस यही कि उसकी इच्छा नहीं है, और क्या!"

मैंने सोचा था कि मैंने काफ़ी अधिक बता दिया है। "अरे, यह मैंने क्या कर डाला?" मैंने सोचा। "मान लो, माताजी कल स्कूल जा कर अध्यापिका से कह दें तो?"

"तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि वह अपनी पढ़ाई नहीं करता?" माताजी ने पूछा। "उसे कम नम्बर मिलते हैं?"

शुक्र है! वह मेरा आशय नहीं पकड़ पाई।

"जी हां, वह अपनी पढ़ाई नहीं करता। उसे रूसी में २ नम्बर मिले हैं। वह रूसी पर बिलकुल भी मेहनत नहीं करना चाहता। वह इसमें तीसरी कक्षा से ही कमज़ोर रहा है

"फिर वह चौथी में कैसे चढ़ गया?"

"मुझे मालूम नहीं। वह इसी साल दूसरे स्कूल से हमारे यहां आया है।

"तुम्हारी अध्यापिका को उस पर ज़्यादा ध्यान देना चाहिये। उसे इस तरह पीछे नहीं रहने देना चाहिये।"

"हां, लेकिन वह बहुत तेज़ है। वह अपना घर का काम दूसरे लड़कों की कापियों से नक़ल कर लेता है, और जब कभी हमें इमला अथवा निबन्ध लिखवाये जाते हैं, उस दिन वह स्कूल ही नहीं आता।"

"तुम्हें उसे संभालना चाहिये। मैं देख रही हूं कि तुम उसके बारे में बहुत परेशान रहते हो। तुम उसकी मदद क्यों नहीं करते?"

"मैं उसकी मदद कैसे कर सकता हूं, जब वह ख़ुद कुछ करना ही नहीं चाहता?"

"तुम्हें उसे महसूस कराना चाहिये कि बाक़ायदा पढ़ाई-लिखाई करना कितना ज़रूरी है। कोशिश करके उस पर असर डालो। तुम ख़ुद तो संभल गये, लेकिन उसे मदद की दरकार है। यदि उसे मदद देने के लिए कोई अच्छा मित्र मिल जाये, तो वह ठीक हो जायेगा।"

"क्या मैं अच्छा मित्र नहीं हूं?"

"मेरे ख़याल से तुम हो, क्योंकि उसके बारे में परेशान हो।"

माताजी को पूरी तरह सच बात न बताने के कारण मुझे अपने प्रति इतनी ग्लानि का अनुभव हुआ कि मैंने कोट पहना और पूरे मसले को बाक़ायदा साफ़ करने के लिए शिशकिन के यहां चल दिया।

अजीब बात यह थी कि शिशकिन और मैं इतने गहरे मित्र कभी नहीं रहे थे, जितने अब हो गये थे। मैं तमाम दिन उसके विषय में सोचता था, और वह भी मुझे बहुत ही प्यार करने लगा था। वह अपने स्कूल के साथियों से बिलकुल अलग पड़ा था, और उसके कथनानुसार अब मेरे अतिरिक्त उसका कोई नहीं था।

जब मैं वहां पहुंचा, कोस्त्या अपनी माताजी और ज़ीना चाची के साथ बैठा चाय पी रहा था। मेज़ पर रखा बड़ा नीला लेम्प-शेड, कमरे में गोधूलि बेला का आभास दे रहा था, जैसा गर्मियों में सन्ध्या काल में तब होता है, जब सूर्य डूब जाता है, किन्तु फिर भी पूरी तरह अंधकार नहीं होता। वे सब मुझे देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने मुझे बैठाया

और रोल के साथ चाय पीने के लिए दी। कोस्त्या की माताजी तथा ज़ीना चाची ने मेरे माता-पिता की कुशलता पूछी। उन्होंने पूछा कि मेरे पिताजी कहां और क्या काम करते हैं। कोस्त्या सुनता रहा और ख़ामोश रहा। उसने अपना रोल बीच में से तोड़ा, आधा हिस्सा उसकी चाय में गिर पड़ा। धीरे धीरे वह टुकड़ा चाय में फूलता रहा, यहां तक कि उससे पूरा गिलास ही भर गया। किन्तु ऐसा नहीं मालूम हुआ कि कोस्त्या को इसका ज्ञान हो।

"जागो, कोस्त्या!" उसकी माताजी ने मुस्कराते हुए कहा।

कोस्त्या कहने लगा, "मैं अपने पिताजी के बारे में सोच रहा था। माताजी, मुझे उनके बारे में कुछ बताइये।"

"अब और क्या बताऊंगी? सब कुछ पहले ही तो बता चुकी हूं।"

"अच्छा, फिर बताइये।"

"यह अपने पिताजी के बारे में सुनने से कभी नहीं अघाता। हालांकि इसे उनकी बिलकुल भी याद नहीं है," ज़ीना चाची ने कहा।

"मुझे याद है," कोस्त्या बोला।

"तुम्हें याद कैसे हो सकती है? जब वह मोर्चे पर गये थे, तुम तब गोद में थे। उस समय हुई लड़ाई ही थी।"

"फिर भी मुझे उनकी याद है," शिशकिन ने दृढ़तापूर्वक कहा। "मुझे याद है, मैं खाट पर लेटा हुआ था, पिताजी आये थे और उन्होंने मुझे अपने हाथों से उठा कर चूमा था।"

"तुम्हें यह सब याद रह ही नहीं सकता," ज़ीना चाची बोलीं। "उस वक़्त तुम सिर्फ़ तीन सप्ताह के थे।"

"लेकिन जब पिताजी छुट्टी पर आये थे, तब मैं एक साल से ज़्यादा का था।"

"हां, लेकिन तब तो वह सिर्फ़ एक मिनट के लिए ही आये थे, जब उनकी टुकड़ी उधर से गुज़र रही थी। तुम्हारी मां ने तुम्हें इस बारे में बताया होगा और तुम समझते हो कि तुम्हें याद है।"

"नहीं, मुझे ख़ुद याद है," कोस्त्या ने आग्रहपूर्वक कहा। "मैं सोया हुआ था, और जब पिताजी ने मुझे उठाकर चूमा, तो मैं जाग उठा था। मुझे याद है कि उनका फ़ौजी कोट कितना खुरदुरा और चुभने वाला था। फिर वह चले गये, और इसके बाद मुझे कुछ याद नहीं।"

"इतनी छोटी उम्र का बच्चा याद नहीं रख सकता," ज़ीना चाची बोलीं।

"लेकिन मुझे याद है," कोस्त्या ने ज़िद्द की, इस वक्त तक उसकी आंखों में आंसू छलक उठे थे, "माताजी, क्या मुझे याद नहीं है? देखो, माताजी ही बतायेंगी।"

"हां, हां, मेरे प्यारे बेटे, बिलकुल याद है," माताजी ने उसे पुचकारते हुए कहा। "जब तुम्हें यहां तक याद है कि उनका कोट चुभने वाला था, तो इससे यह साबित हो जाता है।"

"जी हां, बिलकुल," शिशकिन बोला। "कोट बहुत ही चुभने वाला था। मुझे बहुत

अच्छी तरह याद है, और मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा, क्योंकि वह मेरे पिताजी का था और वह लड़ाई में मारे गये थे।"

उस शाम शिशकिन असाधारणतः शान्त रहा। उसकी मनःस्थिति इतनी अजीब थी कि मैंने उससे बातचीत करने की, जैसा कि मैंने सोचा था, कोशिश तक नहीं की और शीघ्र ही घर लौट आया।

मैं रात को देर तक जागता रहा और शिशकिन के विषय में सोचता रहा। मैंने सोचा, यह कितना अच्छा होता कि वह स्कूल में ठीक प्रकार चल रहा होता, तो उसके जीवन में इस प्रकार की कोई भी घटना न घटी होती। मैं भी काफ़ी निकम्मा सिद्ध हुआ था, लेकिन मैंने अपने आपको संभाल लिया और अब मैं ठीक तरह से चल रहा था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि शिशकिन की अपेक्षा मेरे लिए यह ज़्यादा आसान था; कुछ भी हो, मेरे पिताजी मौजूद थे। मैं हमेशा उनका अनुकरण करने का प्रयत्न करता हूं। मैं उनके काम करने के ढंग का प्रशंसक हूं और मैं उनकी तरह ही बनना चाहता हूं। किन्तु बेचारे शिशकिन के पिताजी नहीं हैं। उसके पिता युद्ध में मारे गये थे, जब वह गोद का बच्चा ही था। मैं कोस्त्या की सहायता करने के लिए अत्यन्त इच्छुक था और सोचता था कि यदि मैंने ठीक ढंग से उसके साथ अध्ययन करने का प्रयत्न किया, तो संभव है उसकी रूसी सुधर जाये और फिर सारा सिलसिला ठीक हो जायेगा। मैंने उसके साथ रोज़ाना मेहनत करने की सोची, किन्तु फिर मुझे ध्यान आया कि जब तक वह स्कूल से अनुपस्थित रहता है, तब तक उसके साथ अध्ययन करने की बात सोचना बेकार है। मैंने कोई ऐसा रास्ता सोचने का प्रयत्न किया, जिससे उसे समझा-बुझाकर स्कूल वापस आने के लिए तैयार किया जा सके, किन्तु मैंने देखा कि उसे समझाने-बुझाने से कोई लाभ नहीं, क्योंकि कोस्त्या में इच्छा-शक्ति का अभाव था और वह इतनी देर हो जाने पर अपनी माताजी के सामने सब कुछ स्वीकार करने के लिए पर्याप्त साहस नहीं जुटा सकता था। मैंने देखा कि मुझे उसके साथ बहुत सख़्त होना पड़ेगा। अगले दिन मैंने स्कूल से लौटने पर उससे जाकर मिलने और गम्भीरतापूर्वक बात करने का निश्चय किया। यदि उसने स्वयं माताजी के सामने सच-सच बताने और स्कूल वापस आने से इनकार किया, तो मैं उससे कह दूंगा कि अब मैं ओल्गा निकोलायेव्ना के आगे और अधिक झूठ बोलने और उसे बचाने के लिए तैयार नहीं हूं, क्योंकि इससे उसे हानि ही पहुंच रही है। यदि उसने इसमें अपनी भलाई मानने से इनकार किया, तब फिर कोई दूसरा चारा ही नहीं रहता। भले ही वह मुझसे लड़े-झगड़े, मैं सब सह लूंगा, क्योंकि बाद में वह स्वयं समझ जायेगा कि मेरे लिए इसके अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं था, और फिर मेरे साथ सुलह कर लेगा। ज्यों ही मैं इस निर्णय पर पहुंचा, मैं अपने मन में पहले की अपेक्षा काफ़ी अच्छा अनुभव करने लगा, साथ ही मुझे अपने ऊपर बहुत ग्लानि भी हो रही थी कि इतने दिनों तक मैंने माताजी से इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा। मैं उसी क्षण जाकर उन्हें बताने के लिए उत्सुक हो उठा, किन्तु अब काफ़ी देर हो चुकी थी और सभी गहरी नींद में सो रहे थे।



पंद्रहवाँ अध्याय

अगले दिन, मेरी योजना के प्रतिकूल, सारी स्थिति ही बदल गई। मैंने सोचा था कि स्कूल के बाद शिशकिन के यहां जाऊंगा और उससे अन्तिम बार गम्भीरतापूर्वक बात करूंगा। किन्तु क्योंकि मैं स्कूल में हरेक से यही कहता रहा था कि शिशकिन बीमार है, इसलिए हमारे तमाम ग्रुप ने उससे मिलने जाने का फ़ैसला किया था। जैसे ही छुट्टी हुई, मैं फ़ौरन शिशकिन को यह सूचना देने के लिए ताबड़तोड़ भागा। मैं भागते हुए उसके यहां पहुंचा और उसे बहुत खुश पाया।

"जानते हो, वीत्या?" वह बोला। "मैं अपने हाथों के बल खड़ा हो सकता हूं! तुम दीवार के पास खड़े हो जाओ। दीवार तुम्हारे पांवों को गिरने से रोके रहेगी।"

"यह तुम्हारे हाथों के बल खड़े रहने का वक़्त नहीं है," मैंने कहा। "फ़ौरन ही जाकर बिस्तर पर लेट जाओ।"

"किस लिये?"

"तुम बीमार हो, है न?"

"बीमार?"

"हां, यही तो मैं स्कूल में हरेक से कहता रहा हूं। तुमने ख़ुद ही तो मुझसे यह कहने के लिए कहा था।"

"फिर बात क्या है?"

"फिर यही कि अब लड़के तुम्हें देखने के लिए आ रहे हैं।"

"क्या!" अगले ही क्षण वह कपड़े और साथ ही जूते पहने-पहने ही उछल कर बिछौने में घुस गया।

"उनके आने पर मैं उनसे क्या कहूंगा?" उसने पूछा।

"मुझे क्या मालूम! कहना बीमार हो। इसके अलावा कहने को और है ही क्या!"

जल्दी ही लड़के आ पहुंचे। उन्होंने गलियारे में अपने अपने कोट उतारे और कमरे में घुस आये। शिशकिन ने कम्बल अपनी ठोड़ी तक खींच लिया और उनकी ओर कष्टपूर्ण दृष्टि से देखा।

"अरे शिशकिन, कहो यार, कैसी तबीयत है?" लड़कों ने आते ही पूछा।

"कैसे हो तुम लोग!" उसने इतनी मरी हुई आवाज़ में उत्तर दिया कि आप शायद ही सुन पाते। कोई भी यह समझ सकता था कि वह बीमार है।

"हम तुम्हारा हाल-चाल पूछने चले आये," यूरा ने कहा।

"बड़ी मेहरबानी। बैठो, न?"

"तुम्हारा हाल कैसा है?" वान्या ने पूछा।

"कोई ख़ास अच्छा नहीं है..."

"अभी तक बिस्तर पर पड़े हो?"

"हां।"

"तमाम वक्त बिस्तर पर पड़े रहना तो तुम्हें बहुत बुरा मालूम होता होगा," लेन्या बोला।

"हां, सो तो है।"

"और तुम तमाम दिन बिल्कुल अकेले रहते हो?"

"हां, बिल्कुल अकेला। माताजी काम पर चली जाती हैं और चाची नाट्य-स्कूल में।"

"अच्छा, फिर तो हमें तुम्हें देखने के लिए अकसर आना पड़ेगा। भई, हमें माफ़ करना कि हम इतने दिन तक नहीं आये। हमने सोचा था कि तुम जल्दी ही अच्छे हो कर स्कूल लौट आओगे।"

"वह सब ठीक है, दोस्तो। कष्ट करने की क्या ज़रूरत है? वीत्या मुझे देखने रोज़ आता है।"

"हम भी हर रोज़ आयेंगे, आयें न?" स्लावा ने सुझाव रखते हुए कहा।

"तब तो बहुत अच्छा रहेगा," शिशकिन बोला। वह उनसे साफ़ तौर पर न आने के लिए नहीं कह सकता था भला कहीं कह सकता था?

"तुम्हें बीमारी क्या है?" यूरा ने पूछा।

"सब कुछ। हाथ, पांव, हर जगह।"

"अरे हटो! तुम्हारी टांगें भी?"

"हां, मेरा सिर भी।"

"तुम्हारा मतलब है, हर वक्त दर्द होता रहता है?"

"न...न...नहीं, हर वक्त नहीं। थोड़ी देर दर्द होता है, फिर कुछ देर के लिए रुक जाता है और फिर ज़ोरों से दर्द होने लगता है।"

"हमारे फ़्लैट में एक लड़का था, उसे भी इसी तरह होता था। उसे गठिया का रोग था," वास्या येरोख़िन बोला। "हो सकता है, तुम्हें भी गठिया की शिकायत हो?"

"हां, हो सकता है," शिशकिन ने कहा।

"डाक्टर क्या कहता है?" वान्या ने पूछा।

"तुम इन डाक्टरों को जानते ही हो। बस वह इतना ही कहता है 'अपनी ज़बान बाहर निकालो और कहो आ-आ-आ'!"

"वे तुम्हारा इलाज किस तरह कर रहे हैं?"

"कभी यह दवाई, कभी वह दवाई।"

"कौन सी दवाई?"

"मुझे मालूम नहीं, इसे क्या कहते हैं। एक कोई ख़ास किस्म का मिक्सचर है।"

"कड़ुवा है या मीठा?"

"कड़ुवा ज़हर!" शिशकिन बोला, और उसने ऐसा मुंह बनाया कि आप सचमुच यह समझने लगते कि उसने कोई बहुत ही कड़ुवी दवा पी है।

"जब मैं बीमार पड़ा था, तो उन्होंने मुझे भी एक मिक्सचर दिया था। वह भी बहुत ही कड़ुवा था! उसे पीने की मेरी इच्छा नहीं होती थी," दीमा बलाकिरेव ने कहा।

"मेरी भी इच्छा नहीं होती।"

"ओह, तुम्हारे लिए पीना ही ठीक है। इससे तुम जल्दी अच्छे हो जाओगे।"

"मैं पीता हूं।"

"अगर यह कड़ुवा है, तो कोई बात नहीं," लेन्या बोला, "इसके फ़ौरन बाद ही शक्कर की डली मुंह में डाल लो, फिर इतनी कड़ुवाहट नहीं लगेगी।"

"धन्यवाद, मैं यह करके देखूंगा।"

"और पढ़ाई की चिन्ता मत करना। जैसे ही तुम ज़रा ठीक हुए, हम तुम्हारी कसर पूरी करने के लिए आकर तुम्हारी मदद कर देंगे।"

"ओह, कसर तो मैं वैसे ही पूरी कर लूंगा," शिशकिन बोला।

इसी वक्त मैंने देखा कि शिशकिन का बूट कम्बल से बाहर निकला हुआ है। मेरा खून जम गया। लड़कों ने देख लिया, तो क्या होगा? किन्तु वे उससे बातचीत में बहुत ही तल्लीन थे। जब कोई उधर नहीं देख रहा था, मैं गया और उसे ढक दिया।

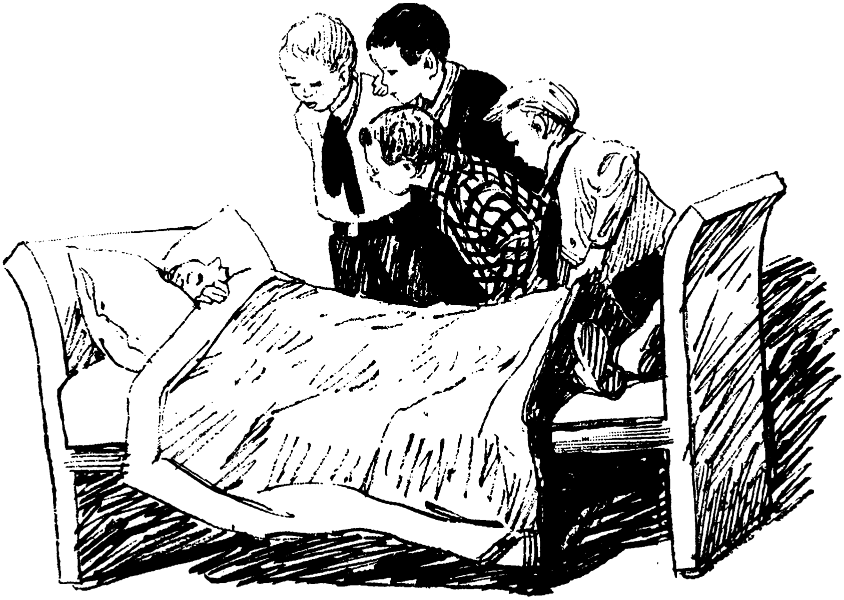
"अच्छा, लड़को," मैंने कहा। "यह अभी तक ज़रा कमज़ोर है, उसे थकाओ मत। अगर बुरा न मानो तो अब अपने अपने घर जाओ।"

लड़के जाने के लिए उठ खड़े हुए।

"अलविदा, कोस्त्या! जल्दी से ठीक हो जाओ। हम फिर कल तुमसे मिलने आयेंगे।"

जैसे ही वे गये, शिशकिन बिस्तर से उछल कर खड़ा हो गया और खुशी से कमरे भर में नाचने लगा।

"कितना शानदार रहा!" वह चिल्लाया। "किसी को कोई शक नहीं हुआ। हर चीज़ बढ़िया रही!"



"इतना खुश होने की कोई बात नहीं है," मैंने कहा। "मुझे तुमसे गम्भीर बात करनी है।"

"किस सिलसिले में?"

"तुम्हारे स्कूल जाने के बारे में।"

"मैं जानता हूं कि मुझे स्कूल जाना चाहिये, लेकिन अब मैं कैसे जा सकता हूं? तुम ख़ुद देख सकते हो कि इससे कोई फ़ायदा नहीं।"

"मुझे ऐसी कोई बात नज़र नहीं आती। मैं आज तुमसे आख़िरी बात करने का फ़ैसला कर चुका हूं। अगर तुम कल स्कूल नहीं जाते हो, तो मैं जाकर ओल्गा निकोलायेव्ना से सारी बात कह दूंगा।"

"लेकिन क्यों?" कोस्त्या ने आश्चर्य से पूछा।

"क्योंकि तुम्हें स्कूल जाना पड़ेगा और तुम इधर-उधर आवारागर्दी में अपना वक़्त ख़राब नहीं करोगे। तुम कभी भी कसरती कलाबाज़ नहीं बन सकते।"

"लेकिन मैं क्यों नहीं बन सकता? मैं अपने हाथों के बल चलना सीख भी चुका हूं!"

वह दीवार के निकट गया और अपने हाथों के बल खड़ा हो गया। उसी वक़्त दरवाज़ा खुला और लेन्या भीतर आया।

"मैं अपने दस्ताने भूल गया था," वह बोला। "अरे, यह क्या है? तुम अपना सिर उल्टा किये क्यों खड़े हो?"

शिशकिन पलट कर अपने पांवों पर खड़ा हो गया और मूर्खों की तरह आंखें फाड़ कर देखने लगा।

"तो तुम असल में बीमार नहीं हो!" लेन्या चीख़ा।

"मैं बीमार हूं, ईमान से कहता हूं!" चुकन्दर की तरह सुर्ख़ होते हुए, शिशकिन बोला। वह कराहने लगा और बिस्तर की ओर लपका।

"यह बहानेबाज़ी बन्द करो! तुम कह रहे थे, मेरी टांगें और हाथ दर्द करते हैं, और मैंने तुम्हें अपने हाथों के बल खड़े हुए पाया!"

"भई, ईमान से, दर्द करते हैं!"

"झूठ मत बोलो। तुमने इतनी जल्दी कपड़े कैसे पहन लिये? साफ़ है कि उस समय तुम बिस्तर पर कपड़े पहने हुए ही लेटे हुए होगे।"

"अच्छी बात है, अगर तुम क़सम खाओ कि तुम किसी से नहीं कहोगे, तो मैं तुम्हें भेद बता दूंगा।"

"मैं क़सम क्यों खाऊं?"

"तब मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा।"

इसी क्षण हमने बाहर गलियारे में पगध्वनि सुनी। दरवाज़ा खुला, और वान्या ने अन्दर झांका।

"क्या तुम आ रहे हो, लेन्या? हम तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं!"

"यहां आओ, वान्या! भेद खुल गया है। यह असल में बीमार नहीं है!"

"बीमार नहीं है?" कमरे में आते हुए, वान्या ने कहा।

"कौन बीमार नहीं है?" हमें गलियारे में यूरा की आवाज़ सुनाई दी। वह भी कमरे में घुस आया और दूसरे लड़के उसके पीछे थे।

"यह, शिशकिन। यह बिल्कुल भी बीमार नहीं है," लेन्या बोला।

"वह कैसे?"

"जब मैं अन्दर आया तो मैंने इसे सिर उल्टा किये खड़ा हुआ पाया!"

"हमें इस तरह बेवक़ूफ़ बनाने से आख़िर तुम्हारा मतलब क्या है?" दूसरों ने जवाब तलब किया।

"मेरा कुछ मतलब नहीं था, मैं तो ज़रा मज़ा ले रहा था," शिशकिन ने खिसियाते हुए कहा।

"तो यह है तुम्हारा मज़ाक करने का तरीक़ा?"

शिशकिन ने अपने कंधे उचका दिये।

"तुम खूब रहे," वान्या बोला। "यहां हम तुम्हारी चिन्ता कर रहे हैं और तुम्हें देखने आते हैं, और तुम हमें पूरे वक्त बेवक़ूफ़ बनाते रहे। बीमारी का बहाना... क्या बढ़िया मज़ाक किया है तुमने!"

"दोस्तो, आगे मैं कभी नहीं करूंगा, मानो भी, ऐसा कभी नहीं होगा," शिशकिन बोला।

"तुम स्कूल क्यों नहीं आते?" यूरा ने पूछा। "मेरे ख़याल से तुम बीमारी का बहाना इसलिए कर रहे हो कि तुम्हें स्कूल न जाना पड़े।"

"देखो, मैं तुम्हें सब बात बता दूंगा, बस, शर्त यह कि तुम गुस्सा न करो। मेरा इरादा तुम्हें बेवक़ूफ़ बनाने का नहीं था। मैं एक सर्कस का खिलाड़ी बनना चाहता हूं।"

"सर्कस का खिलाड़ी!"

"हां, मेरी इच्छा सर्कस में कसरती कलाबाज़ बनने की है।"

"मालूम होता है, तुम्हारा भेजा खराब हो गया है!"

"नहीं, भेजा ख़राब नहीं हुआ है।"

"तुम किस बात से सोचते हो कि सर्कस में तुम्हें काम मिल जायेगा?" वान्या ने पूछा।

"तुम्हारे ख़याल में सर्कस में काम करनेवाले कहां से आते हैं?"

"लेकिन तुमने यह नहीं बताया कि तुम स्कूल क्यों नहीं आ रहे हो।"

"मैं अब और नहीं पढ़ना चाहता। मैं काफ़ी पढ़ चुका हूं।"

"किस काम के लिए काफ़ी पढ़ चुके हो?"

"सर्कस का खिलाड़ी बनने के लिए तो काफ़ी पढ़ ही चुका हूं।"

"तुम्हारा ख़याल है कि सर्कस में काम करनेवालों के लिये पढ़ाई की कोई ज़रूरत नहीं है?"

"ठीक है, मैंने तो कुछ न कुछ पढ़ाई तो कर ही ली है, या नहीं?"

"पढ़ाई!" यूरा ने ताना मारते हुए कहा। "क्या कहने हैं! तुम ठीक तरह से उच्चारण तक तो कर नहीं सकते। पहले तुम अपनी माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई ख़त्म कर लो, फिर **तुम** सर्कस-स्कूल में जाओ। सर्कस के खिलाड़ियों के लिए भी दूसरे लोगों की तरह शिक्षित होना ज़रूरी है। तुम्हें ओल्गा निकोलायेव्ना से सलाह लेनी चाहिये।"

"जैसे कि मुझे मालूम न हो कि ओल्गा निकोलायेव्ना क्या कहेंगी!" शिशकिन बोला।

"दोस्तो, अगर तुम मुझसे पूछो, तो इसके दिमाग़ में बेवक़ूफ़ी का विचार घुस गया है," ईगोर ने कहा। "अच्छा यही है कि यह इस विचार को दिमाग़ से निकाल दे और कल स्कूल चला आये।"

"और अगर यह कल न आया, हम ओल्गा निकोलायेव्ना से कह देंगे," यूरा बोला।

"तब तुम सब लोग चुग़लख़ोर कहलाओगे।"

"नहीं, हम चुग़लख़ोर नहीं कहलायेंगे," यूरा बोला। "हम तुम्हें पहले से ही चेतावनी दे रहे हैं।"

"तुम ज़रा कल स्कूल न आने की कोशिश तो करो!" ईगोर ने धमकी देते हुए कहा। "क्या तुम बड़े होकर निकम्मे बने रहना चाहते हो? बोलो, चाहते हो?"

तभी हमें गलियारे में फिर पगध्वनि सुनाई दी और किसी ने द्वार खटखटाया। द्वार खोलने

के बजाय, शिशकिन फिर बिस्तर में घुस गया और अपने आपको कम्बल से ढंक लिया। मैंने जाकर द्वार खोला। वहां ओल्गा निकोलायेव्ना खड़ी थीं।

"तुम सब यहां हो!" ओल्गा निकोलायेव्ना ने कमरे में दाख़िल होते हुए कहा। "तो तुमने बीमार को देखने आने का फ़ैसला कर ही लिया?"

लड़कों ने कुछ नहीं कहा। किसी को नहीं सूझता था कि वह क्या कहे। कोस्त्या ने ओल्गा निकोलायेव्ना की ओर तिरछी नज़रों से घूरा और कम्बल को अपनी ठोड़ी तक खींच लिया, मानो उसने कम्बल में अपना सिर छुपाने की सोच ली हो। ओल्गा निकोलायेव्ना बिस्तर के निकट पहुंचीं।

"मुझे बड़ी चिन्ता है, प्यारे कोस्त्या! तुम पर बहुत बुरी गुज़र रही होगी। तुम्हें क्या तकलीफ़ है?"

"कुछ नहीं!" यूरा भभक उठा। "वह बिल्कुल भी बीमार नहीं है!"

"बीमार नहीं है?"

"नहीं, यह बिलकुल अच्छा-खासा है।"

शिशकिन ने देखा कि खेल ख़त्म हो चुका है, इसलिए वह रेंगता हुआ कम्बल से बाहर निकल आया और गर्दन झुकाये तथा फ़र्श की ओर देखता हुआ बिस्तर के कोने पर बैठ गया। ओल्गा निकोलायेव्ना ने बारी-बारी से हमारी ओर देखा। जब वह मेरे पास आयीं, तो बोलीं:

"लेकिन वीत्या, तुमने मुझसे यह क्यों कहा कि कोस्त्या बीमार है?"

मुझे इतनी शर्म आई कि मैं चाहने लगा कि ज़मीन फट जाये और मैं उसमें समा जाऊं।

"तुम जवाब क्यों नहीं देते? तब तुमने मुझसे झूठ बोला था।"

"जी, इसमें मेरा कोई क़सूर नहीं। इसका दोष है। इसी ने मुझसे ऐसा करने के लिए कहा था।"

"तो कोस्त्या ने तुमसे मुझे धोखा देने के लिए कहा था?"

मैंने स्वीकृति में गर्दन हिला दी।

"और तुमने वही किया, जो इसने तुमसे कहा?"

मैंने दुबारा गर्दन हिला दी।

"क्या तुमने यह ठीक किया?"

"लेकिन इसी ने मुझसे ऐसा करने को कहा था!"

"क्या तुम समझते हो कि मुझसे झूठ बोल कर इसको लाभ पहुंचता है?"

"जी नहीं।"

"फिर तुमने ऐसा क्यों किया?"

"यह मेरा दोस्त है। मैं नहीं चाहता था कि वह पकड़ में आ जाये!"

"पकड़ में आ जाये? किसकी? दुश्मन की? तब तो फिर मैं तुम्हारी दुश्मन हुई?"

मेरी समझ में नहीं आया कि क्या कहूं, इसलिए नज़र नीची किये फ़र्श को घूरता रहा।

"मैंने नहीं सोचा था कि मेरे विद्यार्थी मुझे अपना दुश्मन समझते हैं," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं।

"लेकिन हम नहीं समझते, ओल्गा निकोलायेव्ना," वान्या बोला। "सच जानिये, हम बिलकुल ऐसा नहीं समझते।"

"तब फिर किसी ने मुझे बताया क्यों नहीं?"

"किसी को भी इसका पता नहीं था। जब हम आज इसे देखने आये, तभी हमें मालूम हुआ।"

"ठीक है, इस बारे में हम बाद में बात करेंगे। अब, कोस्त्या, तुम बताओ कि तुम स्कूल क्यों नहीं आ रहे थे?"

"मैं जाते हुए डरता था," कोस्त्या ने बुदबुदाते हुए कहा।

"किस बात से डरते थे?"

"मुझे डर था कि आप मुझसे माताजी की चिट्ठी मांगेंगी।"

"कैसी चिट्ठी?"

"जब इमला बोली गई थी, तो मैं स्कूल नहीं गया था, इस बारे में।"

"जिस दिन इमला बोली गई, उस दिन तुम स्कूल क्यों नहीं आये?"

"मुझे डर था।"

"काहे का डर?"

"२ नम्बर पाने का।"

"इसलिए तुम जान-बूझकर इमला वाले दिन ग़ैरहाज़िर रहे थे और स्कूल आने से इसलिए डरते थे कि तुम्हें अपनी माताजी से चिट्ठी नहीं मिली?"

"जी हां।"

"जब तुमने स्कूल न जाने का फ़ैसला किया था, तब तुमने और क्या करने की सोची थी?" ओल्गा निकोलायेव्ना ने उससे पूछा।

"मुझे नहीं मालूम।"

"लेकिन तुम्हारी कुछ योजना तो अवश्य होगी ही?"

"जी, वह सर्कस का खिलाड़ी बनना चाहता था," यूरा बोला।

"लेकिन, जब तक तुम अपनी माध्यमिक शिक्षा समाप्त नहीं कर लेते, तुम सर्कस-स्कूल में दाख़िल नहीं हो सकते। और इसके बाद फिर तुम्हें सर्कस-स्कूल में पांच साल का प्रशिक्षण पाना होगा। तुम यह मत समझो कि एक रात में ही तुम सर्कस के खिलाड़ी बन जाओगे, या ऐसा समझते हो?"

"नहीं, मेरा ख़याल है, मैं नहीं बन सकता," शिशकिन ने सहमति प्रकट की।

"देखो, तुमने बिना अच्छी तरह सोचे-समझे स्कूल जाना बिलकुल बन्द कर दिया। क्या यह सिर्फ़ बेवकूफ़ी ही नहीं थी, कोस्त्या?"

शिशकिन ने कुछ नहीं कहा।

"तुम अब क्या करने की सोच रहे हो?"

"जी, मुझे नहीं मालूम।"

"अच्छा, मेरी सलाह है कि तुम इस पर विचार करो।"

शिशकिन कुछ देर चुप रहा, फिर अपनी उदास आंखें ऊपर उठाते हुए बोला:

"मैं फिर स्कूल आना चाहता हूं!"

"यह सचमुच, सबसे अच्छा रास्ता है। मेरा भी यही ख़याल है कि तुम्हें स्कूल आना ही चाहिये, लेकिन एक शर्त है: तुम्हें वायदा करना होगा कि तुम अपने जीवन को नये सिरे से ढालोगे और अपनी पढ़ाई पर मेहनत करोगे।"

"मैं वचन देता हूं," शिशकिन बोला।

"अच्छी बात है। कल सुबह स्कूल आओ, मैं डायरेक्टर से कहकर तुम्हें अपनी पढ़ाई जारी रखने की आज्ञा दिलवा दूंगी।"

"जी, अच्छा," शिशकिन बोला।

ओल्गा निकोलायेव्ना ने हम सब को घर जाकर अपनी पढ़ाई करने के लिए कहा। जब कोस्त्या ने देखा कि वह जा रही हैं तो बोला:

"ओल्गा निकोलायेव्ना, कृपया मेरी माताजी से न कहें।"

"क्यों नहीं कहूं?"

"मैं ज़्यादा मेहनत के साथ अपनी पढ़ाई करूंगा, आप विश्वास कीजिये। बस, आप माताजी से कुछ न कहने की कृपा करें।"

"तो तुम फिर अपनी माताजी को धोखा देते ही रहना चाहते हो? साथ ही यह भी चाहते हो कि उन्हें धोखा देने में मैं तुम्हारी मदद करूं?"

"मैं फिर कभी माताजी को धोखा नहीं दूंगा। मैं उन्हें दुखी नहीं करना चाहता।"

"लेकिन यदि तुम्हारी माताजी को पता चला कि तुम और मैं दोनों उन्हें धोखा देते रहे हैं, तो वह और ज़्यादा दुखी होंगी, नहीं होंगी?"

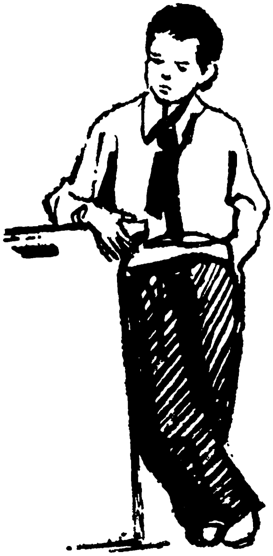
"मेरा ख़याल है, होंगी।"

"तो समझ लो कि हमें उनसे कहना ही होगा। लेकिन अगर तुम सच्चाई और ईमानदारी के साथ अपनी पढ़ाई-लिखाई शुरू करने का वचन दो, तो मैं तुम्हारी माताजी से कहूंगी कि वह तुमसे अधिक नाराज़ न हों।"

"मैं वचन देता हूं।"

"तब पक्का रहा," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं। "अब, अपनी पुस्तकें निकालो, हम पढ़ाई करेंगे।"

मैं दूसरों के साथ घर चला गया, इसलिए कह नहीं सकता कि उसके बाद क्या हुआ।



सोलहवाँ अध्याय

इस प्रकार शिशकिन अगले दिन स्कूल वापस आया। मुझे उसे देखकर इतना हर्ष हुआ कि मैं उससे मिलने के लिए लगभग दौड़ ही पड़ा। शुरू में उसे कुछ अजीब सा लगा और वह लड़कों की ओर देखता रहा, मानो वह उनसे तानाज़नी की अपेक्षा कर रहा हो। किन्तु जब उसने देखा कि कोई भी ऐसी कोई बात नहीं कर रहा है, तब वह चुपचाप मेरी बराबर वाली सीट पर आकर बैठ गया। आख़िर वह ख़ाली सीट फिर भर गई और मैंने ऐसा अनुभव किया जैसे मेरे अन्तर का एक बड़ा रीतापन भी भर गया हो, और अब हरेक सिलसिला पुनः ठीक हो गया हो।

ओल्गा निकोलायेव्ना ने शिशकिन से कुछ नहीं कहा, और पढ़ाई यथापूर्व चली। मध्यांतर में वोलोद्या आया और लड़कों ने उसे शिशकिन ने जो कुछ किया था बताया। मैंने सोचा कि वोलोद्या, शिशकिन को व्याख्यान देना शुरू करेगा, लेकिन उसके बजाय उसने मुझे भाषण पिलाना शुरू कर दिया।

"तुम जानते थे कि तुम्हारा दोस्त ग़लत काम कर रहा है। तुमने उसे सही रास्ते पर लाने की कोशिश क्यों नहीं की?" वोलोद्या बोला। "तुम्हें उसके साथ गम्भीरतापूर्वक बातचीत करनी चाहिये थी, और अगर वह तुम्हारी बात सुनने से इनकार करता, तो तुम्हें अपनी अध्यापिका से कहना चाहिये था, या मुझसे, या दूसरे लड़कों से। लेकिन तुम चुप्पी साधे रहे।"

"तुम समझते हो, मैंने उससे बात करने की कोशिश नहीं की? मुझे उससे हज़ार बार बात करनी चाहिये थी! लेकिन मैं करता क्या? उसने ख़ुद ही स्कूल न आने की मन में ठान रखी थी।"

"हां, लेकिन क्यों? क्योंकि वह अपनी पढ़ाई-लिखाई में पिछड़ा हुआ था। क्या तुमने उसकी पढ़ाई में मदद की? तुम्हें मालूम था कि उसे ख़राब नम्बर मिल रहे हैं, या नहीं मालूम था?"

"हां," मैंने कहा। "इस सब का कारण उसकी रूसी है। वह हमेशा अपने रूसी के अभ्यास मेरी कापी से नक़ल करता था।"

"देखो, अगर तुम उसके सच्चे दोस्त होते, तो उसे अपनी कापी से नक़ल न करने देते। एक सच्चे दोस्त के लिए कभी-कभी व्यवहार में सख्ती बरतना और अपने मित्र की कमज़ोरियों को नज़रन्दाज़ न करना ज़रूरी हो जाता है। लेकिन तुम्हें इस बात की चिन्ता नहीं कि तुम्हारा मित्र बुरा बर्ताव करता है या नहीं। इस तरह की दोस्ती से बिलकुल कोई लाभ नहीं। यह दोस्ती झूठी है।"

लड़कों ने कहना शुरू कर दिया कि मैं शिशकिन का बुरा दोस्त सिद्ध हुआ हूं, किन्तु वोलोद्या बोला:

"स्कूल के बाद हमें एक साथ इकट्ठे बैठ कर इस मामले को बाक़ायदा साफ़ कर लेना चाहिये। और वीत्या तुम, तुम्हें तोल्या की मिसाल अपने सामने रखनी चाहिये।"

"यह सब तोल्या के लिए तो बहुत ठीक है," मैंने कहा। "वह हमारी पायनियर कौंसिल का अध्यक्ष जो ठहरा, लेकिन मैं तो कुछ भी नहीं हूं।"

"बेवक़ूफ़, तुम पायनियर हो, या नहीं हो? यही बहुत कुछ है। इसके अलावा तुम यह भी जानते हो कि अगली बार तुम्हें भी कौंसिल का अध्यक्ष चुना जा सकता है।"

"नहीं, मैं अध्यक्ष नहीं बनूंगा," मैं बोला। "भला, मुझे कौन चुनेगा! मुझे अध्यक्ष बनने का कोई अधिकार नहीं है।"

"तुम्हें अधिकार क्यों नहीं है?"

"बस, नहीं है। मुझे कभी भी कोई कुछ नहीं चुनेगा। इसके अलावा, मैं कोई सामाजिक कार्य भी नहीं करता हूं।"

"तुम कुछ करना चाहोगे?"

मैंने कहा कि चाहूंगा और मीटिंग समाप्त हो गई।

हम स्कूल के बाद इकट्ठे होने को तैयार हो गये, लेकिन छुट्टी हुई, तो ओल्गा निकोलायेव्ना ने मुझे और शिशकिन को बुलाया और कहा:

"कोस्त्या और वीत्या, डायरेक्टर तुम दोनों से मिलना चाहते हैं।"

"किसलिये?" मैंने पूछा। मैं बहुत घबरा गया था।

"वह तुम्हें ख़ुद बतलायेंगे। अब जल्दी दौड़ जाओ। वह तुम्हें खा थोड़े ही जायेंगे!"

हम डायरेक्टर के दफ़्तर गये। दरवाज़ा खुला हुआ था, हम ड्योढ़ी पर ही खड़े हो गये और कहा: "नमस्कार, ईगोर अलेक्सान्द्रोविच!"

ईगोर अलेक्सान्द्रोविच अपनी मेज़ पर बैठे लिख रहे थे।

"नमस्कार, लड़को। अन्दर आओ और वहां बैठ जाओ," उन्होंने अपनी मेज़ के पास एक सोफ़े की ओर इशारा करते हुए कहा। वह लिखते रहे।

हम बैठते हुए डर रहे थे, क्योंकि सोफ़ा उनकी मेज़ के बहुत निकट था, इसलिए हम जहां थे, वहीं खड़े रहे। वहां खड़ा रहना अधिक सुरक्षात्मक लगता था। ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने अपना लिखना समाप्त किया और अपना चश्मा उतारा।

"बैठ जाओ! बैठ जाओ!"

हम जाकर सोफ़े के कोने पर ही बैठ गये। उस के ऊपर चमकदार चमड़ा चढ़ा हुआ था, जो इतना चिकना था कि बातचीत के पूरे समय में, और बात भी काफ़ी लम्बी थी,—मैं निरंतर फिसलता रहा, परिणामस्वरूप अन्त में मैं इतना थक गया था कि यदि पूरे समय मैं एक पैर पर भी खड़ा रहता, तो शायद इतना न थकता।

"अच्छा तो शिशकिन, मेरे ख़याल से तुम मुझे बताओगे कि तुम्हारे दिमाग़ में स्कूल से ग़ैरहाज़िर रहकर खेलते रहने की धुन कैसे समाई?" ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने शुरू किया।

"जी, मुझे नहीं मालूम," शिशकिन गिड़गिड़ाया।

"हूंह," ईगोर अलेक्सान्द्रोविच बोले। "फिर तुम्हारे ख़याल से, किसे मालूम है?"

"मु...मु... झे नहीं मालूम," शिशकिन ने कहा।

"तुम शायद यह सोचते हो कि मुझे मालूम है?" ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने पूछा।

शिशकिन ने ईगोर अलेक्सान्द्रोविच की ओर तिरछी नज़र से देखा कि कहीं वह मज़ाक तो नहीं कर रहे हैं, किन्तु डायरेक्टर की मुद्रा गम्भीर थी। इसलिए उसने फिर दोहराया: "मुझे नहीं मालूम।"

"अब, अगर तुम मेरे तमाम सवालों का यही जवाब देने की ज़िद्द पर अड़े रहे, तो सिलसिला कुछ आगे नहीं बढ़ सकेगा। अगर हम बातचीत करना चाहते हैं तो हमें इस सिलसिले में गम्भीरता बरतने की ज़रूरत है। तुम जानते ही हो कि मैं केवल उत्सुकतावश ही यह नहीं पूछ रहा हूं कि तुम स्कूल से क्यों ग़ैरहाज़िर रहे।"

"जी, मैं... मैं... डरता था," शिशकिन हकलाया।

"तुम काहे से डरते थे?"

"मैं इमला से डरता था, और इसीलिए मैं उस दिन स्कूल नहीं आया, और इसके बाद मुझे डर था कि ओल्गा निकोलायेव्ना मुझसे माताजी की चिट्ठी तलब करेंगी; और बस इसीलिए इसके बाद मैंने स्कूल आना बन्द कर दिया।"

"लेकिन तुम इमला से इतना क्यों डरते थे? क्या इमला इतनी भयानक है?"

"मुझे २ नम्बर पाने का डर था।"

"तो तुम अपनी रूसी में पिछड़े हुए थे?"

"जी हां।"

"क्या मैं पूछ सकता हूं कि क्यों?"

"क्योंकि यह मेरे लिए कठिन है।"

"क्या दूसरे विषय भी कठिन हैं?"

"जी नहीं, दूसरे इससे आसान हैं।"

"तब फिर रूसी इतनी कठिन कैसे हो सकती है?"

"मुझे हिज्जे करना नहीं आता।"

"ठीक है, पर तुम जानते हो कि तुम्हें सिर्फ़ काम पूरा करने भर की ज़रूरत है। मैं यकीन के साथ कह सकता हूं कि तुम अपनी रूसी पर काफ़ी ध्यान नहीं देते।"

शिशकिन ने सिर हिलाया: "जी हां, नहीं देता।"

"क्यों?"

"यह किसी तरह चलती ही नहीं। मुझे इतिहास या भूगोल बस एक बार पढ़ने से याद हो जाते हैं, लेकिन जैसे ही मैं लिखने बैठता हूं, मुझसे बहुत सी ग़लतियां हो जाती हैं।"

"ऐसी हालत में तुम्हारा अपनी रूसी पर अधिक ध्यान देना ज़रूरी है। केवल आसान विषयों को ही करने से कोई लाभ नहीं। हमें कठिन चीज़ें भी करनी चाहिए। हमें कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करना सीखना चाहिये। अगर तुम कुछ सीखना चाहते हो, तो तुम्हें परिश्रमी बनने की आवश्यकता है। अब, मलेयेव," ईगोर अलेक्सान्द्रोविच मेरी ओर मुड़े, "किसी वक़्त तुम भी तो गणित में पिछड़े हुए थे, नहीं थे?"

"जी हां, था।"

"लेकिन अब तुम उसमें बेहतर हो?"

"जी हां।"

"तुमने यह कैसे किया?"

"क्योंकि गणित में बुरे नम्बर लेते लेते मैं परेशान हो गया था। ओल्गा निकोलायेव्ना ने मुझ से कहा कि अगर मैं गणित पर डट कर प्रयत्न करूं, तो उसमें अच्छा हो सकता हूं। बस, मैंने डट कर मेहनत शुरू कर दी।"

"और तुम्हें सफलता मिली?"

"जी हां, मैं सफल हुआ।"

"लेकिन यह तुम्हारे लिए आसान तो नहीं था, या था?"

"नहीं, शुरू में यह बहुत कठिन लगा, लेकिन अब यह उतना ही आसान है जितने दूसरे विषय।"

"देखा तुमने, शिशकिन। तुम्हें मलेयेव के उदाहरण पर चलना चाहिये। शुरू में तुम्हें कठिन लगेगा, लेकिन जैसे ही तुम पहली बाधा पार करोगे, यह आसान हो जायेगा। इसलिए मैं सलाह दूंगा कि तुम अधिक मेहनत के साथ काम करने का निश्चय करो, और मुझे विश्वास है, तुम्हें सफलता प्राप्त होगी।"

"अच्छा," शिशकिन बोला। "मैं प्रयत्न करूंगा।"

"तुम्हें प्रयत्न से भी कुछ अधिक करना आवश्यक है। तुम्हें फ़ौरन ही काम में जुट जाना चाहिये।"

"मैं... मैं अपनी ओर से भरसक प्रयत्न करूंगा," शिशकिन ने कहा।

"अभी तक यह जवाब निश्चयात्मक नहीं है," ईगोर अलेक्सान्द्रोविच बोले। "तुम्हारे डर का कारण क्या है? क्या कक्षा के तुम्हारे साथी तुम्हारी सहायता नहीं करते? मलेयेव, तुम शिशकिन के मित्र हो, न?"

"जी हां," मैंने कहा, "लेकिन यह मित्रता झूठी है।"

"क्या? अरे, हां। इस बारे में तो मैं तुमसे बात करने वाला था, लेकिन देखता हूं कि तुम पहले ही इस मसले पर विचार कर चुके हो। क्या तुम चाहते हो कि तुम पर झूठी मित्रता का आरोप लगता रहे?"

"नहीं, मैं यह नहीं चाहता। लेकिन जब हर कोई यही कहता है तो मेरे ख़याल से सच ही होगा।"

"क्या तुम्हें यकीन है कि तुम इसके मायने ठीक समझे हो?"

"बिल्कुल नहीं," मैंने स्वीकार किया।

"देखो, वीत्या, झूठा मित्र वह है जो मित्रता का केवल बहाना करता है। सच्ची मित्रता इसके बिलकुल विपरीत है। सच्चा मित्र जिस काम को ग़लत समझता है, वह काम अपने मित्र को करते देख कर अलग नहीं खड़ा रहेगा। जब तुम यह भली भांति जानते थे शिशकिन अपनी मां और अध्यापकों को धोखा दे रहा है और अपने पांवों पर कुल्हाड़ी मार रहा है, ऐसी स्थिति में तुमने उसे ग़ैरहाज़िर रहने देकर यही सिद्ध किया कि तुम एक अच्छे मित्र का कर्त्तव्य पालन नहीं कर रहे थे। अब आया समझ में?"

"जी हां," मैंने कहा। "आगे से मैं पूरा-पूरा प्रयत्न करूंगा कि मैं शिशकिन का सच्चा मित्र बन सकूं।"

"तब फिर तुम्हें उसे उसकी रूसी में सहायता करनी चाहिये। वह रूसी में पीछे पड़ गया है, और वह स्वयं अकेला कक्षा के साथ नहीं चल सकेगा।"

"जी हां, मैं इसकी सहायता करूंगा," मैंने कहा। "मैं जानता हूं कि वह कैसे की जा सकती है। ख़ुद मेरी भी यही हालत रह चुकी है, इसलिए मैं जानता हूं कि इस मुसीबत को कैसे दूर किया जा सकता है।"

"ठीक! तो फिर तुम प्रयत्न करोगे?" ईगोर अलेक्सान्द्रोविच मुस्कराये।

"नहीं," मैंने कहा। "मैं प्रयत्न नहीं करूंगा। मैं इसके साथ सीधा काम पर जुट जाऊंगा।"

"शाबाश! यही बात तो मुझे पसन्द है," ईगोर अलेक्सान्द्रोविच बोले। "क्या तुम्हारे पास स्कूल में करने के लिए कोई सामाजिक कार्य है?"

"जी नहीं," मैंने कहा।

"अच्छा, तो शुरू में यही तुम्हारा कार्य हो सकता है। मैंने ओल्गा निकोलायेव्ना से बात

की थी, वह कहती हैं कि तुम यक़ीनी तौर पर शिशकिन की सहायता कर सकते हो। अगर तुम स्वयं अपनी सहायता कर सकते हो तो निःसन्देह किसी दूसरे की भी कर सकते हो। लेकिन तुम्हें अपनी पढ़ाई को गम्भीरतापूर्वक लेना चाहिये।"

"जी, मैं उसे गम्भीरतापूर्वक ही लूंगा," मैंने कहा।

"इस बात का ध्यान रखना कि यह अपना काम स्वयं और समय पर करे, और देखना कि यह कोई काम बिना किये न छोड़े। इसके लिए कोई काम मत करना। इससे इसे कोई सहायता नहीं मिलेगी। जब यह स्वयं स्वतंत्र रूप से काम करना सीख जायेगा, तो इसे अपने आप में विश्वास पैदा हो जायेगा और फिर इसे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता नहीं रहेगी। समझे?"

"हां, ईगोर अलेक्सान्द्रोविच।"

"शिशकिन, तुम हमेशा याद रखो कि आदमी को अपना काम ईमानदारी और होशियारी से करना चाहिये।"

"लेकिन मेरे पास तो कोई काम नहीं है, मैं तो केवल एक स्कूली छात्र हूं," शिशकिन बोला।

"एक स्कूली छात्र का काम पढ़ना है और अगर तुम अच्छी तरह पढ़ना चाहते हो तो तुम्हें इसपर परिश्रम करना चाहिये। बड़े लोग कारख़ानों और सामूहिक खेती-फ़ार्मों में काम करते हैं, बिजलीघरों और नदियों तथा समुद्रों को मिलाने के लिए नहरों का निर्माण करते हैं, जंगलों में वृक्ष उगाते हैं और रेगिस्तानों को सींचते हैं। ज़रा अन्दाज़ा लगाओ कि वे कितना काम करते हैं! और बच्चे स्कूलों में पढ़ने जाते हैं, ताकि वे बड़े होकर अपने देश के लिए उपयोगी हो सकें। क्या तुम अपने देश के लिए उपयोगी नहीं होना चाहते?"

"निःसन्देह, मैं चाहता हूं!"

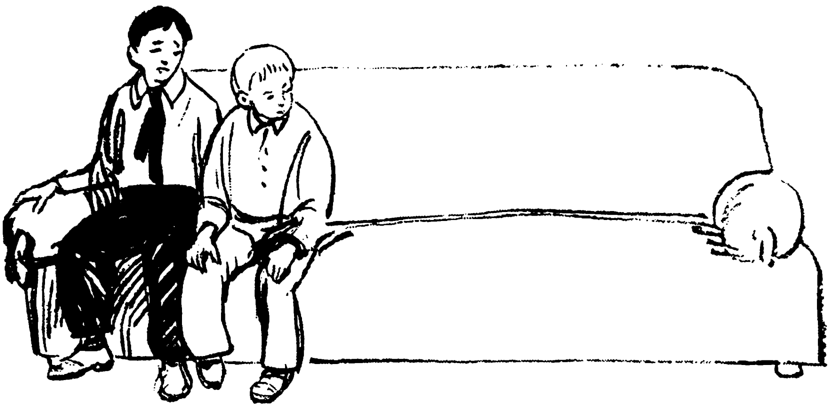
"बिलकुल ठीक है। लेकिन केवल चाहना भर ही काफ़ी नहीं है। तुम्हें दृढ़ निरन्तर प्रयत्न करने वाला और दृढ़निश्चयी बनना आवश्यक है, क्योंकि यदि तुम संकल्प नहीं करते तो तुम्हें कोई वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती!"

"मैं निरन्तर प्रयत्न करूंगा।"

"बहुत अच्छा!" ईगोर अलेक्सान्द्रोविच बोले। "और संकल्पी होने के साथ, तुम्हें सत्यवादी होने की भी आवश्यकता है। मेरे ख़याल से अब तक तुम सच नहीं बोलते रहे हो। अगर तुम सच्चे होते, तो तुम अपनी माताजी तथा अध्यापकों को इस तरह धोखा नहीं देते, क्लास के साथियों की बात तो ख़ैर छोड़ो।"

"अब से मैं हमेशा सच बोलूंगा।"

"मुझे ऐसी आशा है," ईगोर अलेक्सान्द्रोविच बोले। "लेकिन यही सब कुछ नहीं है। तुम में अपने क्लास के साथियों के प्रति अधिक सम्मान होना चाहिये। तुमने उनसे पीठ मोड़ ली और सोचा कि तुम उन सबके बिना अकेले ही चल सकते हो।"



"किन्तु मुझे उनके बिना अकेले रहना बहुत ही अखरा था!" शिशकिन चिल्लाया, और उसकी आवाज़ से ऐसा लगा, जैसे वह अभी सिसक सिसक कर रोना शुरू कर देगा।

"अच्छा, यह तो शुभ लक्षण है। शायद यह तुम्हें अपने मित्रों की उपेक्षा करने के बजाय उनको पसन्द करना सिखा देगा।"

"मैं फिर कभी उनकी उपेक्षा नहीं करूंगा," शिशकिन ने कहा।

"लेकिन स्कूल से ग़ैरहाज़िर रहने के समय तुम अकेले क्या करते रहे, नौजवान?" ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने पूछा।

हमने उन्हें बताया कि हमने किस प्रकार लोबज़िक को गिनना सिखाया। ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने इसमें बहुत दिलचस्पी ली और हमसे सारा क़िस्सा सुनाने के लिए कहा।

"लेकिन क्या तुम्हारा ख़याल है कि एक इन्सान की तरह एक कुत्ते को भी गिनना सिखा सकते हो?" जब हमने क़िस्सा समाप्त किया, तो उन्होंने पूछा।

"लेकिन उस कुत्ते के बारे में क्या कहेंगे, जो हमने सर्कस में देखा था?"

ईगोर अलेक्सान्द्रोविच हंसे।

"उस कुत्ते को गिनना नहीं आता था," वह बोले। "उसे इशारों पर भोंकना सिखाया गया था। जब कुत्ता प्रशिक्षक की आवश्यकतानुसार, जितनी बार वह चाहता है, भोंक चुकता है, तो वह कुत्ते को चुप हो जाने के लिए इशारा कर देता है। दर्शक यह इशारा नहीं देख पाते, वे समझते हैं कि कुत्ता गिनना जानता है।"

"किन्तु प्रशिक्षक किस प्रकार के इशारे करता है?" कोस्त्या ने जानना चाहा।

"ओह, वह धीरे से अपना सिर हिलाता है, या अपना हाथ हिलाता है, या चुपके से अपनी उंगलियां दिखाता है।"

"परन्तु हमारा लोबज़िक कभी-कभी बिना इशारों के ठीक गिन लेता है," कोस्त्या बोला।

"कुत्ते हर चीज़ को बहुत ध्यान से देखते हैं," ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने कहा। "तुम बिना जाने बूझे ही अपना सिर हिलाते रहे होगे या कोई दूसरी हरकत करते रहे होगे और हर बार लोबज़िक सही बार भोंका होगा। वह ताड़ जाता है और तुम्हारी इच्छा का अनुमान लगाने का प्रयत्न करता है। लेकिन जब तुम्हारे इशारे उसकी पकड़ के लिए बहुत कठिन हो जाते हैं, तो वह अक्सर ग़लतियां करता होगा। अगर तुम चाहते हो कि सही उत्तर दे, तुम्हें उसे कुछ निश्चित संकेतों का उत्तर देना सिखाना चाहिये। मिसाल के तौर पर, उंगलियों का इशारा।"

"मैं यकीनन इस दिशा में प्रयत्न करके देखूंगा," कोस्त्या बोला। "लेकिन पहले मैं अपनी रूसी पर ध्यान दूंगा। इसके बाद मैं लोबज़िक को सिखा सकता हूं।"

"यह ठीक है। और जब हमारे स्कूल में कन्सर्ट होगी, तो तुम दोनों लोबज़िक और उसके खेलों का प्रदर्शन कर सकोगे।"

हम बहुत ही डर रहे थे कि ईगोर अलेक्सान्द्रोविच हमारे लिए कोई दंड निर्धारित करेंगे, किन्तु स्पष्ट है कि उन्होंने हमें दंड देने की बात ज़रा भी नहीं सोची थी। वह हमें केवल यह अनुभव कराना चाहते थे कि बाक़ायदा ढंग से अध्ययन करना कितना महत्वपूर्ण है।

सत्रहवाँ अध्याय



जब हम डायरेक्टर के कमरे से बाहर आये, हमने देखा कि वोलोद्या और दूसरे लड़के बाहर बरामदे में हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने हमें घेर लिया और हम पर प्रश्नों की बौछार शुरू कर दी।

"क्यों? क्या हुआ? ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने क्या कहा? काफ़ी खिंचाई हुई?"

"नहीं," मैंने कहा। "ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने हमें माफ़ कर दिया।"

"यह बहुत अच्छा रहा!" तोल्या बोला। "अब हमें पायनियर-कक्ष में चलकर बातचीत करनी चाहिये। हमें इस मसले को साफ़ करना ही होगा।"

फिर हम सब पायनियर-कक्ष में गये। शिशकिन पीछे रहा।

"कोई बात नहीं, शिशकिन घबराओ मत," यूरा बोला। "हम तुम्हें भाषण नहीं पिलायेंगे।"

जब हम सब मेज़ के चारों ओर बैठ गये, वोलोद्या ने कहना शुरू किया:

"अब हमें यह देखना है कि हम शिशकिन की सहायता किस तरह कर सकते हैं। इसे इतने ख़राब नम्बर मिलते रहे हैं कि अन्त में इसने बिलकुल ही स्कूल आना छोड़ दिया। इसमें सन्देह नहीं कि यह इसकी ग़लती थी। लेकिन हम भी इसके लिए बहुत हद तक दोषी हैं। हमने इसके कम नम्बरों की तरफ़ काफ़ी ध्यान नहीं दिया और ठीक समय पर इसे सहायता नहीं दी।"

"बेशक, यह सही है," वान्या बोला। "लेकिन शिशकिन को महसूस करना चाहिये कि गाड़ी उसे खुद ही खींचनी है। अगर वह अभी से फ़ौरन ही सच्ची मेहनत से काम करना शुरू नहीं कर देता, तो फिर दुबारा यही क़िस्सा होगा।"

"वान्या ठीक कहता है, शिशकिन। तुम्हें नाराज़ नहीं होना चाहिये, लेकिन तुम्हें ज़िन्दगी को नये सिरे से ढालना होगा," यूरा बोला। "हम तुम्हारी मदद कर सकते हैं। विश्वास करो, हमें इसमें बहुत ख़ुशी ही होगी।"

"लेकिन कैसे ?" लेन्या अस्ताफ़्येव ने कहा। "हमने शिशकिन की मदद के लिए आलिक सोरोकिन को छांटा था, और देखो, नतीजा क्या रहा ?"

"क्या तुमने कभी भी उसके साथ बैठकर काम किया ?" वोलोद्या ने आलिक से पूछा।

"बेशक मैंने किया था!" आलिक ने उत्तर दिया।

"तुम कितनी बार उसके साथ काम करने बैठे ?"

"यह तो मुझे ठीक तरह से याद नहीं। मेरे ख़याल से दो या तीन बार।"

"दो या तीन बार!" यूरा ने नक्की स्वर में कहा। "क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हें उसके साथ रोज़ बैठकर पढ़ना था ? दो या तीन बार! और तुमने मीटिंग में वायदा किया था। हमने तुम पर विश्वास किया था कि तुम अपने कर्त्तव्य का पालन ठीक तरह से करोगे और तुमने हम सबको नीचा दिखा दिया।"

"मैं इस सिलसिले में कुछ नहीं कर सकता था," आलिक बोला। "जब कभी भी मैं इसके घर गया, यह ग़ैरहाज़िर मिला। और कभी इत्तफ़ाक़ से मिल भी गया, तो कहने लगा: 'मेरी आज पढ़ने की इच्छा नहीं हो रही है।' इसलिए मैंने यह सिलसिला छोड़ दिया।"

"तुम्हें इस तरह की कोई बात करने का अधिकार नहीं था," यूरा बोला। "तुम्हें यह मामला पायनियर ग्रुप में उठाना चाहिये था और दूसरों से सहायता लेनी चाहिये थी। शिशकिन को अपने समय का बंटवारा करना नहीं आता। यह तुम्हारा काम था कि तुम उसकी मदद करते। तुम्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिये कि तुम ख़ुद तो अच्छे नम्बर पाते हो, लेकिन तुम्हें इस बात की कोई परवाह नहीं कि तुम्हारे क्लास के साथी किस तरह चल रहे हैं। और मैं भी तुम्हारे काम की जांच-पड़ताल न करने के लिए उतना ही दोषी हूं।"

"मैं अब से उसे अच्छी तरह सहायता देने का वचन देता हूं," आलिक बोला। "मेरा ख़याल है कि मैंने शतरंज पर ज़रूरत से ज़्यादा समय लगाया, और यह सब उसी कारण हुआ।"

"नहीं," वोलोद्या ने कहा। "तुमने फ़ौरन ही मामले को गड़बड़ा दिया। हम यह काम तुम्हें दुबारा करने के लिए नहीं दे सकते।"

"शिशकिन के साथ अब मैं काम करूंगा," मैंने कहा। "ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने मुझे यह करने को कहा है।"

"अगर ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने तुम्हें इस काम पर लगाया है तो हमें कोई आपत्ति नहीं। ठीक है न, लड़को ?"

"बिलकुल," दूसरों ने सहमति प्रकट की। "उसे साथ काम करने दिया जाये।"

बैठक समाप्त हुई और हम बाहर आये। तमाम रास्ते शिशकिन ख़ामोश रहा। ऐसा मालूम होता था कि वह कुछ सोच रहा था। अन्त में वह बोला:

"मैं ख़त्म हो चुका हूं। मुझ में इच्छा-शक्ति नहीं। योग्यता नहीं।"

"बेवक़ूफ़ मत बनो, तुम बिलकुल भी ख़त्म नहीं हुए हो," मैंने उसे सान्त्वना देने का प्रयत्न किया।

"हां, मैं बेवकूफ़ हूं, मुझे यह मालूम है। लेकिन मैं हमेशा के लिए मूर्ख नहीं रहना चाहता। मैं अपने आपको संभालूंगा। यह तुम देखोगे। मगर, वीत्या, तुम्हें मेरी सहायता करनी होगी। ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने तुमसे कहा है। अब तुम इनकार करने की जुर्रत नहीं कर सकते।"

"मैं इनकार नहीं कर रहा हूं," मैंने कहा। "लेकिन मैं जैसा कहता हूं, तुम्हें वैसा ही करना होगा। हमें आज ही से शुरूआत कर देना चाहिये। मैं आज दोपहर को तुम्हारे यहां आऊंगा और हम काम शुरू कर देंगे।"

दोपहर को मैं सीधा शिशकिन के यहां पहुंचा। ऊपर चढ़ते हुए मैंने लोबज़िक का भोंकना सुना, और जब मैं कमरे में पहुंचा, तो देखता क्या हूं कि लोबज़िक कुर्सी पर बैठा भोंक रहा है, और कोस्त्या उसकी नाक के आगे चुटकियां बजा रहा है।

"मैं इसे इशारे का जवाब देना सिखा रहा हूं, जैसे ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने बताया था," वह बोला। "पहले थोड़ा सा काम लोबज़िक के साथ कर लें। पढ़ाई हम बाद में कर सकते हैं। कभी कभी लोबज़िक को भी सिखाया जाना चाहिये।"

"कोस्त्या शिशकिन!" मैंने सख़्ती के साथ कहा। "क्या मैंने तुम्हारा यह वायदा नहीं सुना है कि जब तक तुम अपनी रूसी नहीं सुधार लोगे, लोबज़िक को सिखाना शुरू नहीं करोगे? अभी से भूल गये?"

"अच्छा, मुझे यह नहीं करना चाहिये!" शिशकिन चिल्लाया। "भाग यहां से, जा लोबज़िक! जब तक मैं अपनी रूसी नहीं सुधार लूंगा, तेरा मुंह भी नहीं देखूंगा। अगर तुम मुझे दुबारा यह करने की कोशिश करते हुए देखो, वीत्या, तो तुम मुझे बेपेंदी का लोटा कह सकते हो। अच्छा, हमें कहां से शुरू करना है?"

"हम सबसे पहले रूसी का अभ्यास करेंगे," मैंने कहा।

"क्या हम इसकी जगह भूगोल या गणित पहले नहीं कर सकते?"

"नहीं," मैं बोला। "मुझे अपने अनुभव से मालूम है कि किस विषय से शुरू करना चाहिये। हमारे पास घर पर करने के लिए रूसी का काम क्या है?"

"ओह, कुछ वही जानलेवा प्रत्यय और हैं। फिर ओल्गा निकोलायेव्ना ने मुझसे हिज्जे करने के पुराने कायदों में से एक को याद करने के लिए कहा था, और इसके अलावा एक अभ्यास करने के लिए भी।"

"अच्छी बात है, तुम अपने अभ्यास से शुरू करो," मैंने कहा।

"मैं तैयार हूं।"

"तैयार हो? तब फिर तुम शुरू क्यों नहीं करते? तुम मुझसे यह आशा तो नहीं करते कि तुम्हारे अभ्यास भी मैं कर दूंगा? अब से हर चीज़ तुम ख़ुद ही करोगे। यह वक्त है कि तुम अपने पर निर्भर करना सीखो।"

"ओह, अच्छी बात है," शिशकिन ने ठंडी सांस भरते हुए कहा।

उसने हिज्जे के कायदे को एक या दो बार पढ़ा, फिर उसने अभ्यास करना शुरू कर दिया। यह बहुत ही आसान था। उसे शब्दों में से लुप्त अक्षरों को भरना था। जब शिशकिन लिख रहा था, मैं अपना भूगोल कर रहा था और ऐसा दिखा रहा था कि मैं उसकी ओर ज़रा भी ध्यान नहीं दे रहा हूं। लेकिन उसने यह करने में इतनी देर लगा दी कि मैं इससे पहले ही अपना भूगोल लगभग समाप्त कर चुका था। तभी उसने कहा:

"समाप्त कर लिया!"

किन्तु जब मैंने उसके लिखे को देखा, तो मेरे रोंगटे खड़े हो गये। उसमें ढेरों ग़लतियां थीं।

"वाह, तुमने काम खूब किया है!"

"क्यों? क्या तमाम ग़लत है?"

"तमाम तो नहीं, लेकिन ख़राब बहुत है।"

"यह तो मैं पहले ही जानता था! मैं कभी ठीक नहीं हो सकता। इससे कोई लाभ नहीं!"

"गधे मत बनो," मैंने सख़्ती से कहा। "तुम चुटकियों में तो सीखने की आशा नहीं कर सकते। नहीं जानते कि 'चाकू' का बहुवचन तुम केवल 'ओं' जोड़ कर ही नहीं लिख सकते?"

"जानना तो चाहिये, लेकिन मैं भूल गया हूं।"

"अभी से?"

मैंने उससे पीछे किया गया काम पलटवाया और दिखाया कि यह कायदा दूसरे उदाहरणों पर किस प्रकार लागू किया गया था। "अब," मैंने कहा, "तुम काम पर बैठो और अभ्यास को दुबारा लिखो और कोशिश करो कि इस बार ग़लतियां न हों।"

"हम इसे ऐसी ही छोड़ दें, वीत्या। अगली बार मैं इससे भी कठिन करने की कोशिश करूंगा।"

"यह नहीं चलेगा," मैंने कहा। "तुमने वायदा किया था कि जैसा मैं कहूंगा तुम वैसा ही करोगे, किया था न?"

शिशकिन ने एक गहरी ठंडी सांस लेकर दुबारा अभ्यास करना शुरू कर दिया। लेकिन इस बार वह बहुत ही जल्दबाज़ी कर रहा था। उसके अक्षर सब दिशाओं में टेढ़े मेढ़े ढंग से बिखरे हुए थे, कुछ एक ओर को झुके हुए थे, कुछ भ्रमित अवस्था में लाइन के ऊपर लटके हुए थे, कुछ लाइन के नीचे बिखरे पड़े थे। आप अन्दाज़ा लगा सकते थे कि वह अभी से पढ़ाई से ऊब चुका है।

तभी यूरा अन्दर दाखिल हुआ। उसने हमें अपनी पुस्तकों में व्यस्त पाया।

"अपनी पढ़ाई कर रहे हो, हैं? बहुत अच्छा! कौन सा विषय?"

"रूसी," मैंने कहा। "ओल्गा निकोलायेव्ना ने इसे विशेष काम दिया था।"

शिशकिन जो कुछ लिख रहा था, यूरा ने उस पर नज़र डाली।

"अरे, यह क्या है?" वह बोला। "देखो, यह ग़लती है! तुम अच्छी तरह किताब से उतार तक नहीं कर सकते!"

शिशकिन कराहा।

तभी वान्या अन्दर आया।

"अपनी पढ़ाई कर रहे हो, हैं?"

"हां," हम बोले।

"मुबारक हो! तुम्हें पूरी क्लास की तरफ़ से धन्यवाद मिलेगा।"

"अपनी पढ़ाई करने के लिए क्लास मुझे धन्यवाद क्यों देगी?" शिशकिन ने कहा। "हम कुछ सीखने के लिए पढ़ाई करते हैं, इसके लिए धन्यवाद लेने के लिए नहीं।"

"मेरे कहने का यह मतलब नहीं था। मेरा मतलब था कि पूरी कक्षा यह चाहती है कि तुम अच्छी तरह पढ़ो और तुम्हें अच्छे नम्बर मिलें। इसलिए तुम दोनों को काम करते देख कर मुझे खुशी हुई।"

दरवाज़ा खुला और वास्या येरोख़िन अन्दर दाख़िल हुआ।

"अपनी पढ़ाई कर रहे हो, हैं?" वह बोला।

"अरे, यह सब क्या है!" मैंने कहा। "हर कोई ऐसी हरकत कर रहा है, जैसे हमने ज़िंदगी में इससे पहले कभी अपनी पढ़ाई ही न की हो!"

"मेरा मतलब तुमसे नहीं था, मैं शिशकिन के बारे में कह रहा था," वास्या बोला।

"शिशकिन के बारे में क्यों? क्या उसने कभी अपने पाठ नहीं याद किये? उसकी केवल रूसी ही तो कमज़ोर है, दूसरे विषयों में उसे अच्छे ख़ासे नम्बर मिलते हैं।"

"जामे से बाहर मत हो। गुस्सा होने की ज़रूरत नहीं। मैं यह नहीं समझता था कि यह अपनी पढ़ाई कर रहा होगा। जब मैंने देखा कि वह कर रहा है, तो बस, मेरे मुंह से ये शब्द निकल पड़े।"

"ठीक है, लेकिन आइन्दा शब्द निकालने से पहले सोच लेना।"

"तुम्हें शेख़ी बघारने की कोई ज़रूरत नहीं।"

दरवाज़ा फिर खुला और आलिक सोरोकिन अन्दर आया।

"मैं जानता हूं, यह क्या कहेगा," शिशकिन फुसफुसाया। "तुम देखना!"

"अपनी पढ़ाई कर रहे हो, हैं?" आलिक सोरोकिन ने मुस्कराते हुए कहा।

हम सब ठहाका मारकर हंस पड़े।

"यह क्या मज़ाक है?" बौखलाई नज़रों से देखते हुए, आलिक ने कहा।

"कुछ नहीं। हम तुम पर नहीं हंस रहे हैं," मैंने कहा। "तुम किसलिए आये हो?"

"ओह, मैंने सोचा ज़रा होता चलूं, शायद मेरी मदद की ज़रूरत पड़े।"

"तुम शायद इत्तफ़ाक से अपनी शतरंज अपने साथ नहीं ले आये?" मैंने ताना मारा।

"नहीं, मैं भूल आया! बहुत बुरा हुआ। हम एक अच्छी बाज़ी लड़ा सकते थे!"

"अच्छा यही है कि तुम और तुम्हारी शतरंज यहां से दूर ही रहे," यूरा बोला।

"अच्छा, लड़को, अब हमें चलना चाहिये। हम केवल बाधा ही बने हुए हैं।"

लड़के चले गये।

"ये हमें जांचने आये थे," कोस्त्या बोला। "ये यह देखने आये थे कि हम सचमुच पढ़ रहे हैं या नहीं।"

"फिर क्या हुआ?" मैंने कहा। "इसमें बुराई क्या है?"

"मैंने यह तो नहीं कहा कि कोई बुराई है, या कहा है? मैं तो इसे उनकी शराफ़त समझता हूं कि वे इतनी दिलचस्पी दिखा रहे हैं।"

"क्या ओल्गा निकोलायेव्ना ने तुम्हारी माताजी से कहा था कि तुम स्कूल नहीं जाते रहे थे?" मैंने कोस्त्या से पूछा।

"हां। और ज़ीना चाची से भी कहा। काश तुम सुन पाते कि कुछ मुझे इसके लिए क्या सुनना पड़ा था! मैं ज़िन्दगी भर इसे याद रखूंगा। लेकिन कोई बात नहीं, भगवान का शुक्र है कि सिलसिला ही पूरा ख़त्म हो गया है! स्कूल से ग़ैरहाज़िर रह कर खेलने में मुझे बिलकुल मज़ा नहीं आता था। वह सिलसिला बहुत ही बुरा था, वीत्या। तुम सोच भी नहीं कर सकते कि मेरी तरह तमाम शहर में आवारागर्दी करने के बजाय तुम सब लोगों को स्कूल जाने योग्य देख कर मुझे कितनी ईर्षा होती थी। मुझे अपनी हालत बेघर पिल्ले जैसी मालूम होती थी, जिसको जाने के लिए कोई स्थान नहीं था। और मैं अपनी गरीब मां के लिए बहुत दुखी था! क्या तुम समझते हो कि मुझे उन्हें धोखा देना अच्छा लगता था? मगर एक बार मैंने जो शुरूआत की, फिर उसे न रोक सका। दूसरी माताओं को अपने लड़कों पर गर्व होता है, लेकिन मेरी मां मेरे जैसे निकम्मे पर किस तरह गर्व कर सकती थी? और सबसे बुरी बात यह थी कि कोई रास्ता नज़र नहीं आता था। मैं बद से बदतर ही होता गया। उफ़, वह कितना भयानक था!"

"मैंने नहीं समझा था कि तुम इतनी तकलीफ़ में थे," मैंने कहा।

"ओह, लेकिन सच, मैं था! बस, मैंने ज़ाहिर नहीं किया। मैं ऐसा दिखाता था, जैसे मुझे परवाह न हो लेकिन मेरा दिल को हर वक्त ऐसा लगता था, जैसे उस पर भारी बोझ रखा हो।"

"लेकिन तुम लापरवाही का बहाना क्यों करते थे?"

"मुझे नहीं मालूम। हालांकि मैं ऊपर से यह दिखाता कि सब ठीक-ठाक चल रहा है, लेकिन तुम आते और मुझे कोसते, तो मुझे अपने ऊपर बहुत ही शर्म आती। ख़ैर, अब वह सब ख़त्म हो चुका है, और अब फिर कभी ऐसा नहीं होगा। अब मुझे ऐसा लगता है, जैसे एक भयंकर तूफ़ान सिर पर से गुज़र गया है और अब हर चीज़ फिर से मौन और शान्त हो गई। अब केवल मुझे बस एक ही काम करना शेष रहता है, वह है डटकर पढ़ने की कोशिश।"

"बिलकुल ठीक है, तुम प्रयत्न करो!" मैं बोला।

"मैं करूंगा। क्या मैंने कोशिश शुरू नहीं कर दी है?"

अठारहवाँ अध्याय



अगले दिन ओल्गा निकोलायेव्ना ने कोस्त्या का घर का काम देखा और ऐसी ग़लतियां पाईं, जो मेरी नज़र से भी बच गई थीं। उसने व्याकरण के सिद्धान्तों का प्रयोग तो सही किया था, क्योंकि मैंने देख लिया था, लेकिन किताब से उतारने में बहुत सी हिज्जों की ग़लतियां कर डाली थीं। उसने अक्षर छोड़ दिये थे या ग़लत अक्षर भरे थे।

"यह सिर्फ़ लापरवाही है," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं। "और इससे यही पता चलता है कि तुम काफ़ी मेहनत से काम नहीं करते। तुम हमेशा अपनी पढ़ाई निबटाने में बहुत ही जल्दबाज़ी करते हो।"

"दरअसल ज़्यादा जल्दबाज़ी तो नहीं करता," कोस्त्या बोला।

"फिर तुम्हारी लिखाई इतनी ख़राब क्यों है? देखो तुम्हारे अक्षर कितने भद्दे हैं। वे टेढ़े मेढ़े नाच रहे हैं। तुम कोशिश करते, तो बेहतर लिख सकते थे। होशियार विद्यार्थी अभ्यासों में न केवल ग़लतियां न करने का, बल्कि साफ़-सुथरा लिखने का भी ध्यान रखता है। तुम्हें मान लेना चाहिये, कि तुम अपने काम को अभी तक काफ़ी ध्यान से नहीं करते हो।"

"मैं करने की कोशिश करता हूं, ओल्गा निकोलायेव्ना, लेकिन बात यह है कि मैं काफ़ी देर तक अपनी पढ़ाई पर बैठ ही नहीं सकता। मैं यही चाहता रहता हूं कि जितनी जल्दी हो सके, पढ़ाई समाप्त कर डालूं। मैं नहीं जानता कि ऐसा क्यों होता है!"

"इसका कारण मैं बताती हूं। यह इसलिए होता है कि तुम यह नहीं समझे हो कि मेहनत के बिना कोई भी चीज़ नहीं मिलती। अगर तुम अपने काम पर मेहनत नहीं करोगे, तो तुम्हारी इच्छा-शक्ति कभी मज़बूत नहीं होगी और तुम किसी भी काम में सफलता नहीं पा सकोगे," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं।

उस दिन से आप कोस्त्या की कापी देखने भर से यह कह सकते थे कि वह अपनी कमज़ोर इच्छा-शक्ति को मज़बूत बनाने के लिए प्रयत्नशील है। कभी कभी अभ्यास अच्छी और संतुलित लिखाई से शुरू होता, जो इस बात का परिचायक होता कि जब वह अपनी पढ़ाई पर बैठा तो उसने निश्चय किया था कि अच्छी तरह मन लगा कर काम करेगा। किन्तु धीरे-धीरे वह ढील छोड़ देता और उसके अक्षर इधर-उधर नाचने लगते, एक दूसरे के सिर पर रेंगने लगते या इस ओर से उस ओर को लड़खड़ाने लगते, मानो नशे में हों। कभी इसके विपरीत होता। अभ्यास ढीले-ढाले ढंग से रेंगता शुरू होता, आप कह सकते थे कि कोस्त्या इस जानलेवा काम को जल्दी से जल्दी ख़त्म कर देना चाहता था। लेकिन कुछ पंक्तियों के बाद उसकी इच्छा-शक्ति काम करने लगती, और आख़िर तक पढ़ने तक अक्षर अपेक्षाकृत सीधे और सुथरे हो जाते। आप कभी विश्वास नहीं कर सकते थे कि पहला भाग उसी व्यक्ति द्वारा लिखा गया है।

किन्तु लिखावट ही मुख्य बाधा नहीं थी। उसके साथ सबसे बुरी चीज़ थी हिज्जे। अब भी वह ढेरों ग़लतियां करता था, और जब अगली बार हमने इमला लिखी थी तो उसे २ नम्बर ही मिले। तमाम लड़कों को आशा थी कि इस बार उसे ३ नम्बर मिल जायेंगे, क्योंकि वे जानते थे कि उसने अपने जीवन का नया अध्याय शुरू करने का फ़ैसला कर लिया है। इसलिए हरेक को अत्यन्त निराशा हुई।

"सुनो, वीत्या, क्या तुम कोस्त्या के साथ मेहनत नहीं कर रहे हो?" बीच की छुट्टी में यूरा ने मुझे टोका।

"हां कर रहा हूं," मैंने कहा। "हम इकट्ठे अच्छी तरह काम करते हैं।"

"फिर उसमें सुधार क्यों नहीं हुआ है?"

"यह मेरा क़सूर नहीं है। मैं उसके साथ रोज़ाना मेहनत करता हूं!"

"ठीक है, लेकिन वह प्रगति क्यों नहीं कर रहा है?"

"यह मैं कैसे जान सकता हूं? शायद अभी काफ़ी जल्दी है।"

"तुम्हें पूरे दो सप्ताह मिल चुके हैं। तुम यह भी नहीं जानते कि उससे किस तरह ठीक ढंग से काम कराया जा सकता है। हमें किसी और को उसकी मदद के लिए लगाना पड़ेगा। हम ओल्गा निकोलायेव्ना से कहेंगे कि वह तुम्हारी जगह वान्या पखोमोव को लगा दें। वह शिशकिन से मेहनत करायेगा।"

"जी नहीं, शुक्रिया!" मैं बोला। "ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने ख़ुद यह काम मेरे सुपुर्द किया है। मुझे इस काम से हटाने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है।"

"यह हम देखेंगे। कल हम ओल्गा निकोलायेव्ना से बातचीत करेंगे। तुम समझते हो, कि क्योंकि ईगोर अलेक्सान्द्रोविच ने तुम्हें यह काम दिया है, तो जैसा तुम चाहो, कर सकते हो?"

"मलेयेव, अच्छा यही है कि तुम छोड़ दो," लेन्या अस्ताफ़्येव ने कहा। "ओल्गा निकोलायेव्ना तुम्हें इस काम से हर हालत में हटा ही लेंगी। सब देख सकते हैं कि तुम इस काम के लायक नहीं हो। वान्या तुम से अच्छा रहेगा।"

"तुम शर्त लगा लो, तुम से बेहतर रहेगा," यूरा बोला।

"यह तो आगे चलकर देखा जायेगा," मैंने कहा।

"तुम बहस किसलिए कर रहे हो? तुम देख सकते हो कि तुम्हें अच्छा फल नहीं मिल रहा है।"

कुछ और लड़कों ने सुर में सुर मिलाया और मुझसे छोड़ देने के लिए कहा, लेकिन मैंने उनकी एक न सुनी।

"अगर ओल्गा निकोलायेव्ना चाहती हैं, तो मुझसे यह काम छुड़ा लें, लेकिन मैं ख़ुद नहीं छोड़ूंगा।"

"अच्छी बात है, ओल्गा निकोलायेव्ना छुड़ा देंगी। लेकिन यह तुम्हारे लिये और बुरा होगा," लड़के बोले।

मुझे नहीं मालूम मैं किस लिए इतना ज़िद्दी हो गया था। शिशकिन के इस बार भी इमला में २ नम्बर प्राप्त करने के बाद मुझे आग्रह नहीं करना चाहिये था। यदि कोई दूसरा उसकी सहायता करता, तो संभव था उसे वास्तव में अच्छे नम्बर मिल सकते। ख़ैर, अब कुछ नहीं हो सकता था।

उस दिन शिशकिन को और मुझे बहुत ही बुरा लगा।

"शायद यह आख़िरी दिन होगा कि हम एक साथ पढ़ेंगे। ओल्गा निकोलायेव्ना बहुत करके कल ही मेरी जगह किसी दूसरे को लगा देंगी," जब मैं स्कूल के बाद उसके घर गया, तो मैंने कहा।

"शायद वह ऐसा न करें," कोस्त्या बोला।

"मुझे डर है कि कर देंगी। मैं कुछ अच्छा नहीं हूं। मेरा ख़याल है, मुझे पढ़ाने का तरीका नहीं आता। मुझे दुख बस इसी बात का है कि ईगोर अलेक्सान्द्रोविच इससे खुश नहीं होंगे। मैंने उनसे वायदा किया था कि तुम्हें अच्छे नम्बर पाने के लिए मैं तुम्हारी मदद करूंगा और देखो, क्या हो गया। उन्होंने कहा था कि यह पायनियर कर्म है। मैंने इसे चौपट कर डाला, और अब आगे से कोई भी किसी काम के लिए मुझ पर विश्वास नहीं करेगा।"

"लेकिन हो सकता है, इसमें तुम्हारी कोई ग़लती न हो? हो सकता है इसमें मेरा ही दोष हो," कोस्त्या बोला। "मुझे ख़ुद ही अधिक परिश्रम करना चाहिये था। देखो, मैं तुम्हें एक भेद बताता हूं। यह मेरा कुसुर है। मैं हमेशा ही काम जल्दी से निबटा देने की फ़िक्र में रहता हूं और इसलिए मुझसे इतनी अधिक ग़लतियां होती हैं। अगर मैं इतनी जल्दबाज़ी न करूं, तो मैं ज़्यादा सीख सकता हूं।"

"तुम इतनी जल्दबाज़ी क्यों करते हो?"

"यह एक भेद है, लेकिन मैं तुम्हें बता दूंगा। मैं इतनी जल्दी इसलिए निबटा देना चाहता था कि मैं लोबज़िक को सिखा सकूं।"

"अच्छा, और तुम सिखाते भी थे?"

"हां-हां।"

"तो यह वजह है तुम्हारी गन्दी लिखावट का! अपने काम की ओर ध्यान देने के बजाय तुम तमाम वक़्त लोबज़िक के बारे में सोचते रहते थे!"

"मेरे ख़याल से ऐसा ही है। मैं असल में दोनों तरफ़ की सोचता था, और शायद इसीलिए मैं ठीक से काम न कर सका।"

"इस तरह आधी को छोड़ सारी के पीछे धाने से तुम्हें क्या मिलता है। तुम्हें पहले हाथ का एक काम ही पूरा करना चाहिए।"

"ठीक है, लेकिन एक काम तो मैं पूरा कर ही चुका हूं।"

"कौन सा?"

"मैंने लोबज़िक को सिखा लिया है। एक मिनट ठहरो, तुम्हें दिखाता हूं। लोबज़िक इधर आओ!"

लोबज़िक उसके पास दौड़ा हुआ आया। कोस्त्या ने उसे "३" अंक लिखा हुआ गत्ते का एक टुकड़ा दिखाया। लोबज़िक तीन बार भोंका।

"और यह?"

कोस्त्या ने उसे "५" दिखाया। लोबज़िक पांच बार भोंका।

"देखो? मैं धीरे से अपनी उंगलियों से चुटकी बजाता हूं और वह जान जाता है कि भोंकना कब रोक देना चाहिए।"

"तुमने इसे कैसे सिखाया?" मैंने पूछा।

"यह आसान नहीं था, इतना मैं तुम्हें बता दूं। शुरू में यह किसी भी चीज़ के लिए कोई इशारा नहीं समझता था। तब मैंने यह तरीक़ा अपनाया: ज्योंही यह ठीक बार भोंक चुकता, मैं शक्कर की डली या सॉसेज का टुकड़ा या कोई दूसरी चीज़ उसके मुंह में धकेल देता और उसी समय अपनी उंगलियों से चुटकी बजाता। वह खाने के लिए लपकता और भोंकना बंद कर देता। मैंने यही सिलसिला कितने ही दिनों तक जारी रखा और फिर एक दिन मैंने बिना कुछ फेंके हुए ही अपनी उंगलियों से चुटकी बजा कर कोशिश की। आख़िर मैंने इसे इस तरह भोंकते जाने से रोक लिया, क्योंकि अब तक वह मेरी चुटकी की आवाज़ सुनते ही कुछ दूसरी हरकतें करने का आदी हो चुका था। चुटकी सुनते ही यह भोंकना बंद कर देता। शुरू में तो मैं चुटकी ज़ोर से बजाता था, लेकिन अब तो उसने चुटकी की बहुत मन्दी आवाज़ पकड़ना भी सीख लिया है।"

"तो तुम ख़ुद सीखने के बजाय अपने कुत्ते को सिखाते रहे!"

"हां," वह बोला। "मैं हर चीज़ को हमेशा उलटे तरीक़े से करता हूं, न? मेरे ख़याल से यह इसलिए है कि मुझ में इच्छा-शक्ति की कमी है। लेकिन अब तो मैंने उसे सिखा ही लिया है, अब मैं जम कर बैठ कर बाक़ायदा पढ़ सकता हूं। अब मुझे कोई ताक़त नहीं रोक सकती। तुम देख लेना!"

"मैं नहीं," मैंने कहा। "अब तो वान्या ही देखेगा।"

अगले दिन कोस्त्या ने ओल्गा निकोलायेव्ना द्वारा घर पर करने के लिये दिये गये तमाम अभ्यासों, अपने रफ़ काम और अपने साफ़ काम—सबको—इकट्ठा किया और अपने साथ स्कूल ले गया।

"देखिये, ओल्गा निकोलायेव्ना," वह उन्हें अपनी कापियां दिखाते हुए बोला। "ये तमाम वे अभ्यास हैं, जो आपने मुझे करने के लिये दिये थे। ये अच्छे किये हुए हैं और ये हैं बुरे किये हुए। आप इन कापियों से ख़ुद समझ सकती हैं कि वीत्या ने मुझसे ग़लत किये गये इन अभ्यासों को कितनी बार फिर करवाया है। फिर क्या आप कह सकेंगी कि उसने मेरे साथ काफ़ी मेहनत नहीं की है?"

"मुझे विश्वास है कि वीत्या अपने बस भर मेहनत कर रहा है," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं। "लेकिन अगर तुम ख़ुद अपनी मदद नहीं करोगे, तो कोई भी तुम्हारी मदद नहीं करेगा। तुम्हें इस मामले में गम्भीर होना चाहिये। तुम्हारी जगह वीत्या याद नहीं कर सकता। तुम्हें अपने लिए ख़ुद याद करना होगा।"

"मैं याद करूंगा, ओल्गा निकोलायेव्ना, मैं ईमानदारी से वायदा करता हूं। लेकिन आप बस वीत्या को मेरी मदद करते रहने दें। उसने मेरे साथ बहुत समय लगाया है।"

"बहुत अच्छा, हम उसका काम जारी रहने देंगे! मैं देख रही हूं कि वह अपना काम ध्यान से कर रहा है। जल्दी ही सर्दियों की छुट्टियां होंगी। मैं तुम्हें छुट्टियों में करने के लिए कुछ अभ्यास दूंगी, और मैं वीत्या को भी समझा दूंगी कि वह किस तरह अपनी सहायता का अच्छा फल पा सकता है।"

हम बहुत ही प्रसन्न थे कि ओल्गा निकोलायेव्ना ने मुझे कोस्त्या के साथ परिश्रम जारी रखने की आज्ञा दे दी।

"ओल्गा निकोलायेव्ना," कोस्त्या बोला। "हमारे पास एक कुत्ता है, जो खेल दिखा सकता है। उसका नाम है लोबज़िक। क्या आप नये साल के उत्सव में हमें उसके खेल दिखाने देंगी?"

"तुम्हारा कुत्ता क्या करता है?"

"वह हिसाब कर सकता है। वह उस कुत्ते की तरह गिन सकता है जो हमने सर्कस में देखा था।"

"सच! और उसे सिखाया किसने?"

"जी, हमने।"

"अच्छी बात है। नये वर्ष के उत्सव में तुम अपने कुत्ते को लाना। मुझे विश्वास है लड़के ऐसे होशियार कुत्ते को देखना पसन्द करेंगे।"

उन्नीसवाँ अध्याय



मेरी अनुपस्थिति में कोस्त्या का लोबज़िक को गिनना सिखाना मुझे अच्छा नहीं लगा, क्योंकि मैं लोबज़िक को सिखाने में भी उसकी सहायता करना चाहता था। लेकिन अब तो वास्तव में काफ़ी देर हो चुकी थी।

"परवाह मत करो," कोस्त्या बोला, "मुझे सड़क पर कभी न कभी कोई दूसरा बेघर कुत्ता ज़रूर मिलेगा। सिखाने के लिए वह कुत्ता मैं तुम्हें दे दूंगा।"

"मैं किसी कुत्ते को अकेला ही नहीं सिखाना चाहता," मैंने कहा। "मुझे तो एकसाथ मिलकर काम करना पसन्द है। इसी तरह ज़्यादा मज़ा आता है।"

"लेकिन मैं तुम्हारी मदद करूंगा। हम उसे एकसाथ सिखायेंगे, और इस तरह तुम्हारे पास भी एक सीखा-सिखाया कुत्ता हो जायेगा।"

"नहीं," मैं बोला। "यह बात अच्छी नहीं है। नया कुत्ता हाथ लगते ही हम उसे सिखाना शुरू कर देते हैं और अपनी सारी लिखाई-पढ़ाई भूल जाते हैं। हमें यह सिलसिला गर्मियों तक दूर ही रखना चाहिये।"

"अच्छी बात है, गर्मियों तक रहने दो। हम लड़कों से कह देंगे कि लोबज़िक को हम दोनों ने सिखाया है और नये वर्ष के उत्सव पर हम दोनों एकसाथ उसके खेलों का प्रदर्शन करेंगे।"

"अगर वह मंच पर डर गया, तो ?" मैंने कहा। "हमें उसे सबसे पहले लोगों के सामने डर न खाना सिखाना पड़ेगा।"

"यह हम कैसे कर सकते हैं?"

"हमें उसे ऐसी जगहों पर ले जाना चाहिए जहां ज़्यादा लोग हों। अपनी पढ़ाई ख़त्म करने के बाद हम उसे मेरे घर ले चलेंगे। वहां हम उसके खेल घर के लोगों को दिखायेंगे।"

जब हम अपनी पढ़ाई निबटा चुके, कोस्त्या ने लोबज़िक के गले में पट्टा डाल कर उसमें ज़ंजीर अटकाई, और हम मेरे घर की ओर चल दिये। सौभाग्यवश चाची नाद्या और चाचा सेर्योझा भी उस दिन हम लोगों से मिलने आये हुए थे।

"हम आप लोगों को एक ऐसा कुत्ता दिखायेंगे, जो गिन सकता है," मैंने कहा। "आप सब लोगों को ऐसा दिखाना चाहिये जैसे आप थियेटर देख रहे हों, और इसे ध्यान से देखिये।"

हमने लोबज़िक को एक स्टूल पर बैठा दिया। कोस्त्या ने कार्ड बोर्ड के अंकों वाले छोटे छोटे टुकड़े अपनी जेब से निकाले और काम शुरू कर दिया। लोबज़िक ने तमाम उत्तर सही दिये। तभी मुझे एक विचित्र विचार सूझा। लोबज़िक को अंक दिखाने के बजाय, मैंने कहा: "अच्छा, लोबज़िक, दो को दो से गुणा करने पर कितना होता है?"

लोबज़िक चार बार भोंका। इसमें सन्देह नहीं कि मैंने बिलकुल ठीक समय पर चुटकी बजाई थी।

लीका बहुत खुश हुई: "देखो! यह गुणा भी कर सकता है!"

हरेक ने लोबज़िक को इतनी अच्छी तरह सिखाने के लिए हमारी प्रशंसा की। हमने उन्हें बताया कि हम अपने स्कूल में नव-वर्ष के उत्सव में उसके खेलों का प्रदर्शन कर रहे हैं।

"इस के लिए क्या तुम्हारे पास विशेष लिबास है?" लीका ने पूछा।

"हमें लिबास की क्या ज़रूरत है?" मैंने कहा।

"बिना लिबास के फीका रहेगा," लीका बोली। "सर्कस के मसखरे जिस तरह के लम्बे लम्बे अजीब से टोप पहनते हैं, वैसे ही टोप मैं तुम्हारे लिए बना दूंगी।"

"तुम काहे से बनाओगी?"

"मेरे पास कुछ रंगीन काग़ज़ है। मैंने नये साल के पेड़ के लिए ख़रीदा था।"

"अच्छी बात है," मैंने कहा। "मेरे ख़याल से टोपों के साथ यह अच्छा रहेगा।"

"क्या तुम लोबज़िक के लिए भी एक ऐसा ही नहीं बना सकतीं?"

"नहीं, मसखरे के टोप में लोबज़िक अजीब और बेहूदा दिखाई देगा। मैं उसके लिए सुनहरी पन्नी का एक पट्टा बना दूंगी।"

"अच्छी बात है," मैंने कहा।

"चलो, अब ग्लेब स्कमेइकिन के यहां चला जाय और उसे लोबज़िक के करतब दिखाये जायें," कोस्त्या ने सुझाव रखा।

हम ग्लेब के यहां गये, ग्लेब के यहां से यूरा के घर पहुंचे और वहां से तोल्या के। हमने हर जगह लोबज़िक का प्रदर्शन किया और उसे इनाम में तरह-तरह की स्वादिष्ट वस्तुएं खाने को मिलीं। हम वान्या पखोमोव के घर की ओर चले। वान्या के माता-पिता से मिलने के लिए कुछ लोग आये हुए थे। हम प्रसन्न हुए कि हमें वास्तविक रिहर्सल का अवसर मिलेगा! किन्तु यहां हर चीज़ बुरी तरह चौपट हो गई। लोबज़िक ने एक प्रश्न का भी सही उत्तर नहीं दिया! उसने सब गड़बड़ घुटाला कर दिया और अन्त में तो भोंकना बिलकुल ही बन्द कर दिया। हमें

इतनी शर्म आई कि निगाह उठा कर नहीं देख सके। कितना अपमान, विशेषत: ऐसी स्थिति में, जबकि हमने पहले अपने आश्चर्यजनक कुत्ते की गणितज्ञता के बारे में शेखी बघारी थी!

"तुम्हारे ख़याल में इसे क्या हो गया था?" जब हम घर के बाहर आ चुके थे, तो कोस्त्या बोला।

उसने लोबज़िक को शक्कर की डली डाली, लेकिन लोबज़िक ने इसे बाहर थूक दिया।

"तो यह बात है," मैंने कहा। "इसे खाने के लिए बहुत ज़्यादा मिल गया। इसीलिए यह ठीक से जवाब देने की परवाह नहीं करता।"

"मान लो कि यह यही हरकत स्कूल के उत्सव में करे, तो?" कोस्त्या बोला। "यह तमाम स्कूल के सामने हमारी नाक कटायेगा। शायद अच्छा यही होगा कि हम इसके कार्यक्रम को रोक ही दें।"

"बिलकुल नहीं," मैंने कहा। "अब रोकने के लिए काफ़ी देर हो चुकी है। हम कह चुके हैं कि हम यह कार्यक्रम पेश करेंगे, इसलिए हमें इसमें सफल होना ही चाहिये।"

उत्सव के पहले दिन कोस्त्या तमाम दिन बुरी तरह घबराया हुआ रहा। वह ख़ामोश नहीं बैठ सकता था और उसने लोबज़िक को थोड़ी देर के लिए भी चैन से नहीं बैठने दिया।

"इसे अकेला छोड़ दो," मैंने कहा। "तुम इसे इतना थका दोगे कि शाम तक इसकी भोंकने की इच्छा भी जाती रहेगी।"

"अच्छी बात है, मैं इसे और ज़्यादा परेशान नहीं करूंगा। लोबज़िक, जाओ और आराम करो।"

हमने लोबज़िक को छोड़ा और प्रदर्शन की तैयारी करने लगे। लीका ने हमारे लिए दो टोप बना दिये थे: मेरा टोप नीला था और उस पर छोटे छोटे सफ़ेद सितारे बने थे और कोस्त्या का सुनहरे सितारों वाला, हरे रंग का था। इसके अलावा उसने हमारे लिए सफ़ेद रंग के कालर और सुनहरी कफ़ भी बनाये थे। हमने उन्हें पहनकर देखा और बहुत खुश हुए। हम बिलकुल सर्कस के असली खेल दिखाने वाले दिखाई देते थे। लोबज़िक के लिए भी एक सुनहरा पट्टा था।

आख़िर स्कूल जाने का दिन आ पहुंचा। जब तक कन्सर्ट का आधा कार्यक्रम चलता रहा, हम लोबज़िक को दर्शक-मंडली से अभ्यस्त कराने के लिए हाल में बैठे रहे। इसके बाद हम अपनी बारी की प्रतीक्षा में पीछे चले गये और वहां से दूसरे कार्यक्रम देखते रहे। हम ने अपने लिबास पहने और लोबज़िक की गर्दन पर पट्टा चढ़ाया। फिर पर्दा उठा और हरेक ने देखा कि मैं और कोस्त्या अपने चमकदार टोपों में मंच पर चहलक़दमी कर रहे हैं। कोस्त्या लोबज़िक की जंजीर पकड़े आगे आया, और मैं उस संदुकची को लिये उसके पीछे। इसमें हमने प्रदर्शन के लिए आवश्यक वस्तुएं रखी हुई थीं। कोस्त्या ने लोबज़िक को मंच के बीच एक स्टूल पर बैठा दिया और दर्शकों की ओर मुड़ा।

"नमस्कार, बंधुओ!" वह बोला। "हमें बड़ी प्रसन्नता है कि हम आपके सामने लोबज़िक,

एक गणितज्ञ कुत्ते को, खड़ा कर रहे हैं। अभी तक यह केवल दस तक की गिनती ही जानता है, लेकिन वह अब भी सीख रहा है और अगली बार इससे भी अच्छा कर सकेगा। आप सबसे प्रार्थना है कि बहुत ही ख़ामोशी के साथ बैठें, क्योंकि लोबज़िक पहली ही बार सार्वजनिक प्रदर्शन में उतर रहा है, और अगर शोर-गुल हुआ, तो संभव है वह मंच-भय का शिकार हो जाये।"

स्पष्ट है कि कोस्त्या स्वयं बहुत घबराया हुआ था, क्योंकि जब वह बोला, तो उसकी आवाज़ कांप रही थी। मैं भी थोड़ा घबराया हुआ था। वास्तविकता यह है कि यदि मुझे बोलना पड़ता, तो मुझे विश्वास है कि मैं एक शब्द भी नहीं बोल पाता।

"और अब हम शुरू करेंगे," कोस्त्या बोला।

मैंने लकड़ी की तीन गिट्टियां निकालीं और लोबज़िक के सामने मेज़ पर एक दूसरी की बग़ल में रख दीं, ताकि उन्हें हरेक देख सके।

"अब लोबज़िक हमें बतायेगा कि मेज़ पर लकड़ी की कितनी गिट्टियां हैं," कोस्त्या ने घोषणा की। "लोबज़िक, गिनो!"

लोबज़िक तीन बार भोंका।

लड़कों ने ज़ोर से तालियां बजाईं और खुशी से चिल्लाये, जिस से लोबज़िक इतना डर गया कि वह स्टूल से कूदा और भाग जाने की कोशिश की। लेकिन कोस्त्या ने उसे पकड़ लिया, उसके मुंह में शक्कर की डली डाल कर उसे स्टूल पर फिर ला बैठाया। लोबज़िक शक्कर चबा रहा था, इसी बीच हाल में खामोशी हो गई। मैंने लकड़ी की एक और गिट्टी संदुकची में से निकाली और उसे पहले की तीनों गिट्टियों के बराबर में रख दिया।

"अब यहां कितनी गिट्टियां हैं?" कोस्त्या ने पूछा।

लोबज़िक चार बार भोंका।

लड़कों ने फिर तालियां बजाईं, और लोबज़िक ने फिर भागने की कोशिश की, लेकिन कोस्त्या ने उसे वक्त पर पकड़ लिया और उसके मुंह में शक्कर का टुकड़ा सरका दिया।

मैंने लकड़ी की तीन गिट्टियां और मेज़ पर रख दीं, और लोबज़िक सात बार भोंका।

फिर मैंने "२" अंक लिखा गत्ते का एक टुकड़ा उठाया और इसे दर्शकों को दिखाया।

"यह कौन सा अंक है?" कोस्त्या ने लोबज़िक से पूछा।

लोबज़िक दो बार भोंका।

हमने लोबज़िक को अलग-अलग तरह के अंक दिखाये और उसने सब का सही उत्तर दिया।

फिर कोस्त्या ने पूछा: "अब हमें बताओ, दो को दो में गुणा करने पर क्या होता है?.. तीन और तीन?.. तीन जमा चार?"

लोबज़िक हर बार ठीक भोंका। दर्शकगण तालियां बजाते रहे, किन्तु अब तक लोबज़िक अभ्यस्त हो चुका था इसलिए वह घबराया नहीं। मुझे भी अब कोई घबराहट नहीं थी। मैंने लड़कों से कहा कि हमारा लोबज़िक गणित के प्रश्न भी हल कर सकता है, और मैंने उन्हें दस अंक तक का कोई भी प्रश्न उससे पूछने के लिए निमंत्रित किया।



अगली पंक्ति में से एक लड़का उठा और उसने लोबज़िक को यह प्रश्न करने के लिए दिया: "कार्क सहित एक बोतल की क़ीमत दस कोपेक है। बोतल की क़ीमत कार्क की क़ीमत से आठ कोपेक अधिक है। बोतल और कार्क की अलग अलग क्या कीमत होगी?"

"लोबज़िक, अब फिर अपनी सोचने वाली टोपी पहनो और जवाब दो।"

लेकिन सोचने का काम तो वास्तव में मुझे करना था! मैंने प्रश्न को अपने दिमाग़ में हल कर लिया: दो कोपेक की कार्क, आठ कोपेक की बोतल। दोनों के दस कोपेक!

"अच्छा, लोबज़िक, कार्क की क्या क़ीमत हुई?"

लोबज़िक दो बार भोंका।

"और बोतल?"

लोबज़िक आठ बार भोंका।

आप सुनते कि उन्होंने कितना हल्ला मचाया!

"ग़लती क्या है?" मैंने कहा। "अगर बोतल और कार्क दोनों की क़ीमत दस है, इसके मायने हुए कि बोतल की क़ीमत आठ है और कार्क की दो।"

"लेकिन प्रश्न है कि बोतल की क़ीमत कार्क की क़ीमत से आठ कोपेक अधिक है। अगर कार्क की क़ीमत दो कोपेक है, तो बोतल की दस होनी चाहिये, लेकिन उन दोनों की एक साथ क़ीमत दस कोपेक है," लड़कों ने समझाया।

मैंने महसूस किया कि मैं ग़लती कर गया हूं।

"सुनते हो, लोबज़िक? तुमने ग़लती कर दी है," मैंने कहा। "अब फिर सोचो और हमें सही उत्तर दो।"

लेकिन दरअसल वह वैसा ही तरोताज़ा बैठा रहा, जबकि मैं अपने ग़रीब दिमाग़ के साथ खींचातानी कर रहा था।

"बस, सिर्फ़ एक मिनट!" मैंने लड़कों से कहा, "उसे सोचने का मौक़ा दीजिये।"

"ठीक है," लड़के चिल्लाये। "उसके साथ जल्दबाज़ी मत करो। कुत्ते के लिए यह प्रश्न ज़रा कठिन है।"

मैं वहां बौखलाया हुआ खड़ा-खड़ा अपने दिमाग़ में प्रश्न निकालने का प्रयत्न करने लगा। "अगर बोतल की क़ीमत कार्क की क़ीमत से आठ कोपेक अधिक है, इसके मायने हुए कि कार्क की क़ीमत दो कोपेक और बोतल की दस। लेकिन इस तरह तो दोनों की क़ीमत बारह कोपेक हो जायेगी, जबकि प्रश्न में दोनों की क़ीमत दस है। और अगर डाट की क़ीमत दो कोपेक है और बोतल की आठ, तो बोतल की सिर्फ़ छः कोपेक अधिक हुई।" मुझे हो क्या गया है? यह कैसा चक्कर है!

"इसे आप दो मिनट और दें," मैंने दर्शकों से कहा। "वह जल्दी ही सही उत्तर देगा।"

"जितना समय वह लेना चाहे उसे लेने दो," वे उत्तर में चिल्लाये। "वह सिर्फ़ कुत्ता ही तो है। उससे इस तरह के सवाल के तुरत जवाब की आशा नहीं की जा सकती।"

"पलक मारते ही जवाब देने की आशा तो किसी से भी नहीं की जा सकती," मैंने सोचा और अपना दिमाग़ लड़ाता रहा।

"सुन, ओ गोबरगणेश!" कोस्त्या धीरे से बुदबुदाया। "कार्क की क़ीमत एक कोपेक होगी, दो नहीं!"

अब मेरी समझ में आया कि गड़बड़ क्या थी। वास्तव में कार्क की क़ीमत एक कोपेक थी और बोतल की उससे आठ कोपेक अधिक, जिसके मायने हुए नौ, और दोनों की मिला कर क़ीमत है दस।

"वह समझ गया है!" मैं चिल्लाया। "होशियार! लोबज़िक आपको जवाब देने के लिए तैयार है।"

लड़के शान्त हो गये।

"अब, लोबज़िक, कार्क की क्या क़ीमत हुई?"

लोबज़िक एक बार भोंका।

"शाबाश!' लड़के चिल्लाये।

"हिश्त!" मैंने कहा। "यह अभी जवाब पूरा थोड़े ही हुआ है! अब उसे बताने दीजिये कि बोतल की क़ीमत कितनी हुई।"

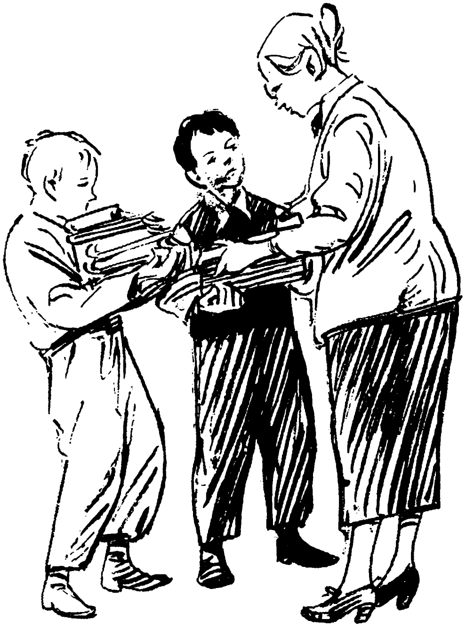
लोबज़िक नौ बार भोंका।

इससे तमाम दर्शक चमत्कृत हो उठे! लड़कों ने तालियां बजाईं और चिल्लाये और खुशी के मारे अपने पांव पीटने लगे।

"अद्भुत कुत्ता है!" वे बोले। "उसने एक ग़लती की, लेकिन अन्त में सही उत्तर दे दिया।"

इस प्रकार लोबज़िक का प्रथम सार्वजनिक प्रदर्शन समाप्त हुआ।

बीसवाँ अध्याय



इस प्रकार नये वर्ष का आगमन हुआ तथा सर्दियों की छुट्टियां आरम्भ हुईं। हर घर में सुन्दर नव-वर्ष-वृक्ष लगाये गये थे और प्रत्येक उल्लास की भावना से परिपूर्ण था। मैं और कोस्त्या भी छुट्टी की तरंग में थे, किन्तु हमने अपने खाली समय का एक भाग अध्ययन में लगाने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। ओल्गा निकोलायेव्ना ने हमें करने के लिए विशेष कार्य दिया था और कोस्त्या पढ़ने के लिए इतना उत्सुक था कि वह इसके लिए पूरा दिन देने के लिए तैयार था। परन्तु मैंने फ़ैसला किया था कि यदि हमने दो घण्टे प्रतिदिन पढ़ाई के लिए दिये तो काफ़ी होगा और शेष समय खेलने या पुस्तकें पढ़ने में व्यतीत किया जायेगा। इस प्रकार प्रतिदिन हमने इकट्ठे पढ़ाई की और कोस्त्या ने प्रगति के चिन्ह दिखाने आरम्भ कर दिये।

छुट्टियां समाप्त होने के कुछ समय बाद हमें इमला लिखवाई गई और कोस्त्या ने ३ नम्बर प्राप्त किये। वह इतना प्रसन्न था कि आप समझते जैसे कि उसने ५ नम्बर प्राप्त किये हों।

"तुम इतने ख़ुश किस लिये हो?" मैंने उससे कहा। "३ नम्बर कोई इतने आश्चर्य-जनक नम्बर तो नहीं होते।"

"मुझे मालूम है, लेकिन इस समय तो मेरे लिए यही बहुत काफ़ी है। एक मुद्दत से मुझे रूसी में ३ नम्बर नहीं मिले थे। मगर मैं इतने पर ही चुप नहीं बैठ जाऊंगा। तुम देखोगे कि अगली बार मैं ४ नम्बर लूंगा और इसके बाद ख़ुद-ब-ख़ुद ५ नम्बर आते दिखाई देंगे।"

"बहुत अच्छे!" यूरा बोला। "लेकिन फिलहाल तुम ४ के लिए ही अपनी कोशिश जारी रखो, और फिर हमारी कक्षा में एक भी ऐसी नहीं रहेगा जिसे ३ मिलते हों। दूसरे लड़के ४ और ५ ही पा रहे हैं।"

"परवाह मत करो," कोस्त्या ने उत्तर दिया। "सब ठीक हो जायेगा। कक्षा को मेरे लिए अब और शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा। मैं जानता हूं, अब हम सबको कक्षा के मान के लिए संघर्ष करना है। मैं कक्षा को पकड़ पाने में कुछ बहुत दूर नहीं रह गया हूं।"

ओल्गा निकोलायेव्ना भी प्रसन्न थीं कि शिशकिन ने प्रगति प्रारम्भ कर दी है।

"इस समय तुम दोनों वास्तव में थोड़ा बहुत सामाजिक कार्य कर रहे थे," वह एक दिन हम से बोलीं। "दूसरे तमाम लड़कों के पास कुछ न कुछ उपयोगी कार्य करने के लिए हैं, लेकिन तुम दोनों के पास कुछ नहीं है।"

"हम करने के इच्छुक हैं," मैंने कहा।

"हां, हम इच्छुक हैं," कोस्त्या ने स्वर में स्वर मिलाया। "मैं बहुत दिनों से दीवारी अख़बार के लिए काम करने की इच्छा संजोये हुए हूं। लेकिन मुझे कोई सम्पादक मंडल में चुनता ही नहीं।"

"जी हां," मैंने कहा। "वे हमें सम्पादक मंडल के लिए चुन लें।"

"नहीं, इसके लिए अभी बहुत जल्दी है। केवल सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी ही दीवारी अखबार के लिए कार्य कर सकते हैं," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं।

"तब ठीक है, हम किसी भी तरह का काम लेने को तैयार हैं," कोस्त्या ने कहा। "अगर आप चाहें, तो हम स्वास्थ्य-समिति का काम संभाल सकते हैं। जब मैं दूसरी कक्षा में था, तो एक बार मैं स्वास्थ्य-समिति में रह चुका हूं। हरेक को अपने हाथ धोने और अपने कानों को साफ़ रखने के लिए आदेश देने में मुझे बड़ा मज़ा आता था।"

"हमारी स्वास्थ्य-समिति पहले ही बनी हुई है। मगर मेरे पास तुम्हारे लिए एक दिलचस्प काम है। हम कक्षा का अपना पुस्तकालय खोलना चाहते हैं। अगर तुम चाहो, तो इसकी ज़िम्मेवारी संभाल सकते हो।"

"हमें किताबें कहां से मिलेंगी?" मैंने पूछा।

"स्कूल के पुस्तकालय से। मैं उनके लिए तुम्हें एक अलमारी भी दिलवा दूंगी।"

"मैं तैयार हूं," कोस्त्या बोला। "मुझे किताबें पढ़ने का शौक़ है।"

"मुझे भी," मैंने कहा।

"यह अच्छा रहा। तुम्हें अच्छे पुस्तकाध्यक्ष बनने का प्रयत्न करना चाहिये। इसके मायने हैं, पुस्तकों की अच्छी प्रकार देखभाल करना और यह देखना कि लड़के भी वैसा ही करें।"

हम स्कूल-पुस्तकालय की अध्यक्षा सोफ़िया इवानोव्ना के पास गये और उन्हें बताया कि हम चौथी कक्षा के पुस्तकाध्यक्ष हैं तथा उनसे कुछ पुस्तकें देने के लिए कहा।

"अच्छी बात है," सोफ़िया इवानोव्ना बोलीं। "मेरे पास चौथी कक्षा के लिए कुछ पुस्तकें हैं। क्या तुम उन्हें अभी ले जाओगे?"

उन्होंने हमें पुस्तकों का एक पूरा ढेर दे दिया, और हम उसे कई बारियों में करके अपने कमरे में ले आये। वे कुल मिला कर १०० के लगभग थीं, किन्तु जब हमने उन सबको ख़ानों में लगाया, तो इतनी दिखाई नहीं दीं, क्योंकि वे केवल तीन ख़ानों में ही आ गईं। दूसरे खाने ख़ाली ही पड़े थे।

"शायद हमें इन खानों को भरने के लिए कुछ पुस्तकें घर से लानी होंगी?" कोस्त्या बोला। "पांच या छः तो मैं ला सकूंगा।"

"मैं भी इतनी ही," मैंने कहा, "लेकिन वे तीन ख़ानों को भरने के लिए काफ़ी नहीं होंगी।"

"मान लो, हम दूसरे लड़कों से कहें? उनके पास कुछ पुरानी किताबें घर में इधर-उधर पड़ी ही होंगी। हम उनसे उन्हें यहां ले आने के लिए कहें।"

हमने ओल्गा निकोलायेव्ना को ख़ानों को भरने के लिए अपनी योजना बताई।

"अच्छी बात है, लड़कों से कहो। शायद वे तुम्हारी सहायता कर सकें," वह बोलीं।

अगले दिन हमने कक्षा में घोषणा की कि हम अपना पुस्तकालय खोल रहे हैं। हमने कहा कि अभी तक उसमें काफ़ी पुस्तकें नहीं हैं और इसलिए यदि किसी के पास घर पर ऐसी पुस्तकें हों, जो वह पढ़ चुका हो तो क्या वह उन्हें पुस्तकालय को प्रदान करने की कृपा कर सकेगा। लड़कों ने वचन दिया और शीघ्र ही अलमारी को भर लिया। हम उनका वितरण तुरन्त आरम्भ कर देना चाहते थे, लेकिन ओल्गा निकोलायेव्ना ने कहा कि सबसे पहले हमें उनकी सूची बना लेनी चाहिये। हमने स्वयं ही एक मोटी कापी ख़रीदी और तमाम पुस्तकों के नाम उसमें चढ़ाये और हरेक पुस्तक पर नम्बर डाले। अब यदि हमें किसी पुस्तक की आवश्यकता पड़ती, तो उसके लिए तमाम ख़ानों को खंगालने की ज़रूरत नहीं थी, बस अपनी कापी में देखने भर की देर थी।

कोस्त्या बहुत प्रसन्न था कि हमारे पुस्तकालय की व्यवस्था इस ढंग की थी। पुस्तकों से तमाम ख़ाने भरे देखना हमें विशेष रूप से पसन्द था।

"अब यह डटा डट भरी हुई है," वह बोला। "तमाम ख़ाने दबा कर भरे हुए हैं और कोई भी जगह खाली नहीं है।"

पुस्तकों की सराहना के निमित्त वह अलमारी का दरवाज़ा खोलता रहा। उनमें से कुछ बहुत पुरानी और ख़स्ता हालत में थीं, जिनके मुखपृष्ठ फटे हुए थे और पन्ने अलग-अलग हो गये थे। हमने फटी हुई पुस्तकें घर ले जाकर उन्हें व्यवस्थित रूप देने का फ़ैसला किया। और फिर कोस्त्या के घर पढ़ाई समाप्त करने के बाद हम दोनों मेरे घर आये, क्योंकि मेरे पास घर पर कुछ सरेस थी, और हम किताबों को दुरुस्त करने के काम पर जुट गये। जब लीका ने हमें यह करते देखा, तो उसने भी हमें सहायता देने की इच्छा प्रकट की।

जिल्द बांधने में हमें सबसे अधिक दिक़्क़त हुई। कोस्त्या पूरे वक्त कुढ़ता रहा।

"इधर देखना!" वह कहता। "पता नहीं, ये लोग अपनी किताबों से क्या करते हैं। ऐसा मालूम होता है, जैसे वे इन से एक दूसरे का सिर फोड़ते हों।"

"अरे नहीं, यक़ीनी तौर पर वे ऐसा न करते होंगे," लीका बोली।

"तब बताओ, इनके ऊपर के पट्ठे क्यों उखड़ गये? अगर तुम आराम से बैठकर किताब पढ़ो, तो क्या ऊपर का पट्ठा उखड़ जायेगा?"

"मेरे ख़याल से तो ऐसा नहीं होगा।"

"बस, यही तो मेरा मतलब है! अब ज़रा इसे देखो। एक पूरा सफ़ा अलग उखड़ा पड़ा है। क्यों? क्योंकि किसी ने पढ़ने के बजाय सफ़े को पकड़ कर खींच लिया होगा। मैं तो इस तरह किताब ख़राब करने वाले के बाल नोचना चाहूंगा। अब यह सफ़ा कहीं गिर पड़ेगा और खो जायेगा। किताबें रखने का यह कोई तरीका है?"

"बिलकुल नहीं," हमने सहमति प्रकट की।

"और तुम इसके बारे में क्या कहते हो?" वह हर बार अधिक ग़ुस्सा होते हुए कहता रहा। "किस ने हाशिये में छः टांगों वाला कुत्ता बना डाला है। क्या यह ठीक है?"

"सचमुच यह ठीक नहीं है," लीका बोली। "भला किसी ने कभी छः टांगों वाला कुत्ता भी देखा है!"

"मेरे कहने का मतलब यह नहीं है, मूर्ख! मेरा मतलब है कि पुस्तकों में कुत्ते बनाना क्या ठीक है?"

"ओह, नहीं," लीका ने सहमति प्रकट की।

"बेशक नहीं है। मेरे कहने का यह मतलब है कि चार टांगें हों या छः टांगें, इससे किताब के लिए कोई फ़र्क नहीं पड़ता। कुत्ते के बारे में मैं नहीं कह रहा हूं। कुछ भी हो, पुस्तकों में इस तरह की चीज़ें–कुत्ते, घोड़े या और कुछ बनाना ग़लत है। अगर सब कोई तमाम किताबों पर ऐसे चीथमकोड़े करता रहे, तो उनमें पढ़ने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा।"

उसने एक रबड़ उठाकर कुत्ते को मिटाना शुरू कर दिया। कुछ मिनट बाद वह फिर चिल्लाया:

"देखो! किसी ने चेहरा बनाया है, और वह भी स्याही से!"

उसने चेहरे को मिटाने की कोशिश की, लेकिन स्याही को काग़ज़ ने सोख लिया था, इसलिए रबड़ से मिटाने के परिणामस्वरूप सफ़े में छेद हो गया।

"अगर मुझे मालूम भर हो जाये कि किसने किया है!" वह गुस्से में भर कर बोला। "मैं उसे मज़ा चखा दूंगा! मैं यह किताब उसके सिर पर दे मारूंगा।"

"लेकिन तुमने तो अभी कहा था कि किसी को किताब किसी के सिर पर नहीं मारनी चाहिए," लीका बोली। "इससे किताब के पट्ठे को नुक़सान पहुंचता है।"

कोस्त्या ने विशेषज्ञ की तरह पुस्तक का परीक्षण किया।

"यह बिलकुल ठीक है," वह बोला, "इस किताब में जान है। इसका ऊपर का पट्ठा अच्छा और मज़बूत है।"

"अच्छा," मैंने कहा, "अगर सभी पुस्तकाध्यक्ष अपने पाठकों के सिर पर किताबें पटकना शुरू कर दें, तो पट्ठों का अकाल ही पड़ जाये।"

"तुम उन्हें पुस्तकों की ठीक देखभाल रखना कैसे सिखाओगे?" कोस्त्या बोला। "मैं उन्हें राष्ट्र की सम्पत्ति का इस तरह विनाश नहीं करने दूंगा।"

"हमें उनसे अधिक सावधानी बरतने के लिए कहना होगा," मैंने कहा।

"तुम इस बात को हिदायत के तौर पर क्यों नहीं लिख देते?" लीका ने कहा।

"लेकिन हम लिखेंगे क्या?" कोस्त्या ने पूछा।

"पुस्तकों को संभाल कर रखिये। वे लोहे की बनी हुई नहीं हैं," लीका ने सुझाया।

"तुमने कभी कहीं ऐसा लिखा देखा है?" मैंने उससे पूछा।

"कहीं नहीं," वह बोली। "मैंने यह ख़ुद सोचा है।"

"ठीक है, लेकिन यह बहुत समझदारी की बात नहीं हुई," मैंने कहा। "हरेक जानता है कि पुस्तकें लोहे की बनी नहीं होतीं।"

"यह हिदायत कैसी रहेगी: 'अपनी पुस्तकों की अपनी आंख की पुतली की तरह प्रिय समझिये'? बहुत अच्छी रहेगी, क्या तुम्हें नहीं जंचा?" कोस्त्या ने सुझाव रखा।

"नहीं," मैंने कहा। "मेरी राय में बहुत ऊंची बात हो जायेगी। भला पुतलियों का इससे कोई आस-पास का भी सम्बन्ध है?"

"अच्छी बात है, इसके बारे में क्या ख़याल है: 'पुस्तकों को संभाल कर रखिये, इन पर धन व्यय होता है'?" कोस्त्या ने सुझाव दिया।

"यह भी अच्छा नहीं है," मैंने कहा। "कुछ पुस्तकों का कुछ भी मूल्य नहीं देना पड़ता, लेकिन इसके यह मायने तो नहीं कि आप उन्हें फाड़ सकते हैं।"

"हम यह कहें: 'पुस्तकें आपकी मित्र हैं। उन्हें भली भांति संभाल कर रखिये'," लीका बोली।

"मेरे ख़याल से यह ठीक रहेगा। पुस्तकें हमारी मित्र हैं क्योंकि वे हमें अच्छा बनना सिखाती हैं। इसके मायने यह हुए कि हमें उनके साथ मित्रों की तरह व्यवहार करना चाहिये।"

हमने इस पर बारम्बार विचार किया और इस निर्णय पर पहुंचे कि यह ठीक रहेगा। फिर हम कुछ काग़ज़ और रंग लाये और इस आदेश को लिखा।

अगले दिन हमने उसे किताबों की अलमारी के पास दीवार पर टांग दिया और किताबें बांटना शुरू कर दिया।

जब भी कोस्त्या किसी को पुस्तक देता, हर बार कहता: "अब, इसमें कुत्ते, राक्षस और मज़ाकिया चेहरे मत बना डालना, समझे।"

"मैं भला यह क्यों करने लगा?"

"यह तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन तुम्हें चेतावनी दे देना मेरा कर्त्तव्य है। यह पुस्तक अब सामूहिक सम्पत्ति है। तुम अपनी पुस्तकों के साथ जो चाहे कर सकते हो, यद्यपि किसी भी पुस्तक का इस तरह सत्यानाश करना शर्म की बात है, क्योंकि तुम्हारे बाद यह पुस्तक तुम्हारा छोटा भाई या बहन पढ़ सकते हैं। लेकिन पुस्तकालय की पुस्तकों को सावधानी के साथ रखने का ध्यान रखना, वरना फिर मैं दूंगा ही किस लिए। मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूं।"

"अच्छा, अब चेतावनी दे भी चुके।"

किन्तु कोस्त्या को इससे संतोष नहीं होता। जो भी लड़का पुस्तकालय से पुस्तक लेता, उसे पुस्तकों की देखभाल कैसे और क्यों करनी चाहिए, इस सम्बन्ध में कोस्त्या का भाषण सुनना पड़ता।

उस दिन छुट्टी होने पर मैंने उसे अलमारी के पास बैठे और ख़ानों की ख़ाली जगह को घूरते हुए पाया। वह काफ़ी मुर्झाया हुआ सा दिखाई दे रहा था।

"तमाम पुस्तकें चली गईं!" वह बोला। "पहले तमाम ख़ाने भरे हुए देख कर कितना अच्छा लगता था। और अब हमें जाकर और पुस्तकें लानी होंगी।"

"इसमें परेशानी की क्या बात है?" मैं बोला। "लड़के उन्हें पढ़ कर फिर वापस ले आयेंगे।"

"हां, लेकिन फिर वे बदले में दूसरी ले जायेंगे। हमारे ख़ाने फिर कभी नहीं भरेंगे।"

"लेकिन तुम ख़ानों को भरे ही रखना किस लिए चाहते हो? पुस्तकें पढ़ने के लिए बनाई गई हैं, ख़ानों में सजी रहने के लिए नहीं।"

मैंने भी घर पर पढ़ने के लिए एक पुस्तक ली।

"क्या, तुम भी?" कोस्त्या ने शिकायत के लहजे में कहा। "तुम देख ही रहे हो, बाक़ी ही कितनी बची हैं!"

"लेकिन मैं इसे जल्दी ही पढ़ डालूंगा और वापस ले आऊंगा," मैंने उसे आश्वासन दिया।

इसके बाद उसने भी एक पुस्तक अपने लिए ले ली।

"मेरे विचार में एक पुस्तक के कम या ज़्यादा होने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता," उसने अपने को तसल्ली दी।

अब हम पुस्तकालय के सर्वेसर्वा थे। कोस्त्या और मैंने ख़ूब पढ़ना शुरू कर दिया। कोस्त्या तो अपनी पुस्तकों में इतना रम गया था कि वह सड़क पर चलते हुए भी पढ़ता था। एक दिन वह सीधा बिजली के खम्भे से जा टकराया और उसके माथे पर अच्छी ख़ासी चोट भी लगी। इसके बाद से वह अपनी पढ़ाई अपने घर पर ही करने लगा था।

उसने अपने पुस्तकालय के काम को गम्भीरता से लिया। यहां तक कि उसका चरित्र ही बदल गया। वह बहुत ही साफ़ सुथरा और पहले की तरह आधा भुलक्कड़ न रह कर,

काफ़ी व्यवस्थित रहने लगा था। लड़कों के साथ उसका व्यवहार काफ़ी सख़्त हो गया था। यदि कोई गन्दे हाथो से पुस्तकें लेने आता तो वह उसे झाड़ देता।

"तुम्हें अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए। तुम अपने हाथों से क्या कर रहे थे?"

"मुझे नहीं पता। लेकिन तुम्हारा इस से कोई सरोकार नहीं।"

"अच्छा जी, मेरा कोई सरोकार नहीं! तुम पुस्तक लेने आये हो, या नहीं?"

"हां।

"तो तुम समझते हो कि मैं ऐसे किसी लड़के को पुस्तक दे दूंगा, जिसके हाथ ऐसे होंगे? तुम इसे तमाम ख़राब कर डालोगे।"

"मैं घर जाकर हाथ धो डालूंगा।"

"यह नहीं चलेगा। तुम पहले गुसलखाने में जाकर अपनी सफ़ाई करो, तब तुम्हें किताब मिलेगी। और अगली बार जब तुम पुस्तक लेने आओ, तो ध्यान रखना कि तुम्हारे हाथ साफ़ हैं या नहीं।"

जब कोई पुस्तकालय की पुस्तक देर तक दबाये रहता तो कोस्त्या को अच्छा नहीं लगता।

"तुमने इतने दिनों से पुस्तक किस लिए दबा रखी है? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि कोई दूसरा भी उसे पढ़ने वाला है? अगर तुम उसे नहीं पढ़ना चाहते, तो इसे वापस ले आओ और किसी दूसरे को पढ़ने का अवसर दो।"

"मैंने अभी इसे ख़त्म नहीं किया है। ख़त्म करने पर इसे वापस ले आऊंगा।"

"तुम्हें इसे ख़त्म करने के लिए कितने वर्ष चाहिए?"

"वर्षों के लिए कौन कहता है? मुझे दस दिन रखने की इजाज़त है, या नहीं?"



"हां, लेकिन तुमने उसे कब लिया था?"

"एक सप्ताह पहले। मेरे दस दिन अभी पूरे नहीं हुए हैं।"

"ऐसी पुस्तक को पढ़ने में तुम्हें दस दिन नहीं लगाने चाहिए। इसके अलावा दस दिन तो अन्तिम सीमा है। तुम्हें उसे इतनी देर तक नहीं रखने दिया जा सकता, तुम उसे इससे भी जल्दी वापस ला सकते हो। आया समझ में?"

"लेकिन मैं तुमसे कह तो रहा हूं कि मैंने अभी तक उसे समाप्त नहीं किया है।"

"अच्छा, लेकिन भगवान के लिए जल्दी करो!"

जो लड़के अपनी पुस्तकें बहुत जल्दी ले आते, कोस्त्या उन्हें भी भाषण सुनाता।

"तुम तेज़ पढ़ने वाले हो, है न?" वह कहता। "तुमने इसे कल ही तो निकलवाया था। मुझे विश्वास नहीं कि तुमने इसे पूरा पढ़ा होगा।"

"तब फिर मैं इसे किस लिए ले गया था?"

"यह मैं कैसे जान सकता हूं? हो सकता है तुमने इसे इसकी तस्वीरें देखने के लिए ही लिया हो?"

"तुमने मुझे बच्चा समझा है?"

"अच्छी बात है, हम भी तो सुनें कि यह पुस्तक किस विषय की है।"

"यह क्या हुआ, परीक्षा?"

"मैं जानना चाहूंगा कि तुमने यह पुस्तक पढ़ी है या नहीं।"

"यह काम तुम्हारा नहीं। तुम्हारा काम पुस्तकें देना है, अपने पाठकों की जांच-पड़ताल करना नहीं।"

"यही तो तुम्हारी ग़लती है। पुस्तकाध्यक्ष का कर्त्तव्य यह देखना है कि पुस्तकें पढ़ी जाती हैं या नहीं। अगर तुम पढ़ते ही नहीं, तो पुस्तकें देने का लाभ ही क्या है? किसी और को पढ़ने का अवसर दो।"

और वह लड़के को तब तक नहीं छोड़ता, जब तक कि वह यह न सुन लेता कि वह पुस्तक किस बारे में थी।

यह कोस्त्या का ही विचार था कि लड़कों से पुस्तकों के सम्बन्ध में छोटी-छोटी टिप्पणियां लिखवाई जायें।

"आप सब लोग केवल पढ़ना भर ही करते हैं," वह बोला। "आप लोगों को कभी ख़्याल भी आया कि आप टिप्पणी भी लिखें।"

"तुम्हें टिप्पणी की आवश्यकता किस लिए है?"

"हम इसे दीवारी अख़बार पर चालू कर सकते हैं। अगर पुस्तक अच्छी है, तो दूसरे लड़कों की दिलचस्पी बढ़ेगी और वे उसे पढ़ना चाहेंगे। यदि तुम टिप्पणी नहीं लिखोगे, तो मैं आगे से तुम्हें कोई पुस्तक नहीं दूंगा।"

इस तरह लड़कों ने अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों पर छोटी-छोटी टिप्पणियां लिखनी आरम्भ कर दीं। उन्होंने इतनी लिखीं कि दीवारी अख़बार में उन सबको देने के लिए स्थान तक नहीं रहा। इसलिए हमें अपने लिए एक और अख़बार चालू करना पड़ा। हमने इसका नाम 'युवा पाठक' रखा और लड़कों की सभी टिप्पणियां उसमें प्रकाशित कीं, और जब से उन्होंने अपनी टिप्पणियों को अपनी ओर से दिलचस्प बनाने का भरसक प्रयत्न करना शुरू किया, यह बहुत सुन्दर पत्र बन गया और हरेक ने इसे पसन्द किया।



इक्कीसवाँ अध्याय

जब से कोस्त्या ने अपनी रूसी में प्रगति आरम्भ की और विशेषतः उसके और मेरे पुस्तकाध्यक्ष बन जाने के बाद से कक्षा में हमारा सम्मान बढ़ गया। कोस्त्या को बास्केटबाल की टीम में खेलने की आज्ञा दे दी गई, और वह बहुत ही बढ़िया खिलाड़ी सिद्ध हुआ। वास्तव में हमने उसे कप्तान बना दिया। उसने अपनी टीम को इतनी अच्छी तरह खेलना सिखाया कि हमने स्कूल की चैम्पियनशिप जीत ली, और इससे हमारे सम्मान को चार चांद लग गये तथा स्कूल के दीवारी अख़बार में हमारी टीम के सम्बन्ध में एक लेख प्रकाशित हुआ।

परन्तु अभी तक हमें मुसीबत से पूर्णतः मुक्ति नहीं मिल पाई थी। हमने मिल कर चाहे उसकी रूसी पर कितनी ही मेहनत क्यों न की हो, कोत्स्या ३ नम्बर से आगे नहीं बढ़ सका। उसे ३ नम्बर मिलने पर ४ और उसके बाद ५ नम्बर प्राप्त करने का पूरा पूरा विश्वास था, किन्तु वह बहुत ग़लती पर था। ओल्गा निकोलायेव्ना ने उसे ३ नम्बर ही देना जारी रखा, यहां तक कि कोस्त्या ने निराश होना शुरू कर दिया।

"देख लिया न तुमने!" उसने वोलोद्या से कहा। "इस प्रकार ३ नम्बर ही लेते रहना मेरे लिए संभव नहीं है। मैं कक्षा के पुस्तकालय का अध्यक्ष और बास्केटबाल की टीम का कप्तान हूं। स्कूल के अख़बार में मेरे विषय में लिखा जा चुका है, मैं रूसी में इस तरह ३ नम्बर लेते हुए किस तरह चल सकता हूं?"

"थोड़ा सा धीरज और रखो," वोलोद्या बोला। "कोशिश करना मत छोड़ो।"

"मेरा मतलब कोशिश छोड़ने का नहीं था। लेकिन मुझे डर है कि ओल्गा निकोलायेव्ना मुझे ३ नम्बर देने की इतनी आदी हो चुकी हैं, कि वह मुझे कभी भी अधिक नम्बर नहीं देंगी।"

"तुम ग़लती पर हो," वोलोद्या बोला। "ओल्गा निकोलायेव्ना का व्यवहार बहुत ही उचित है। जैसे ही तुम इसके अधिकारी हो जाओगे, तुम्हें विश्वास रखना चाहिए कि वह तुम्हें उतने ही नम्बर देंगी।"

"ओह, मैं चाहता हूं, वह दिन जल्दी आयेगा," कोस्त्या ने कहा। "पूरी कक्षा में मैं ही अकेला ऐसा हूं, जिसे ३ नम्बर मिलते हैं। अगर मैं अपवाद न होता तो हम सबको ही अच्छे नम्बर मिल रहे होते। मेरे कारण ही सब सिलसिला बिगड़ा हुआ है।"

हमने दूसरा बड़ा प्रयत्न करने का फ़ैसला किया। ओल्गा निकोलायेव्ना कोस्त्या को स्कूल के बाद भी पढ़ा रही थीं, और वह धीमी गति से, किन्तु निश्चित रूप से प्रगति कर रहा था। और एक दिन, जब इमला में उसे ३ नम्बर मिले थे—उसके छः सप्ताह बाद, उसे पहली बार ४ नम्बर मिले। पूरी कक्षा के लिए यह स्वर्ण-दिवस था।

उस दिन हमारी कक्षा की मीटिंग हुई और ओल्गा निकोलायेव्ना ने हमारी प्रगति के सम्बन्ध में रिपोर्ट प्रस्तुत की।

"अब हमारी क्लास में कोई भी कम नम्बर लेने वाला नहीं है," वह बोलीं। "हमने न केवल २ नम्बर से, बल्कि ३ से भी छुटकारा पा लिया है।"

उन्होंने बताया कि मैंने और कोस्त्या ने बहुत परिश्रम किया है और अब कोस्त्या ने इतनी प्रगति कर ली है कि वह अपनी क्रमिक प्रगति कर सकता है।

"हमारे स्कूल में बहुत सी ऐसी अच्छी कक्षाएं हैं, जिनमें ऊंचे नम्बर प्राप्त करने वाले विद्यार्थी मौजूद हैं। लेकिन अब तक हमारी ही कक्षा ऐसी है, जिसमें हरेक विद्यार्थी अच्छे या बहुत अच्छे अंक प्राप्त कर रहा है," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं। "मेरा ख़याल है कि दूसरी कक्षाएं हमारे उदाहरण का अनुकरण करेंगी। तुम्हें अपनी इन सफलताओं पर ही संतोष करके नहीं बैठ रहना है, यह तुम जान लो। तुम्हें आगे बढ़ना जारी रखना चाहिये। अगर तुम अपनी पढ़ाई पर मेहनत करना जारी नहीं रखोगे, तो तुम अपने को पिछड़ा हुआ पाओगे।"

इसके बाद पायनियर नेता वोलोद्या ने मंच संभाला।

"मैं स्कूल के दीवारी अख़बार में आपकी कक्षा के बारे में एक लेख लिख रहा हूं। मेरे ख़याल में पूरे स्कूल को यह जान लेना चाहिए कि आप किस तरह मेहनत कर रहे हैं, ताकि दूसरी कक्षाएं भी आपके उदाहरण पर चल सकें। आपको उन्हें यह बताना चाहिये कि आपने इतने अच्छे नतीजे किस तरह हासिल किये।"

"मेरे ख़्याल से यह सब ओल्गा निकोलायेव्ना की बदौलत है, जो इतनी अच्छी अध्यापिका हैं," वान्या पख़ोमोव बोला।

"हां, बेशक, यही बात है," वास्या येरोख़िन ने उसका समर्थन किया।

"हर चीज़ अध्यापक पर ही निर्भर नहीं करती," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं। "अच्छे अध्यापकों की कक्षाओं में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के विद्यार्थी हो सकते हैं।"

"मेरे विचार से दूसरा कारण यह है कि हम सभी अच्छी तरह पढ़ना चाहते थे," तोल्या द्योजकिन ने कहा।

"अब, क्या कोई मुझे यह बता सकता है कि आप सब ऐसा क्यों चाहते थे?" वोलोद्या ने पूछा।

कोस्त्या ने अपना हाथ उठाया। "मेरे ख़याल में यह सब इसलिए है कि हम कक्षा में बहुत अच्छे दोस्त हैं। हममें से हरेक केवल अपने बारे में ही नहीं सोचता, बल्कि क्लास के अपने साथियों के बारे में भी सोचता है। जब मैं अपनी पढ़ाई में पिछड़ा हुआ था, कक्षा के तमाम लड़के मेरे बारे में चिन्तित थे। तब केवल मैं ही अकेला बुद्धू था, और मुझे यह पसन्द नहीं था। अब मैं समझता हूं कि वे मेरी सहायता करना चाहते थे। वे कक्षा के सम्मान की रक्षा के लिए लड़ रहे थे।"

"तुम बिलकुल ठीक कहते हो, कोस्त्या। यह मैत्री-भावना ही है, जिसने तुम्हारी कक्षा को अच्छा बनाने में सहायता दी है," वोलोद्या ने कहा। "हम सबने यह समझ लिया है कि सच्ची दोस्ती के मायने किसी साथी की कमज़ोरी को नज़रन्दाज़ करना नहीं है। इसका अभिप्राय है उसे अपने श्रेष्ठतम योगदान के लिए प्रस्तुत करना।"

"मैं बोल सकता हूं?" मैंने कहा। "अब मैं सच्ची मैत्री का अर्थ समझ गया हूं। यदि आप देखें कि आपका मित्र ग़लत राह पर जा रहा है, तो आपको उसे रोकना चाहिये। आपको उससे कहने में डरने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि इसके मायने होंगे कि आप सच्चे मित्र नहीं हैं। जब कोस्त्या ने स्कूल आना बन्द कर दिया, मैंने उसके भेद को छुपाने में उसकी सहायता की और इस तरह उसे केवल हानि ही पहुंचाई। लेकिन अब मुझे उसके लिए पछतावा नहीं है, और अब मैं उसका एक सच्चा मित्र हूं।"

"बिलकुल ठीक, वीत्या," वोलोद्या ने कहा।

हमने काफ़ी देर तक बातचीत की, जिसमें हरेक से नाना प्रकार के प्रश्न पूछे गये। अंत में कोस्त्या ने कहा:

"ओल्गा निकोलायेव्ना, क्या आप मेरे रिपोर्ट-कार्ड पर ४ नम्बर लिख देने की कृपा करेंगी?"

"इस सप्ताह के अन्त में तमाम कार्डों में नम्बर भरूंगी और तुम्हारे में भी," ओल्गा निकोलायेव्ना बोलीं।

"ओल्गा निकोलायेव्ना, कृपया मेरे में अभी लिख दीजिये," उसने प्रार्थना की।

"तुम इतनी जल्दबाज़ी क्यों कर रहे हो? तुम्हारा ४ नम्बर कहीं भाग नहीं जायेगा!"

"मुझे मालूम है, नहीं भागेगा। लेकिन आप जानती ही हैं कि मैं अपनी माताजी को दिखाना चाहता हूं। मैं उनसे इतने लम्बे अरसे से रूसी में ४ नम्बर पाने का वायदा कर रहा हूं कि उन्होंने उम्मीद ही छोड़ दी है।"

"लेकिन अगर तुम सिर्फ़ उन्हें बता भर दो, तो क्या तुम्हारी माताजी उस पर विश्वास नहीं करेंगी?" ओल्गा निकोलायेव्ना ने उससे पूछा।

"बेशक, करेंगी, लेकिन आप जानती ही हैं, यह कैसा लगेगा। जब किसी से आप कहें, तो और बात है; लेकिन जब आपके रिपोर्ट-कार्ड में यह लिखा हुआ हो, तो बात ही और कुछ हो जाती है।"

दूसरों ने उसकी सिफ़ारिश की और वोलोद्या ने भी उसका समर्थन किया। "इसके कार्ड पर लिख भी दीजिये, ओल्गा निकोलायेव्ना," उसने प्रार्थना की। "दूसरे लड़के सप्ताह के अन्त तक इन्तज़ार कर लेंगे।"

ओल्गा निकोलायेव्ना मुस्कराईं। "अच्छी बात है! जब आप सब लोग उसकी सिफ़ारिश कर रहे हैं, तो मैं इन्कार नहीं कर सकती।" और उन्होंने कोस्त्या के कार्ड में ४ का अंक भर दिया।

जब कोस्त्या और मैं बाहर सड़क पर आये, मैंने अनुभव किया स्कूल में रहने के दौरान की अपेक्षा, अब बाहर कुछ गर्मी बढ़ गई थी। सुबह तक काफ़ी सर्दी थी, लेकिन अब छतों पर से लटकते हुए बर्फ़ के नोकीले कण नीचे टपक रहे थे और नव-वर्ष-वृक्ष की सजावट की तरह धूप में चमक रहे थे। हवा, जो हमारे चेहरों पर थपेड़े दे रही थी, गर्म और सुहावनी सी लग रही थी, उसमें से गर्मी में पिघलती हुई नदी की गन्ध आ रही थी। ऐसा लगता था, जैसे यह हवा सीधी दक्षिण में कज़ाख़स्तान के किन्हीं घास के मैदानों से, जहां वसंत पहले ही आ चुका है और फ़सल बोने की ऋतु आरम्भ हो चुकी है, गुज़रती हुई सीधी हमारे पास आ रही हो। मुझे इतनी प्रसन्नता हुई कि मुझे सीने के भीतर अपना दिल उभरता हुआ मालूम होने लगा, और ऐसा लगने लगा, मानो मैं हवा पर चल रहा हूं। विभिन्न प्रकार के विलक्षण विचार मेरे मस्तिष्क में आये। मैं कोई ऐसी अत्यन्त वीरतापूर्ण चेष्टा करना चाह रहा था कि हरेक मेरी ओर चकित दृष्टि से देखे और मेरी तरह ही इतना शानदार अनुभव करने लगे।

लेकिन जब मैं अपने आश्चर्यपूर्ण विचारों में लीन था, कोस्त्या मेरी बग़ल में साथ साथ चल रहा था, पर उसने कुछ महसूस नहीं किया। वह रुक गया। उसने अपने बस्ते में से रिपोर्ट-कार्ड निकाला और खड़ा हुआ अपने ४ नम्बर की सराहना करता रहा।

"क्या यह शानदार नहीं है!" वह फुसफुसाते हुए बोला। "मैं ४ नम्बर के कितने स्वप्न देखा करता था। कितनी बार मैंने स्वयं अपने आपसे कहा था कि मैं ४ नम्बर प्राप्त करूंगा और अपनी माताजी को बताऊंगा, और वह मुझसे प्रसन्न होंगी! मैं जानता हूं कि मैं केवल माताजी के ही लिए स्कूल नहीं जाता हूं, वह हमेशा मुझे इस बात का ध्यान दिलाती रहती थीं। लेकिन इतने पर भी मैं थोड़ा बहुत उनके लिये भी कर रहा हूं। आख़िर, वह भी अपने बेटे को एक अच्छा आदमी बनाना चाहती हैं। मैं कुछ बन के रहूंगा, तुम देखोगे, और एक दिन माताजी को मुझ पर गर्व होगा। मैं ज़रा और मेहनत से काम करूंगा और तुम्हारे जानने

से पहले ही, मैं ५ नम्बर पा चुका हूंगा। तब माताजी गर्व कर सकती हैं। ज़ीना चाची को भी गर्व होगा, लेकिन इसकी मुझे कोई परवाह नहीं। कुछ भी हो, लेकिन ज़ीना चाची वे इतनी बुरी नहीं हैं, यद्यपि वह मुझे यदाकदा फटकारती रहती हैं।"

वह रुका, अपना रिपोर्ट-कार्ड अपने बस्ते में रखा और अपने ऊपर नज़र डाली। फिर उसने एक लम्बी सांस ली और कहा: "हवा को सूंघ रहे हो? वसन्त आ गया है, वीत्या, वसन्त! ज़रा कल्पना तो करो। फ़रवरी समाप्त होने को है, और फ़रवरी शरद ऋतु का अन्तिम मास है। जल्दी ही मार्च लगेगा, और छोटी छोटी नदियाँ फिर दौड़ने लगेंगी, घास हरी हो जायेगी और साही और जंगल के दूसरे जीव-जन्तु जाग उठेंगे, पंछी गायेंगे और फुल खिलने लगेंगे..."

वह वसन्त और पंछियों की बातें करता रहा, लेकिन जो कुछ उसने कहा, वह मुझे याद नहीं, क्योंकि तभी, हमारे साथ इस सारी घटना के बारे में घटी लिखने का विचार मेरे मस्तिष्क में आया। मैंने उसी दिन से लिखना आरम्भ कर दिया, और छुट्टियां होने तक लगभग प्रति दिन नियमपूर्वक लिखता रहा। मैंने हर चीज़ के बारे में नहीं लिखा है, किन्तु जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण था, वह लिखने का प्रयत्न मैंने किया है। और महत्वपूर्ण बात यह है कि कोस्त्या और मैं प्रत्येक विषय में सबसे ऊंचे अंक—५ प्राप्त करके चौथी कक्षा में उत्तीर्ण हुए।

